जातकशिरोमणि ।

टीहरीनिवासी पं० महीधरशर्मकृत-

भाषाटीकासमेत ।

जिसको

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रसिद्ध किया.

संवत् १९५२, शके १८१७.

भूमिका ।



वेदांग ज्योतिषशास्त्र जैसा चमत्कृत और सर्वोपयोगी
इसको कलियुगी नास्तिक पाखण्डियोंको छोड़कर
ही जानते मानते हैं बल्कि जानते पहिचानते तो वेभी
रंतु अपने कुहठके प्रभावसे माननेमें जाहिर छिपाते हैं
विमुख एवं मक्खीचूस कतिपय समाजी आदि उनको
ायक मिलजाते हैं ये सब परिवर्त्तन शील समयके हेरफेर
ा ही करते हैं, इसमें ज्योतिषियोंको इसके उन्नतिके उपा-
में कटि बद्ध रहना चाहिये, फिरभी यह रत्न रत्नही है ।
खण्डियोंके मलिन बुद्धि संसर्गसे यह कदापि मलिन नहीं
ा, मैं यथाशक्ति इसके प्रचार एवं सर्वसाधारणको इसकी
त विदित करानेके हेतु उद्यम करही रहा हूं कि, फलादे-
में—बृहज्जातक, नीलकंठी, रमलनवरत्न, भावकुतूहल,
चिंतामणी । मुहूर्त्तस्कंधमें—मुहूर्त्तचिंतामणि । गणि-
जातककेशवी, ताजिककेशवी, आदि कठिन
भाषाटीका बनाई है और कीर्तिपञ्चाङ्ग जिसमें
कुन चक्रादि अनेक सर्वोपयोगी विषय रहते हैं
बनाया करताहूं इसमें केवल एक सहायक श्री
१०८ महाराजाधिराज टीहरीगढपालाधीश हैं
दान मानादिसे संतुष्ट रखते हैं । जिससे
त समय ऐसे कार्मोमें सफल करता
महाशय भी कोई कोई प्रकार सह
रिश्रम इसकार्यमें करसकताहूं
नकी बृहज्जातक अद्वितीय है,

...न उन्होने इष्टदेव
...के, श्रीगुरुपादुका,
...के जातकशिरोमणि
...टीका (जो ...

टीका इस ग्रन्थको समझना चाहिये, क्योंकि, उसमें श्लोक अर्थ बहुत है इसमें वे गुप्तार्थ प्रगट करके बडा ग्रंथ कि गया है, सर्वसाधारणके सुबोधार्थ मैंने इसकी सरल हिन् भाषाटीका बनाई है इस मेरे परिश्रमको सफल करना सज्ज पाठकोंके आधीन है।

मेरे उक्त कृत्योंके सहायक श्रीमान् सेठ खेमराज श्रीकृ दासजी हैं जो मेरे कृत्योंको प्रसन्नता पूर्वक शीघ्र प्रकाश क लोकोपकार पुण्यके भागी होते हैं और मुझको भी प्र रखते हैं, यह ग्रन्थभी मैंने उन्हीं सेठजीके समर्पण किया

ग्रन्थकर्त्ता-

पं० महीधरशर्मा धर्माधिकारी राजधानी टीहरी,
जिला-गढ़वाल.



॥ श्रीः ॥

जातकशिरोमणि ।

भाषाटीकासमेत ।

प्रणम्य भास्करं भक्त्या वराहमिहिरादिकान् ॥ बृहज्ज-
न्मपदार्थस्य प्रकाशः क्रियते मया ॥ १ ॥ सुबुद्धिपु-
त्रसंस्थोऽपि बृहज्जातकवारिधेः ॥ पदार्थलब्धये शक्तः
कर्णधारं विना न हि ॥ २ ॥ कर्णधारायते सम्यक्पदा-
र्थप्रतिपत्तये ॥ वराहमिहिराचार्य्यो होराशास्त्रप्रका-
शकः ॥ ३ ॥

प्रणम्य गुरुपादुकां गणपतिं च गीर्देवतां महीधरधरासुरो
विवृतिमार्यया भाषया ॥ करोति विशदां सुजातकशि-
रोमणेः पद्धतीतिपाठनिरतार्भकप्रचुरबुद्धिसंधायिनीम् ॥ १ ॥
कृतास्ति विवृतिः पुरा बृहति जातके यद्यपि तथापि बहु-
विस्तृतेस्तदनुकारिणोस्याम्रुना ॥ प्रकाशकरणाद्भवेत्सुप्रकृति-
र्जनानामिहेति रेतुत इयच्छमाट्टिहरिराजधान्यामयम् ॥ २ ॥

भावार्थ–मैं महीधरशर्मा भाषाकार ग्रन्थारंभमें अपने इष्टदेव-
ताओंको प्रणामरूप मंगलाचरण करता हूँ कि, श्रीगुरुपादुका,
गणेश और सरस्वती देवीजीको प्रणाम करके जातकशिरोमणि
नामा जातक ग्रन्थकी हिन्दी भाषाटीका (जो [illegible]

बालकोंकी बुद्धिउत्तेजित करनेवाली है) करता हूँ ॥ १ ॥ य
पहिले बृहज्जातककी भाषाटीका ऐसे जातकोक्त कार्य्यस
दन करनेवाली बनायली है तथापि उसी ग्रन्थका अनु
कर बहुत विस्तारवाले इस जातकके प्रकाश करनेसे म
का उपकार होवै ऐसा कारण विचारके यह ग्रन्थ भाषा
सहित करना उपयोगी समझा. यह कार्य राजधानी टी
(जिला गढवाल) में कियागया ॥ २ ॥

ग्रन्थकर्त्ता ग्रन्थारंभमें विघ्नविघातार्थ अपने इष्टदेवको
मरूप मङ्गलाचरण करता है कि, भक्तिसे श्रीसूर्यनाराग
वराहमिहिरादिआचार्योंको प्रणाम करके मुझसे (बडे उ
पदार्थ) जन्मपत्रीके विचारका प्रकाश किया जाताहै ॥
बृहज्जातकरूप ज्योतिःसमुद्रमें अच्छी बुद्धिरूपी नावमें
हुआ "ज्योतिषी" भी विना (मल्लाह) खेवटके उस पदा
पानेमें समर्थ नहीं है ॥ २ ॥ उस पदार्थके सम्यक् ज्ञानके
होराशास्त्रका प्रकाश करनेवाला श्रीसूर्य्यावतार वराहमि
राचार्य्य कर्णधार होता है। अर्थात् बृहज्जातकरूप 'समु
पारहोनेकेवास्ते सुबुद्धिरूप नावमें बैठाहुआ भी मैं वर
मिहिररूप खेवटकी कृपासे समर्थ होकर बृहज्जातकके अनु
उसीके ऊपर तिलक जैसा यह ग्रन्थ रचता हूं ॥ ३ ॥

अहोरात्रोत्थिता होरा कालस्यावयवा हि सा ॥
शयो होरा होरा राशीदलं स्मृतम् ॥ ४ ॥

...रात्र दिनरात्रिरूप (काल) समयका नाम है ।
त्रके पहिले पिछले वर्ण लोप करनेसे उसकी प्रा
जाती है अर्थात् यह पद समयज्ञान वाचक है इस
अवयव इसे कहते हैं तथा उस ज्ञानकी परिमा

मेषादिराशि यों द्वारा होनेसे इन राशियोंके सर्वांगसमुदाय को होरा कहते हैं। और राशिके आधा दलकोभी होरा कहते हैं पूर्व व्याख्या (होराशास्त्र) ज्योतिषशास्त्रवाची है और दूसरी राश्यर्द्ध विभागवाचक है ॥ ४ ॥

मेषः शिरो वृषो वक्त्रं नृयुग्बाहू च कर्कटः ॥ हृत् पिचण्डं मृगपतिः कटिः कन्या समाश्रिता ॥ ५ ॥ बस्तिस्तुलाथ गुह्यं स्यात्कीट ऊरू धनुः स्मृतम् ॥ जानुनी मकरो जंघे कुंभः पादौ झषो द्वयम् ॥ ६ ॥

कालांगके राशिविभाग शरीरमें ऐसा है कि, मेष शिर, वृष मुख, मिथुन बाहुयुग्म, कर्क हृदय, सिंह पेट और कन्या कटिमें रहती है ॥ ५ ॥ तुला (बस्ति) नाभिसे नीचे, वृश्चिक गुह्यस्थान, धन ऊरू, मकर जानु, कुंभ (जंघा) घुटने मीन दोनहूं पैर ये राशिके अंगविभाग कहे हैं ॥ ६ ॥

मेषो वन्यो दिवा रात्रौ ग्राम्यो गौर्मेषराशिवत् ॥ पृष्ठोदयावजवृषावरुणश्वेतरूपिणौ ॥ ७ ॥ मिथुनं पुरुषो नारी सवीणा सगदः पुमान् ॥ ग्राम्यं शीर्षोदयं दूर्वादलश्याममुदाहृतम् ॥ ८ ॥ नित्यं जलचरः कर्कः पृष्ठदर्शी विपाटलः ॥ सिंहो वनचरः पाण्डुः स याति शिरसोदयम् ॥ ९ ॥ ससस्यदहना कन्या प्लवगा शीर्षदर्शिनी ॥ विचित्ररूपाभरणा दीर्घी कन्या च सा स्मृता ॥ १० ॥ तुलाराशिस्तुलां धत्ते राजतीं पण्यवीथिगः ॥ शीर्षोदयः पुमान्कृष्णो ग्राम्यो ग्राम्यजनार्चितः ॥ ११ ॥

पिशंगो वृश्चिकः कीटः शीर्षदर्शी बिलालयः ॥ पृष्ठो-
दयी पुमान्धन्वी ग्राम्योश्वजघनो धनुः ॥ १२ ॥ मृगो
मृगास्यः प्राग्वन्यः पष्ठदर्शी जलेशयः ॥ कुंभे रिक्त-
घटः कुंभो ह्युदेति शिरसा पुमान् ॥ १३ ॥ मीनो मीन
द्वययुतो जलजन्मोभयोदितः ॥ लक्षणानीति राशीनां
क्रमशः कथितानि मे ॥ १४ ॥

अब राशियोंके लक्षण कहते हैं कि, मेष राशि दिनरात्रि बली, वनचर, ग्राम्यपशु और वृषराशि भी मेषके समान है ये दोनहूं पृष्ठोदय हैं मेषका लाल रंग और वृषका श्वेत रंग है ॥ ७ ॥ मिथुन राशि स्त्री पुरुषका जोडा, गदा और वीणा धारणकरता ग्राम्य शिर्षोदय, और दूर्वापत्रके समान श्याम रंगवाला कहा है ॥ ८ ॥ कर्कराशि नित्य जलचर पृष्ठोदयी, विशेषतः श्वेत रक्त रंगकी है सिंह वनचर हरित रंग और शीर्षोदयी है ॥ ९ ॥ कन्या राशि नावमें बैठी धान्य और जलती आग हाथोंमें धारण किये अनेक रंग रूपके आभरण और रूपवाली दीर्घाकार कन्या कही है ॥ १० ॥ तुला चांदीकी तखडी हाथमें लिये दुकानमें बैठा पुरुष शीर्षोदय, कृष्णवर्ण ग्राम्य और ग्राम्यजनोंसे पूजित है ॥ ११ ॥ वृश्चिक थोडा पीला (कीडा) वृश्चिकाकार शीर्षोदय, छिद्रोंमें रहनेवाला है. धन, पृष्ठोदयी, पुरुष धनुषधारी, ग्राम्य घोडेकेसे जंघा वाला है ॥ १२ ॥ मकर, राशिका पूर्वार्द्ध वनचर, उत्तरार्द्ध जलचर मृगकासा मुख, पृष्टोदयीहै कुंभ, खाली घडा कांधेमें लिये, पुरुष शीर्षोदयी है॥१३॥ मीन दो मछलियोंका जोडा एकके मुखपर दूसरेका पुच्छ मिलाहुआ जलचर और शीर्ष पृष्ठ दोनहूं भागोंसे उदयीहै इतने राशियोंके लक्षण मैंने कहे हैं॥१४॥

कुजः शुक्रो बुधश्चन्द्रो रविज्ञो भृगुजः कुजः ॥
गुरुर्यमार्कजो मंत्री मेषादीनामधीश्वराः ॥ १५ ॥

मेषका स्वामी मंगल, वृषका शुक्र, मिथुनका बुध, कर्कका चंद्रमा, सिंहका सूर्य, कन्याका बुध, तुलाका शुक्र, वृश्चिक का मंगल, धनका बृहस्पति, मकरका शनि, कुंभका शनि, मीनका बृहस्पति, ये राशियोंके स्वामी हैं ॥ १५ ॥

राशिस्वामिनः ।											
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
भौ.	भृ.	बु.	चं.	सू.	बु.	भृ.	भौ.	बु.	श.	श.	गु.

मेषो मृगस्तुला कर्को नवांशेशा अजादिषु ॥ त्रिंशांश पतयो भौमशनीज्यबुधभार्गवाः ॥१६॥ पंच पंच गजाः सप्त पंचौजे व्युत्क्रमात्समे ॥ द्वादशांशा गृहादेव द्रेष्का णाः स्वस्वराशितः ॥ १७ ॥ राशेराद्योद्वितृतीयो तत्रि कोणोभयोः क्रमात् ॥ होरेशावर्कशशिनावोजे चन्द्ररवी समे ॥ १८ ॥

नवांशक मेषमें, मेषसे वृषमें, मकरसे मिथुनमें, तुलादि कर्क में, कर्कादि सिंहमें, मेषादि कन्यामें, मकरादि तुलामें, तुलादि वृश्चिकमें, कर्कादि धनमें, मेषसे मकरमें मकरसे कुंभमें तुलादि मीनेंम, कर्कादि गिनना एक राशिके तीस अंश होते हैं इनके ९ भाग ३ अंश २० कला हैं प्रकट चक्रमें हैं त्रिंशांश

नवांशाः ।									
१	२	३	४	५	६	७	८	९	भाग
३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२३	३०	अं०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	क०

विषमराशिमें ५ अंशपर्यन्त मंगल ५ से १० तक शनि १०

ऊपर १८ तक बृहस्पति १८ ऊपर २५ तक बुध और पिछले ५ अंशोंमें शुक्र होता है समराशिमें यह विभाग उलटा लेना प्रकट चक्रमें है द्वादशांश अपनी राशिसे गिने जाते हैं ३० अंशके १२ भाग २ अंश ३० कलाका प्रत्येक होता है, द्रेष्काण अपनी अपनी उक्तराशिसे अर्थात राशिके पूर्वत्रि भाग १० अंश पर्यन्त उसी राशिके स्वामीका मध्यभाग १० अंश ऊपर २० पर्यंत उससे पंचमराशिस्वामीका पिछला त्रिभाग २० अंश ऊपर ३० अंशपर्यंत उससे नवमीराशिके स्वामीका होता है होरेश विषमराशिमें पूर्वार्द्ध १५ अंशपर्य्यन्त सूर्य उत्तरार्द्ध १५ अंशऊपर ३० अंशपर्यन्त चंद्रमा समराशिके पूर्वार्द्धमें चंद्रमा उत्तरार्द्धमें सूर्य होरेश होता है ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥

त्रिंशांशेशाः ।

	मं.	श.	बृ.	बु.	शु.
विषमे	५	५	८	७	५
	५	१०	१८	२५	३०
समे	५	७	८	५	५
	५	१२	२०	२५	३०

क्रूरः सौम्यः पुमान्नारी क्रमेण विषमाः समाः ॥ अजा द्या विषमाः क्रूराः समाः सौम्याः स्वभावतः ॥ १९ ॥

मेषादिराशि क्रमसे क्रूर सौम्य अर्थात् मेष क्रूर, वृष सौम्य इत्यादि जानने ऐसे ही मेष पुरुष वृष स्त्री, इत्यादि तथा मेषविषम वृष सम इत्यादि सभी जानने, और मेषादि योंमेंसे जो विषम वै क्रूर जो सम वही सौम्यस्वभावसे हैं॥१९॥

चरस्थिरद्विस्वभावाः क्रमतः स्युरजादयः ॥ मेषादयश्च चत्वारो निशाख्या मृगवाहकौ ॥२०॥ सिंहादयश्च चत्वारः कुंभमीनौ दिवाभिधाः ॥ क्रियो मेषस्तावुरिगौर्नृयुग्जि तुमनामभृत् ॥ २१ ॥ कुलीरो मृगयो लेयः कन्यापाथेय

संज्ञिका ॥ जूकः कौर्प्यो वृश्चिकश्च धनुस्तौक्षिकसंज्ञकः ॥ २२ ॥ आकोकेरोऽथ हृद्रोगो मीनश्चांत्यभसंज्ञकः ॥ मेषो गौर्मकरः कन्याकर्कमीनतुलाः क्रमात् ॥ २३ ॥ रव्यादीनामुच्चगृहा उच्चान्नीचं च सप्तमम् ॥ निजोच्चे परमोच्चांशा दश रामा गजाश्विनौ ॥ २४ ॥ तिथींद्रियत्रिनवकाविंशतिस्ते तु नीचके ॥ वर्गोत्तमाख्या मेषादौस्वनवांशा नवांशकाः ॥ २५ ॥

मेषादि राशि चर स्थिर द्विस्वभाव क्रमसे हैं जैसे मेषचर वृष स्थिर मिथुन द्विस्वभाव इत्यादि मेषादि ४ राशि और धन मकर रात्रिबली हैं ॥ २० ॥ सिंहादि ४ राशि और कुंभ मीन दिवाबली हैं मेष क्रिय,वृष ताबुरि ॥ मिथुन जितुम नाम सेहैं॥२१॥तथा कर्क कुलीर,सिंह लेय, कन्या पाथोन,तुला जूक, वृश्चिक कौर्प्य, धन तौक्षिक, ॥ २२ ॥ मकर आकोकेरो, कुम्भ हृद्रोग, मीन अन्त्यभ,ये इन राशियोंकी संज्ञायेंहैं सूर्य्यका उच्च-मेष,मंगलका मकर, बुधका कन्या,बृहस्पतिका कर्क, शुक्रका-मीन, शनिका तुला, उच्च है ॥ २३ ॥ अपने उच्चसे सप्तमराशि नीच होतीहैं अपने उच्चराशि परमोच्चांश कहाते हैं कि, सूर्य मेषके १० अंशपर, चंद्रमा वृषके ३ में, मंगल १० के २८ में, बुध ६ के १५ में, बृहस्पति ४ के ५ में, शुक्र १२ के २७ में, शनि ७ के २० में, परमोच्चांशके और ऐसे ही सप्तम नीचराशियोंमें भी परम नीचांश जानने और मेषादिराशियोंमें जिसराशिमें वही नवांश हो वह वर्गोत्तमांश कहाता है ॥ २४ ॥ २५ ॥

राशीनां संज्ञाचक्रम् ।

राशयः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
नामानि राशीनाम्	मे.	वृष.	मि.	कर्क	सिंह	क.	तु.	वृ.	धन.	मक.	कुंभ.	मी.
राशिस्वामिनः	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.
क्रूरसौम्य.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.
पुरुषस्त्री.	पुं.	स्त्री.	पुं.	स्त्री.	पुं.	स्त्री.	पुं.	स्त्री.	पुं.	स्त्री.	पुं.	स्त्री.
विषम. सम.	वि.	स.	वि.	स.	वि.	स.	वि.	स.	वि.	स.	वि.	स.
चरस्थिरद्विः स्व०	च.	स्थि	द्वि.	च.	स्थि.	द्वि.	च.	स्थि.	द्वि.	च.	स्थि.	द्वि.
बली. दि. रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	दि.	दि.	दि.	दि.	रा.	रा.	दि.	दि.
संज्ञा.	क्रियः	ताबुरि	जितुम	कुलीर	लेय'	पाथोन,	जूक	कौर्प्य,	तौक्षिक	आकोकेरो,	हृद्रोग,	अत्थंभ.

उच्चमूलत्रिकोणाः ।

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
उच्चराशयः	१	२	१०	६	४	१२	७
उच्चराश्यंशाः	०।१०	१।३	९।२८	५।१५	३।५	११।२७	६।२०
नीचराशयः	७	८	४	१२	१०	६	१
नीचांशाः	६।१०	७।३	३।२८	११।१५	९।५	५।२७	०।२०
मूलत्रिकोणाः	५	२	१	६	९	७	११
ग्रहाणां राशयः	५	४	१।८	३।६	९।१२	२।७	१०।११

सिंहो गजस्त्रियोऽश्वश्च तुला कुंभास्त्रिकोणभम् ॥ गृहं होरात्रिभागश्च नवांशद्वादशांशकाः ॥ २६ ॥ त्रिंशांशः स तु यद्यस्य स वर्गस्तद्ग्रहस्य च ॥

सूर्यका मूलत्रिकोण सिंह, चन्द्रमाका कर्क, मंगलका मेष, बुधका कन्या, गुरुका धन, शुक्रका तुला, शनिका कुंभहै गृह १ होरा २ द्रेष्काण ३ नवांश ४ द्वादशांश ५ त्रिंशांश ६ यहं षड्वर्ग है जो वर्ग जिस राशिका है वह उस राशिस्वामीका कहलाता है ॥ २६ ॥

तनुः कुटुंवः सहजो बंधुः पुत्रोऽरियोषितः ॥
मृत्युः शुभास्पदावायव्ययौ भावास्तनोरमी ॥ २७ ॥

बारह भावोंके नाम लग्नसे कहते हैं तनु प्रथम भाव १ कुटुम्ब २ सहज ३ बंधु ४ पुत्र ५ रिपु ६ योषित् ७ मृत्यु ८ शुभ ९ आस्पद १० आय ११ व्यय १२ये संज्ञा क्रमसे हैं॥ २७ ॥

कल्पस्वविक्रमगृहाः पुत्रो घातश्च वित्तजः ॥ रंध्रं गुरुर्मानभवौ व्ययस्तन्वादयः पुनः ॥ २८ ॥

पुनः इन्हीं १२ भावोंकी अन्यप्रकारकी संज्ञा है कि, कल्प १ स्व २ विक्रम ३ गृह ४ पुत्र ५ घात ६ वित्तज ७ रंध्र ८ गुरु ९ मान १० भव ११ व्यय १२ इति ॥ २८ ॥

लग्नं गृहं शरीरं च तनुर्देहाङ्गमुच्यते ॥ स्वं धनं द्रविणं प्राहुर्द्धनभावे कुटुंबकः ॥ २९ ॥ विक्रमः सहजो भ्राता सहायश्च सहोदरः ॥ चतुर्थभावे भवनं गृहं बंधुसुहृत्सुखम् ॥ ३० ॥ पातालं हिबुकं वेश्म चतुरस्रं जलं क्षितिः ॥ पंचमे मंत्रपुत्रौ च त्रिकोणं नवपंचमम् ॥ ॥ ३१ ॥ प्रज्ञाबुद्धिसुतापत्यधीप्रज्ञागर्भसंज्ञकम् ॥ रिपुभावे रोगशत्रू क्षतं घातोऽरिसंज्ञकम् ॥ ३२ ॥ जायाभावे द्युनं द्यूनमस्तं यामित्रसंज्ञकम् ॥ जायामनोभवो मार्गः पंथाः संज्ञाश्च सप्तमे ॥ ३३ ॥

लग्नादि भावोंके विशेष संज्ञा कहते हैं॥ लग्न गृह, शरीर, तनु देह, शरीर इतने पर्याय नाम प्रथम भावके हैं ऐसे ही दूसरे भावकी, स्व, धन, द्रविण, कुटुम्ब, संज्ञायें कहते हैं ॥ ॥ २९ ॥ तीसरेकी विक्रम, सहज, भ्राता, सहाय, सहोदर, । चतुर्थकी भवन, गृह, बंधु, सुहृत्, सुख ॥ ३० ॥ पाताल, हिबुक, वेश्म, चतुरस्र जल, क्षिति । पंचमकी मंत्र, पुत्र-त्रिकोण (त्रिकोणसंज्ञा नवमकी भी है) ॥ ३१ ॥ प्रज्ञा, बुद्धि, सुत, अपत्य, धी, प्रज्ञा, गर्भ, संज्ञायें हैं। छटे भावकी रोग, शत्रु क्षत, घात, अरि ये संज्ञायें हैं ॥ ३२ ॥ सप्तकी जायाभाव, द्युन, द्यून, अस्त यामित्र, जाया, मनोभव, मार्ग, पंथा इतनी संज्ञायें हैं ॥ ३३ ॥

अष्टमे निधनं मृत्युर्मरणं रंध्रसंज्ञकम् ॥ चतुरस्रं छिद्र-संज्ञं संज्ञाः पर्यायवाचकाः ॥ ३४ ॥ नवमे शुभ-धर्मौ च भाग्यं गुरुगृहं तपः ॥ त्रित्रिकोणं त्रिकोणं च पुण्यं कल्याणमुच्यते ॥ ३५ ॥ आस्पदं दशमं मानमाज्ञा खं व्योम कर्म च ॥ मेषूरणं पदं राज्यमाहु-र्भावविदो जनाः ॥ ३६ ॥ एकादशे प्राप्तिलाभौ भव-दायमनोरथाः ॥ रिष्फाख्यं द्वादशेऽन्त्यं च व्ययभावा-स्तनोरमी ॥ ३७ ॥

अष्टमस्थानमें निधन, मृत्यु, मरण, रंध्र, चतुरस्र, छिद्रसंज्ञक, संज्ञा पर्यायवाचक हैं॥३४॥नवमभावमें शुभ, धर्म, भाग्य गुरुगृह, तप, त्रित्रिकोण, त्रिकोण, पुण्य, कल्याण संज्ञायें कही जाती हैं३५ दशमभावकी संज्ञायें आस्पद, दशम, मान, आज्ञा, ख, व्योम, कर्म, मेषूरण, पद, राज्य, भाववेत्ता मनुष्य कहते

हैं ॥ ३६ ॥ ग्यारहवेंमें एकादश, प्राप्ति, लाभ, भव, द्राय, मनोरथ और बारहवेंमें रिष्फ, द्वादश, अंत्य व्यय संज्ञायें हैं इतने लग्न भावसे क्रमशः पर्यायसंज्ञा हैं ॥ ३७ ॥

तनोरुपचया भावा कर्मायभ्रातृशत्रवः ॥
स्वभावतोऽन्येपचया वृद्धिक्षयानिदर्शिनः ॥ ३८ ॥

लग्नसे कर्म १० आय ११ भ्रातृ ३ शत्रु ६ इतने स्थान उपचयसंज्ञक वृद्धिदेनेवाले और अन्यस्थान (अपचय) क्षयदिखानेवाले हैं ॥ ३८ ॥

प्राच्यादिनाथाश्चत्वारः सत्रिकोणा अजादयः ॥ कालं देशं वदेदेभिरेष स्वस्वामिदिग्भवः ॥३९॥ लग्नास्तदशबंधूनां कंटकं च चतुष्टयम् ॥ केन्द्रं च नाम त्रितयं प्रवदंति महर्षयः ॥ ४० ॥ केन्द्राणां परतः स्थानचतुर्णां च द्वयं द्वयम् ॥ तद्द्वये प्राक् पणफरमापोक्लिममथापरम् ॥ ४१ ॥

मेषादि ४ राशि अपनी अपनी त्रिकोण ९ । ५ राशियोंसहित पूर्वादिदिशाओंके बली हैं जैसे १ । ५ । ९ पूर्व २।६।१० दक्षिण ३ । ७ । ११ पश्चिम ४ । ८ । १२ उत्तरमें काल और देश इनसे कहना जो अपनी अपनी दिशासे स्वामी होता है ॥ ३९ ॥ लग्न १ अस्त ७ दश १० बंधु ४ इन स्थानोंकी संज्ञा कंटक चतुष्टय और केन्द्र ये तीन महर्षि कहते हैं ॥ ४० ॥ केंद्रस्थानोंसे परके ४ स्थान और उनसे भी परेके ४ स्थान जो एक केन्द्रसेपरे दूसरेके भीतर हैं इनमें पहिले वाले २।५।८।११ की संज्ञा पणफर और दूसरेवालों ३ । ६ । ९।१२ की आपोक्लिम है ॥ ४१ ॥

ज्ञेया होरादयो भावा गुरुज्ञेशयुतेक्षिताः ॥ बलवंतो बलास्तेस्युः परयुक्तविलोकिताः ॥ ४२ ॥ नरास्तु बलिनो लग्ने चतुर्थे जलराशयः॥ सप्तमे वृश्चिकः प्राणी दशमे च चतुष्पदाः ॥ ४३ ॥ ज्ञेयाः पणफरे मध्या आपोक्लीमे बलोज्झिताः॥ दिवा मनुष्या बलिनो निशि ज्ञेयाश्चतुष्पदाः ॥४४ ॥ संध्याद्वये च बलिनो विज्ञेयाः कीटराशयः ॥ ४५ ॥ इति श्रीमहादेवपाठकविरचिते जातकशिरोमणौ राशिप्रभेदाध्यायः प्रथमः ॥ १ ॥

लग्नआदि भाव बृहस्पति बुध और अपने स्वामीसे युक्त वा दृष्ट होनेसे बलवान् जानने और शत्रुसे युक्त दृष्ट होनेपर निर्बल होते हैं ॥४२॥मनुष्यराशि लग्नमें जलचर चतुर्थमें वृश्चिकसरीखे कीट राशि सप्तममें और दशममें चतुष्पदराशि बलवान् होते हैं ॥ ४३ ॥ तथा पणफरमें मध्य और आपोक्लीममें बलरहित जाननी दिनमें मनुष्य राशि रात्रिमें चतुष्पद ॥ ॥ ४४ ॥ और संध्याओंमें कीटराशि बलवान् होती हैं ॥ ॥ ४५ ॥ इति जातकशिरोमणौ महीधरीभाषायां राशिप्रभेदाध्यायः प्रथमः ॥ १ ॥

कालात्माऽर्को मनश्चन्द्रः कुजः सत्त्वं बुधो वचः ॥
गुरुर्ज्ञानसुखे कामः शुक्रो दुःखं दिनेशजः ॥ १ ॥
आत्मादयो गुणास्तस्य बलिनो बलवद्ग्रहैः ॥
विबला बलहीनैस्तैर्विपरीतमिदं शनेः ॥ २ ॥

(काल) समयरूप ईश्वरकी आत्मा इसप्रकार है कि, सूर्य शरीर, चंद्रमा मन, (सत्त्व) तेज मंगल, वाणी बुध, ज्ञान और सुख बृहस्पति, कामदेव शुक्र, दुःख शनि ॥ १ ॥ इतने आत्मा आदि उसके गुण हैंजो ग्रह बलवान् हैं उनसे वे गुण बलवान् और निर्बलोंसे निर्बल होते हैं परंतु यहां शनिका फल उलटाहै ॥ २ ॥

राजानौ रविशीतांशू मंत्रिणौ गुरुभार्गवौ ॥ कुमारो ज्ञः कुजो नेता दासो दूतो दिनेशजः ॥ ३ ॥ राजादयो व्योमचरा बलिनो यस्य जन्मनि ॥ तदाश्रयाः कुल-समा विबलैर्बलहीनकाः ॥ ४ ॥

सूर्य चंद्रमा राजा, बृहस्पति शुक्र मंत्री, बुध (कुमार) युवराज, मंगल सेनापति, और शनि दास तथा दूत है ॥ ३ ॥ राजाआदि ग्रह जिसके जन्ममें जिस अधिकारवाले बलवान् हों उस अधिकारीके आश्रयानुकूल अपने कुलानुमान ऐश्वर्य्यादि पाते हैं जैसे जिसके सूर्य चंद्रमा बली हों तो राजाश्रयसे कुलानुमान आजीवादि पावैगा वा वही कामकरेगा जो ग्रह निर्बल हों उनका ऐसेही विपरीत जानना ॥ ४ ॥

हेलिः सूर्य्यो विधुश्चन्द्रो हेम्नो विद्बोधनो बुधः ॥ आरो वक्रः कुजः क्रूरः कोणो मंदोऽसितोऽर्कजः ॥ ५ ॥ जीवोंगिरा सुरगुरुर्वाक्पतीज्यौ सितो भृगुः ॥ आस्फुजिद्भृ-गुपुत्रश्च दैत्यपूज्यश्च भार्गवः ॥ ६ ॥ तमो राहुरगुः पातो सुरः केतुः शिखी गुदः ॥ पर्यायशब्दैरन्यैश्च विज्ञेया मिहिरादयः ॥ ७ ॥

हेलि सूर्यका नाम, विधु चंद्रमाका, हेम्ना, वित्, बोधन, बुधके, आर, वक्र, कुज, क्रूर मंगलके, कोण, मंद, असित, अर्कज शनिके ॥ ५ ॥ जीव, अंगिरा, सुरगुरु, वाक्पति, ईज्य बृहस्पतिके, सित, भृगु, आस्फुजित, भृगुपुत्र, दैत्यपूज्य, भार्गव, शुक्रके ॥ ६ ॥ तम, राहु, अगु, पात, असुर, राहुके और केतु, शिखी, गुद, केतुके, सूर्यादिग्रहोंके ये पर्याय नाम हैं और नाम ग्रंथांतरोंके उक्त भी जानने ॥ ७ ॥

रविः शुक्रः कुजो दैत्यः शनिश्चन्द्रो बुधो गुरुः ॥ प्राच्यादीशाः कुजार्कार्किपापास्तैः संयुतो बुधः ॥ ८ ॥ ताम्रो रविः सितश्चन्द्रो रक्तवर्णः कुजो बुधः ॥ हरिद्वर्णौ गुरुः पीतःसितश्चित्रोऽसितः शनिः ॥ ९ ॥

पूर्वदिशाका स्वामी सूर्य, आग्नेयका शुक्र, दक्षिणका मंगल, नैर्ऋत्यका राहु, पश्चिमका शनि, वायव्यका चंद्रमा, उत्तरका बुध, ईशानका बृहस्पति है, मंगल सूर्य शनि पापसंज्ञक हैं और पापयुक्त बुध भी पाप ही माना जाता है॥८॥सूर्यका ताम्रवर्ण, चन्द्रमाका श्वेत मङ्गलका रक्त, बुधका हरित, बृहस्पतिका पीत, शुक्रका चित्र, शनिका कृष्णवर्ण है ॥ ९ ॥

नपुंसकौ बुधशनी युवती शशिभार्गवौ ॥ शेषा नराः शशी क्षीणः पापः पक्षबलेन हि ॥ १० ॥ कुजस्य जन्मभूरग्निर्विदः क्षितिरुदाहृता ॥ गुरुभार्गवसौराणां व्योमवारिमरुद्गणाः ॥ ११ ॥ विप्राधिपौ शुक्रगुरू राज्ञः कुजरवी प्रभुः ॥ शशी वैश्यस्य शूद्रस्य बुधोंत्यस्य पतिः शनिः ॥ १२ ॥ चन्द्रार्कगुरवः सत्त्वं बुध-

शुक्रौ रजोगुणौ ॥ तमोगुणौ कुजशनी स्वदशासु गुणप्रदाः ॥ १३ ॥

बुध शनि नपुंसक, चन्द्रमा शुक्र स्त्रीग्रह, अन्य सूर्य मंगल बृहस्पति पुरुषग्रह हैं, क्षीण चन्द्रमा पक्षबलमें पाप ही माना जाता है ॥ १० ॥ मंगलकी जन्मभूमि अग्नि बुधकी पृथ्वी, कही है, बृहस्पतिकी आकाश, शुक्रकी जल और शनिकी वायुगण है ॥ ११ ॥ ब्राह्मण वर्णके स्वामी बृहस्पति, शुक्र, क्षत्रियोंके सूर्य मंगल वैश्योंका, चन्द्रमा शूद्रोंका, बुध और अंत्यज जाति का स्वामी शनि है ॥ १२ ॥ चन्द्रमा सूर्य बृहस्पति सत्त्वगुणी बुध शुक्र रजोगुणी और मंगल शनि तमोगुणी है अपने गुणानुकूल फल अपनी दशाओंमें देते हैं ॥ १३ ॥

भास्करो मधुवद्याष्टिश्चतुरस्रतनुः स्मृतः ॥ बहुपित्तप्रकृतिकः कीकसाढ्योऽल्पमूर्द्धजः ॥ १४ ॥ प्राज्ञः शशी मृदुवचाः शुभदृक्कफमारुतः ॥ क्रूरदृक् पैत्तिकोदारसमज्जश्चारुणः कुजः ॥ १५ ॥ चन्द्रजो गद्गदवचाः सततं हसने रुचिः ॥ सस्थूलवाङ्रुत्पित्तकफप्राज्ञ उदाहृतः ॥ १६ ॥ पिंगलेक्षणकेशश्च गुरुः श्रेष्ठमतिः स्मृतः ॥ कफात्मको बृहद्गात्रो वसाधातुसमन्वितः ॥ १७ ॥ सुलोचनः सुखी कांतः कृष्णवक्रशिरोरुहः ॥ कफानिलात्मा भृगुजः शुक्रसार उदाहृतः ॥ १८ ॥ कृशदीर्घवपुः स्थूलः स्नायुदन्तोऽनिलः शनिः ॥ १९ ॥

ग्रहोंके आकारादि लक्षण कहते हैं कि सूर्य शहदकासा रंग नेत्रोंका (चतुरस्र) छोटा एवं स्थूल अथवा शिरसे पैरों-

तक और दोनों हाथ लम्बे फैलायके मापमें बराबर हो उसे चतुरस्र कहते हैं पित्तप्रकृति हड्डी मजबूत केश थोडा ॥ १४ ॥ चन्द्रमा विद्वान् कोमल वाणी कहनेवाला, सुन्दरदृष्टि, कफ वायु प्रकृति, मंगल क्रूर दृष्टि पित्तप्रकृति उदार चर्बीवाला रक्तरंग ॥ १५ ॥ बुध गद्गद् वाणी वारंवार हँसनेमें रुचि मसखरा मोटी आवाज वात पित्त कफ तीनों प्रकृति और पंडित कहा है ॥ १६ ॥ बृहस्पति पीलेनेत्र पीलेकेश श्रेष्ठबुद्धि कफ प्रकृति बडे बडे हस्तपादादि अवयव चर्बी और धातुबहुल ॥ १७ ॥ सुन्दरनेत्र, सुखी, सुहावना, शिरके बाल काले और मुडेहुये, कफपित्तप्रकृति शुक्रसार शुक्र है ॥ १८ ॥ शनि, लम्बाशरीर, माडा, नसी एवं दांत मोटे वायुप्रकृति वाला है उक्त लक्षण जो ग्रहोंके कहे हैं इनका विचार मनुष्य शरीर पर किया जाता है जिसका जो ग्रह बलवान् हो उसके शरीरमें उसीके उक्तलक्षण होते हैं ॥ १९ ॥

देवालयाधिपः सूर्य्यश्चंद्रो जलगृहाधिपः ॥ २० ॥ अग्निशालाधिपो भौमः क्रीडालयपतिर्बुधः ॥ गुरुर्भंडिगृहाधीशः शयनालयपो भृगुः ॥ २१ ॥ गुहाद्यवस्करचये शनिरीश उदाहृतः ॥ प्रश्ने वा जन्मकाले वा यो ग्रहो बलवान् भवेत् ॥ २२ ॥ देवालयादौ प्रवदेन्नष्टं वा वस्तु जन्म वा ॥ २३ ॥

सूर्य देवालयका चन्द्रमा जलके घरका मंगल अग्निशाला का बुध खेलके घरका बृहस्पति भांडागारका शुक्र शयनके घरका ॥ २० ॥ घरआदिके उपयोगी तृणकाष्ठादिकोंके स्थान का स्वामी है प्रश्नमें अथवा जन्म समयमें जो ग्रह बलवान् हो उसका स्थान देवालयादिमें कहना अथवा नष्टादिवस्तुके बतलाने तथा जन्मस्थान कहनेमें यह विचार करना ॥ २१-२३

स्थूलं नवं वाग्निहतं जलक्लिन्नं च मध्यमम् ॥ सूतीवासो दृढं जीर्णं तद्वर्णे ग्रहवर्णवत् ॥ २४ ॥ सूतीगृहे वदेत्ताम्रमणयो हेमपित्तालिः ॥ सुवर्णं रजतं लोहमर्कान्मुक्ता च भार्गवात् ॥ २५ ॥ शनिशुक्रकुजेन्दुज्ञगुरूणां शिशिरादयः॥द्रेष्काणैर्ऋतवो वाच्यास्तेषु चोदयवर्तिषु ॥२६॥

सूतिकाआदिके वस्त्रकहनेमें सूर्य बलवान् हो तो मोटा चन्द्रमा होतो नवीन एवं मंगलसे अग्निदग्ध बुधसे जलमें भीगा बृहस्पतिसे मध्यम शुक्रसे मजबूत और शनिसे पुराना फटा जानना उस वस्त्रका रंग उस ग्रहके पूर्वोक्तरंगके तुल्य कहना ॥ २४ ॥ सूतिकाके घर विशेषधातु प्रथम गया धातु सूर्यसे तांबा चन्द्रमासे मणिजात मंगलसे सुवर्ण बुधसे पित्तल बृहस्पतिसे सुवर्ण शुक्रसे चांदी शनिसे लोहा और शुक्रसे मोती भी कहना ॥ २५ ॥ ग्रहोंकी ऋतु कहते हैं कि, शनि की शिशिर, शुक्रकी वसंत, मंगलकी ग्रीष्म, चन्द्रमाकी वर्षा बुधकी शरद, गुरुकी हेमन्त, सूर्यकी ग्रीष्म है यह विचार नष्ट जातक तथा चौर विचारमें काम आताहै लग्नमें जोग्रह हो उसके द्रेष्काणपतिकी ऋतु जाननी ! लग्नमें बहुत ग्रह हों तो उनमें विशेष बलवान्की और लग्नमें कोईभी ग्रह न होतो लग्नमें जिसका द्रेष्काण हो उसकी कहनी ॥ २६ ॥

सौरेज्याराः पूर्णदृशस्त्रिदशेऽथ त्रिकोणयोः ॥ चतुरस्रे परे जायागृहेर्केन्दुज्ञभार्गवाः ॥ २७ ॥ ग्रहाणां त्रिदशे दृष्टिरेकपान्नवपंचमे ॥ द्विपादा दृक्च तुरस्रे त्रिपात्पूर्णदृशो द्युने ॥ २८ ॥

दृष्टि कहते हैं कि, शनि अपने स्थित भावसे ३।१० स्थानोंमें बृहस्पति ९।५ में मंगल ४।८ में अन्य ग्रह सूर्य चन्द्रमा. बुध शुक्र सप्तममें दृष्टिका पूर्ण फल देते हैं ॥ २७ ॥ दूसरा प्रकार है कि, ग्रहोंकी ३।१० भावोंमें एक पाद ९।५ में दोपाद ४।८ में तीनपाद और सप्तममें पूर्ण दृष्टि होतीहै॥२८॥

काला रवीन्दुभौमानामयनक्षणवासराः ॥ ऋतुमासार्द्धवर्षाणां ज्ञेज्यभृग्वर्कजाधिपाः ॥ २९ ॥ लग्नोदितांशनाथस्य कालो वाच्योंशसंख्यया ॥ भविष्यद्वर्त्तमानेथो गर्भाधाने जये रिपोः ॥ ३० ॥ तथाऽन्येषु च कार्येषु गणकेन विनिश्चयात् ॥ ३१ ॥

अयनका स्वामी सूर्य. मुहूर्तका चंद्रमा. (वार) दिनका मंगल ऋतुका बुध. महीनोंका बृहस्पति. पक्षोंका शुक्र. और वर्षोंका शनि है ॥२९॥ लग्नमें जो उदित नवांश है उसके स्वामी अंश संख्याके अनुसार अयनादि समय ज्योतिषीने भविष्य वा वर्त्तमान काल. गर्भाधानमें शत्रुके जीतनेमें तथा अन्य कार्य नष्टजातक प्रश्न गमागम विवाह कार्य सिद्धि आदिका विचार इससे करना अर्थात् लग्नमें जो नवांश वर्त्तमान है उसका स्वामी उस नवांशसे जितने नवांशपर स्थित हो उतने संख्यक अयनादिकाल ग्रहवशसे उस कार्यको कहना इतनेही विचारसे नष्ट जन्मपत्री बनजाती इसका खुलासे नष्टजातकाध्यायमें कहेंगे ॥ ३० ॥ ३१ ॥

कटुको लवणस्तिक्तो मिश्रितो मधुरो रसः ॥ अम्लः कषायो गर्भिण्या भोजनेर्कादिशक्तिभिः ॥ ३२ ॥ धनांत्यबंधुधीधर्मरंध्रोच्चेशास्त्रिकोणतः ॥ सुहृदः प्रोक्तभवने

भवंति यस्य सद्मानि ॥ ३३ ॥ सम एक भयोनुक्तस्था नस्था रिपवः स्मृताः ॥ अधिमित्रसुहृत्तुल्याः स्वत्रि लाभादिषु स्मृताः ॥ ३४ ॥

सूर्यका कडुआ, चंद्रमाका सलोना, मंगलका तीता, बुध का मिश्रित, बृहस्पतिका मीठा, शुक्रका खट्टा, शनिका कसेला, ये ग्रहोंके रस हैं जो ग्रह बलवान् हो उसका उक्तरस सूतिका भोजनप्रश्न आदिकोंमें कहना ॥ ३२ ॥ अब मित्र शत्रु विचारमें प्रथम सत्याचार्यका मत कहते हैं कि ग्रहके अपने मूलत्रिकोणसे २ । १२ । ४ ।५। ९। ८ । राशियोंके और अपनी उच्चराशिके स्वामी मित्र अन्य शत्रु होतेहैं जैसे मंगलका मूल त्रिकोण है इससे चौथेका स्वामी चंद्रमा पांचवेंका सूर्य १ । १२ का गुरु ये मित्र हुये. और मेषसे ३ । ६ अनुक्त होनेसे इनका स्वामी बुध शत्रु भया मेषसे २ । ७ का स्वामी शुक्र इनमें २७ उक्त अनुक्त हैं इस उक्तानुक्त होनेसे शुक्र सम भया. १० । ११ अनुक्त हैं इनमें १० उच्चराशि होनेसे उक्त ११ अनुक्त है इनका स्वामीशनि उक्तानुक्त होनेसे सम भया. जहां दो प्रकार उक्त सो मित्र जहां दो प्रकार अनुक्त सो शत्रु जो उक्त तथा अनुक्त सो सम होता है यह नैसर्गिक मैत्री है और तत्काल में अपनेसे ३। ११ । २ ।१२ । १० । ४ स्थान, में बैठा ग्रह तत्काल मित्र होता है. इन दोनहूं प्रकारोंसे जो मित्र हो वह अधिमित्र कहाता है ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

रवेः शत्रू मंदसितौ ज्ञः समः सुहृदोऽपरे ॥ रविज्ञौ सुहृदावन्ये समाश्च रजनीपतेः ॥ ३५ ॥ समौ सितार्की भौमस्य बुधोऽरिः सुहृदोऽपरे ॥ शुक्रसूर्यौ हितौ ज्ञस्य चंद्रः शत्रुः समाः परे ॥ ३६ ॥ मध्योर्कजोऽरी ज्ञसिताव

परे सुहृदो गुरोः ॥ ज्ञार्कौ कुजगुरू शेषौ मित्रे तुल्यावरी भृगोः ॥ ३७ ॥ ज्ञशुक्रौ सुहृदावीज्यः समोऽन्ये रिपवः शनेः ॥ मित्रामित्रसमाः प्रोक्ता गृहा नैसर्गिका अमी ॥ ३८ ॥ तत्काले स्वायबंध्वाज्ञात्रयांत्ये सुहृदः स्थिताः ॥ रिपूदासीनमित्राणि सममित्राऽधिमैत्रपाः ॥३९॥

पूर्वोक्तानुसार रिपु सम मित्र और सम मित्र अधिमित्र. प्रकट कहते हैं कि, सूर्यके शनि शुक्र शत्रु, बुध सम, चं० मं० बृ० मित्र हैं। चंद्रमाके सूर्य बुध, मित्र और सब सम हैं शत्रु है ही नहीं ॥ ३५ ॥ मंगलके शु० श० सम. बुध शत्रु, अन्य. सू० चं० बृ० मित्र हैं। बुधके शु० सू० मित्र चंद्रमा शत्रु अन्य मं० बृ० श० सम हैं ॥ ३६ ॥ गुरुके शनि सम बुध शुक्र शत्रु सू० चं० मं० मित्र हैं शुक्रके बु० श० मित्र मं० बृ० सम. सू० चं० शत्रु हैं ॥ ३७ ॥ शनिके बु० शु० मित्र वृ० सम. सू० चं० मं० शत्रु हैं. इस प्रकार ग्रहोंकी नैसर्गिक मित्र शत्रु समता कही है ॥ ३८ ॥ तत्कालमें २ । ११ । ४ । १० । ३ । १२ स्थानोंमे अपने भावसे मित्र होते हैं जो दोनहूं प्रकारोंसे मित्र वह अधिमित्र जो दो प्रकारसे शत्रु सो अधिशत्रु होजाता है जो एक जगह मित्र दूसरीमें शत्रु वह सम होता है ॥ ३९ ॥

स्वोच्चमूलसुहृच्चैव स्वनवांशोपगे ग्रहे ॥ स्वषड्वर्गे स्त्रियो युग्मे विषमे पुरुषा गृहाः ॥ ४० ग्रहाः स्थानबला ज्ञेया विद्गुरू कुजभास्करौ ॥ शनिरिंदुभृगू लग्नाद्दिग्बलाः प्राक्प्रदक्षिणाः ॥ ४१ ॥ स्वस्वदिक्केंद्रसंस्थानां बलं षष्टिकलावधि ॥ दिग्दिक्कलाभिर्ह्रसति बलमासप्तमावधेः ॥ ४२ ॥ ग्रहाः स्युः कालबलिनो नक्तं सौरिकुजेंदवः ॥ दिने गुर्वर्कभृगवो बली ज्ञश्च दिवा

निशि ॥ ४३ ॥ कृष्णे च पापा बलिनः शुक्ल-पक्षे शुभग्रहाः ॥ स्ववर्गे स्वदिने मासे बलवंतः शुभा ग्रहाः ॥ ४४ ॥ मंदावनीसूनुबुधा गुरुशुक्रेंदुभास्कराः ॥ निसर्गबलिनो ज्ञेया बलसाम्ये बलाधिकाः ॥ ४५ ॥ सौम्यायनेऽर्कशशिनौ याम्येऽन्ये वक्रसंगमे॥ उत्तरस्थाः पूर्णकरा युद्धे चेष्टा बलाऽन्विताः ॥ ४६ ॥ इति श्रीपाठकमहादेवविरचिते जातकशिरोमणौ ग्रहयोनिभेदाऽध्यायो द्वितीयः ॥ २ ॥

षड् बल कहते हैं कि, ग्रह अपने उच्च. मूलत्रिकोण तत्काल मित्र अपने नवांशसंज्ञक षड्वर्गमें स्थित एवं समराशिमें स्त्री-ग्रह विषममें पुरुषग्रह, स्थान बली होते हैं पूर्णराश्यंशकादिकोंमें पूर्णबल न्यूनमें अनुपातसे न्यून होता है. यह स्थानबल है लग्नादि ४ केन्द्रोंमें ४ दिशा हैं सो लग्नमें बुध बृहस्पति चतुर्थमें मंगल सूर्य सप्तममें शनि दशममें चं० शु० पूर्वादिप्रदक्षिणक्रमसे बली होते हैं ॥ ४० ॥ ४१ ॥ अपने अपने दिशाके केंद्रों स्थितग्रहोंका ६०कला बल होता है दूसरे स्थानसे १०।० कला प्रत्येक भावमें घटकर सप्तममें शून्य होजाता है यह दिग्बल है ॥ ४२ ॥ ॥ कालबल कहतेहैं कि, शनि, मंगल, चन्द्रमा रात्रिमें, बृहस्पति, सूर्य, शुक्र, दिनमें और बुध दिनरात्रि दोनहूंमें बलपाता है ॥ ४३ ॥ पक्षबल कहते हैं पाप-ग्रह कृष्णपक्षमें शुभग्रह शुक्लपक्षमें बली होते हैं अपने वर्गमें अपने वारमें अपने महीनेमें शुभग्रह बलवान् होते हैं ॥ ४४ ॥ नैसर्गबल कहते हैं कि, शनिसे मंगल, मंगलसे बुध, बुधसे गुरु, गुरुसे शुक्र, शुक्रसे चंद्रमा, चंद्रमासे सूर्य क्रमसे अधिक

बलवान् हैं अन्यबलोंकी समतामें इस बलसे बलाधिक होता है ॥ ४५ ॥ अयनबल कहते हैं कि, उत्तरायणमें सूर्य शनि, अन्य ग्रह दक्षिणायनमें तथा वक्रतामें अयनबली होते हैं चेष्टाबल कहते हैं कि, जो ग्रह युद्धमें जीते अर्थात् युद्धहोने बाद उत्तरसर हो और कांतियुक्त भी हो वह चेष्टाबली होता है ॥ ॥ ४६ ॥ इति श्रीजातकशिरोमणौ महीधरकृतायां माहीधरीभाषायां ग्रहभेदो नामाऽध्यायो द्वितीयः ॥ २ ॥

वियोनिप्रश्नविज्ञानं वराहमिहिरोदितम् ॥ प्रवक्ष्ये सुगमैर्वर्णैर्ग्रहलग्नबलाबलैः ॥ १ ॥ ग्राम्या वियोनयः केचित्केचिद्वन्या वियोनयः ॥ जलजा स्थलजाश्चैव प्राणिनो भिन्नरूपिणः ॥ २ ॥ व्याघ्राः शृगालाः मार्जारा मृगमाहिषवानराः ॥ गावश्चमर्यो गवयाः सूकरा नकुला अपि ॥३॥ गोधामूषकसर्पाश्च [illegible] बिलेशयाः ॥ एते त्वारण्यसत्त्वाश्च कतिचिद्ग्राम्यवासिनः ॥ ४ ॥ अजा गावो महिष्यश्च तुरगा उष्ट्रवेसराः ॥ गर्दभाः कृकलासाश्च श्वानोऽन्या गृहगोधिकाः ॥ ५ ॥ स्थलजा जलजाश्चैव ग्राम्यारण्याश्च पक्षिणः ॥ वटकाः कुक्कुटाः काकाः सारिका ग्रामचारिणः ॥ ६ ॥ कोककारण्डहंसाश्च सारसा टिट्टिभादयः ॥ कुररीबककारंबचक्रवाका जलाश्रयाः ॥ ७ ॥ आरण्याः स्थलजाः श्येनाः शुका गृध्रा विहंगमाः ॥ कोकिलाः खंजरीटाश्च कृष्णकाकाश्च पक्षिणः ॥ ८ ॥ जलजाः स्थलजा

वृक्षा दुर्भगाः सुभगा अपि॥ वियोनिसंज्ञामेतेऽपि लभंते मुनिवाक्यतः॥ ९॥

अब इस अध्यायमें. वराहमिहिराचार्यका कहा हुआ वियोनि. (विनायोनिसे उत्पन्न) पदार्थोंके प्रश्नका ज्ञान सुगम अक्षरोंकरके ग्रह एवं लग्नके बलाबलके अनुसार कहते हैं ॥ १ ॥ वियोनिका तात्पर्य यही है कि, जो वृक्षआदि भगद्वारा उत्पन्न नहीं भये वही वियोनि हैं, परंतु यहां आचार्योंने अलग प्रकरण करनेकी आवश्यकता न समझकर गौआदि पशु, वत्तक आदि पक्षि, वृश्चिकादि तिर्यक् भी इसी वियोनिप्रकरणमें कहदिये हैं. इसलिये कहते हैं कि, कोई ग्राम्य कोई वनचर कोई जलज कोई स्थलज, भिन्न रूप प्राणीहैं ॥ २ ॥ वाघ, स्यार, वनबिलाई, मृग, जडाउ, झांक, वानर, गवयमृग, चामरी गौ, सूअर, नोला, आदि वनचर हैं॥३॥गोधा,चूहा,सर्प,बिच्छू,आदि.छिद्र,बांबी आदियोंमें रहनेवाले हैं. ये सर्व वनके जीव हैं ॥ और इनमें कितने ही ग्रामवासी भी हैं ॥ ४ ॥ जो बकरी, गौ, भैंस, घोडे, ऊंठ, खच्चर, गदहा, कृकलास, कुत्ता और छिपकली आदि नामोंसे प्रसिद्ध हैं ॥ ५ ॥ तथा स्थलज, जलज, वन्य, आरण्य पक्षियोंमें वत्तक, कुक्कुट, काक, मेंढ़ा, ये ग्रामचारीहैं ॥ ६ ॥ कोक, कारंड, हंस, सारस, टिट्टिभआदि, कुरर, बगुला, कारंब, चकवा जलाश्रयी हैं वनके स्थलज, बाज, शुक, गीध, पक्षिराज गरुड, कोकिला खंजन काला कौआ ये पक्षी हैं ॥ ७ ॥ ८ ॥ ऐसे ही जलज स्थलज वृक्षको कोई दुर्भग कोई सुभग अर्थात् कोई शुभ कोई निकम्मे कोई फूल फलोंके कोई घास लकडीके कामके भी अनेक हैं ये भी मुनिवाक्योंसे वियोनि संज्ञाको प्राप्त होते हैं ॥ ९ ॥

ग्राम्यारण्यजलोद्भूतैर्द्विचतुष्पदराशिभिः ॥ अबलैर्ब-
लवद्भिश्च तत्समाना वियोनयः ॥ १०॥ प्रश्नलग्नं समा-
नीय ग्रहांस्तत्कालसंभवान् ॥ षड्बलानि ग्रहणांश्च
द्वादशांशगतं विधुम् ॥ ११ ॥ क्रूरग्रहैरतिबलैर्विबलैश्च
शुभग्रहैः॥चन्द्राक्रांतद्वादशांशरूपे क्लीबे चतुष्टये॥१२॥
प्रश्नं वियोनौ प्रवदेत्प्रष्टुर्वाक्लीबवीक्षणात् ॥ क्लीबे केन्द्र
गते क्रूरा बलवन्तश्च कारणम् ॥ १३ ॥ बलिनः स्त्री-
खगाः क्रूराः परांशे विबलाः शुभाः ॥ पूर्ववत्क्लीबदृक्केंद्र-
भागरूपं वियोनिभे ॥ १४ ॥

प्रश्न वा जन्ममें, ग्राम्य, अरण्य, जलचर, द्विपद, चतु-ष्पद, जैसी राशि जिस प्रकार बलवान् वा निर्बल हो. उसके समान वियोनि जाननी ॥ १० ॥ प्रश्नलग्न स्पष्ट तात्कालिक ग्रह स्पष्ट और ग्रहोंके षड्बलसाधन भी करलेना तब जिस द्वादशांशमें चन्द्रमा है उस राशिके तुल्य वियोनिका रंगरूप आदि कहना. यह निश्चय है ॥ ११ ॥ योग कहते हैं कि, क्रूर ग्रह बहुत बलवान् तथा शुभग्रह निर्बली और नपुंसक (बुध शनि) केंद्रमें हो तो चन्द्रमा जिस द्वादशांशमें है उसके समान वियोनियोनि कहना ॥ १२ ॥ इस योगमें प्रकारांतर भी है कि, नपुंसक ग्रह लग्नचन्द्रमाको देखें केंद्रमें स्थित हों. और क्रूरग्रह बलवान हों यही वियोनिके कारण हैं उन्हींके अनुसार प्रश्नकर्ताका प्रश्न वियोनिका कहना ॥ १३ ॥ दूसरा योग कहते हैं कि, स्त्रीग्रह चं० शु० तथा क्रूरग्रह बलवान् हों और शुभग्रह शत्रुनवांशकोंमें तथा निर्बल हों और पूर्वोक्त प्रकारसे केंद्रस्थ नपुंसकग्रह देखें तो राशितुल्य बियोनि कहना ॥ १४ ॥

मेषो दिवा मृगा वन्या रात्रौ ग्राम्या अजादयः ॥ वृषो दिवा चमर्यश्च गवया महिषादयः॥ १५॥ कन्यामिथुनयो-र्वन्या विज्ञेया वानरा अपि ॥ कर्कटे जलजाः सत्त्वाः कर्कटाः शम्बुकादयः ॥ १६ ॥ शुक्तिकाः शम्बुकाः शंखा मुक्ता अपि कपर्दिकाः॥ सिंहे व्याघ्रा जम्बुकाद्या नखिनो वनसंभवाः ॥ १७ ॥ तुलायां ग्राम्यपशवः सूकराः कुक्कुटादयः ॥ वृश्चिके वृश्चिकाः कीटाः सर्पा मूषा बिलेशयाः ॥ १८ ॥ कोदंडस्य परे खण्डे तुरगा गर्दभादयः॥मृगाद्यखण्डे हरिणा जलजा उत्तरे स्मृताः॥ ॥ १९ ॥ कुंभे जलचरा जीवा पक्षिणश्च जलेशयाः ॥ मीने मीना कपर्दाश्च शंखा ये च जलोद्भवाः ॥ २० ॥ ग्राम्ये चतुष्पदेऽरण्ये मृगव्याघ्रादिकास्तथा ॥ मेषादि राशयो ज्ञेया लेख्या वर्णविनिर्णयः ॥ २१॥

चन्द्रस्थितद्वादशांशराशियोंके अनुरूप वियोनि कहते हैं कि, मेष राशि दिनमें. हो तो मृग. वनचर, रात्रिमें. ग्राम्य-पशु बकरा आदि. वृष. दिनमें. (चामरी मृग) चौरीगाय गयमृग. और भैंसे आदि ॥ १५ ॥ कन्या एवं मिथुनमें वनचर और वानर भी जानने कर्कटमें जलचर जीव.कर्कट.घोंघा आदि ॥ १६ ॥ और सीपी. (गंडेल) जलजंतुविशेष शंख. मोती कौडी, सिंहमें वाघ स्यार आदि. वनचर नखी जीव ॥ १७॥ तुलामें ग्राम्यपशु सूकर कुक्कुटादि ॥ १८ ॥ वृश्चिकमें विच्छू, कीडे. सर्प. मूषक और बिलोंमें रहनेवाले जीव धनके पिछले दलमें घोडे गधे आदि (मृग) मकरके पूर्वदलमें हरिण उत्तर

दलमें जलजन्तु ॥ १९ ॥ कुंभमें जलचर जीव जलचर पाक्षि मीनमें मछली कौडी शंख और जलजीव ॥ २० ॥ इस प्रकार प्रश्नमें एवं वर्णनिर्णयमें. ग्राम्य चौपइये वनचर मृग बाघ आदिमें मेषादिराशि जाननी ॥ २१ ॥

शिरो मेषो वृषो वक्त्रं गलश्च चरणौ नृयुक् ॥ स्कंधे कर्कटकः सिंहः पृष्ठे कन्या स्थितोरसि ॥ २२ ॥ तुला पार्श्वद्वये कुक्षी वृश्चिकोश्वस्तु पाणिके ॥ मकरोंघ्री मेढ्र मुष्कं कुंभः स्फिक् पुच्छकं झषः ॥ २३ ॥

वियोनिके राश्यंगविभाग कहते हैं कि । मेष शिर वृष मुख और कंठ, मिथुन अगले पैर कर्क कंधा सिंह पीठ कन्या छाती ॥ २२ ॥ तुला दोनों बगल वृश्चिक कुक्षि धन हाथ मकर पिछले पैर कुंभ लिंग वृषण मीन(स्फिग्)गोप्याङ्ग और पुच्छ जानने यहां अगले पिछले पैर कहनेसे चतुष्पद और हाथभी जो कहे हैं इससे हाथवाले तिर्यग् जीव जानने ॥ २३ ॥

वर्णं वदेद्वियोनौ तु लग्नलग्नांशयोर्बलात ॥ ग्रहयोगेक्षणाद्वापि नानावर्णं वदेद्ग्रहात् ॥ २४ ॥ ग्रहा क्रूरा यदंगस्था घातं तत्र वदेद्बुधः ॥ शुभग्रहाः यदंगस्थास्तत्तद्वर्णं समाशिदेत् ॥ २५ ॥ सप्तमस्था गृहा ये च तेषां वर्णेन रेखिका ॥ वक्तव्या पृष्ठगा एव रेखिका दृष्टि संख्यया ॥ २६ ॥

वियोनिमें रंग लग्न और लग्नगत नवांशके बलसे कहना अथवा जो ग्रह लग्नमें हैं वा जो लग्नको देखता है उस ग्रहके अनुसार कहना बहुतोंका योग वा दृष्टि हो तो नानावर्ण कहना ॥ २४ ॥ उपरोक्त कालांगविभागमें यह विचार है कि

क्रूरग्रह जिस अंगमें हो उसमें घात आदिका चिह्न और शुभग्रह अंगमें पुष्टता वा सुन्दरता आदि ग्रहवर्ण समान कहना ॥ २५ ॥ जो ग्रह सप्तमस्थानमें हो उसके वर्णकी रेखा कहनी वह भी अग्रदृष्टि पृष्ठदृष्टिके अनुसार आगे वा पीछे और ग्रहदृष्टि संख्याके अनुसार उनकी संख्या कहनी ॥ २६ ॥

लग्नांशबलयोगेन ग्रहयुक्ते क्षणेन वा ॥ पक्षिणोपि प्रवक्तव्या जलजा स्थलजा अपि ॥ २७ ॥ नृयुग् द्वितीय प्रथमश्च सिंहे मध्यस्तुलायाः प्रथमो घटस्य ॥ पक्षिदृकाणाः कथिता वियोनौ लग्नेषु तत्स्थेषु च पक्षियोनिः ॥ २८ ॥ खगे दृकाणे बलिनि चरांशे वा बुधांशके ॥ तद्युक्ते वीक्षिते वापि विहगाः स्थलजाम्बुजाः ॥ २९ ॥

वियोनियोंमें भी लग्न तथा लग्नगत नवांशके बल एवं ग्रहके योग तथा दृष्टिसे जलचर और स्थलचर भी पक्षी कहने ॥ ॥ २७ ॥ मिथुन, वृष. मेष. सिंह. तुलाका मध्य और कुम्भका पहिला इतने द्रेष्काण पक्षिसंज्ञक हैं इनमेंसे कोई भी लग्नमें होतो वियोनि पक्षिजाति कहनी ॥ २८ ॥ बलवान् पक्षि द्रेष्काण हो लग्नमें चरांशक हो वा. बुधका अंशक हो अथवा बुधसे युक्त यद्वा दृष्ट हो तो वियोनि स्थलज वा जलज कहनी ॥ २९ ॥

स्थलजा विहगा वाच्याः शनियोगेक्षणोद्भवाः ॥ चंद्रयुग्वीक्षणभवा जलजाः पक्षिणो बुधैः ॥ ३० ॥ वियोनिलग्ने चरभे लग्नेंदुगुरुभास्कराः ॥ विबलास्तरवो वाच्यास्तद्भेदा अंशसंभवाः॥३१॥जलजा जलराश्यंशैः

स्थलजाः स्थलजांशकैः ॥ स्थलांशैः शनियुग्दृष्टैर्जलांशैरिंदुदृग्युतैः ॥ ३२ ॥ यावत्संख्यांशके लग्ने जलस्थलनवांशकाः ॥ तावंत एव तरवः स्थलजा जलजोद्भवाः ॥ ३३ ॥ अर्कांशे तरवः साराः क्षीरिणश्चन्द्रभांशके ॥ कौजे कंटकिनो वृक्षा दुर्भगाः शनिभांशके ॥ ३४ ॥ गुर्वंशे सफला ज्ञांशे विफला ऊषरोद्भवाः ॥ पुष्पवृक्षाश्च शुक्रांशे मुनिभूचरुहचंपकाः ॥ ३५ ॥

लग्नलग्नांशमें शनिका योग वा शनिकी दृष्टि हो तं स्थलज पक्षी कहने यदि चंद्रमाका योग वा दृष्टि हो तो इस से पंडित जलचर पक्षी कहैं॥ ३० ॥ वियोनिप्रश्नमें च लग्न हो तथा लग्नचंद्रमा बृहस्पति और सूर्य निर्बल हो तो वृक्ष कहने उनमें भी कौन वृक्ष है ऐसे विचार में अंशोंसे कहना ॥ ३१ ॥ जलराश्यंशोंसे जलजवृक्ष स्थलराश्यंशोंसे स्थलज वृक्ष जानने' इसमें भी विशेषता है कि स्थलांश हों तो उनमें शनिकी दृष्टि योग और जलराश्यंश हों तो चंद्रमाके योग वा दृष्टिसे उक्तफल पूर्ण जानना ॥ ३२ ॥ जितनी संख्या नवांशक लग्नमें भुक्ते हैं उनमें कितने जलचर और कितने स्थलचर हैं उनके अनुसार उतनी संख्या स्थलज जलज वृक्ष कहने ॥ ३३ ॥ सूर्यका अंशक हों तो (संसारवृक्ष.) पक्की लकडीवाले. चंद्रमाके राशि अंशक हों तो दूधवाले वृक्ष मंगलका होतो कांटा वाले वृक्ष. शनिके राश्यंशकसे (दुर्भग) निकम्मे वा निस्सार वृक्ष.॥३४॥बृहस्पतिके अंशमें फलवाले. बुधकेमें (निष्फल) विनाफलवाले और ऊषर भूमिमें उत्पन्न हुये वृक्ष, शुक्रांशकमें फूल वाले वृक्ष. अगस्ति वृक्ष और चंपा कहने ॥ ३५ ॥

लग्नस्थितांशांशपतिः स्थिरांशोत्तरास्थिरांशैस्तरवः प्रदिष्टाः॥ स्वांशात्परांशोपगतांशनाथस्तावंत एवांशपतुल्यवृक्षाः॥ ३६॥ यदि खलु गृहचारी वृक्षकारी शुभः स्याद्भवति रुचिरवृक्षः कुत्सितायां धरायाम्॥अशुभभवनसंस्थः पापिनः शक्तियुक्ता रुचिरधरणिजाता दुर्भगा भूरुहाः स्युः॥ ३७॥ इति श्रीपाठकमहादेवविरचिते जातकशिरोमणौ वियोनिजन्माध्यायस्तृतीयः३॥

लग्नगत नवांश तथा अंशेष स्थिरराश्यंशकों में हो तो उसके तुल्य अवयवादि वृक्ष कहे हैं यद्वा प्रथम स्थिरांशकसे उत्तरके पुनः वर्त्तमान स्थिरांशकमें हों इस बीच जितने अंशक हों उतनी संख्या कहनी तथा अपन अंशकसे चलकर जितने संख्याक परांशपर गया हो उतनी संख्या वृक्षोंकी कहनी॥ ३६॥ यदि वृक्षवतलाने वा ग्रह पापराशिमें शुभग्रह हो तो ऊषर भूमिमें सुंदर वृक्ष होगा तथा पापग्रहराशिमें पापग्रह बलवान् हो तो सुंदर भूमिमें निकम्मे वृक्ष होवें॥ ३७॥ इति महीधरकृतायां जातकशिरोमणि भाषाटीकायां वियोनिजन्माध्यायस्तृतीयः॥ ३॥

वराहमिहिरोक्तार्थं ज्ञात्वाऽधानविधिं ब्रुवे॥ प्रथमादार्त्तवात्स्त्रीणां मासिमासि यथा रजः॥ १॥ अर्कोन्मुक्तः शशी यद्द्वादशांशानुदेति यत्॥ रजोदर्शनमप्यासां द्वादशाब्दे तु जन्मतः॥ २॥ नारीणामाद्यरजसां विषमा बिन्दवो यदि॥ दृश्यंते वस्त्रसंलग्नाः पुत्रिण्यऽन्यैः सकन्यका॥ ३॥ सुभगा श्वेतवस्त्रा स्यान्नववस्त्रा

पतिव्रता ॥ क्षौमवस्त्रा क्षितीशा स्याद्रक्तवस्त्रातिरोगिणी ॥४॥पीतवस्त्रा सुशीला स्यात्पतिपुत्रप्रवर्द्धिनी ॥ विधवा दुर्भगा नारी जीर्णवस्त्रातिदुःखिनी ॥ ५ ॥

वराहमिहिराचार्यके बृहज्जातकमें कहेहुये अर्थको जान कर मैं आधानविधि कहता हूं अर्थात् उक्तआचार्यने थोडे अक्षरोंमें बहुत अर्थ द्योतन करनेके लिये गूढार्थग्रंथ बनाया उसके यहां विशेषतर स्पष्ट करता हूं कि स्त्रियोंके प्रथमरजोदर्शनसे प्रत्येक मासमें जैसे रजोदर्शन होता है ॥ १ ॥ वह सूर्यसे निकसा चन्द्रमाके तरह बारहवां भाग क्रमसे बढकर एक महीनेमें पुनः वैसा ही होजाता है तैसे ही स्त्रियोंका रजोदर्शन भी भीतर बारहवें भागकरके घट बढ होता हुआ प्रत्येक महीनेमें होता है उसका आरंभ स्त्रियोंके जन्मसे बारहवें वर्षसे होता है२। प्रथमरजोदर्शनमें स्त्रियोंके वस्त्रपर विषमबिन्दु देखेजावें तो वह पुत्रवती होगी. समबिन्दु प्रथम देखेजावें तो कन्या अधिक होंगी ॥ ३ ॥ प्रथमरजोदर्शनके समयमें श्वेतवस्त्र पहिने हो तो सौभाग्यवती रहेगी नवीनवस्त्र हों तो पतिव्रता रेशमीवस्त्र हों तो पृथ्वीकी अधिपतिनी होवे लालवस्त्र हों तो अतिरोगिणी रहै ॥ ४ ॥ पीलेवस्त्र हों तो सुशील एवं पतिकी आयुबढाने और पुत्रोंको बढानेवाली. यदि पुराने वस्त्र हों तो विधवा, दुर्भगा और अतिदुःखिनी होगी यहां उपलक्षणसे मलिन, कृष्ण और फटे टूटे वस्त्रोंका भी फल जानना ॥ ५ ॥

प्रतिमासं यथा स्त्रीणां गर्भार्थं जायते रजः ॥ भूमिजो रात्रिनाथश्च तौ हेतू ह्यार्तवं प्रति ॥ ६ ॥ इन्दुर्जलं कुजो वह्निर्यथा स्थालीगतं जलम् ॥ उद्रेगिवह्नियो-

गेन कुजेन्दौ दृग्युतौ रजः ॥ ७ ॥ षोडशर्तुनिशाः स्त्रीणां तासु युग्मासु संविशेत् ॥ युग्मासु पुत्रा जायंते विषमासु च कन्यकाः ॥ ८ ॥

जैसे महीने महीनेमें स्त्रियोंका रज गर्भधारणके लिये उत्पन्न होता है इस आर्तव होनेके हेतु चन्द्रमा और मंगल भी हैं॥६॥ क्योंकि चन्द्रमा जल, मंगल अग्नि है. जैसे स्थालीके नीचे आग जलानेसे थालीपरका जल उफनता है ऐसे ही मंगल चन्द्रमाके दृग्युत होनेमें. अर्थात् स्त्रीके अनुपचयराशिगत एवं दृष्टियुक्त होनेमें रज उत्पन्न होताहै ॥ ७ ॥ स्त्रियोंके रजोदर्शनसे सोलहरात्रिपर्यन्त गर्भाधान होना संभव है इनमेंसे समरात्रियोंमें गमन पुत्रेच्छुने और विषमरात्रियोंमें कन्यार्थियोंने करना क्योंकि समरात्रिके आधानसे पुत्र और विषमरात्रिकेमें कन्या उत्पन्न होती है ॥ ८ ॥

न नखदशनवैकृतानि कुर्य्यादनुसमये पुरुषः स्त्रियः कदाचित्॥ऋतुरपि दश षट् च वासराणि प्रथमनिशात्रितयं न तत्र गच्छेत् ॥ ९ ॥ क्षयाहं पञ्च पर्वाणि संध्ययोः सकलं दिनम् ॥ गर्भार्थी वर्जयेद्विद्वान्सज्वरो बलवर्जितः ॥ १० ॥

गर्भाधानसमयमें पुरुष स्त्रीके शरीरपर वारंवार नख और दांतोंके क्षत कदाचित् भी न करे तथा ऋतुके [illegible] और प्रथमकी तीनरात्रियोंमें स्त्रीगमन न करे ॥ ९ ॥ पितरोंका क्षयदिन. संक्रांतिआदि पांच पर्वदिन. प्रातर्मध्याह्न संध्यासमय. और समस्तदिन गर्भार्थी विद्वान् गर्भाधानकेलिये वर्जित करे. तथा ज्वरवाला और बलरहित भी गर्भाधान न करे ॥ १० ॥

अनुपचयगृहस्थे शीतरश्मौ युवत्या धरणितनयदृष्टे संयुते वा रजस्य॥ उपचयगृहसंस्थे कामिनी रात्रिनाथे सुरपतिगुरुदृष्टे पुंप्रयोगं प्रयाति ॥ ११ ॥ यथास्तराशिर्मैथुनं प्रयाति नृचतुष्पदः ॥ तथैव पुंस्त्रीसंयोगो वक्तव्यः पुरुषः स्त्रियः ॥ १२ ॥ अस्ते युतेक्षिते पापैः सरोषकलहानुगः॥संयोगः शुभयुग्दृष्टे स्त्रीनरौ सुविलासिनौ ॥ १३ ॥

जिस रजोदर्शनसमयमें स्त्रीके जन्मराशिसे चन्द्रमा उपचय ३।६।११।१० स्थानोंसे अन्यस्थानोंमें हो उसे मंगल देखे, तथा पुरुषके जन्मराशिसे चन्द्रमा इन्हीं उपचयस्थानमेंसे किसीमें हो उसे बृहस्पति देखे, ऐसे योगप्राप्तहुयेमें स्त्रीपुरुषका संयोग होनेसे गर्भाधान होताहै अन्यथा वह रज निष्फल जाता है ॥ ११ ॥ आधान वा प्रश्नसमयमें सप्तम भावमें मनुष्य वा चतुष्पदादि जैसी राशि हो उसीके सदृश स्त्रीपुरुषका संयोग कहना यहां नृचतुष्पद और स्त्री पुरुष राशि कहनेका प्रयोजन यही है कि, उसीके सदृश मैथुनक्रीडा कामशास्त्रोक्त आसन आदिसे वह संयोग जानना ॥ १२ ॥ सप्तमभावमें पापग्रह हो अथवा पापग्रहकी दृष्टि हो तो वह स्त्रीपुरुषसंयोग गुस्सेमें वा कलहमें हुआ कहना यदि सप्तमभावमें शुभग्रह हो वा शुभग्रहकी दृष्टि हो तो स्त्रीपुरुष हंसीखेलमें उस वक्त प्रसन्नथे कहना ॥ १३ ॥

लग्नत्रिकोणे सुरनाथपूज्ये रवीन्दुशुक्रावनिजाः स्वभागाः ॥ भवत्यपत्यं नियतं नराणां नपुंसकस्यापि सबीजिनः किम् ॥ १४ ॥ अर्कशुक्रौ दिवा रात्रौ शनींदू

पितृमातरौ ॥ पितृमातृव्यसहजे दिवारात्रिविपर्ययात् ॥ १५ ॥ पितुः पितृव्यस्य शुभौ भवेतां यद्यर्कसौरी विषमर्क्षसंस्थौ ॥ मातृष्वसुर्भार्गवरात्रिनाथौ शुभौ च मातुः समराशिसंस्थौ ॥ १६ ॥ कुजार्कजौ सप्तमराशिसंस्थौ रोगप्रदौ भास्करतो विधोर्वा ॥ पितुश्च मातुर्मरणप्रदौ तौ तन्मध्यगावेकयुतेक्षिते वा ॥ १७ ॥

यदि आधानसमयमें बृहस्पति लग्न वा त्रिकोणमेंहो और सूर्य चन्द्रमा शुक्र अपने अंशकोंमें हों तो अवश्य संतान होगी यह योग नपुंसकको भी संतति करता है जो सवीर्य हैं उनके तो क्या ही कहनाहै ॥१४॥ दिनमें सूर्य पिता शुक्र माता और रात्रिमें शनि चन्द्रमा होते हैं इनके बलवान् होनेमें पिता माताको शुभ तथा निर्बल होनेमें अशुभ फल होता है यदि दिवासंज्ञक रात्रिमें और रात्रिसंज्ञक दिनमें बली वा निर्बल हो तो ऐसी विपरीततामें पितृसंज्ञक पिताके भाइयोंको तथा मातृसंज्ञक माके बहिन यद्वा चाची ताईको उक्त फल देते हैं इनका खुलासा कहते हैं कि ॥१५॥ यदि सूर्य शनि विषमराशिमें होवें तो पिता और चाचा ताऊकी भलाई होवे यदि शुक्र चन्द्रमा शुभदायक हों और समराशिगत हों तो माता और चाची ताईको शुभफल देते हैं ॥ १६ ॥ मंगल शनि सप्तमराशिमें हों तो मातापिताको रोग देतेहैं यदि सूर्यसे अथवा चन्द्रमासे मंगल शनि सप्तम हों अथवा उनके बीचमें हों या उनसे दृष्ट हों तो मातापिताको मृत्यु देते हैं ये योग, सूर्यसे पितृपक्षको चन्द्रमासे मातृपक्षको फल देते हैं यह क्रम जानना ॥ १७ ॥

आधानं गंतुमिच्छद्भिः पापैः स्त्री म्रियते शुभैः ॥ न द्वादशस्थे सौरे क्षीणेन्दुकुजदृग्युते ॥ १८ ॥ शुभपद्वा पृथक्

ग्वापि लग्नेन्दू पापमध्यगौ ॥ नारी गर्भयुता याति मरणं न शुभेक्षितौ ॥ १९ ॥ क्रूरैश्चतुर्थगैर्लग्नाच्छशिनो वा कुजे मृतौ ॥ शुभदृग्योगारिहते सगर्भा स्त्री विपद्यते ॥ २० ॥ व्ययबंधुस्थितौ लग्नात्कुजार्कौ वा शशी कुजः ॥ नारी सगर्भा म्रियते शुभदृग्योगवर्जनात्॥२१॥नारी शस्त्रेण म्रियते कुजार्कौ वुदयास्तगौ॥ शुभयोगेक्षितौ न स्तो योगभंगकराः शुभाः ॥ २२ ॥

पापग्रह आधान लग्नमें जाना चाहते हों अर्थात् बारहवें भावके २७ अंशसे ऊपर हों उनको शुभ ग्रह न देखें और लग्नमें शनैश्चर मंगलसे दृष्ट हो अथवा युक्त हो तो स्त्रीकी मृत्यु होवे ॥ १८ ॥ लग्न और चंद्रमा भी एक ही बार अथवा लग्न वा चंद्रमा अलग २पापग्रहोंके बीच हों उनको शुभग्रह न देखे तो गर्भसहित स्त्री मृत्युको प्राप्तहोतीहै ॥ १९ ॥ लग्न वा चंद्रमासे क्रूरग्रह लग्नमें हों उनको शुभग्रह न देखें न उनके साथ हों तो गर्भसहित स्त्री मरजावे ॥ २० ॥ लग्नसे वा चंद्रमासे मंगल शनि दूसरे बारहवें भावोंमें हो उनपर शुभग्रहोंकी दृष्टि न हो शुभग्रहोंसे युक्त भी न हों तौ भी सगर्भा स्त्री मरजावे ॥२१॥ जो मंगल सूर्य लग्नसप्तममें शुभग्रहोंकी दृष्टियोगसे रहित हों तो गर्भवती स्त्री शस्त्रसे मृत्यु पावे इतने योगोंमें शुभग्रह दृष्टि वा योग हो तो योगभंग करते हैं ॥ २२ ॥

युग्मे चंद्रसितावोजे स्युर्बुधारगुरूदयाः ॥ युग्मे वा बलिनस्ते स्युः कुर्वंति मिथुनं स्वकम् ॥ २३ ॥ लग्नेन्दू समगौ दृष्टौ रविभौमसुरार्चितैः ॥ बलिभिर्बलिनौ तौ तु मिथुनं कुरुतः स्वकम् ॥ २४ ॥ मिथुनद्वयो-

शकगान् ग्रहोदयान्पुरुषनिजांशगतेंदुजवीक्षितान् ॥
त्रितयसुतं वनितांशगते बुधे वनितैका पुरुषद्वयं प्रसूयते
॥ २५ ॥ झषवनितांशगान्ग्रहोदयान्कन्यांशोपगत-
बुधेन वीक्षितान्॥ वनितानां त्रितयं नृयुङ्नवांशे द्वौ
पुत्रौ भवतश्च कन्यके द्वे॥२६॥धनुर्द्धरस्यांशगते विलग्ने
ग्रहैर्बलिष्ठैर्द्धनुरंशजातैः ॥ दृष्टे बलिष्ठे न नपुंसकेन
जाताः प्रभूता अपि कोशसंस्थाः ॥ २७ ॥

चंद्रमा शुक्र समराशिमें बुध मंगल बृहस्पति और लग्न विषमराशियोंमें अथवा समोंमें हों परंतु बलवान् हों तो यमल उत्पन्न करते हैं ॥ २३॥ लग्न चंद्रमा समराशियोंमें हो बलवान भी हों तथा इन्हें बलवान् सूर्य मंगल बृहस्पति देखें तो यमल उत्पन्न करते हैं ॥२४ ॥ ग्रह एवं लग्न मिथुन वा धनके अंशकोंमें हों और पुरुषांशकर्क वा अपने अंशकमें स्थित बुध उन्हें देखे तो तीन पुत्र होते हैं यदि ऐसे योगमें बुध स्त्री राशिके अंशकमें होवे तो एक कन्या दो पुत्र उत्पन्न होते हैं॥२५॥ग्रह एवं लग्न मीन अथवा कन्याके अंशकोंमें हों तथा उन्हें बुध देखे तो तीन कन्या उत्पन्न होवें यदि बुध मिथुन नवांशकमें हों तो एक पुत्र और दो कन्या होवें ॥२६॥ यदि लग्नमें धन नवांशकहो और लग्न-को धनांशकी बलिष्ठग्रह उसे देखें तथा बलवान् नपुंसक ग्रहभी देखें तो गर्भमें बहुत बालक हैं कहना इतने योग आधानकाल गर्भप्रश्न और जन्ममें भी फल देते हैं ॥ २७ ॥

शुक्रशोणितसंयोगे गुडवत्कललं भवेत् ॥ घनं द्वितीयेऽ
वयवस्तृतीयेऽस्थि चतुर्थके ॥ २८ ॥ क्रमात्त्वग्लोम च
तन्वं मासपाः शुक्रभूसुतौ ॥ जीवसूर्येन्दुसौरिज्ञा लग्न-

पाकेन्दवः क्रमात् ॥ २९ ॥ गर्भाधानाच्चरे राशौ दशमे मासि सूयते ॥ स्थिरेणैकादशे मासि द्वितीये द्वादशे भवः ॥३०॥ पुष्टिः शुभं च गर्भस्य मासपे विपुलद्युतौ ॥ ग्रहे निपीडिते तेन ह्यन्यथा पतनं भवेत् ॥ ३१ ॥

आधान होनेपर प्रथम मासमें घुले हुये गुडकेसमान गीला शुक्र और रजका कलल होताहै दूसरेमें घनाहोकर पिंडसमान तीसरेमें उस घनमें हस्तपादादि अवयव होते हैं चौथेमें हड्डी उत्पन्न होतीहैं ॥ २८ ॥ ऐसे ही क्रमसे पांचवेंमें त्वचा छठेमें रोम सातवेंमें चैतन्यता अंगोंकी होती है " ग्रंथांतरमत है कि आठवेंमें माने जो खाया उसका असर नालनसके द्वारा रुधिरसंचार बच्चेके शरीरमें होने लगता है नवममें बाहर निकलनेकी उद्वेगता और दशममें प्रसव होता है " प्रथम मासका अधिपति शुक्र दूसरेका मंगल तीसरेका बृहस्पति चौथेका सूर्य पंचमका चंद्रमा छठेका शनि सातवेंका बुध आठवेंका लग्नेश नवमेंका सूर्य दशमका चन्द्रमा क्रमसे हैं॥२९॥किसी आचार्यका यह भी मत है कि, चरराशिमें गर्भाधान होनेसे दशममासमें स्थिरसे ग्यारहवें और द्विस्वभावसे बारहवें महीनेमें प्रसव होता है ॥ ३० ॥ मासेश बलवान् होनेमें उस मासमें गर्भकी पुष्टि होती है यदि मासेश पीडित हो तो पुष्टि नहीं होती और वह हीन बलक्षीण आदि हो तो गर्भपात होजाता है ३१॥

लग्ने बुधेऽन्यैर्विबलैर्मुखद्वयं प्रजा गृहेस्यात्त्रिचतुर्भुजश्च ॥ त्रिपाच्चतुष्पान्नवमेंदुपुत्रे चांत्ये त्रिभागे सति बाह्यपादः ॥ ३२ ॥ मूको गवींदावशुभा भसंधौ शुभेक्षिते चेच्चिरमस्ति वाणी ॥ बुधांशगौ सूर्यसुतावनीजौ जातं सदंतं

प्रवदंति संतः ॥ ३३॥ कर्कस्थे तनुगे चन्द्रे कुज अर्का-
र्किवीक्षिते॥पंगुर्झषद्वये जातो लग्नेन्दुकुजवीक्षिते॥३४॥
मृगांत्यांशगते लग्ने रवींद्वार्किविलोकिते ॥ जातो वाम-
नको भूयात्सौम्या यदि न लग्नगाः ॥ ३५ ॥

समस्त ग्रह निर्बल हों और बुध लग्नमें हो तो बालकके दो मुख होंगे ऐसे ही पंचममें हों तो चार हाथ होवें यदि ऐसे ही सर्वग्रह निर्बलतामें बुध नवम हो तो तीन वा चार पैर होंगे यदि वही बुध पिछले द्रेष्काणमें हो तो विना पैरका होगा ॥३२॥ चंद्रमा वृषका तथा पापग्रह (भसंधि) कर्क वृश्चिक मीनमें हों तो गूंगा होगा यदि इनको शुभग्रह देखें तो बडी उमरमें वाणी बोलने लगेगा दूसरा योग है कि शनि मंगल बुधके अंशकमें हों तो बालक दंतसहित पैदा होगा ऐसा सज्जन कहते हैं ॥ ३३ ॥ कर्कका चंद्रमा लग्नमें मंगल सूर्य शनिसे दृष्ट हो(पंगु)खोडा होगा यदि शनि चंद्रमा मंगलसे दृष्ट मीनलग्नमें हो तो भी वही फल है ॥ ३४॥ लग्नमें मकरका अंत्यांश हो उसे चन्द्रमा शनि देखे तथा लग्नमें शुभग्रह न हों तो बालक वामन होगा ॥ ३५ ॥

लग्नद्रेष्काणगैः पापैरशिरो द्वित्रिभागगैः ॥ अभुजों-
तदृकाणस्थैरनंघ्रिरपरे जगुः ॥ ३६ ॥ धर्मोदितदृका-
णस्थे सूर्येन्द्वय वीक्षिते ॥ पादहीनो महीपुत्रे शुभदृ-
ग्योगवर्जिते ॥ ३७॥

पूर्ववाले योगमें विशेष कहते हैं कि लग्नमें दूसरा द्रेष्काणहो और शनि चन्द्र सूर्य देखें तो बालक हाथ रहित होगा लग्नमें

तीसरा द्रेष्काण हो श०चं०सू० देखें तो पैर न होंगे लग्नमें प्रथम द्रेष्काण श० चं० सू० की दृष्टि हो तो बालक शिर रहित होगा अथवा और प्रकार भी अर्थ है कि लग्नमें प्रथम द्रेष्काण और दूसरे तीसरे द्रेष्काण पापयुक्त हों तो हाथ न होंगे लग्न में दूसरा द्रेष्काण और प्रथम तृतीय द्रेष्काण पापयुक्त हों तो पादरहित। लग्नमें तीसरा द्रेष्काण प्रथम द्वितीय पापयुक्त हों तो शिररहित होगा तीसरे प्रकारका अर्थ है कि पंचम राशि में जो द्रेष्काण है वह मंगल युक्त हो श० चं० सू० उसे देखें तो हाथ रहित लग्नगत द्रेष्काण भौमयुक्त श० चं० सू० से दृष्टि हो तो शिररहित यदि नवमगत द्रेष्काण मंगलयुक्त श० चं० सू० से दृष्ट हो तो पादरहित होगा. यह तीसरा अर्थ ग्रन्थांतरोंसे भी पुष्टि पाता है ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

सिंहे लग्नगते रवींदुसहिते भौमार्किसंवीक्षिते जातोंधो नियतं पुमाञ्छुभयुते स्याद्बुद्बुदाक्षोऽथवा॥चन्द्रो हन्ति विलोचनं व्ययगतो वामं कुजार्कीक्षितः सूर्यो दक्षिण-लोचनं व्ययगतो भौमार्किदृक्संगतः ॥ ३८ ॥ आधान कालेप्यशुभानि यानि पुंसां यदुक्तानि भवंति तानि ॥ जाप्यान्यवागाद्यशिरोऽनुजातान्याहुः शुभालोकन-संगमेन ॥ ३९ ॥

लग्नमें सिंहराशि हो उसमें सर्य चन्द्रमा हों इनपर मंगल शनिकी दृष्टि हो तो अवश्य वह पुरुष अन्धा होगा अथवा शुभग्रहोंसे युक्त भी हो तो चंचलदृष्टि तिरछी निगाह वा कातर नेत्रवाला होवै यदि चन्द्रमा व्ययभावमें मंगल शनिसे दृष्ट होतो वामनेत्र और ऐसाही सूर्य हो तो दाहिने नेत्रकी हानि होती है॥३८॥आधानकालिक अशिर आदि अशुभ फल

जो कहे हैं वे वैसे ही होते हैं परन्तु उनमेंसे जो योग मूक वा बहुतकालमें वाणी बोलनेवाले कहे हैं वे यदि शुभग्रहोंसे दृष्ट युक्त हों तो (जाप्य) जपआदि उपाय करनेसे शुभ भी हो जाते हैं उपरोक्त विचार आधान, प्रश्न, जन्म, सबहीमें होता है ॥ ३९ ॥

प्रश्ने चन्द्राधिष्ठितद्वादशांशक्षेत्रे चन्द्रे भाविजन्मादिशन्ति ॥ लग्नं प्राप्तं द्वादशांशाः शुभार्या गर्भाधानं जातमाहुर्मुनीन्द्राः ॥ ४० ॥ लग्नदृकाणोपगते महीजे निरीक्षिते सूर्यसुधांशुसौरैः॥शिरोविहीनो भुजपादहीनो धीधर्मराशावपि भूमिपुत्रे ॥ ४१ ॥

अब आधान वा प्रश्नकालीन लग्नसे जन्मसमय निकालने के लिये कहते हैं कि, प्रश्न समयमें जिस राशिके द्वादशांश में चन्द्रमा बैठा है उस राशिके चन्द्रमामें नवम दशम मासमें जन्म होना कहते हैं जन्मलग्नमें जो द्वादशांश हो उस राशि लग्न वा चन्द्रमामें स्त्रीको गर्भ रहा है जानना अर्थात् गर्भाधान लग्नमें जो द्वादशांशक है उस लग्नमें जन्म होगा इसका खुलासा आगे कहेंगे ॥ ४० ॥ लग्नद्रेष्काणमें मंगल हो उसे सूर्य चन्द्रमा शनि देखें तो बालक शिर अथवा हाथ पैरसे हीन उत्पन्न होगा यदि ५ वा ९ भावमें मंगल सूर्य चंद्र शनिसे दृष्ट हो तो भी यही फल होगा ॥ ४१ ॥

तत्कालेन्दुर्यत्र राशौ प्रयातस्तस्माद्राशेर्द्वादशांशे प्रमाणे ॥ अग्रे राशौ चन्द्रगे जन्मकालमन्ये प्राहुर्जन्म काले निषेके ॥ ४२ ॥ यावत्संख्यो रात्रिसंज्ञस्य राशेः भागा याता जन्म तावद्गतेषु ॥ यावत्संख्यो वासराख्य-

स्य राशेः कालो वाच्योऽहर्निशाव्यत्ययेन ॥ ४३ ॥
मकरघटनवांशे लग्नगे सप्तमस्थे भवति तपनजन्मा त्रीणि वर्षाणि सूते॥युवतिभवनसंस्थे शीतरश्मौ तदंशावुदयति च निषेकाद्द्वादशाब्दे प्रसूते ॥४४॥ इति श्रीमहादेवविरचिते जातकशिरोमणावाधानाध्यायश्चतुर्थः ॥ ४ ॥

आधानकालमें तत्काल चन्द्रमा जिस राशिमें है उसके तत्काल द्वादशांशराशिके चन्द्रमांमें आगे ९। १० महीनेमें जन्म होताहै आधान कालज्ञात न हो तो प्रश्नलग्नसे यह विचार होता है ऐसा कोई आचार्य कहते हैं एक द्वादशांशकमें चंद्रमाकी एक राशि मिलती है द्वादशांश जितने कला भुक्तहुआ उसीके अनुपात करनेसे जन्मकालिक चन्द्रराशि भुक्त वा नक्षत्र भुक्त मिलता है एक राशिके १८०० लित्ता तथा एक द्वादशांशके १५० लित्ता होती हैं इनका त्रैराशिकानुपात करनेसे जन्मकालिक नक्षत्र भुक्त मिलता है इसीसे जन्मेष्टकुण्डली बन जाती है ॥ ४२ ॥ तत्काल लग्नरात्रि बली हो तो जितने अंश उसके भुक्त हुये उतने अनुपातानुकूल समय रात्रिमें और दिवाबली हो तो वैसेही दिनके समयमें जन्म होना लिखा है परन्तु यहां ग्रन्थकर्त्ताने तत्काल लग्न रात्रि बली होनेमें दिनका जन्म और दिवाबली होनेमें रात्रिमें जन्म होना लिखा है मतांतर होगा तत्काललग्नमें जो द्वादशांश है उतनी संख्याके उसीसे गिनकर जो आता है वह लग्न जन्ममें होगा कोई कहते हैं कि, चन्द्र द्वादशांशसे लग्न और लग्नद्वादशांशसे चन्द्रमा मिलता है जैसे यहां भी ग्रन्थकर्त्ताने "व्यत्ययेन" यह पद लिख दिया है यहां मतांतरोंका फर्क है अन्यग्रन्थोंमें और भी प्रकार लिखे हैं२।३प्रकारोंसे एक जब मिले

तब ठीक जानना यह गर्भकुण्डलीका प्रश्न मैंने बहुतबार मिला-या ठीक मिलता है परंतु इसमें तथा नष्ट जन्म प्रश्नमें मतांतर विधि बहुत हैं उनमें बहुधा ज्योतिषियोंको भ्रम होजाता है इसका निश्चय तब होता है जब २। ४ प्रकारसे एकही मिले तथा गुरुकृपा इष्टदेवकी कृपा और इष्ट साधन होनेपर ठीक मिलते हैं बुद्धिकी चातुर्यता सबही जगह चाहिये अब नक्षत्रभुक्त इष्ट निकालनेका उदाहरण लिखताहूं कि प्रश्नसमय चैत्रशुक्ला ४ दिन २७ शनिवार इष्ट २०। ९ सूर्यस्पष्ट ११। २८। २४। २९ गति ५८। १०। लग्न ४। ९ । ५८। १४ चंद्रस्पष्ट १। ९। ११। २६ में द्वादशांका चौथा है वृषसे गिनकर चौथे सिंहके चंद्रमामें नवम वा दशम मासमें जन्म होगा अब नक्षत्रके लिये कहते हैं कि, चंद्रस्पष्टमें गतद्वादशांश ३ के ७ अंश ३० कला भुक्त होगई यह चंद्रस्पष्टमें घटाया शेष १। ४१। २६ अंशकी कला १०१। २६ एकराशिकी कला १८०० से गुणा किया १८२५ ८० एकद्वादशांशकी कला १५० से भाग लिया लब्धि १२१७। १२ यह नक्षत्रप्रमाण पिंड है इसमें एक नक्षत्र प्रमाण ८०० घटाया शेष४१७।१२पुनः चरणप्रमाण२००घटाया२१७।१२ पुनः चरणप्रमाण घटाया शेष १७। १२ पहिले एक नक्षत्र घटेमें मघा भुक्त होगई फिर चरणप्रमाण २ घटाये तो पूर्वाफाल्गुनी के २ चरण भी भुक्त होगये अब तीसरे चरणके लिये शेष१७। १२ चरण प्रमाण घटी १५ से गुणा किये २०० से भाग लिया लब्धि १ घटी २ पल तीसरे चरणकी भुक्तिहुई पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र भुक्त १। २ हुआ दिनरात्रिके निमित्त लग्नमें नवांश वृष रात्रि बली है इससे रात्रिमें जन्म होगा इस कालके लिये लग्नस्पष्ट ४। ९। ५९। १४ में भुक्तनवांश ३। २० अंशा-दि घटाया २। ३९। १४ इसकी कला १५९। १४ राशिमान

२९ । ६ से गुणा किया ४६१७ चरणकला प्रमाण २०० से भाग किया लाभ २३ । ४१ यह रात्रिका इष्टकाल भया ज्येष्ठशुक्ला ६ रात्रि गतघटी२३।४१ में जन्म होगा इसीपर नक्षत्र भुक्ति भी मिलती है गणितकी रीति यही है प्रश्न विचार और प्रकारसे भी मिलाय लेना चाहिये ॥ ४३ ॥ योगांतर कहते हैं। कि, लग्नमें मकर वा कुंभ नवांश हो तथा शनि सप्तम हो ऐसा योग आधान वा प्रश्नमें हो तो वह गर्भ तीनवर्षमें प्रसव होगा यदि चंद्रमा सप्तमस्थानमें हो और उसका अंशक लग्नमें हो तो १२ वर्षमें प्रसव होगा इस प्रकरणमें जो अंग हीनाधिकादि योग कहे हैं वे प्रश्न और जन्ममें भी विचारकर युक्तिसे फल कहना ॥ ४४ ॥ इति श्रीजातकशिरोमणौ माहीधरीभाषाटीकायामाधानाध्यायश्चतुर्थः ॥ ४ ॥

पितुः परोक्षस्य वदंति जन्म विलग्नमिन्दावनिरीक्ष्यमाणे ॥ प्राक्कर्मराशेः परतश्चरेर्के पिता स्वदेशे परदेशसंस्थः ॥ १ ॥ स्वग्रामबाह्ये पितरि स्थितेर्के द्विदेहगेर्के पथिगो विदेशात् ॥ पितुः परोक्षस्य वदंति जन्म विलग्नमिन्दावनिरीक्ष्यमाणे ॥ २ ॥ पितुर्जातः परोक्षस्य विलग्नस्थेर्कनंदने ॥ कुजे वाऽस्तगते चंद्रे मध्ये वा भार्गवज्ञयोः ॥ ३ ॥

प्रथम बालकके जन्म समयमें इष्टकाल ठीक होना चाहिये जो बहुधा शीर्षोदय समय इष्ट मानते हैं यह साधारण स्थूलबात है विशेषता इसमें यह है कि, शिर देखजानेको शीर्षोदय कहते हैं परंतु कोई शिर देखे जानेसे घटी वा मुहूर्तमें बाहर निकलसकता है कोई शीघ्र भी निकलआता है कोई बाहर आयेमें भी निश्चेष्ट रहता है कान नाकमें फूंक देना या उस

के कानपर शब्द करना आदि दाइयोंकी युक्ति करनेपर बालक श्वासा लेने लगता है प्राण नाम वायुका है जब (वायु) श्वासा चलने लगते हैं तबही उसपर प्राण पडाजानना, इस के पूर्व वह अपनी माताके शरीरके रुधिरकी गति (जो नाल द्वारा उसके शरीरमें पहुंचती है) के द्वारा मांका हस्तपाद आदि अंगके तुल्य जीवित है जुदा प्राण उसपर नहीं है क्यों कि श्वास लेनेसे रुधिरकी गति होती है जो मांके श्वासा- लेनेसे उसके शरीरमें भी रुधिर गति होती है, बरा- बर देखनेमें आता है कि, जो बालक निश्चेष्ट होता है उसके नालको दाई लोग शीघ्र बांध देते हैं जो निश्चेष्ट नहीं होते उनके नालपर बाहर निकलनेमें किसी प्रकार दबाव लग- जाता है तात्पर्य यह कि, नालद्वारा जो रुधिर मांके एवं बाल कके शरीरमें चलता रहता है बंद होजानेपर जुदा श्वास लेनेकी आवश्यकता उसको होती है और आयुका प्रमाण श्वासाओंकी गिनतीपर है मरजाने समय वही श्वासा पूरे होजाते हैं उसीको गतायु कहते हैं इस व्यवस्थासे भी जब मरण श्वासा बंदहोनेपर है तो जन्म भी श्वासा लेनेपर कैसे न हो। इत्यादि ज्योतिष, वैद्यक, धर्मशास्त्र, और सायन्स तथा अनुभवसे प्रथम श्वास लेनेका इष्टकाल मानना सिद्ध है न केवल शीर्षोदय इसका कुछ विस्तार बृहज्जातक सूति- काध्यायके प्रारंभमें मैंने अपनी भाषाटीका लिखी है इसीका- रण यहां उद्देश्य मात्र लिखा अब लग्न निश्चयार्थ सूतिका गृहके चिह्न कहते हैं कि, जन्मलग्नको चन्द्रमा न देखे तो उस समय बालकका पिता परोक्ष था इसमें विशेष यह है कि, लग्नको चन्द्रमा न देखे और सूर्य चरराशिका ८। ९ वा ११। १२ भावोंमेंसे किसीमें होवै तो पिता परदेशमें था जो सूर्य उन्हींस्थानोंमेंसे किसीमें हो और चन्द्रमा लग्नको न देखे तो

परोक्ष तो था परंतु उसी देशमें था ॥१॥ ऐसे योगमें यदि सूर्य द्विस्वभाव राशिका हो तो विदेशसे चलकर मार्गमें था अथवा अपने ग्रामके बाहर समीप ही था इसमें भी लग्नको चंद्रमाका देखना मुख्य है इसकारण यह आधा श्लोक पुनरुक्तिसे खुलासे करके लिखा ॥ २ ॥ और भी पिता परोक्षके योग कहते हैं कि शनि लग्नमें हो अथवा मंगल सप्तममें हो अथवा चन्द्रमा शुक्र बुधके बीचमें हों तो भी पिता परोक्ष जन्मसमयमें होगा ॥ ३ ॥

कीटकर्कटमीनानां प्राङ्मध्यांत्यदृकाणगैः ॥ ससर्पः स्वायगैः सौम्यैः पापलग्नोदये विधौ ॥ ४ ॥ चतुश्चरणगे भानौ बलिष्ठैर्द्विस्वभावगैः ॥ चन्द्रादिभिश्च यमलौ जायेतां कोशवेष्टितौ ॥५॥ सौरे सिंहाजगे लग्ने कुजे वा नालवेष्टितः ॥ कालांगराशितुल्यैंगे जायते नाल एव तु ॥ ६ ॥

वृश्चिकके पहिले कर्कके मध्य और मीनके तीसरे द्रेष्काणमें दूसरे वा ग्यारहवें स्थानमें शुभग्रह हो और लग्नमें चन्द्रमा पापराशिका हो तो बालक सर्पसहित वा सर्पाकार नससहित हुआ होगा ॥ ४ ॥ सूर्य चतुष्पद राशियोंमें हो तथा चन्द्रादिग्रह बलवान् होकर द्विस्वभाव राशियोंमें हो तो एक जरायुसे वेष्टित दो बालक उत्पन्न हुये होंगे ॥ ५ ॥ सिंह मेषका शनि अथवा मंगल लग्नमें हो तो बालक नालसे वेष्टित होगा । वह नालवेष्टन भी पूर्वोक्त कालांगराशि द्रेष्काणतुल्य अंगमें कहना ॥ ६ ॥

युगपत्स्थौ पृथक्स्थौ वा लग्नेंदूनेक्षते गुरुः ॥ नासाकेंन्दुपरैर्ज्जातः सपापार्कयुतः शशी ॥ ७ ॥ योगत्रयो

गुरुयुतश्चंद्रो गुरुनवांशके ॥ द्रेष्काणे गुरुलग्ने वा न परैर्जायते हि सः ॥ ८ ॥ भौमदृष्टे चरे भानौ दिवा पितारि दूरगे ॥ जाताः शनैश्चरे रात्रौ रविदृष्टे विदेशगे ॥ ९ ॥ यमवक्रौ सौरिगृहे चरस्थेर्के विदेशगः ॥ मृतः पिता न संदेहो दिवा स्वे वा गृहे पथि ॥१०॥अर्कात्पापक्षेगौ पापौ त्रिकोणद्यूनसंस्थितौ ॥ बद्धः पिता विदेशस्थः चराद्यर्के गृहे पथि ॥ ११ ॥

लग्न चन्द्रमा साथ हों अथवा पृथक् हों उन्हें बृहस्पति न देखे तो बालक जारज होगा सूर्य चंद्रमा इकट्ठे हों उन्हें बृहस्पति न देखे तो वही फल है और सूर्य चंद्रमा मंगल शनिसे युक्त तो भी वही फल जानना ॥ ७ ॥ इन तीनयोगोंमें बृहस्पतिका योग हो अथवा चन्द्रमा बृहस्पतिके नवांशकमें वा गुरु द्रेष्काणमें हो अथवा बृहस्पति लग्नमें हो तो जारज न होगा अपने पितासे उत्पन्न होगा ॥ ८॥ दिवाजन्ममें सूर्य चरराशि मंगलसे दृष्ट हो तो पिता उस समयमें दूर था यदि शनि चरराशिमें सूर्यसे दृष्ट और रात्रिका जन्म हो तो पिता विदेशमें था ॥ ९ ॥ शनि मंगल शनिके घरमें और सूर्य चरराशिमें हो दिनका जन्म हो तो निश्चय बालकका पिता चरादिराशियोंके सदृश घरमें वा मार्गमें मरगया कहना ॥१०॥ पापग्रह शनि मंगल पापराशि १। ५।८।१०। ११ ओमें तथा सूर्यसे ७। ९। ५ भावोमेंसे किसीमें हो तो बालकका पिता परदेशमें बँधा है कहना इसमें भी विशेष है कि, सूर्य चरराशिमें हो तो परदेशमें स्थिरराशिका हो तो स्वदेशमें और द्विस्वभाव राशिका हो तो मार्गमें बंधा होगा कहना ॥ ११ ॥

पूर्णे चन्द्रे स्वराशिस्थे सौम्ये लग्ने शुभे सुखे ॥ जल-
लग्नेस्तगे वापि चंद्रे नौस्था प्रसूयते ॥ १२ ॥ जलो-
दयं जलर्क्षेंदुः पूर्णः पश्यति वारिणि ॥ जातः शशिनि
वा लग्ने खे सुखे जायते जले ॥ १३ ॥ उदयनाथसु-
धाकरयोर्व्यये रविसुते वधबंधनवेश्मनि ॥ अशुभदृष्टि-
गते युगपत्स्थयोर्भवति जन्म शुभैरविलोकिते ॥ १४ ॥
कीटकर्कटगे सौरे लग्नस्थे चंद्रवीक्षिते ॥ जायते
नियतं गर्ते शुभदृग्योगवर्जिते ॥ १५ ॥

पूर्ण चंद्रमा कर्कका हो बुध लग्नमें शुभग्रह चतुर्थस्थानमें हों तो नाव जहाज अथवा पुलमें प्रसव हुआ होगा अथवा जलजराशि लग्नमें और चन्द्रमा सप्तमस्थानमें हो तो भी यही फल कहना ॥ १२ ॥ जलचरराशि लग्नमें चन्द्रमा जलराशिमें हो तो जलमें प्रसव भया होगा अथवा पूर्णचन्द्रमा लग्नको पूर्ण देखे तो वही फल होगा यदि जलराशिका चन्द्रमा लग्न दशम चतुर्थमेंसे किसीमें हो तो भी जलमें वा जलके समीप प्रसव कहना ॥१३॥ लग्न वा चन्द्रमासे यद्वा लग्नेश वा चन्द्रमासे शनि बारहवां होवै तथा पापग्रह उसे देखे शुभग्रह न देखे तो कैदमें, हवालातमें अथवा जीवहत्याके स्थानमें जन्म हुआ होगा ॥ १४ ॥ शनि वृश्चिक कर्कराशिका लग्नमें हो चन्द्रमा उसे देखे शुभग्रहोंसे युक्त दृष्ट न होवै तो खाती वा गढेमें जन्म कहना ॥ १५ ॥

मंदे विलग्ने जलराशिसंस्थे बुधेक्षिते जन्म निषेकगेहे ॥
देवालये सूर्यविलोकिते च चंद्रेक्षिते सोषरभूमिभागे ॥
॥ १६ ॥ नृलग्नसंस्थो रविजो स्मशाने कुजेक्षिते जन्म

करोति नूनम् ॥ रम्यालये भार्गवचंद्रदृष्टे देवेज्यदृष्टः शनिरग्निहोत्रे ॥ १७ ॥ राजालये देवकुलालये वा गवालये गोकुलभूमिभागे ॥ सूर्येक्षितः सूर्यसुतो विलग्ने शिल्पालये सोमसुतेक्षितश्च ॥ १८ ॥ तत्तत्स्थाने वदेज्जन्म बलिना येन वीक्षितः ॥ बहुभिर्वा स्वभावेन राशीनामपि युक्तितः ॥ १९ ॥

जलचरराशिके लग्नमें बुधदृष्ट शनि होवै तो आधानके घरमें जन्म कहना जो उसपर सूर्यकी दृष्टि हो तो देवालयमें ऐसे ही चंद्रदृष्टिसे ऊषरभूमिमें जन्म कहना ॥ १६ ॥ मनुष्यराशिके लग्नमें शनि हो उसपर मंगलकी दृष्टि हो तो श्मशानमें शुक्र चंद्रमाकी दृष्टिसे रमणीय घरमें और बृहस्पतिकी दृष्टिसे अग्निहोत्रशालामें जन्म कहना ॥ १७ ॥ यदि सूर्यसे दृष्ट शनि लग्नमें हो तो राजभवनमें वा देवालय वा गुरुगृह यद्वा गोशालामें अथवा गोष्ठआदि गोकुलभूमिमें जन्म होगा यदि उसपर चंद्रमाकी दृष्टि होवे तो कारीगरीके स्थानमें जन्म होगा ॥ १८ ॥ यहां जब बहुतोंकी दृष्टि होवै तो जो द्रष्टा बलवान् है उसका फल कहना बली भी बहुत हों तो राशियोंके स्वभावानुकूल स्थान युक्तिसे कहना ॥ १९ ॥

चरे चरांशोपगते विलग्ने ध्रुवं प्रसूता चरसत्त्वमार्गे ॥ चरे विलग्ने स्वनवांशयुक्ते गृहाख्यसत्त्वालयगा प्रसूते ॥ २० ॥ स्थिरे चरांशोपगते विलग्ने स्वगेहमार्गे प्रवदंति जन्म ॥ स्थिरे स्थिरांशोपगते विलग्ने स्वमन्दिरे सा नियतं प्रसूता ॥ २१ ॥ मार्गे गृहे वा स्वगृहे विचार्य

बलेन वाच्यं भवनांशयोश्च ॥ लग्नांशनाथे स्वगृहे परे वा तद्वीक्षितौ लग्ननवांशपौ वा ॥ २२ ॥

चरलग्न चरांशकी हो तो निश्चय है कि, वनचर जीवोंके चलनेके मार्गमें प्रसव भया यदि चरलग्न वर्गोत्तम हो तो घरमें रहनेवाले मार्जार कुक्कुटादिकोंके रहनेके स्थानमें प्रसव होता है ॥ २० ॥ स्थिर लग्नमें चरांशक हो तोअपने घरके मार्गमें जन्म कहते हैं यदि स्थिर लग्न स्थिरांशकी हो तो अपने घरमें निश्चय प्रसव भया कहना ॥ २१ ॥ मार्ग घर वा अपने घरमें राशि और नवांशके बलसे कहना जिसका बल अधिक हो उसका फल होता है लग्नका अंशकनाथ अपने वा परायेकेसे घरमें हैं तथा लग्नेश अंशेश कैसे बली वा निर्बलीसे दृष्ट है ऐसा विचारके कहना ॥ २२ ॥

एकराशिगतयोर्यमारयोः सप्तमे शशिनि वा त्रिकोणगे ॥ त्यज्यते नियतमंबया सुरेज्येक्षिते च परमायुसौख्य-भाक् ॥ २३ ॥ पापावलोकिततनावुदये सुधांशौ त्यक्तो विनश्यति धरातनयेस्तभावे ॥ आये शुभेक्षितविधौ कुजसूर्यपुत्रौ पापेक्षितौ परनिवासगतोप्यनायुः ॥२४॥

मङ्गल सूर्य एक राशिके हों और इनसे ९ । ५ वा सप्तम स्थानमें चन्द्रमा हो तो वह बालक मातासे अलग हो जाता है यदि ऐसे योगमें चन्द्रमापर बृहस्पतिकी दृष्टि भी हो तो बालक माताका त्यागा हुआ भी दीर्घायु एवं सुखी होगा॥२३॥ लग्नमें पापदृष्ट चन्द्रमा हो मङ्गल सप्तम हो तो मातासे त्यक्त बालक नहीं बचेगा और लग्नगत चन्द्रमाको शुभग्रह देखें मंगल शनि लाभस्थानमें हों उनपर पापदृष्टि हो तो पराये घरमें जायके भी बालक नहीं बचे ॥ २४ ॥

रविः पिता भृगुर्माता पितृव्योर्कसुतो दिवा ॥ चन्द्रः पितृष्वसैतेषां यो बली तद्गृहे भवः ॥२५॥ शनिः पिता विधुर्माता पितृव्योऽर्कों निशाभवः ॥ भृगुर्मातृष्वसैतेषां यो बली तद्गृहे भवः ॥ २६ ॥

दिनके जन्ममें सूर्य पिता शुक्र माता शनि ताऊ चाचा. चन्द्रमा पिताकी बहिन होती हैं इनमें जो बलवान् हो उसके उक्तवालेके घरमें जन्महुआ होगा ॥ २५ ॥ रात्रिजन्ममें शनि पिता चन्द्रमा माता सूर्य ताऊ चाचा शुक्र मांकी बहिन होते हैं इनमें जो बलवान् हो उसके उक्त नातेदारके घरमें जन्म भया कहना ॥ २६ ॥

बुधगुरुभृगुपूर्णरात्रिनाथाः स्युः सकला यदि नीचराशिसंस्थाः ॥ भवति तरुतलेषु जन्म नूनं तरुशालादिककोटरे प्रसूतः ॥ २७ ॥ लग्नेंदू नीचराशिस्थैः शुभैरेकत्र संस्थितैः॥ नेक्षितौ विजनेऽटव्यां स्थाने वानावृते भवः ॥ २८ ॥ शुभैरेकालयप्राप्तैर्वीक्ष्यते लग्नशीतगू ॥ प्रसूयते जनाकीर्णे नात्र कार्य्या विचारणा ॥ २९ ॥ शन्यंशे रजनीनाथे हिबुके वा शनीक्षिते ॥ शौरेक्षिते जलर्क्षे वा ह्यंधकारे प्रसूयते ॥३०॥ आधाने जन्मकाले वा तमोभावे प्रजायते ॥ सर्वेष्वेतेषु योगेषु सूर्यदृष्टे निशापतौ ॥ ३१ ॥ भास्करो बलवान् दृष्टः क्षितिजेन बलीयसा॥ बहुप्रदीपा दृष्टोन्यैस्तृणाज्ज्योतिरवीर्योभिः ॥३२॥

यदि बुध, गुरु, शुक्र और पूर्णचन्द्रमा सभी नीचराशियोंमें हों तो बालकका जन्म वृक्षके नीचे, वा वृक्षमें अथवा काष्ठ

गृह आदिमें यद्वा वृक्षके कोटरमें हुआ है निश्चय जानना॥२७॥ यदि शुभ ग्रह नीचराशिमें और लग्न चन्द्रमाको तीनसे अधिक ग्रह न देखें तो वनमें अथवा जहां कोई मनुष्य न हो ऐसे स्थानमें बिना (ओट) पर्दामें जन्म भया ॥ २८ ॥ यदि शुभग्रह एक स्थानमें बैठकर लग्न चन्द्रमाको देखे निश्चय मनुष्योंके समुदायमें जन्म भया जानना ॥ २९ ॥ चन्द्रमा शनिके नवांशकमें हो अथवा चतुर्थ चन्द्रमाको शनि देखे यद्वा जलराशिमें चन्द्रमा हो उसे शनि देखे तो अन्धेरेमें जन्म भया होगा ॥ ३० ॥ ऐसा योग आधान वा जन्मसमयमें अन्धेरा होनेका विचारना होता है इन सभी योगोंमें चन्द्रमापर सूर्यदृष्टिका फल मुख्य अन्धकारका होता है ॥ ३१ ॥ सूर्यको बलवान् मंगल देखे तो उस घरमें बहुत दीप होंगे यदि सूर्यको मंगलसे अन्य ग्रह देखें और वे निर्बल भी हों तो उस घरमें घास लकडीका उजेला होगा ऐसा जानना ॥ ३२ ॥

भूशयनं नीचगतैश्चंद्रे नीचे सुखोदये ॥ शीर्षपृष्ठोभये लग्ने शिरःपृष्ठोभयत्रजः ॥ ३३ ॥ शीर्षोदये प्रसूतायां दर्शयन्त्यामुखोदरौ ॥ मोक्षः पृष्ठोदये पष्टं पार्श्वस्था यद्विधोदये ॥ ३४ ॥ लग्ने लग्नांशनाथैर्वा वक्रितौ वाऽथ सप्तमे ॥ विपरीतगतौ मोक्षो मातुः क्लेशेन वा भवेत्॥३५॥ चन्द्राद्वाथ विलग्नाद्वा पापाद्यूनेथवा सुखे॥ मातुः क्लेशेन महता जातः पापयुते विधौ ॥ ३६ ॥

शुभग्रह नीचके हों अथवा चंद्रमा नीचराशिका लग्न वा चतुर्थमें हो तो भूमिमें जन्म भया जानना लग्न शीर्षोदय हो तो प्रसव समयमें बालकका मुख आकाशकी ओर होगा, पृष्ठोदय हो तो भूमिके ओर, और (उभयोदयी) मीन लग्न हो तो

(तिर्छी) एक हाथ ऊपरके और दूसरा नीचेकी ओर होकर प्रसव जानना। प्रसवदेशरीतिसे कहीं खाटमें कहीं दोमंजिले तेमंजिलेमें कहीं भूमिमें होते हैं और दिनमें विना दीपक भी अंधकार नहीं रहता ऐसा विचार स्वबुद्धिसे करना चाहिये ॥ ३३ ॥ शीर्षोदयमें प्रसवकरनेवाली मुख और उदर देखके पृष्ठोदयमें पीठ और उभयोदयमें दोनों अंग देखती हुई गर्भ मोक्ष करती है ॥३४॥ लग्नेश तथा लग्न नवांशेश लग्नमें वा सप्तममें हों अथवा लग्नगत ग्रह वा लग्नेश लग्नांश वक्री हो तो उलटा प्रसव पाहिले पैर पीछे शिर करके होता है और माताको कष्ट भी उस समयमें कहना ॥३५॥ चंद्रमासे वा लग्नसे पाप ग्रह सप्तम वा चतुर्थमें हो तो प्रसव समयमें माताको बडा क्लेश भया होगा पापयुक्त चंद्रमासे भी यही फल है ॥ ३६ ॥

पूर्णे शशिनि प्रसवे प्रदीपस्तैलपूरितः ॥ मध्येर्द्धपूरितक्षीणे तैलस्य क्षयमादिशेत् ॥ ३७ ॥ लग्नवर्तिसमावर्तिनोन्या लग्नमुखोदये ॥ यावद्भागा विलग्नस्य भुक्ता वर्तिस्तु तावती ॥ ३८ ॥ चरभे भास्करे दीपो हस्तस्थः स्थिरभे पुनः ॥ द्विःस्वभावस्थिते सूर्ये दीपो राशि ध्रुवं व्रजेत् ॥ ३९ ॥ चरे चरांशोपगते दिवाकरे स्वस्थानतोन्यत्र गतः प्रदीपः ॥ आसीदजे प्राचि मृगे तु याम्यां तुले प्रतीच्यां शशिभेप्युदीच्याम् ॥ ४० ॥

प्रसवसयमें चंद्रमा पूर्ण हो तो दीपक तेलसे भरा था मध्यम हो तो आधा तेल, और क्षीण हो तो तेल नहीं रहा था अथवा चंद्रमा राशिके आदि मध्य और अंत्यमें यह फल करता है ॥ ३७ ॥ लग्नके प्रारंभमें बत्ती पूरी मध्यमें आधा और अंत्य-

में थोडी रही जाननी अथवा जितने नवांश लग्नके भुक्त हुयें उतने भाग बत्तीके जलगये थे जानना ॥ ३८ ॥ सूर्य चरराशि में हो तो दीपक उस समय किसीके हाथमें था स्थिरमें हो तो स्थिर था द्विस्वभावमें होतो एक जगहसे दूसरी जगह धरागया था सूर्यकी राशि जिसदिशाकी हो उस दिशामें दीप कहना अथवा सूर्य आठप्रहरोंमें आठ ही दिशा घूमता है उस समय जिस दिशामें हो वह दिशा दीपककी कहनी इन योगोंमें पापयुक्त होनेसे तैलादि मलिन शुभयोग निर्मल कहना और राशियोंके रंग सदृश रंग कहना ॥ ३९ ॥ सूर्य चरराशि चरांशकमें हो तो दीप अपने स्थानसे दूसरेस्थान लेजायागया था इसमें भी विशेषता है कि, मेषसे पूर्व मकरसे दक्षिण तुलासे पश्चिम और कर्कसे उत्तरमें गया कहना ॥ ४० ॥

स्थिरोदये वा द्वितनौ रवौ वा चरे त्रिकोणोदयदिक्स्थितोऽर्कः ॥ दिशामधीशा बलवान् ग्रहो यः केंद्रे तदीशाधिमुखं गृहं स्यात्॥४१॥ग्रहेण केंद्रादिपदस्थितेन बलीयसा सूतिगृहं प्रदत्तम् ॥ ग्रहस्वभावेन गृहं प्रवाच्यं ग्रहस्य दिक्स्थं प्रतिवेशितं च ॥ ४२ ॥ काष्ठाढ्यमदृढं सूर्ये कुजे दग्धं नवं विधौ ॥ बुधे शिल्पिगृहं जीवे दृढं रम्यं नवं भृगौ ॥ ४३ ॥ जीर्णं संस्कृतमर्कजे कुतनये लग्नस्थिते स्वोच्चगे प्राग्दग्धं दशमास्थिते यमककुब्दग्धं प्रतीच्यां द्युने ॥ कौबेर्यां हिबुकोपगे कुतनये स्वल्पं शुभप्रेक्षिते लग्नाद्यत्र दिशि स्थिता ग्रहगणास्तत्तद्गुणास्तत्र तु ॥ ४४ ॥

सूर्य उससमय किस दिशामें था उससे किस ओर प्रस भया इसके लिये कहते हैं कि सूर्य स्थिरराशिमें नवम द्विस्व भावमें पंचम चरमें लग्नराशिकी दिशामें सूर्य जानना त्रिस्व स्वामियोंमें जो बलवान् ग्रह केंद्रमें हो उसकी दिशाके ओर सूतिकागृहका द्वार होगा ॥ ४१ ॥ केन्द्रादिपदस्थ बलवा ग्रहसे सूतिका गृहद्वार कहना जो ग्रह है उसके स्वभावानु रूप घरके लक्षण और उसके दिशामें द्वार कहना यदि बहु त ग्रह हों तो बली से मुख्य द्वार अन्योंसे छोटे द्वार खिड़की आदि जानना केंद्रमें कोई न हो तो लग्नराशि और उसके द्वादशांशसे जानना ॥४२॥ सूर्य बलवान् हो तो सूतिकागृ लकडी युक्त और (अदृढ) कच्चा होगा मंगलसे अग्निसे जला चंद्रमासे नवीन बुधसे चित्रकारीवाला, बृहस्पतिसे पक्का शुक्रसे नवीन और रमणीय होगा ॥ ४३ ॥ शनिसे पुरान और उसपर नया संस्कार भयाहुआ होगा यदि अपने उच्च का मंगल लग्नमें हो तो मकानका पूर्वभाग, दशम हो तो दक्षिणभाग सप्तम हो तो पश्चिमभाग और चतुर्थ हो तो उत्त रभाग दग्ध होगा। मंगलपर शुभग्रहकी दृष्टि हो तो थोड़ा दग्ध होगा. लग्न जिस दिशामें ग्रह हों उन ग्रहोंके अनुमान उन दिशा एवं स्थानोंमें गृहके लक्षण कहने ॥ ४४ ॥

आज्ञास्थिते सुरगुरौ रजनीशगेहे गेहादुपर्युपरि द्वित्रि चतुष्कखंडम् ॥ तस्मिन् हयेति सबले भवति त्रिशा- लं वेश्म द्विशालमपराद्विशरीरगेहे ॥ ४५ ॥ वास्तुपूर्वदि शिसूतिकागृहं मेषकर्कटकतौलिकवृश्चिके ॥ उत्तरे बुधगुरूदये वृषे पश्चिमे हरिमृगे यमांशके ॥ ४६ ॥

बृहस्पति कर्कका दशमस्थानमें हो तो घरके ऊपर दो मंजिला तेमंजिला आदि गृह होगा और लग्नमें बलवान् धन

राशि हो तो त्रिशाल, तिमाजिला तीन दीवारी होगा अन्य द्विस्वराशियोंसे द्विशाल होता है ॥ ४५ ॥ लग्नमें १।४।७ ८ राशि हों तो सूतिकास्थान वा गृह वास्तुस्थानसे पूर्वदिशा में, ३।६।९।१२ से उत्तरमें ५।१० से पश्चिममें और वृषमें दक्षिण दिशामें होगा ॥ ४६ ॥

मेषे वृषे प्राग्दिशि सूतिकासीदाग्नेयकोणे मिथुने गृहस्य ॥ कर्कें हरौ वाच्यसुरे युवत्यां कीटे तुलायां दिशि पश्चिमायाम् ॥ ४७ ॥ सूता प्रसूता वायव्ये हये धनपतौ मृगे ॥ कुंभेप्युत्तरदिक्स्थासीदैशान्यां मीनभोदये ॥ ४८ ॥

सूतिका घरके किस दिशामें थी ऐसे विचारमें १।२। लग्न हो तो पूर्वमें ३से आग्नेय४।५से दक्षिण६से नैर्ऋत्य७।८से पश्चिममें ॥४७॥धन९से वायव्यमें१०।११ से उत्तरमें और१२ से ईशानमें घरके सूतिकाके प्रसव हुआ ॥ ४८ ॥

खट्वाशिरः प्रसूतीव वदेत्प्राच्याः प्रदक्षिणम् ॥ आधाने जन्मकाले वा प्रश्ने वा सूतिकागृहे ॥ ४९ ॥ खट्वाशिरस्तनुधने गृहपुत्रभावौ दक्षे कलत्रनिधने भवतोऽवसाने ॥ वामांगमत्र दशमाप्तिगृहं द्विदेहे सौम्येन वा शुभयुते ग्रहतुल्यघातः ॥ ५० ॥

जिस देशमें खाटमें प्रसूती होती है तहां खाटके लक्षण स्थान दिशा प्रसूतीके तुल्य पूर्वादिप्रदक्षिणक्रमसे कहना आधान, जन्मकाल प्रश्न अथवा सूतिकागृहमें खाटका शिर आदि उसी प्रकारसे कहना ॥ ४९ ॥ लग्नद्वितीयराशिके स्थानमें खाटका शिर तीसरी बारहवींकेमें शिरहानेके हों

पाये ६। ९ से पायंतके पाये ७। ८ से पायंतकी पट्टी ४। ९ १०। ११ से बगलोंके पट्टियां कहनी इनमें भी लग्नसे ६ भाव पर्यंत दक्षिणभाग ७ से १२ पर्यंत वामभाग जानना जहां द्विस्वभाव राशि है तहां कच्ची लकडी, त्वचाशून्य आदि कहना जिस अंगराशिमें पापग्रह हो तहां फूला, दाग, छेद वा कीलक आदि होगा शुभग्रहोंसे पुष्टतादि शुभ कहना॥५०॥

लग्ने शशी यत्र न तत्र वामाः क्षीणेथ पूर्णे वनिताश्चतं त्राः॥ दृश्येप्यदृश्ये ग्रहसंख्यया ताश्वायुः क्रमाद्द्वित्रि-गुणा विकल्प्याः॥ ५१ ॥ सुधांशलग्नांतरखेटसंख्या ग्रहस्य रूपा उपसूतिकाः स्युः ॥ रंध्रादिषट्के वनिता बहिस्था धनादिषट्केतरगा युवत्यः॥ ५२ ॥ पूर्णः शशी सप्तमगो विलग्नाच्चंद्रानना द्वारिगतो युवत्यः॥ दृश्येप्यदृश्ये शुभपापखेटैःशुभैः सुरूपाअशुभैर्विरूपाः५३

जहां क्षीणचन्द्रमा लग्नमें हो तहां प्रसवसमयमें अन्य स्त्रीं कोई नहीं होगी यदि यह चन्द्रमा पूर्ण हो तो बहुत स्त्रीं होंगी उनमें भी दृश्यसे भीतर अदृश्यसे बाहर ग्रहसंख्यासे कहनी तद्ग्रहके अनुरूप आयु तथा स्वगृह वक्रोच्चगतसे द्विगुण त्रिगुण नीचादिसे आधा तिहाई आदि जाननी ॥ ॥ ५१ ॥ लग्न और चन्द्रमाके बीच जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिका होंगी इनमें भी दृश्यचक्रसे ६ पर्यंतके ग्रह तुल्य भीतर और अदृश्यचक्र ७ से ६ स्थान पर्यंतके तुल्य बाहर कहनी ॥ ५२ ॥ यदि पूर्ण चंद्रमा लग्नसे सप्तम स्थानमें हो तो चन्द्रमुखी स्त्रियें दरवाजेमें बैठीहोंगी ऐसे हों दृश्य एवं अदृश्य चक्रमें जैसे शुभ पाप बली निर्बली हों उनके अनुरूप उन भीतर बाहरवाली सूतिकास्त्रियोंके रूप रंग सौभाग्यादि कहना ॥ ५३ ॥

लग्नलग्नांशपत्योर्यो बली तत्तुल्यविग्रहः॥ वर्णश्चन्द्रांश-
कपतेर्ज्जातिदेशकुलस्य वा ॥ ५४ ॥ घटाद्याश्चत्वारो
मुनिभिरुदिता ह्रस्वतनवो बृहद्देहाः सिंहप्रभृतिनि-
लयाः शेषनिलयाः ॥ बृहद्ध्रस्वांतःस्थाः स्वपतिसहिताः
कालपुरुषे यदंगं तद्दीर्घं भवति लघुमध्यं च खचरैः॥५५

लग्न वा लग्नांशेश जो बलवान् हो उसके समान ग्रह भेद ध्यायोक्त प्रकारसे बालकका शरीर कहना तथा चन्द्रस्थि नवांशपतिके तुल्य गौरादि वर्ण कहना अथवा जाति दे कुलके अनुमानसे कहना जैसे अंग्रेजोंके पुत्र गौर ही होते पूर्वदेशमें बहुधा कृष्णवर्ण होते हैं ॥ ५४ ॥ कुंभ मीन मेष वृ ह्रस्व, सिंह कन्या तुला वृश्चिक दीर्घ शरीर, शेष राशि ३ ४।९।१० मध्यम शरीर हैं जो राशि निजस्वामिसहित है वह अंग पुष्ट और सुन्दर जहां पाप शत्रुआदि हों तहां ह्रस मध्यादि बलाबल देखके कहना। ये दीर्घ मध्य ह्रस्व राशि वस्तुके आकार शरीराकारादि ज्ञानमें प्रश्नादिकोंमें भी का आती हैं ॥ ५५ ॥

शिरोलग्नं नेत्र व्ययधनगृहे लाभसहजौ श्रुतीनां सा
संज्ञौ सुखदसमभावौ शुभसुतौ॥ कपोलौ रंध्रारी चिबु-
कयुगलं सप्तममुखं तनोराद्यत्र्यंशे ह्युदयति विभागः
प्रथमकः ॥ ५६ ॥ गलो लग्नं स्कंधौ व्ययधनगृहे
लाभसहजौ भुजौ वा पार्श्वस्थौ सुखदशमभावौ हृद-
यगौ ॥ प्रजाधर्मौं क्रोडे रिपुनिधनभावौ मुनिगृहं
स्थितं नाभौ त्र्यंशे ह्युदयति तनोर्मध्यमगते ॥ ५७ ॥

बस्तिर्विलग्नं धनरिष्फमुस्कं त्रिलाभभावो वृषणो स्वमित्रे ॥ जानू त्रिकोणे खलु जानुनी स्तो जंघेरिमृत्यू चरणौ द्युनश्च ॥ ५८ ॥

कालांगविभाग कहतेहैं कि प्रथम द्रेष्काण हो तो लग्न शि २। १२ नेत्र ३ । ११ कान ४। १० नाक ५ । ९ गाल ६। ८ दाढ़ी मूछ और ७ मुख इनमेंभी १ से ६ तक दक्षिणभाग ८ से ऊपर वामभाग जानना ॥ ५६ ॥ लग्नमें दूसरा द्रेष्काण हो तो १ कंठ २। १२ कंधे ३। ११ भुजा ४। १० बगल ५। ९ हृदय ६।८ पेट ७में नाभि ॥५७॥ यदि लग्नमें तीसरा द्रेष्काण हो तो १में नाभिके नीचे मूत्रस्थान २ ।१२ से लिंग गुदा और चूतड ३। ११ से अंडकोश १० । ४ जानु ५ । ९ जंघा ६।८। पैर ७ पादाग्रभाग. जिस राशिमें जैसा शुभ पाप बैठाहो उसीके तुल्य उस अंगमें पुष्टिआदि वा व्यंगता तिल मश दागआदि कहने ॥ ५८ ॥

लग्नहक्काणैरुदितैः क्रमेण तनोस्त्रिभागाः शिरसोवसानम् ॥ वामांगमत्रोदितराशिषट्कमसव्यमत्रानुदितं भषट्कः ॥ ५९ ॥ आद्ये त्र्यंशे जन्म कस्यापि राशेः सौम्ये मेषे वा वृषे जन्मनि स्युः ॥ चिह्नं पापास्तत्र वा शीर्षभागे दृश्यादृश्ये वामदक्षे व्रणः स्यात् ॥ ६० ॥

लग्नमें जो द्रेष्काण (उदित) वर्त्तमान आदि मध्यान्त्य हो उसके सदृश शरीके भी त्रिभाग शिरसे पादपर्यंत हैं लग्नसे ६ राशिपर्यंत दाहिना ७ से वामांग जानना ॥ ५९ ॥ किसी राशीके प्रथमद्रेष्काणमें जन्म हो और मेष वृषमें हों तो प्रथम द्रेष्काणोक्त अंगमें चिह्न होगा पापग्रहोंसे व्रणादि होगा ॥६०॥

युग्मे दृकाणे यदि जन्म कंठादंगस्य भावे मिथुनाच्चतुष्के ॥ शुभैः शुभं पूर्ववदेव शेषं व्रणोपघातं सकलैश्च पापैः ॥ ६१ ॥ तृतीयभागे भवनस्य जन्म कंठेरधः कालशरीरराशौ ॥ पापैः शुभैः पूर्ववदेव सर्वं वाच्यं तु विद्भिस्त्रितये विभागे ॥ ६२ ॥

यदि लग्नके दूसरे द्रेष्काणमें जन्म हो और ३।४।५।६ राशियोंमें शुभग्रह हों तो कंठ आदि मध्य अन्त्य विभागोंमें से यथोक्त स्थानमें पुष्ट्यादि और पापग्रहोंसे व्रणादि घात कहना ॥ ६१ ॥ यदि लग्नके तीसरे द्रेष्काणमें जन्म हो तो पूर्ववत् शुभग्रहोंसे शुभ पापोंसे व्रणादि कटिके नीचे यथास्थानमें पूर्वोक्तक्रमसे विद्वानोंने कहना ॥ ६२ ॥

काष्ठाभिघातेन चतुष्पदेन चरादिराश्यंशगते दिनेशे ॥ भावी व्रणः स्वालयगे नवांशे स्वभावजातः शुभदृष्टियुक्ते ॥ ६३ ॥ पाषाणघातादथ मारुतोत्थः शनौ कुजे लोष्टकभित्तिपातात् ॥ चन्द्रे जलंप्राणिभवो व्रणो वा चरादिगे शृङ्गिकृतोऽथवा स्यात् ॥६४॥इति श्रीपाठकमहादेवविरचिते जातकशिरोमणौ जन्मविधिनामाध्यायः पंचमः ॥५॥

द्रेष्काणविभागसे शुभग्रहोंसे तिलादिचिह्न पापोंसे व्रणादि तथा उस ग्रहोंके स्वराश्यादि गत होनेमें जन्म ही अन्यथा आगन्तुक दशादिकोंमें होगा यह पूर्वश्लोकोंका सार है अब विशेष कहते हैं कि जो सूय चरादिराशि अंशकोंमें हो तो द्रेष्काणोक्त स्थानमें काष्ठका चिह्न होगा अपने स्थानमें हो तो

भविष्य और शुभदृष्टि हों तो जन्महीसे होगा ॥ ६३ ॥ यदि शनि उक्तफलकारक हो तो पत्थरसे वा वायु विकारसे मंगल हो तो पत्थर ढेला यद्वा दीवार आदिसे गिरपड़नेका चिह्न होगा. चन्द्रमा हो जलचरजीवसे उत्पन्न अथवा फोडेसे यद्वा शृंगिवालेके चोटसे होगा. चरादिक्रम यहां समीमें जानना ॥ ॥६४॥इति श्रीमहीधरकृतायां जातकशिरोमणिभाषाटीकायां सूतिकाध्यायः पञ्चमः ॥ ५ ॥

अनियतं नियतं गणितागतं त्रिविधमायुरुशंति च योगजम् ॥ प्रथमतः कथयाम्यथ योगजं मुनिवरैर्गदितं तदरिष्टकम् ॥ १ ॥ समाद्यभागे विषमापरार्द्धे दलोदये-द्धास्तमये रवेश्च ॥ पापा ग्रहाअंत्यनवांशसंस्था वदं-ति जन्तोर्मरणाय जन्म ॥२॥ पापाश्चतुर्षु केन्द्रेषु तदे-कत्र हिमद्युतौ ॥ शुभग्रहावियुक्तेषु पुंसः स्याज्जन्म मृ-त्यवे ॥ ३ ॥

आयु (अनियत) जिसका कोई प्रमाण नहीं है नियत जो निर्याण; आयु आदि गणितसे मिलती है और योगके फल-से जो विदित होती है ये तीन प्रकारके आयु जाननेके हैं इनमें प्रथम (योगज) जो ग्रह योगसे जानी जाती है और जिसको अरिष्टयोग कहते हैं उनका विस्तार पूर्वाचार्योक्त मतसे यहां कहता हूं॥ १ ॥ सन्ध्याकालके जन्ममें यदि चन्द्रहोरा अर्थात् समराशिके पूर्वार्द्ध विषयके उत्तरार्द्धमें लग्न हो तथा पापग्रह अन्त्य नवांशमें हों तो बालकका जन्म मर-णके ही लिये हुआ. अर्थात् होतेही वह शीघ्रही मर जायगा ॥ २ ॥ चारों केंद्रोंमें पाप हों शुभयुक्त न हों और चन्द्रमा भी

किसी केन्द्रमें पापयुक्त हो तो बालकका जन्म मरनेकेही लि
हुआ जानना अर्थात् होतेही मरजायगा ॥ ३ ॥

वामं चतुर्थात्पुरतश्च मध्याच्चक्रस्य भागः प्रथमः परोऽ
न्यः ॥ पापाः शुभाः प्राक्परभागसंस्था कीटे विलग्ने
मरणं प्रयाति ॥ ४ ॥ तनौ पापद्वयांतस्थे द्यूने वा मृत्यु
माप्नुयात् ॥ व्ययशत्रुगतैः पापैर्द्धनमृत्युगतैरपि ॥ ५ ॥
क्षीणे शशिनि रिष्फस्थे पापैरुदयरंध्रगैः ॥ केंद्रत्रिको
णरहितैः शुभैः क्षिप्रं प्रणश्यति ॥ ६ ॥ विलग्नास्तगतै
पापौ क्रूरयुक्तः शशी भवेत् ॥ शुभादृष्टो चिराद्बाले
म्रियते नात्र संशयः ॥ ७ ॥

कुण्डलीचक्रके चतुर्थ भावसे पूर्व दशमसे उत्तर वामभ
और दूसरी ओर दक्षिणभाग है पूर्वार्द्धमें पापग्रह उत्तरार्द्ध
शुभग्रह हो और कर्क वा वृश्चिक लग्न हो तो बालक मृत्यु
प्राप्त होवे ॥ ४ ॥ लग्न पापग्रहोंके बीचमें हो "यहां पापकर्त्त
की विशेषता है" अथवा सप्तमभाव पापग्रहोंके बीचमें हो
मृत्यु पावे. तथा बारहवां पापग्रह लग्नमें जानेवाला अ
छठा पापग्रह सप्तममें जानेवाला हो अथवा २ । ८ भाव
पापग्रह हो तौ भी मृत्यु पावै ॥ ५ ॥ क्षीणचंद्रमा व्ययभाव
पापग्रह लग्न एवं अष्टममें हो और शुभग्रह केंद्रत्रिकोणमें
हों तो बालक शीघ्र मरजावे ॥ ६ ॥ लग्न सप्तममें पाप
हो चंद्रमा पापयुक्त शुभग्रहोंकी दृष्टिसे रहित हो. तो निस
देह वह बालक शीघ्रही मरजावे ॥ ७ ॥

स्मरांत्यमृत्युलग्नस्थः क्रूरयुक्तः शशी भवेत् ॥ केंद्रा
न्यगैः शुभखगैर्नेक्षितो मृत्युमाप्नुयात् ॥ ८ ॥ पक्षे

सितेऽह्नि रिपुरंध्रगते हिमांशौ पापावलोकिततनौ म्रियते हि शीघ्रम् ॥ कृष्णे तथा निशि शुभैरवलोकितेऽपि वर्षेऽष्टमे शुभशुभैर्मरणं तदर्द्धम् ॥ ९ ॥ षष्ठेऽष्टमेपि शुभदा बलिभिश्च पापैर्दृष्टा भवंति यदि नाशमुपैति मासात् ॥ लग्नाधिपे युवतिगे विजिते च पापैः सौम्यैस्तथापि मरणं नियतं प्रयाति ॥ १० ॥ क्षीणे हिमांशौ मरणं विलग्ने विनाशकेंद्रेषु भवंति पापाः ॥ विनाशजायाभवने शशांके प्रयाति मृत्युं यदि पापमध्ये ॥ ११ ॥

पापयुक्त चंद्रमा ७ । १२ । ८ । १ भावोंमेंसे किसीमें हो शुभग्रह उसे न देखें तथा केंद्रोंमें न हो तो मृत्यु पावे ॥ ८ ॥ शुक्लपक्षमें दिनका जन्म हो चंद्रमा ६ । ८ वें भावमें हो और लग्नको पापग्रह देखें तो बालक शीघ्र मरजायगा तैसे ही कृष्णपक्षमें रात्रिका जन्म हो और चंद्रमा छठे वा आठवें भावमें हा उसे शुभग्रह देखते भी हों तौ भी आठवें वर्षमें मृत्यु पावेगा यदि चंद्रमा शुभपापोंसे युक्त वा दृष्ट बराबर हो तो ४ वर्ष बचेगा॥९॥यदि शुभग्रह छठे आठवे स्थानोंमें भी हों और उन्हें बलवान् पापग्रह देखें एक महीनेमें बालक मरजावै तथा लग्नेश सप्तमभावमें पापग्रहोंसे युद्धमें जीते हों अथवा शुभग्रहोंसे युद्धमें हारे हों तौ भी निश्चय एकमहीनेमें मरण पावे ॥ १० ॥ क्षीणचन्द्रमा लग्नमें हो और अष्टमभाव केंद्रभावोंमें पापग्रह हों तो मृत्यु पावे तथा ७ वा ८ भावमें चन्द्रमा पापग्रहोंके बीचमें हो तौ भी मृत्यु पावे ॥ ११ ॥

पापमध्यस्थिते लग्ने पापे सप्तमरंध्रगे ॥ अन्वया म्रियते सार्द्धं शुभैर्दृष्टे स्वयं शिशुः ॥ १२ ॥ केंद्रत्रिकोणे भवंति पापाः शुभैस्तदान्यत्र गतैरदृष्टाः ॥ चंद्रे

गृहांत्ये मरणं प्रयाति लग्ने सुधांशौ मदने च पापाः ॥ ॥ १३ ॥ ग्रस्ते सुधांशावशुभान्विते च मात्रा समं नाशमुपैति भौमे ॥ विनाशगेहे तमसा गृहीते रवौ तु शस्त्रेण वधस्तयोः स्यात् ॥ १४ ॥ स्वं वा गृहं तनुगृहं बलवाञ्छशांकः स्थानं गमिष्यति यदा मृतियोगकर्तुः॥ पापैर्विलोकिततनुर्मरणाय कालो वर्षेण यस्य समये मुनिभिः प्रदिष्टः ॥ १५ ॥ इति श्रीपाठकमहादेवविरचिते जातकशिरोमणा रिष्टाध्यायः षष्ठः ॥ ६ ॥

लग्न पापग्रहोंके बीचमें हो पापग्रह सप्तम वा अष्टममें हं तो मातासहित बालक मरे यदि शुभग्रहोंकी दृष्टि भी हो तं बालक आपही मरे ॥ १२ ॥ केंद्रत्रिकोणोंमें पाप हों उन्हें अन्यस्थानगत शुभग्रह न देखे और चन्द्रमा राश्यंतमें हो तं मरण पावे तथा लग्नमें चन्द्रमा सप्तममें पाप हों तौ भी वह फल जानना ॥१३॥ चन्द्रमा ग्रहणकालका हो (पाप) मंगल शनि से युक्त भी हो तो मातासहित बालक नष्ट होता है यदि मंगल अष्टमस्थानमें हो और सूर्य ग्रहणकालीन हो तो मातासहित बालककी मृत्यु शस्त्रसे होवै ॥ १४ ॥ अरिष्टयोगोंमें फल होनेका समय जहां मुनियोंने नहीं कहा है तहां विचार है कि, चन्द्रमा जिसराशिमें है उसीमें जब लौटकर आवै अथवा लग्नराशिमें जब आवै अथवा मृत्युकर्ता ग्रहोंमें जो बलवान् है उसकी स्थितराशिमें जब चन्द्रमा आवे उस समय मरणकाल होता है. परंतु यह विचार एक वर्षके भीतर होता है उपरांत नहीं ॥ १५ ॥ इति जातकशिरोमणौ महीधरीभाषाटीकायामरिष्टाध्यायः षष्ठः ॥ ६ ॥

उडुपतिकृतरिष्टं भंगमायाति योगैः प्रथममिह यथावत्तानहं कीर्तयामि ॥ तदनुतनुत्रिभागोत्पातजातं ग्रहणां व्रजति विलयभावं दीर्घकालोप्यरिष्टम् ॥ १ ॥ लग्नाधिपे केन्द्रगते हिमांशुः षष्ठाष्टमस्थो न हि मृत्यु हेतुः ॥ षष्ठाष्टमस्था बुधभार्गवेज्या न मृत्यवे स्युः प्रभवाः कदाचित् ॥ २॥ षष्ठाष्टमस्थोऽपि शशी दृकाणे सुरेंद्रमंत्रींदुजभार्गवानाम् ॥ प्राप्तं शिशुं मृत्युवशं प्रसह्य रक्षत्यवश्यं न हि संशयोऽत्र ॥ ३ ॥

अरिष्ट तीनप्रकारसे जानेजाते हैं पहिला ग्रह योगसे दूसरा द्रेष्काणसे तीसरा ग्रहोंके उत्पातसे. इनमें पहिला प्रकार अरिष्ट हारकयोगोसे नष्ट होजाता है इसलिये उनयोगोंको प्रथम कहताहूं जिनसे दीर्घकालिक अरिष्टभी हट जाता है. अन्य दोप्रकारका खुलासा पीछे कहाजायगा ॥ १ ॥ लग्नेश केन्द्रमें हो तो चन्द्रमा ६।८ भावमें भी मृत्यु नहीं करता तथा ६।८ भावोंमें बुध बृहस्पति शुक्र कभी पूर्वोक्त योगोंसे मृत्यु नहीं करते ॥ २ ॥ चन्द्रमा बुध बृहस्पति शुक्रके द्रेष्काणमें छठा आठवां भी हो तो मृत्युके वशमें प्राप्तहुये भी बालककी अवश्य रक्षा करता है इसमें संदेह नहीं है ॥ ३ ॥

शुभराशिगतश्चंद्रः संपूर्णः शुभमध्यगः॥ शुभदृष्टोरिष्टभंगं कुरुते नात्र संशयः ॥ ४ ॥ पक्षे सिते निशि शशी निधनारिसंस्थः कृष्णे तथाहनि शुभाशुभदृश्यमानः॥ क्षीणोप्यरिष्टहर एव तथापि बालं मातेव रक्षति पितेव शिशुं विपन्नः ॥ ५ ॥ संपूर्णमंडलश्चन्द्रो दृष्टः सर्वै

खचारिभिः॥ अरिष्टहर्त्ता राजेव हिनस्ति द्वेषिणं रणे ॥ ६ ॥ संपूर्णो मित्रभागस्थश्चन्द्रः शुभनिरीक्षितः ॥ श्रेष्ठोरिष्टहर्ता योगः श्वापदानां यथा हरिः ॥ ७ ॥

चन्द्रमा पूर्णमंडल होकर शुभग्रहकी राशिमें शुभग्रहोंके बीच एवं शुभग्रहोंसे दृष्ट हो तो निस्संदेह अरिष्टको भंग करता है ॥ ४ ॥ शुक्लपक्षमें चन्द्रमा छठा आठवां हो और रात्रिका जन्म हो तथा कृष्णपक्ष दिवा जन्ममें ६ । ८ में हो शुभपाप उसे देखें तो वह चन्द्रमा क्षीण भी हो तौ भी अरिष्टहारक होकर बालकको मातापिताके समान अरिष्टोंसे रक्षा करता है ॥ ५ ॥ पूर्णमंडल चन्द्रमाको समस्त ग्रह देखें तो जैसे राजा रणमें शत्रुको मारता है तैसे ही यह भी अरिष्टहर्ता होता है ॥ ६ ॥ पूर्णचंद्रमा मित्रांशकमें शुभग्रहोंसे दृष्ट हो तो जैसे वनजंतुओंमें सिंह श्रेष्ठ है तैसे ही अरिष्टहर्ता योगोंमें यह चन्द्रमा श्रेष्ठ है ॥ ७ ॥

प्रस्फुरत्किरणमण्डलोपगो लग्नगः प्रशमयेत्सुरमंत्री ॥ सूर्यपूर्वखगमण्डलोद्भवं रिष्टमाशु सकलं सुदुस्तरम् ॥ ८ ॥ लग्नाधिपोतिबलवान् व्ययमृत्युबाह्यस्थानस्थितो नवमपंचमकंटकस्थैः॥दृष्टः शुभैरशुभदृष्टिविवर्जितोऽसौ मृत्युं विधूय विदधाति सुदीर्घमायुः ॥ ९ ॥

उदयी बृहस्पति लग्नमें हो तो सूर्योपरागसे उत्पन्न अति कठिन अरिष्टको शमित करदेता है ॥ ८ ॥ लग्नेश अतिबलवान् होकर ८ । १२ भावोंसे अन्यस्थानोंमें हो तथा केन्द्रस्थ शुभग्रह उसे देखें पापग्रह न देखें तो मृत्युको उडायके दीर्घायु देता है ॥ ९ ॥

पूर्णांशुजाले सुरराजपूज्ये केंद्रत्रिकोणे दनुजेंद्रमान्ये ॥ बुधेथवारिष्टमुपैति नाशं पापं यथा याति सुरापगायाम् ॥ १० ॥ उदयाति मुनावगस्त्ये जातो ह्युदये वशिष्टपूर्वाणाम् ॥ सकलारिष्टविमुक्तो जीवति पूर्णायुषं नियतम् ॥ ११ ॥ अजवृषभशशांकमंदिरस्थः शशिवैरी सहजारिलाभसंस्थः ॥ शुभगगनविहारिदृष्टदेहः समयति सर्वमरिष्टजातमाशु ॥१२॥ केंद्रत्रिकोणेषु न यस्य पापास्तेष्वेव सौम्या निधनव्ययेभ्यः ॥ अन्यत्रसंस्थाः सकलाश्च पापाः सम्पत्स्थिरा तस्य चिरायुषश्च ॥१३॥ इति श्रीजातकशिरोमणावरिष्टभंगाध्यायः सप्तमः ॥ ७ ॥

बृहस्पति अस्तंगत न हो शुक्र केंद्रत्रिकोणमें हो अथवा बुध केंद्रत्रिकोणमें हो तो जैसे गंगामें स्नान करनेसे पाप चले जाते हैं ऐसे ही अरिष्टयोगोंका फल भाग जाता है ॥ १० ॥ जो बालक अगस्ति एवं सप्तर्षियोंके उदयमें उत्पन्न हो वह सम्पूर्ण अरिष्टसे छूटके नियतपूर्णायुपर्यंत जीतारहता है ॥ ११ ॥ मेष वृष वा कर्कका राहु ३ । ६ । ११ भावोंमेंसे किसीमें हो उसे शुभग्रह देखें तो शीघ्रही सम्पूर्ण अरिष्टजातिको शमित कर देता है ॥ १२ ॥ जिसके लग्नसे पापग्रह केन्द्रत्रिकोणोंमें न हो तथा ८ । १२ भावोंसे अन्यस्थानोंमें हों और केन्द्रत्रिकोणोंमें शुभग्रह हों तो वह दीर्घायु होगा और उसकी सम्पत्ति भी स्थिर रहेगी ॥ १३ ॥ इति जातकशिरोमणौ माहीधरीभाषाटीकायामरिष्टाध्यायः सप्तमः ॥ ७ ॥

वर्गोत्तमे लग्नगते झषस्य वृषेन्दुजे तिष्ठति तत्त्वलिप्ताम्।
स्वोच्चेषु तिष्ठत्स्वपरेषु पूर्णमायुः प्रदिष्टं मुनिभिः पुराणैः
॥ १ ॥ धनुर्द्धरस्यांत्यगते विलग्ने बुधे वृषे तत्त्वकला
प्रयाते॥शेषग्रहैः स्वोच्चपदप्रयातैः पूर्णायुरुक्तं मुनिभिः
पुराणैः ॥२॥ देवालयानां सरसां पुराणां कूपस्य पाषा
णविनिर्मितस्य ॥ एषां परायुर्युगपत्प्रदिष्टं विचार्य
गर्गादिमुनिप्रवर्य्यैः ॥ ३ ॥ नृणां गजानां शरदां शतं
च विंशाधिकं पञ्चदिनं परायुः ॥ द्वात्रिंशदश्वस्य खरो
ष्ट्रयोश्च तत्त्वं वृषादेर्गदितं विरूपम् ॥ ४ ॥ अजादि
कानां नृपमायुरुक्तं शुनां तथा द्वादशभिः शरद्भिः।
स्थिरद्विदेहोपगतो गुरुश्चेद्ग्रामस्य लग्ने नियतं तदायुः॥५

आयुर्दाध्यायके आदिमें पूर्णायुयोग कहते हैं कि, मीनल
वर्गोत्तम हो चन्द्रपुत्र वृषके २५ कलामें हो अन्य सब
अपने अपने उच्चराशियोंमें हों तो पूर्णायुपर्यंत जीता रहता
ऐसा प्राचीन मुनियोंने कहा है ॥ १ ॥ लग्नमें धनका अं
नवांशक हो और ग्रह पूर्वोक्त प्रकार हो तौ भी वही प
कहा है ॥ २॥ गणितके लिये परमायु अनियत है ग्रहबला
सार आयु होती है उसमें भी संयमादिक तथा दुष्कर्म सु
के अनुसार घटबढ भी जाती है. जैसे योगाभ्याससे अ
बढती है उत्कट कर्मोंसे घटती है. परन्तु गणितके वास्ते
माननेके नाईं एक अंक अवश्य मानना चाहिये इसलिये पू
चार्योंने इसप्रकार परमायु मानी है कि, देवालय, सरोव
नगर, पत्थरका बनाया कूप, इनके आयुज्ञानार्थ गणितस
नोपयोगी तथा मनुष्य और हस्तियोंकी भी १२० वर्ष ५ दि

परमायु है घोडे गदहे और ऊँटोंकी ३२ वर्ष बैल आदिकोंकी २४ वर्ष ४ बक्रेआदिकोंकी १६ और कुत्तेकी १२ वर्ष आयु कही है। यदि बृहस्पति स्थिर वा द्विस्वभाव राशिमें हो और लग्न पूर्वोक्तग्रामचरराशियोंमेंसे हो तो उक्तायु निश्चत होती है ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥

गुरुरुदये रिपुराशिगतेर्के सहजगृहे रविजे विदिवेशौ ॥ गृहगश्च सितो निधनान्यगतःशशभृद्बहुजीवनमेति नरः ॥ ६॥ मीनोदये लग्नगतो भृगुश्चेदाये विवस्वान् शशिजोंबरस्थः ॥ केंद्रे गुरुः सौरिविधू स्वगेहे शरच्छतं जीवति मानवेंद्रः ॥७॥ तृतीयगोर्कों भृगुजो विलग्नेऽधीस्थो गुरुः षष्ठगतो महीजः ॥ लाभे शनीन्दू नियतं मनुष्यो जातः शतं जीवति वत्सराणाम् ॥ ८ ॥ शशांकजीवौ शशिधामसंस्थौ रसातले मध्यगतौ शुभौ स्तः॥ तृतीयलाभारिगताश्च पापा शरच्छतं जीवति मानवेन्द्रः ॥ ९ ॥

बृहस्पति लग्नमें सूर्य शत्रुराशिमें शनि तीसरे भावमें बु सूर्यसे द्वितीयस्थानमें शुक्र चतुर्थ और चन्द्रमा अष्टमभाव अन्य किसीमें हो तो मनुष्य बहुत काल जीता है ॥ ६ ॥ मी लग्न हो उसमें शुक्र बैठा हो ग्यारहवें भावमें सूर्य दशम बुध केन्द्रमें बृहस्पति और शनि चन्द्रमा अपने अपने राशि योंमें हों तो मनुष्योंमें श्रेष्ठ होकर पूर्णायु भोगता है ॥ ७ तीसरा सूर्य लग्नमें शुक्र पञ्चम बृहस्पति छठा मंगल और लाभमें शनि चन्द्रमा हो तो मनुष्य सौवर्ष अर्थात् पूर्णायु जीता रहता है यहां ''शत'' पद पूर्णायुवाचक है

चन्द्रमा बृहस्पति कर्कके हों तथा एक शुभग्रह चतुर्थमें वृश्चममें और ३।६।११ भावोंमें पापग्रह हों तो मनुष्य श्रेष्ठ पूर्णायु भोगता है ॥ ९ ॥

त्रयीमयाद्भास्करतः प्रसन्नात्रिकालजं ज्ञानमवाप दैत्यः। मयाभिधानो यवनोऽपि तस्माद्यज्ज्योतिषं ज्ञानमवाप सम्यक् ॥१०॥ वराहमिहिरद्विजो वरमवाप्य मार्त्तण्ड तत्त्रिकालभवदर्शनं धरणिमण्डले ख्यातवान् ॥ पराश रमयादिभिश्च भुवि यत्कृतं ज्योतिषं विचार्य स च पौर परिचकार विस्पष्टकम् ॥ ११ ॥

त्रिकालबोधक ज्ञान मयदानवने त्रिगुणात्मा सूर्य नार यणको प्रसन्न करके पाया । मयदानवसे यवनाचार्य वह भूत भविष्य वर्त्तमान कालके जाननेका ज्ञान यह ज्योति सम्यक् प्रकारसे पाया ॥ १० ॥ तथा वराहमिहिराचार्य सूर्यनारायणसे यही त्रिकालोद्भव ज्ञानदर्शन पायके पृथ्वी ख्यात भया इस वराहमिहिरने, पराशर मयदानवादिकोंने ज्योतिष संसारमें किया था उसको विचारके पुरुषोपयोग स्पष्टतर किया उसके अनुसार यहां भी आयुर्दायादि त्र कहाजाता है यह तात्पर्य है ॥ ११ ॥

नवेंदवो बाणयमाः शरेंदू द्विभूमयो बाणभुवः कुदस्राः ॥ खवाहवः सूर्यमुखग्रहाणां पिण्डायुषाद्या निजतुंगगा नाम् ॥ १२ ॥ एषां दलं स्यान्निजनीचभागे नीचोच्च मध्ये गणितेन वच्मि ॥ द्वे आयुषी पिंडनवांशसंज्ञे सदैव साध्ये गणितेन सद्भिः ॥ १३ ॥ निसर्गजातं

मुनयस्तृतीयं वदंति यत्तत्फलनिर्णयाय ॥ प्रवर्त्तमाने वयसि स्वकीये सम्यक् फलं स्यात्सदसद्दशायाः ॥१४॥

सूर्यके १९ चंद्रमाके २५ मंगलके १५ बुधके १२ गुरुके १५ शुक्रके २१ शनिके २० इतने वर्ष पिंडायुदशाके गणितार्थ हैं परमोच्चगतग्रह उक्तवर्ष पावता है ॥ १२ ॥ जो ग्रह परमनीचमें है उस वर्ष आधे होजाते हैं जो उच्च नीच बीच है उसके लिये त्रैराशिकानुपात कहता है ॥ १३ ॥ तीसरी निसर्गायु दशा फलनिर्णयकेलिये मुनिलोग कहते हैं अपनी अवस्था वर्त्तमानमें दशाका शुभाशुभ फल होता है ॥ १४ ॥

एकं द्वयं नवकृतिर्धृतयः कृतिश्च पंचाशदिन्दुकुजबोधनभार्गवानाम् ॥ देवेंद्रपूज्यरविभास्करसंभवानां नैसर्गिका मुनिवरैः कथिता दशाब्दाः ॥ १५ ॥ आद्यं वयश्चन्द्रमसा द्वितीयं कौजं तृतीयं वय इन्दुजस्य ॥ वयश्चतुर्थं भृगुजस्य जैवं परं वयः षष्ठमुशंति सौर्यम् ॥ ॥ १६ ॥ सप्तमं रविसुतस्य वयोऽन्ये लग्नपस्य यवनाः शुभमंत्ये ॥ नो वयः सहजवत्सराधिकं लग्नपस्य न हि जात्ववकाशः ॥ १७ ॥

नैसर्गिकदशामें जन्मसे १ वर्षतक चंद्रमा २ वर्ष मंगल ९ वर्ष बुध २० तक शुक्र २० उप्रांत १८ तक गुरु तब २० तक सूर्य इसके आधे ५० तक शनिकी दशा होती है इनका योग १२० वर्ष होता है. यदि कोई इतनेसे अधिक बचे तो उसके उतने सब दिन लग्नकी दशा होती है ॥ १५ ॥ इसका खुलासा भी यह है कि, प्रथम दशा वा अवस्था १ वर्ष चंद्रमाकी तब क्रमशः उक्तवर्षोपर्यंत मं० बु० शु० गुरु० सू० श० ल० की

होती है १२० वर्षसे अधिक जो बचे उसकी लग्नदशा नहीं है ॥ १६ ॥ १७ ॥

रवेरुच्चं व्योम दिशो रूपं रामा वियद्विधोः ॥ नवाष्टा विंशतिर्व्योमाविदः पंचशरेंदवः ॥ १८ ॥ गुरौ रामाःशर व्योमरुद्रा भानि वियद्भृगोः॥शनेरसाकृतिर्व्योम रव्याद्य ध्रुवका अमी ॥ १९ ॥ छायादियंत्रैः प्रथमं विचार्य दिवानिशोर्जन्मघटीपलानि ॥ सिद्धांतमार्गेण सलग्न खेटास्तात्कालिकाः स्पष्टतरा विध्यात् ॥ २० ॥

दशासाधनार्थ ग्रहोंके उच्च स्पष्ट सुगमार्थ यहां पुनरुक्ति कहते हैं कि, सू. ० । १० । ० चं० १ । ३ । ० मं० ९ । २८ । ० ५ । १५ । ७ बृ० ३ । ५ । ० शु० ११ । २० । ० श० ६ । २० । ये उच्च ध्रुव कहे हैं इनमें ६ राशि जोडनेसे परम नीच होता ॥ १८ ॥ १९ प्रथम छाया आदि यंत्रोंसे दिन वा रात्रिके घ पला विचारके सिद्धांतोक्तप्रकारसे लग्नसहित ग्रहोंके तात्क लस्पष्ट करने ॥ २० ॥

निजोच्चेन शुद्धो ग्रहः षड्भहीनो भचक्राद्विशुद्धोऽथ षड्भाधिकश्च ॥ यथावत्स्थितस्तस्य लिप्ता निजाब्दै हताश्चक्रलिप्ताभिराप्तः समादिः ॥ २१ ॥

जो ग्रह ६ राशिसे न्यून हो तो अपने उच्चमें हीनकर यदि ६ से अधिक हो तो १२ में हीन करना. ऐसे यथावस्था उच्च नीच वा मध्यगत ग्रहका उच्चपात करके राश्यादि लिप्ता, पिण्डकरना ग्रहके दशा वर्षोंसे गुणाकर चक्र १२ लिप्ता २१६०० से भागलेना वर्ष मिले शेषको १२ से गुणा करके भाग लेना महीना मिलेंगे.पुनः इसीप्रकार शेषको ३०

गुणके भाग हारसे भागलेके दिन और पुनः उसी प्रकार ६० से गुणनेपर घटी पला मिलेंगी यह दशा वर्षादि होती है ऐसे सभी ग्रहोंके करना ॥ २१ ॥

आयुः पिण्डे चक्रपातस्य हानिः कार्या विज्ञैरंशजे पिण्डजे वा॥ एकत्रस्थौ द्वौ त्रयो वा ग्रहाः स्युरेषामेको यो बली स्वांशहर्त्ता ॥ २२ ॥ नित्यं शत्रुस्थानगानां त्रिभागैर्हानिं कुर्यात्पूर्वेयायिग्रहाणाम् ॥ नित्यं सर्वे नीचगा ह्यर्द्धहानिं कुर्युः स्वीये पिण्डजे ह्यंशजे वा॥२३॥

अंशायु वा पिण्डायुमें चक्रपातसे जो हानि होती है वह आयुपिंडमें ही करलेनी यदि एकस्थानमें २।३ ग्रह हों तो उनमें जो बली है वही घटायाजाता है सबही नहीं इस क्रमसे जब (आयुःपिण्ड) समस्त ग्रहदशायोगमें घटायके शेषमें मिश्रविभागरीतिसे पुनः समस्तग्रहोंके भाग ही करने ॥ २२ ॥ सभीप्रकारोंमें शत्रुराशिगत ग्रहोंके तीसरे भागकी हानि करनी। जो नीचराशिमें हों उनका आधा घटायदेना प्रथम हानिक्रमकरके तब वृद्धिक्रम करना. यह विधि अंशायु पिण्डायु दोनोंहीमें है ॥ २३ ॥

अस्तं गता व्योमचराः समस्ताः स्वादायुषोर्द्धं क्षपयंति नित्यम् ॥ एकैव नीचास्तमितस्य हानिर्नास्तंगयोर्भार्गवसूर्यसून्वोः ॥ २४ ॥ ताराग्रहाः शत्रुगृहाश्रयेण प्रतीयमानोंपगतास्त्रिभागम् ॥ स्वस्वायुषो नापहरंति नित्यं स्वोच्चस्थिता येपि न शत्रुहानिम् ॥ २५ ॥ वक्री ग्रहः स्वोच्चगतो ग्रहो वा यं स्वीयमायुस्त्रिगुणं करोति ॥

स किं निजद्वेषिगृहस्थितः सन्न त्र्यंशहर्ता स सुहन्निजोच्चे ॥ २६ ॥

अस्तंगत सबही ग्रह अपनी आयुका आधा सर्वदा ही होता है ऐसे ही नीचवाला भी आधा घटताहै जो नीचं और अस्तंगतभी हो तो एक आधा घटे दोवार नहीं परं इनमें शुक्र शनि अस्त भी हों तो भी आधा नहीं घटते नी· हीमें घटते हैं ॥ २४ ॥ जो ग्रह शत्रुगृहमें वक्रगति होवें अपं २ तीसरा भाग हरण नहीं करते अन्यथा शत्रुराशिस्थ तीसर भाग घटता है मंगल शत्रुराशिमें भी नहीं घटता तैसेर्ह उच्चगत गृह भी शत्रुराश्युक्त हानि नहीं पाते ॥ २५ ॥ जो वर्क्र और उच्चगत ग्रह अपनी आयुको त्रिगुण करता ह वह श· गृहमें बैठाहुआ क्या तीसरा भाग नहीं हरता. यह किसीक मत है । मित्र एवं उच्चमें भी ऐसा ही जानना यह भी मतांत रीय द्विरुक्ति है यहां लग्नदशामें लग्नेश बली हो तो राशि तुल्य और अंशेश बली हो तो अंशतुल्य वर्ष होती है य· टीकाकारोक्त मत है ॥ २६ ॥

रविभौमार्कपुत्राणामेकस्मिँल्लग्नगे सति ॥ कार्य्याः पाप ग्रहा हीनाः पिंडायुषि न चांशजे ॥ २७ ॥ सक्रूरलग्ने-र्कविभागहानिर्ग्रहायुषां सौम्यविलोकितेर्द्धम् ॥ शुभा· शुभौ चेदुदयोदितांगासन्ने शुभे नास्त्यशुभेऽस्ति हानिः॥ ॥२८॥ कार्यैषा पापजा हानिः पिण्डायुषि निसर्गजे ॥ जीवशर्मोदिते वापि नाशांयुषि च पापजा ॥ २९ ॥

सूर्य मंगल शनिमेंसे एक भी लग्नमें हो तो पापग्रहोंकी हानि करनी यह पिंडायुमें होती,है अंशायुमें नहीं ॥ २७ ॥

इसीको स्पष्ट कहते हैं कि, लग्नमें पापग्रह हो तो बारहवां भाग घटता है यदि उसपर शुभग्रह की दृष्टि हो तो चौबीसवां भाग घटता है शुभाशुभ दोही देखे अथवा लग्नांशके समीप शुभग्रह हो तो उक्तहानि नहीं होता ॥ २८ ॥ यह जो लग्नगत पापग्रहोक्त हानि कही है यह पिण्डायुमें और निसर्गायुमें अथवा जीवशर्मोक्तायुमें करनी अंशायुमें नहीं ॥ २९ ॥

व्ययादिलोमं सकलं व्ययस्था दलं च लाभे दशमे त्रिभागम् ॥ चतुर्थभागं नवमोपगाश्च विनाशगाः पंचमभागहाराः ॥ ३० ॥ षष्ठं हि भागं क्षपयंति पापाः शुभास्तदर्द्धं प्रतिवेश्म याताः ॥ अर्द्धं चतुर्थं रविभागकं च नागांशदिग्द्वादशमं च सौम्याः ॥ ३१ ॥

और संस्कार है कि बारहवां पापग्रहपूरेसे ग्यारहवां आधा दशम तीसरा भाग नवम चौथा अष्टम पांचवां॥३०॥सप्तम छठा-भाग कमती होताहै शुभग्रह हों तो उक्तका आधा घटाते हैं जैसे १२ में आधा ११ में चौथाई दशममें छठाभाग ९ में अष्टमांश अष्टममें दशमांश सप्तममें द्वादशांश मात्र ॥ ३१ ॥

पिण्डाब्दाः परमोच्चेषु प्रत्येकं परमायुषः॥ सप्तमांशैर्घनो रूपं जातिर्वेदहुताशनाः ॥ ३२ ॥ वर्षादिकैरिमैरायुर्गदिता जीवशर्मणा ॥ पूर्ववच्चक्रपातादिहानिर्नैसर्गिकेपि च ॥ ३३ ॥ एकादिग्रहराशीनां नव षट् त्रितयं नभः॥ त्रिरावर्त्तान्सवर्षाणि सत्रिकोणादजादितः ॥ ३४ ॥ द्विशत्या भागलिप्ताभ्यो लब्ध्वा वर्षादिकं ध्रुवम् ॥ राशिवर्षेषु संयुक्तं द्वादशाब्दावशेषितम् ॥३५॥ अंशायु-

रेवं संसाध्यं वक्रपातादिशोधितम्॥वर्गोत्तमस्वराश्यंश-द्रेष्काणे द्विगुणं सकृत् ॥ ३६ ॥ वक्रोच्चयोस्त्रिगुणितं द्वित्रिप्राप्तौ त्रिभिः सकृत् ॥ अंशायुरेवं लग्नस्य साध्यं यदि बलान्वितम् ॥३७॥ राशितुल्याधिकं कार्यं भागा-देरनुपाततः ॥ ३८ ॥ इति जातकशिरोमणावायुर्दा-याध्यायोष्टमः ॥ ८ ॥

जीवशर्मा आचार्यने परमायु १२० वर्ष ५ दिनके बराबर ५ विभाग वर्ष १७ मास १ दिन २२ घटी ८ पला ३४ सभी ग्रहोंके कहे हैं जो उच्चमें इतना नीचमें इतनेका आधा बीचमें अनुपातसे चक्रपातादि सभी होताहै. परंतु यह केवल जीवशर्माने अपनी ही युक्ति कही है इससे यह प्रकार संमत नहीं है ॥ ३२ ॥३३॥ अब अंशायु साधन कहते हैं कि, तत्काल ग्रह लिप्तापर्यंत पिण्डकरके २०० से भाग लेना वर्ष मिले १२ से अधिक मिलें तो १२ से शेष करलेने शेषको १२ से गुणाके २०० से भाग लेना महीने मिलेंगे शेष ३० से गुणाकार २०० के भागसे दि॰ और ६० से गुणाकर २०० के भागसे घटी पुनः ऐसे ही पला भी मिलती हैं इसमें भी संस्कार है कि दशा गतवर्षादिकोंको प्रथम ९ से तब ६ से पुनः ३ से अलग अलग गुणदेने. तब विकला व कला स्थान में घटी पला ६० से दिन ३० से मास १२ से वर्ष १२ से तष्टकरके ऊपर ऊपरको चढाते जाना. तब दशा वर्षादि सिद्ध होते हैं या अंशायु दशामें अंशगणना मेषादि सत्रिकोण अर्थात् नवांशके क्रमसे है ३४।३५ इसप्रकार अंशायु साधनकरके चक्रपातादि संस्कार पूर्ववत् करना जो ग्रह वर्गोत्तम, स्वराशि, स्वांशक स्वद्रेष्काणमें हो वह द्विगुण करना जो स्वराशि स्वनवांशादि में ३ प्रकारोंसे द्विगुणता पावै तो वह एक ही वार द्विगुण

रना उतने ही वार न करना. ऐसेही वक्री एवं उच्चस्थ ग्र तिगुना होता है परंतु यदि उच्च और वक्री भी हो तो एक वार त्रिगुण करना दोवार नहीं. और लग्नदशाकेलिये राशि बलवान् हो तो जितनी मेषादि राशि भुक्ती हैं उतने वर्ष शे अंशादियोंसे अनुपातक्रमसे मासादि लेने यदि अंशेश बल वान् हो तो अंशतुल्यवर्षशेषसे पूर्वोक्त करना अंशपदसे यह नवांश लेना ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ इति जातकशिरोमणं माहीधरीभाषाटीकायामायुर्दायाध्यायोऽष्टमः ॥ ८ ॥

सत्याचार्यमतं वराहमिहिराचार्य्येण च स्वीकृतं सत्ये-नापि पराशरादिमुनिभिर्यत्स्वीकृतं स्वीकृतम् ॥ आर्षे-यीषु च संहिताषु पुरुषग्रंथेषु चांशायुषं नृणां तल्ल-घुजातके बहुमतं पिण्डायुरप्याह सः ॥ १ ॥ विलग्नं शरीरं मनः शीतरश्मिर्विवस्वानथात्मा त्रयाणाम-थैक्ये ॥ नृणां जीवनं नित्यमेव त्रयाणामनैक्ये ध्रुवं देहपातस्तदा स्यात्॥२॥लग्नस्य शशिनो वापि प्रथमा भास्करस्य वा ॥ दशाबलक्रमेण स्यात्केन्द्रादीनां ततः परम् ॥ ३ ॥ प्रथमं केन्द्रगा दद्युर्मध्ये पणफरो-पगाः ॥ वयसोन्त्ये ततः शेषा दशा दद्युर्बलक्रमात् ॥ ॥ ४ ॥ केन्द्रोपगग्रहाभावे दद्युः पणफरोपगाः ॥ तद-भावे तदग्रस्था नराणां फलमादितः ॥ ५ ॥

सत्याचार्यका मत जो वराहमिहिराचार्यने अंगीकार किया यही यहां स्वीकार कियागया सत्याचार्यने भी ज मत पराशरादि मुनियोंने अंगीकार किया था वही स्वीका

किया था. जो मत ऋषिप्रणीत ग्रंथसंहितापौरुषेयग्रंथोंमें मनुष्योंको अंशायु कही है वह वराहमिहिराचार्यने बृहज्जातक लघुजातकमें बहुसंमत कही है और पिण्डायु भी कही है ॥ १ ॥ लग्न शरीर मन चन्द्रमा और आत्मा सूर्य है इन तीनोंके ऐक्यता होनेमें मनुष्योंका जीवन है इनके अलग होजानेमें देहपात (मृत्यु) होजाता है ॥ २ ॥ उक्त दशा वर्षादि सभी ग्रहोंके निकालके प्रथम किसकी दशा चाहिये इस क्रमको कहते हैं कि, लग्न चन्द्रमा सूर्यमें जो बलवान् हो वह प्रथम. तब केन्द्रगतकी ॥ ३ ॥ तब पणफरवालेकी तब आपोक्लिमवालेकी होती है पहिली अवस्थामें केन्द्रगत. मध्यममें पणफरगत अंतिममें आपोक्लिमस्थ फल देते हैं अन्य बलानुसार देते हैं ॥ ४ ॥ केंद्रमें ग्रह न हों तो पणफरस्थमें और इसके भी अभावमें आपोक्लिमवाला ग्रह मनुष्योंको प्रथम फल देता है ॥ ५ ॥

दत्तानि वर्षाणि बहूनि येन स्वल्पानि वातानि दशा वदंति ॥ केन्द्रादिगानां द्युसदां बलस्य साम्ये दशादौ बहुवर्षदातुः ६॥ केंद्रे पणफरादौ वा बलसाम्ये यदा स्थिताः ॥ प्राग्दशा तस्य भवति यश्च्युतो रविमण्डलात् ॥ ७ ॥ एकर्क्षगानां बलवान् ग्रहो यो दशाधिनाथस्य दशार्द्धभागम् ॥ आदाय दद्यात्सकलं त्रिकोणे त्रिकोणभावं बलिनां बली यः ॥ ८ ॥

पूर्वोक्तप्रकारसे लग्न सूर्य चन्द्रमेंसे बलीकी तत्पश्चात् केंद्रादिगतवालोंकी प्रथम लिखके और भी विचार है कि केंद्रादिगत ग्रहोंमें बलमें भी समान हों तो जिसने बहुत वर्ष पाये हैं उसकी प्रथम तदुत्तरोत्तर क्रमसे औरोंकी होगी ॥ ६ ॥ इसमें

भी समान हों तो जो ग्रह प्रथम उदयी है उसकी प्रथम हो
॥ ७ ॥ अब अंतर्दशाकेलिये कहते हैं कि, दशापतिके सा
जो ग्रह है वह दशापतिके आयुका आधा छोडकर अप
दशा गुणके अनुसार अंतर्दशा पाता है जो दशा पति
त्रिकोणमें ९।५ है वह उसके तीसरे भागको छोडकर अप
दशागुणोंसे अंतर्दशा पाता है ॥ ८ ॥

दशापतेः सप्तमगो ग्रहो यः स सप्तमांशं चतुरस्रसंस्थः ॥ चतुर्थभागं सदसत्फलं स्वं सलग्नखेटाः परिपाचयंति ॥ ९ ॥ स्थानेष्वथैतेषु दशापतिभ्यो योयोर्द्धहारादिपदस्थितश्च ॥ हारं गुणाश्चापि च तस्य तस्य सवर्णनेनैव पृथग् विदध्यात् ॥ १० ॥

जो ग्रह दशापतिसे सप्तम है वह सप्तमांश जो ४।
भावमें हो वह चतुर्थांश छोडकर अपने दशागुणोंसे पाता
॥ ९ ॥ इन स्थानोंमें दशापतियोंसे जो ग्रह आधा घटनेवा
आदि पदमें स्थित है उस उसके हार और गुणकके (सवर्णन
समच्छेद करके प्रत्येक अंतर्दशा जाननी अर्थात् जो अर्द्ध
दिक भाग है उनकी सवर्णना (समच्छेद) करना कि समच्छे
दको छोडदेना और नये अंश जो उत्पन्नहुये उनकी गुणक
संज्ञा और गुणकोंके योगको भागपर समझना दशा
वर्षादि अलग गुणकारोंसे गुणाकर हारसे भागलेकर जो
वर्षादि मिलेंगे वह अंतर्दशा होगी ॥ १० ॥

रूपमर्द्धादिभागस्य तिर्यक्पंक्त्या लिखेद्बुधः ॥ तदधः स्वस्वभागांकान् लिखेद्रूपं दशापतेः ॥ ११ ॥ दशापतेरेकगृहस्थितस्य सर्वार्द्धभाक् पंचमसंस्थितैकः ॥ त्रिभागहर्ता गुणभागहारादुद्देशकेऽस्मिन् विदधीत

विद्वान् ॥ १२ ॥ तलस्थहारेण परस्परेण राशीन्निह-
न्यादुपरिस्थितांश्च ॥ आत्मीयहारेण तलस्थितेन
नैवं भवेयुर्गुणभागहारः ॥ १३ ॥ अधस्थद्वित्रिहा-
राभ्यां हन्याद्रूपं दशापतेः ॥ त्रिरूपाभ्यां दलोर्द्धस्थं
त्र्यूर्द्धस्थं बिंदुताडितम् ॥ १४ ॥

अंतर्दशामें उदाहरणार्थ कहते ह कि एक वा आध
आदि भागके अंक तिर्छीपंक्तिसे लिखना उनके नीचे अप
अपने भाग जो जो मिलते हैं उनके अंक और एक दशा
तिका लिखना ॥ ११ ॥ इस उद्देशमें विद्वानने इसप्रका
करना कि, दशापतिके साथ जो ग्रह है वह आधा लेता
पंचम तीसरा भागहार गुण होता है ॥ १२ ॥ नीचे स्थि
जो हार हैं उन्हें परस्परराशियोंको गुणना जो ऊपर हैं उन्हे
गुणना निजहार जो सामने नीचे है उसीसे गुण भागह
नहीं होता समच्छेदकी रीतिसे ठीक होजाता है ॥ १३ ॥ ज
नीचे २ । ३ हार हैं तो दशापतिका एक गुणना ३ । १
आधासे उपरिस्थ ३ के उपरिस्थ बिंदुसे ताडन करना ॥ १४

दशापतिगुणाः षट् च वह्नयोर्द्धांशभागिनः॥त्रिभागहर्तु-
श्च भुजौ हारो हर्तुश्च योगतः ॥ १५ ॥ दशापतेर्दशाब्दा-
दीन्स्वगुणांकेन ताडयेत् ॥ विभजेद्गुणयोगेन लब्धं वर्षा-
दिकं स्वकम् ॥ १६ ॥ ततोर्द्धहारादिगुणेन हन्यात्पृथ-
क्पृथक् पूर्वदशां समस्ताम् ॥ विभज्य वर्षादिफलं भवेद्य-
त्सांतर्दशार्द्धादिहरस्य ननम् ॥ १७ ॥ दशांतर्दशा
यस्य वर्षस्य योगे कृते प्राग्दशाब्दादितुल्यं यदा

स्यात् ॥ तदा स्याद्विशुद्धिर्गणानां हरस्य तथा चेद्वि-
शुद्धिः पुनर्नैव कुर्यात् ॥ १८ ॥ ॥

अंतर्दशोदाहरणार्थ ११ श्लोकसे १८ श्लोकका तात्प
उदाहरणसे दिखाते हैं कि, जब दशापतिके सा
कोई ग्रह है और पूर्वोक्त स्थानोंमें कोई ग्रह नहीं
तो वही १ अंश हारक होता है तो दशापति १ हार
१ अंश जो हरण होना है वह १ । २ ऐसा रूप है इनक
न्यास $\frac{1}{2}$ $\frac{1}{2}$ छेद गुणा किया तो $\frac{2}{2}$ $\frac{2}{1}$ यह समच्छेद भय
इसमें छेद घटाया १। २ ये गुणक हुये इनका योग
यह भागहार हुआ दशापतिकी आयुवर्षादि ३ । ० । ० ।
यह २ से गुणा हारसे भाग लिया। फल २ यह तो मूलदश
पतिकी अन्तर्दशा हुई पुनः मूलदशापाति ३ । ० । ० । ० एक
गुणाकर हार ३ से भाग लिया फल वर्षादि ३ । ० । ० । ० य
दशापतिके साथ जो ग्रह है उसने अन्तर्दशा पाई मूलदश
पतिकी अन्तर्दशाका आधा साथवालेने पाचक पाया दोन
का जोड वही ३ । ० । ० । ० दशायु होती है १ ज
दशापतिसे त्रिकोण स्थानमें ९ । ५ कोई ग्रह है ४ । ८ । ७
नहीं है तथा साथमें भी कोई नहीं है तो न्यास $\frac{1}{1}$ $\frac{1}{3}$ छेदसे प
रस्पर गुणदिये $\frac{3}{3}$ $\frac{1}{3}$ छेदहीन ३ । १ ये गुणाकार हुये इनक
योग ४ भागहार भया मूलदशापति दशा वर्षादि ४ । ० । ० ।
यह इसे गुणा ४ से भागदिया फल ३ । ० । ० । ० यह मू
दशापातिकी अन्तर्दशा हुई उसकी दशा ४ । ० । ० । ० ए
से गुणाकर ४ से भागलिया लब्धि १ । ० । ० । ० यह त्रिको
णवालेकी अन्तर्दशा त्रिभाग छोडकर हुई २ जब दशाप
से ४ । ८ में कोई ग्रह है और १ । ९ । ५ । ७ में कोई नहीं
तो न्यास $\frac{1}{1}$ $\frac{1}{4}$ उ. ४ दशापतिसे ७ में कोई ग्रह हो और १ ।

४।८ में कोई न हो तो न्यास $\frac{१}{१}$ $\frac{१}{७}$ आधे पूर्ववत् करना ४ जो दश
पतिके साथ कोई ग्रहों ९ वा ५ में भी कोई हो और ४।८।
में कोई न हो तो न्यास $\frac{१}{१}$ $\frac{१}{२}$ $\frac{१}{३}$ शेषपूर्ववत् ५ दशेशके १।
वा ८ में हो ९।५।७ में न हो तो $\frac{१}{१}$ $\frac{१}{२}$ $\frac{१}{४}$ न्यास ६ जो दशेशवं
साथ ग्रह हो ७ में भी हो ९।५।७ में न हो तो न्यास $\frac{१}{१}$ $\frac{१}{२}$ $\frac{१}{७}$
७ जो दशापतिसे ९ और ५ में भी हो और पूर्वोक्तमें न ह
तो न्यास $\frac{१}{१}$ $\frac{१}{३}$ $\frac{१}{३}$ ८ जो दशेशसे ९ वा ५ में और ४।८
भी हों और कहीं न हो तो $\frac{१}{१}$ $\frac{१}{३}$ $\frac{१}{४}$ न्यास ९ इत्यादि त्रिविकल
होते हैं जब दशेशके साथ कोई त्रिकोणमें भी हो और जग
४।८।७ में न हो तो न्यास $\frac{१}{१}$ $\frac{१}{२}$ $\frac{१}{३}$ $\frac{१}{३}$ इत्यादि प्रकारसे सबव
न्यास करके उक्तप्रकारसे पाचक बनते हैं समस्त विकल्प उ
प्रकारसे ३३ होते हैं इसप्रकारसे कि दूसरे विकल्पके ४ भे
तीसरेके ८ चौथेके ९ पञ्चमके ७ छठेके ४ सातवेंका एकमा
है जहां बहुत ग्रह पाचक हैं तहां प्रथम दशापति अन्तर्दश
पाचक उप्रांत जो क्रमदशा न्यासमें लिखा है वैसेही रीति
यहां अन्तर्दशामें भी क्रम लिखना एकस्थानमें बहुत ग्रह ह
तो प्रथम बलवान् पीछे क्रमसे न्यूनबली लिखना ॥ १५ ॥ १६
॥ १७ ॥ १८ ॥

स्वे तुंगांशे परगबलिनस्तस्य पूर्णा दशा स्याद्रिक्ता नाम्नी भवति खलु सा वर्जिता नाबलेन ॥ नीचांशस्थे रिपुगृहगते नीचगेहारिजांशे ज्ञेयानिष्टा जननसमये खेचरे यस्य पुंसः ॥ १९ ॥ नीचशत्रुनवभागसंस्थिते खेचरे शुभगृहेषु मिश्रिता ॥ पूर्णमध्यपरनीचदशानां नामतुल्यफलमत्र जल्पितम् ॥ २० ॥ दशावरोहिणी तुंगभ्रष्टस्यारोहिणी स्मृता॥ नीचांशतस्तयोर्मध्ये मध्या

ख्याता महर्षिभिः ॥ २१ ॥ अधमा मध्यमा पूज्या द्रेष्काणैरुभयोदये॥उत्क्रमाच्चरभे निष्ठा शुभा मध्या स्थिरे क्रमात् ॥ २२ ॥ शुभानि पूर्णान्यवरोहिणी या फलानि नाशं नयति क्रमेण ॥ आरोहिणी वर्द्धयाति ग्रहाणां पूर्णा दशा तिष्ठति वाथ रिक्ता ॥ २३ ॥

जो षड्बलसे बलवान् तथा अपने उच्चांशकमें है उसकी दशा पूर्ण नामकी आरोग्य धनवृद्धि करती है। पूर्णबलसे थोड़ हीन भी पूर्णा नामकी धनलाभवाली होती है जो ग्रह बल रहित तथा नीचराशिमें है उसकी दशा रिक्ता नामकी धन हानि करती है ऐसेही नीच शत्रुराशिनवांशवालेकीभी अनिष्ट फल देती है ॥ १९ ॥ नीच शत्रुराशिगत ग्रह (शुभस्थान उच्चमूल त्रिकोण मित्रक्षेत्र स्वक्षेत्रादिकभी हो तो उसकी दशा मिश्रफल जैसे रोग और धनलाभ भी देती है जो शत्रुनी चादि राशियोंमें उच्चमूल त्रिकोणादि अंशकोंमें हों उनकी भी ऐसाही मिश्रफल जानना शुभ, रिक्त, पूर्णमाध्य, मिश्र अधम आदि संज्ञावाले जैसा नाम वैसा ही फल भी करते हैं ॥ २० ॥ परमोच्चसे उतरके परमनीच पर्यंत ग्रह अवरोही और परमनीचसे परमोच्चांशपर्यंत आरोही होता है अवरोही ग्रह अनिष्ट फल देता है परन्तु उच्चमित्रांशकादिकोंमें हो तो मध्यम फल देगा। ऐसे ही अवरोही शुभफल देता है परन्तु नीच शत्रु आदि अंशकोंमें हो तो मध्यम होजाता है इस प्रकार संज्ञानुरूप फल महर्षियोंने कहे हैं ॥ २१ ॥ लग्नदशाके हैं कहते हैं कि, द्विस्वभाव लग्न हो तो प्रथम द्रेष्काणवाले की अधम दूसरे वालेकी की मध्यम तीसरेवालेकी उत्तम. चरराशि लग्नमें प्रथम द्रेष्काण हो तो उत्तम द्वितीयमें मध्यम तीसरे

अधम स्थिरराशि लग्नमें प्रथम द्रेष्काण हो तो लग्नदृ
अशुभ दूसरा हो तो मध्यम तीसरा हो तो उत्तम इसप्रक
लग्नदशाके फल नामानुरूप हैं ॥२२॥ मतांतर है कि, अवरं
हिणी दशा पूर्णा भी हो तो भी क्रमसे फलनाश करती है अं
आरोहिणी रिक्ता भी हो तो भी शुभफलको बढाती है॥२३

लग्ने पाकपतौ शुभे सुहृदि वा वर्गे सुहृत्सौम्ययोः
पाकेशस्त्रिदशायषष्ठशुभदा प्रारम्भकाले दशा ॥ पाके-
शोच्च सुहृत्त्रिकोणवनितालाभत्रिषट्कादिकस्थतश्चन्द्रः
सत्फलदो ह्यसत्फलकरो यद्यन्यथा सम्भवः ॥ २४ ॥
दशापतिः शत्रुभनीचसंस्थो दशाधिनाथापचयाल-
यस्थः ॥ ताराधिपः पापफलानि यानि प्रबोधयत्यस्त
मितो विशेषात् ॥ २५ ॥

जिस ग्रहकी अन्तर्दशाका प्रवेश है वह पाकस्वामी कहा
है , वह लग्नमें वा अपने पूर्वोक्त वर्गमें हो वा तात्कालिक मि
राशिमें हो तो उसकी दशा शुभ फल देती ह जो शुभ ग्र
लग्नगत है उसकी दशा भी शुभ फल देती है और दशेशतात्क
लिक लग्नसे ३। १० । ६ । ११ स्थानमें होतो दशा शुभ देती
शत्रु अधिशत्रुके राश्यादिमें अशुभ फल देती है अधिमि
राशिमें अतिशुभ अन्यत्र सम जब किसी ग्रहका अंतर ४ व
पर्यंत रहता है तो तबतक क्या एकही फल होगा अत ए
कहते हैं कि दशेशके मित्र और उच्च तथा उपचय त्रिको
सप्तम स्थानमें जब गोचरका चंद्रमा हो तो शुभ फल औ
नीच शत्रुराशिमें उससे अन्यत्र २ । १ । ४ । ८ । १२ में अशु
फल होगा॥२४॥दशेश शत्रु वा नीचराशिमें हो उससे औ
रेश (अपचय) ३ ।६। १० । ११ से अन्यमें ग्रह हो विशेष

असंगत हो तो जो तदुक्त (पापफल) कष्टफल हैं उ
जाग्रत् करदेता है ॥ २५ ॥

मानार्थदात्री स्वगृहे हिमांशौ कौजे स्त्रिया दोषमुदाहरन्ति
बौधे सुहृद्वित्तगुणप्रदात्री मानं सुखार्थान् विदधाति
जैवे ॥ २६ ॥ दुर्गारण्यगृहप्रवासकर्त्री सिंहेन्दौ भृगुमं-
दिरेऽन्नदात्री ॥ कुस्त्रीदा महिषोष्ट्रदाथ वृद्धा दासीदा
शनिमंदिरे दशेन्द्वोः ॥ २७ ॥

चंद्रमाकी दशा अपने घर ४ में मान धन देती है मंग
केमें स्त्रीकरिके दोष कहते हैं बुधकी राशियोंमें मित्रसुख.ध
सिंह राशिस्थ चंद्रमाकी दशा किला वनमें निवास घर
गुण देताह गुरुके स्थानमें मान सुख धन देती है ॥ २
अन्यस्थानमें गमन कराती है शुक्रके राशिमें हो तो अन्न दे
है शनिके घरमें हो तो उसकी दशा कुस्त्री देती है त
भैंसा ऊंट और दासी देती है ॥ २७ ॥

दशालग्नस्थिते चंद्रे स्वगृहे धनमानदः ॥ स्वस्थे
सहजे भ्रातुः सुहृदो वेश्मनि स्थितः ॥२८ ॥ पुत्रभावे
पुत्राणां जायाभावे च योषिताम् ॥ एवं रव्यादिगेहस्थे
सहजादिषु कल्पयेत् ॥ २९ ॥ दशाप्रवेशसमये यद्रा
शिस्थः शशी भवेत् ॥ यद्भावे तत्कृतं तस्य सुखं
यदि वासुखम् ॥ ३० ॥

लग्नगत चन्द्रमा स्वगृही होवे तो अपनी दशामें
तथा मान देता है ऐसे ही स्वगृही सहजभावमें

भाईको चतुर्थ हो तो मित्रके अथवा उनसे धन मान देता ॥ २८ ॥ तैसे ही पुत्रभावमें हो तो पुत्रोंका जायाभाव स्त्रियोंका सुख देता है इसीप्रकार सूर्यादिग्रहोंके राशि प्राप्त चन्द्रमाका पूर्वोक्तप्रकारका शुभाशुभ फल भ्राताआ जिसभावमें बैठाहो उसको कल्पना करना ॥ २९ ॥ तैसे दशाप्रवेशसमयमें चन्द्रमा जिसराशिमें होवै जिसभाव होवे उसके अनुसार सुख वा दुःख पूर्वोक्तप्रकारसे जानना३

यः स्वोच्चे स्वनवांशके स्वभवने मित्रालये खेचरो दृष्ट सौम्यसुहृद्ग्रहेण रविणा नो सुप्तरश्मिर्यदा ॥ ईदृग्योष्टक वर्गशोभनफलः सम्यक्फलांतर्दशा यावंत्यः स्वदश समास्तदवधेराद्या जगुर्निश्चयात् ॥ ३१ ॥ नीचे शत्रु नवांशकेरिभवने यः पापदृष्टो ग्रहः षष्ठे धामनि वाष्टमे ष्टककृतौ शून्यस्थितो जन्मनि ॥ अर्काक्रान्ततनुर्ग्रहेण विजितो युक्तोरिणा तद्दशा चिन्ताव्याध्यरिघातपुत्रवनि तानासाध्वदात्री सदा ॥ ३२ ॥

जो ग्रह जन्ममें अपने उच्च अपने नवांशक स्वराशि मि राशिमें हो शुभ ग्रह अथवा मित्रग्रहसे दृष्ट हो अस्तंगत हो. और अष्टकवर्गमें शुभफल दाता हो उसकी दशांतर्द अपने वर्षोंपर्यंत शुभफल देतीहै ऐसा निश्चय करके पूर्वा र्योंने कहा है ॥ ३१ ॥ जो ग्रह नीचराशि शत्रुनवांश शत्रुराशिमें हो पापग्रहसे दृष्ट हो तथा छठे वा आठवें भाव हो अष्टकवर्गमें ८ शून्यवाला हो अस्तंगत हो अथवा युद्धमें हारा हो शत्रुग्रहसे युक्त हो उसकी दशा चिन्ता, रो शत्रुविघात और स्त्री पुत्रसे बुराई अपने समयमें देतीहै ॥३

करितुरंगमपत्तिसमाकुलं कनकदण्डसितातपवाणरम् ॥ ग्रहपतिः कुरुते निजतुंगगः पदगतो वसुधावलये परम् ॥ ३३ ॥ अरिपदेरिगृहे ग्रहनायके क्षतजरुग्गलरोगसमाकुलः ॥ निधननीचविरोधिगृहंगते चरणहस्तगता खलु गर्द्दभी ॥ ३४ ॥ रिपुगृहेर्कदशानयनामयं शिरसि रुग्ज्वरकोष्टगता कृमिः ॥ निधनगस्य दशा पुरुषं रवेर्भ्रमयति स्वपदात्परितो भृशम् ॥ ३५ ॥

सूर्य अपने उच्चका हो तो स्वदशामें हाथी घोडे प्यादाओंसे युक्त तथा सोनेकी डंडीवाला श्वेतरंगका धूपहटानेवाला छत्र देता है. ऐसा स्वोच्चगत सूर्य दशम स्थानमें हो तो पृथ्वीमें पदप्राप्ति भी करता है॥३३॥यदि सूर्य शत्रु नवांशक शत्रुराशिमें हो तो चोटलगनेसे रोग और गलरोगसे युक्त करता है जो अष्टम हो वा नीचराशि. शत्रुराशिमें हो तो हाथ पैरोंमें कंडू दद्रु सरीखा रोग हो यद्वा गदहीका पालन वा सवारी करनी पडे ॥ ३४ ॥ शत्रुराशिगत सूर्यकी दशा नेत्ररोग. शिरमें रोग ज्वर, और पेटमें कृमि रोग करती है अष्टमभावगत सूर्यकी दशा पुरुषको अपने पदसे अत्यर्थ भ्रमण कराती है ॥ ३५ ॥

अथ चन्द्रदशा ।

राज्यं ददाति शशिनो निजतुंगगस्य नीचस्थितस्य निधने मरणप्रदात्री ॥ शत्रुस्थितस्य निधनं रिपुतोरिगेहे मित्रालये स्वजनलाभकरी दशा च ॥ ३६ ॥ किरणहीनतनोरुदरामयः शिरसि रुग्ज्वरदा शशिनो दशा॥विषयभृत्यविहीनगृहं तदा भवति पीनसलोचनका

मला ॥३७॥ नीचशत्रुनिधनारिवर्जिते मन्दिरे शशिनि-
पूर्णमंडले ॥ मंदिरं भवति पूरितं श्रिया जाययोत्तमश-
रीरशोभया ॥ ३८ ॥

अब चंद्रदशाके फल कहते हैं। चंद्रमा अपने उच्चमें हो तो उस
की दशामें राज्य देती है जो नीचमें होवे और अष्टम भाव
होवे तो मृत्यु देती है शत्रुराशिगत चंद्रमाकी दशा मृत्यु तथा छठे
भावमें होवे तो शत्रुसे मृत्यु देतीहै मित्र गृही होवे तो इसकी दश
अपने मनुष्योंसे लाभकारी होती है ॥ ३६ ॥ क्षीणचन्द्रमाक
दशा उदरसंबंधी रोग तथा शिरमें रोग और ज्वर देती है उसक
घर (विषय) श्रृंगारादि (भृत्य) चाकरोंसे हीन होताहै त
पीनसरोग कामलारोग होते हैं ॥ ३७ ॥ जब चंद्रमा नीच
शत्रु, अष्टम, छठे भावोंसे अन्यराशि भावोंमें हो तथा पू
मण्डल हो तो उसकी दशामें घर लक्ष्मीसे पूरित होता है त
उत्तम शरीर शोभावाली स्त्रीसे शोभायमान होताहै ॥ ३८

बलिनः शशिनो दशा यदा धनलब्धिर्द्विजतोथ मंत्रतः
सितवस्त्रसुगंधसेवनं मधुराणां पयसां तथाशनम्॥३९॥
प्राप्नोति मानं गुरुतो नृपाच्च मेधाविता पुष्टिकरी शरीरे।
आलस्य निद्राजननीं दशेन्दोर्बलेन हीनस्य सुत
जानित्री ॥ ४० ॥ कुलेमयार्तिं कुरुते सशोकां तिलाङ्ग
दात्री च वृथा श्रमश्च ॥ क्षीणारिनीचास्तगतो विशेषा
द्ददाति चन्द्रो विषयस्य नाशम् ॥ ४१ ॥

बलवान् चन्द्रमाकी दशा जब होवै तब द्विजसे और म
से भी धनलाभ होवै तथा शुक्लवस्त्र सुगंधिका सेवन त
मीठे और दूधका भोजन मिले ॥३९॥ और गुरुसे तथा राज

भी मान प्राप्तहोताहै बुद्धिमानी होती है शरीरमें यह दशा पुष्टि करती है बलसे हीन चंद्रमाकी दशा आलस्य निद्रा करती है तथा कन्या जन्म देती है ॥ ४० ॥ अपने कुलमें रोग पीडा शोकसहित करती है तिलान्नदेती है परिश्रम व्यर्थ जाताहै (विषय) भोगादिका नाश होताहै यदि यह चन्द्रमा क्षीण शत्रुराशिस्थ. नीचगत होवै तो उक्तफल विशेष करके देताहै ॥ ४१ ॥

अथ जन्मराशिफलानि।

आताम्रवर्तुलं नेत्रं शाकभुक् पाणिपादयोः ॥ पद्मांकश्च चलद्रव्यस्तोये भीरुः प्रियारतः ॥ ४२ ॥ अग्रणीर्भ्रातृवर्गाणां मांसादः साहसे रतः ॥ निर्मांसजानुसंधिश्च जातः शशिनिमेषगे ॥ ४३ ॥

अब चंद्रराशिफल कहते हैं। जिसकी मेषराशि होवै उसके नेत्र तांबेके रंगके और गोल होवैं (शाक) भाजी खानेवाला होवै हाथ पैरोंमें कमलका चिह्न होवै धन चंचल रहे जलमें डरमय स्त्रीमें आसक्त रहे ॥ ४२ ॥ अपने भ्रातृगणमें श्रेष्ठ होवै मांस खानेवाला होवै साहसमें तत्पर रहे जंघा तथा संधिस्थानमें मांस कम रहे ॥ ४३ ॥

कांतः सौभाग्ययुक्तो वृषसमनयनः पृष्ठपार्श्वास्यलक्ष्म्य कन्यापत्योतिदाता पृथुकरवदनो हंसलीलाप्रचारः । मध्यांत्येभोगभागी मदनवशगतो दीप्तवह्निः ककुद्मान् पूर्वे वैरं करोति स्वजनधनसुतैर्वर्जितो ग्लौर्वृषस्थे॥४४

चंद्रमा जन्ममें वृषका हो तो सौभाग्ययुक्त होवै बैलके से नेत्र होवैं पीठ तथा बगलोंमें चिह्न होवैं " इसमें

विचार है कि चन्द्रमा क्षीणपापयुत नीचादिमें हो तो, दु
वा दुग्धादि और शुभवर्गादिमें हो तो तिलमशकादि जानना
कन्या उत्पन्न होवैं अति उदार होवैं हाथमुख स्थूल होवैं हंस
की गति चले पहिली और पिछली अवस्थामें अनेक भोग
भोगे कामके वशमें रहे जाठराग्नि प्रदीप्त रहे, गर्दन मोटी
ऊंची होवै, अपने पूर्वजोंसे वैरकरे अपने मनुष्य, धन, पुत्रों
से वर्जित रहे ॥ ४४ ॥

प्रियाभिलाषी प्रियवाक्कलावान् प्रियाजितः कामकला
विधिज्ञः ॥ हास्यप्रियः क्षाममुखोच्चनाशः षंढप्रियो
युग्मगते हिमांशौ ॥ ४५ ॥

मिथुनका चंद्रमा हो तो नित्य प्यारीकी अभिलाषा रां
प्रियवाणी कहे कलावाला होवै स्त्रीके वशवर्ती रहे कामदे
वकी कलाओंकी विधि जाने हंसीको प्रियमाने मुख माड
होवै नाक ऊंची होवै और हीजडोंको प्रियमाने ॥ ४५ ॥

प्रासादवापीकरणानुरक्तः स्त्रीनिर्जितो ह्रस्वतनुः कृतज्ञः॥
क्षयी धनाढ्यः शशिवत्प्रजातः प्राक्कर्मवेत्ता खलु पीन
कण्ठः ॥ ४६ ॥ भूपालमंत्री वशमेति साम्ना सुहृत्प्रियः
शीघ्रगतिः सुवेषः ॥ सतां प्रमाणः प्रचुरालयश्च कर्कसु-
धांशौ सलिलप्रियश्च ॥ ४७ ॥

कर्कका चन्द्रमा हो तो, मंदिर, बावडी, बनानेमें तत्प
रहे स्त्रीका जीताहुआ रहे छोटा शरीर होवै (कृतज्ञ) कदर
दान होवै, चंद्रमाकी कलाओंके तरह कभी धनक्षयी कभी
धनाढ्य रहे पूर्व कर्मका जाननेवाला वा कार्यका परिणा
प्रथमही जाननेवाला होवै यह निश्चय है कंठ ऊंचा होवै॥४६

राजमंत्री होवै सामोपायसे वशमें आवे मित्रोंका प्यारा शीघ्र चलनेवाला, अच्छेवेषवाला होवे सज्जनोंमें प्रमाणिक बहुत घरवाला जलको प्रियमाननेवाला अर्थात् जलक्रीडादिमें प्रसन्न भी रहे ॥ ४७ ॥

पिंगाक्षो मांसभक्षी पृथुवदनहनुर्मंदलोमा क्षुधावान् तीक्ष्णः स्वल्पात्मजन्मा विपिननगरुचिः स्त्रीरिपुः पण्डितश्च ॥ विक्रांतो दानशीलः स्थिरविमलमतिः पीडितो दन्तरोगैर्मातुर्वश्योर्कराशौ शशिनि गुरुरुजा पीडितो राजमान्यः ॥ ४८ ॥

सिंहराशिका चन्द्र हो तो मनुज पीले नेत्र. मांसभक्षी मुख और ठोडी स्थूल बारीक रोम, क्षुधावाला, तीक्ष्णस्वभाव सन्तान अल्प, वनपर्वतमें रुचि, स्त्रीका द्वेषी. पंडित, पराक्रमी, दानदेनेको स्वभाववाला, और स्थिर निर्मलबुद्धि दंतरोगोंसे पीडित माताके वशीभूत, बडेरोगसे पीडित औ राजमान्य होता है ॥ ४८ ॥

कन्यायां शशिनि स्थिते प्रियवचाः शास्त्रार्थविद्धार्मिकः श्लक्ष्णः सत्यरतः कलासु निपुणो वाग्मी सुमेधा सुखी ॥ नम्रांवंसभुजौ प्रियश्च सुरते लीलागतिर्लज्जया कन्या-स्वल्पसुतान्वितः सुललितः स्वैरं प्रतापान्वितः ॥ ४९ ॥

चन्द्रमा कन्यामें होवै तो. प्रियवाणी शास्त्रार्थजाननेवाला धर्मात्मा कृश, सत्यमें तत्पर कला कारीगरीमें निपुण, युक्तिपूर्वक बोलनेवाला, अच्छीबुद्धि, सुखी होवै, कन्धा और बाहु नम्रहोवैं, सुरतक्रीडामें प्रिय, लज्जासे मंद और सजीली चाल चलनेवाला अल्पपुत्रोंसे युक्त, सुरूप अपने प्रतापसे युक्त अर्थात् स्वयं प्रतापी होवै ॥ ४९ ॥

प्रांशुः सून्नतनासिकः कृशवपुः प्राज्ञः प्रियानिर्जितः साधुर्ब्राह्मणदेवमाननपरः प्राज्ञः शुचिर्धार्मिकः ॥ साधूनामुपकारकोथ कुशलो दक्षः क्रये विक्रये सद्भिर्बन्धुभिरुज्झितः शशधरे जूकास्थिते जन्मनि ॥ ५० ॥

चन्द्रमा जन्ममें तुलाका होतो ऊंचा शरीर, ऊंची नाक माडा शरीर, प्राज्ञ स्त्रीका जीताहुआ साधु ब्राह्मण एवं देवताको माननेवाला, पवित्र धर्मात्मा, साधुजनोंके उपकार करनेवाला, और समस्त कार्योंमें कुशल, व्यापारमें चतु अच्छे बन्धुवर्गसे परित्यक्त होवै ॥ ५० ॥

जनकगुरुवियुक्तो राजदर्पोतिमान्यः कनकरुचिरदेहः शैशवे व्याधितश्च॥ कुलिशकमललक्ष्म्या वर्तुले जानुजंघे गुरुयुवति रतः स्याद्वृश्चिके शीतरश्मौ ॥ ५१ ॥

चन्द्रमा जन्ममें वृश्चिकका हो तो पिता एवं गुरुसे युक्त रहे, राजाके समान घमण्ड रक्खे, अतिमाननीय, सुवर्ण समान सुहाउना शरीर. बाल्य अवस्थामें रोगयुक्त रहे, हा पैरोंमें वज्र वा, कमलका चिह्न होवै जानु तथा जंघा सुडौ गोल होवैं. श्रेष्ठस्त्रीमें आसक्त रहे ॥ ५१ ॥

वक्ता कविर्बहुधनी वशमेति साम्ना वीर्यान्वितः कनकवर्णशरीरयष्टिः ॥ त्यागी सुहृत्सुतसुबन्धुयुतश्च जातः स्फीतः कविर्भवति सोश्वगते हिमांशौ ॥ ५२ ॥

चन्द्रमा धनका हो तो व्याख्याकरने वाला, कविता कर वाला, बहुत धनवान् होवै, सामोपायसे वश होवै, बलवा रहे सुवर्ण समवर्ण शरीर होवै दाता, मित्र, पुत्र, अच्छेबांधव से युक्त रहे समृद्ध कवि होवै ॥ ५२ ॥

श्रुतावधारी कृशदीर्घगात्रः सौभाग्ययुक्तः सुमनोहरांगः॥
दारान्सुतान् लालयति स्वकीयान्सुलोचनः क्षामकटिः
शिरालुः ॥ ५३ ॥ सदंभधर्माकुलवृद्धनारीरतोदयोनः
परितोटनश्च॥सत्त्वाधिकः शीतसहः सुवेषो जातो मृगा-
स्ये हरिणांकसंस्थे ॥ ५४ ॥

चन्द्रमा मकरका हो तो श्रवणमात्रसे धारण करे माव
और लम्बा शरीरहोवै, सौभाग्यवाला, सुन्दर मनोहर अ
होवे, अपने स्त्रीपुत्रोंका विशेषतर प्यार करे, सुहाउने नेत्र हों
कमर माडी होवे, शरीरमें नशी बहुत होवैं ॥ ५३॥ धर्म दंभ
करे कुलमें श्रेष्ठ स्त्रीमें तत्पर रहे, दयारहित, चारातफ फि
नेवाला भी होवै, बलवान् अधिक होवे, शीतसहारनेवाल
अच्छे वेषवाला रहे ॥ ५४ ॥

शिरालोष्ठग्रीवः पृथुजघनपृष्ठास्यचरणः परान्नी प्रेयस्यां
सततनिरतो लोमशतनुः॥ भृशं पानासक्तः परसुतयुतः
पापनिरतः कुनेत्रः शीतालुर्घटभृदियुते शीतकिरणे॥५५

चन्द्रमा कुम्भका हो तो शरीरमें नश बहुत होवैं, ऊंट
समान लम्बी गर्दन होवै, जंघा तथा पीठ मुख चरण स्थ
होवै परान्नखानेवाला होवै, प्रियामें निरन्तर तत्पर रहै, शा
रमें रोम बहुत होवैं, अत्यर्थ पानमें आसक्त रहे. पराये पु
युक्त रहे, पापमें तत्पर रहे, नेत्र कुरूप होवैं, शीत विशेषर
करे ॥ ५५ ॥

मुक्ताप्रवालसरसीरुहभोगकारी धारी महानिधिविभूष
णवाससां च ॥ दारानुरागविजितः समदेहतुङ्गनासो

धनी जलपतिस्तिमिगे सुधांशौ ॥५६॥ दाता शास्त्रार्थ वेत्ता बहुयुवतिरतो दानशीलो वपुष्मान् गेयज्ञो धर्मनिष्ठो जयति रणगतान् सत्कविर्वृत्तजंघाः ॥ ज्ञानासक्तः सुशीलो हितजनसहितो भूपसेवी सुमुद्रो विख्यातः सत्त्वसम्पत्सलिलपति धनो मीनसंस्थो सुधांशौ॥५७॥

चन्द्रमा जन्ममें मीनका हो तो मोती, मूंगा और कमलोंका भोग भोगनेवाला होवै, बडे निधिवस्तु, भूषण और वस्त्रोंको धारण करे, स्त्रीके प्रेमसे जीता रहै, शरीर सम, ऊंची नाक होवै, धनवान्, जलस्थानका अधिपति होवै ॥ ॥ ५६ ॥ दाता, शास्त्रार्थ जाननेवाला, बहुतस्त्रियोंमें आसक्त, दानदेनेके स्वभाववाला, अच्छे पुष्टशरीरवाला, गानज्ञ, धर्मनिष्ठावान्, रणगत शत्रुको जीतनेवाला, अच्छा कवि होवै, जंघा गोल होवें, ज्ञानमें आसक्त रहे. सुशील होवै. मित्रजनोंसे युक्त रहे, राजसेवी, अच्छीमुद्रावाला, विख्यात, बलसे संपत्तिमान्, वरुणके समान धनवान् होवै ॥ ५७ ॥

अथैतेषां फलानां प्राप्तिमाह ।

कथितफलविपाको जन्मराशौ बलिष्ठे बुधगुरुपतियुक्तालोकितेनान्यखेटे॥समयपदबलाढ्ये राशिनाथे बलिष्ठे शशिवदपरखेटाश्चिन्तनीयाः फलाप्त्यै ॥ ५८ ॥ बलोज्झिते जन्मगृहे तदीशे बलान्विते मध्यफलं प्रकल्प्य॥ बलोज्झितौ राशिपती फलाभ्यां पापानि सर्वाण्युपयांति पाकम् ॥ ५९ ॥

अब उक्तफलोंकी प्राप्ति अप्राप्ति कहते हैं कि, जन्मराशिबलवान् होवै बुध बृहस्पति और स्वस्वामिसे युक्त होवै इन्हींसे

दृष्ट होवै अन्य ग्रहोंसे न होवै. समयपदसे बलवान् होवै. राशि
नाथ बलवान् होवै तो उक्तफलका परिपाक पूर्ण होता है वै
ही चंद्रमाके तरह और ग्रहोंका विचार भी फलप्राप्तिकेलि
करना ॥ ५८ ॥ यदि जन्मलग्न बलरहित और उसका स्वा
बलवान् होवै तो मध्यम फल जानना। यदि राशि त
उसका पति भी निर्बल होवै तो. फलोंमेंसे सर्वपापप
फलित होते हैं ॥ ५९ ॥

आताम्रदृष्टिः शशिमेषयोगे कुजेक्षिते भूवलये नरेशः ॥
चन्द्रस्य दृग्योगसमं विलग्ने राशीशभावोत्थफलं
विशेषात् ॥६०॥ परस्परं राशिसुधांशुयोगे संयोगजातं
ग्रहादिकफलं वा लग्नस्य तद्राशिपयोर्बलेन धनादिभाव
बलिनो भवन्ति ॥ ६१ ॥

चंद्रमा और मेषराशिका योग होवै तो नेत्र तांबेके रंग
होवैं यदि मंगलकी दृष्टि भी होवै तो समस्त पृथ्वीमें नरे
होवै लग्नमें चंद्रमा दृष्टियोगके समान राशीश एवंभाव जा
तफल विशेषतासे होते हैं ॥६०॥ राशि एवं चन्द्रमाके परस्
योग होनेमें संयोगसे उत्पन्न मिश्रफल होता है अथवा ग्रहफ
फल पूर्ण पूर्ण होता है राशिका कम होता है लग्नका फ
उसराशिके स्वामीके बलके सदृश होता है ऐसे ही अप
राशिके स्वामीके बलानुसार धनादिभाव भी बलव
होते हैं ॥ ६१ ॥

अथ मेषादौ चन्द्रे ग्रहदृष्टिफलानि ॥

तारानाथे नृपालो भवति धरणिजे नेक्षिते मेषसंस्थे
प्राज्ञो विहङ्गेदे सुरपतिगुरुणा राजतुल्यो नृपो वा।

प्राज्ञो भूनाथमान्यो भवति निधिपतिः शुक्रदृष्टेऽर्कदृ
निस्वः संग्रामकांक्षी भवति रविसुतेनेक्षिते चौर
नाथः ॥ ६२ ॥

अब मेषादिराशिगत चंद्रमापर ग्रहदृष्टिफल कहते
जो मेषके चंद्रमापर मंगलकी दृष्टिहोवे तो मनुष्योंका पा
करनेवाला होता है बुधदृष्ट देह हो तो विद्वान्. गुरुदृ
राजतुल्य अथवा राजा होता है शुक्रदृष्टिसे विद्वान,राजमा
निधिका स्वामी, सूर्यदृष्टिसे निर्धन और लडाईकी इच्छ
रखनेवाला और शनिदृष्टिसे चोरोंका राजा होता है ॥ ६

निस्वश्चौरो राजमान्यो नृपालो द्रव्यस्वामी प्रेष्यनाथ
कुजाद्यैः ॥ तारानाथे गोगृहे दृष्टमूर्त्तौ गोभृत्याढ्य
वीक्षितो भास्करेण ॥ ६३ ॥

वृषराशिस्थ चन्द्रमापर भौमकी दृष्टि हो तो निर्द्धन, त
चोर होवे बुधदृष्टिसे राजमान्य, गुरुसे राजा शुक्रसे धन
स्वामी शनिसे भृत्योंका स्वामी सूर्यदृष्टिसे गौ एवं चाकर
युक्त रहे ॥ ६३ ॥

शस्त्राणां घटनविधौ प्रधानदक्षो द्वंद्वस्थे शशिनि कुजे
क्षिते नृपालः ॥ विद्दृष्टे विविधगुणी सुरेज्यदृष्टे भीहीनं
भृगुजनिरीक्षिते प्रजातः ॥ ६४ ॥ मिथुनस्थे सुधारश्मै
तन्तुवायः शनीक्षिते ॥ धनहीनोऽतिधार्मिष्ठो दिवाक
रसमीक्षिते ॥ ६५ ॥

मिथुनगत चंद्रमापर मंगलकी दृष्टि हो तो मनुष्य श
बढनेमें मुख्य चतुर होवै, बुधदृष्टिसे राजा, गुरुदृष्टिसे अने

गुणोंवाला, शुक्रदृष्टिसे भयरहितहोवै ॥६४॥ शनिकी दृ
सूत बुननेवाला, सूर्यदृष्टिसे धनहीन होवै और अतिधी
भी होवै ॥ ६५ ॥

स्वर्क्षे ताराधिपे योथ कविज्ञौ धरणीपतिः ॥ लोहजीव
नृपः प्राज्ञो वेक्षिते भूमिजादिभिः ॥ ६६ ॥

स्वराशिगत चन्द्रमापर सूर्यदृष्टि हो तो कवि होवै. पंडित. बु० राजा बृ०लोहासे आजीवन करनेवाला शु०रा श० पण्डित होवै ॥ ६६ ॥

हरौ ज्योतिषज्ञो धनाढ्यो नृपालः सुधांशौ बुधाद्यै शुभैर्नापितश्च ॥ नृपो राजतुल्योऽर्कजाकारदृष्टेऽन्नही नस्तुरंगाधिपोकारदृष्टः ॥ ६७ ॥

सिंहगत चन्द्रमापर बुधादि शुभग्रहोंकी दृष्टिक्रमसे कहैं कि बुधसे ज्योतिषज्ञ, गुरुसे धनाढ्य, शुक्रसे राजा हो है उसपर पापदृष्टि भी हो तो हजाम भी होताहै, शनिदृ राजा मंगलसे राजतुल्य, सूर्यदृष्टिसे अन्नहीन भौमदृ घोडाओंका स्वामी भी होता है ॥ ६७ ॥

कन्याराशिगते विधौ नरपतिर्ज्ञेनेक्षिते भूचमूनाथं वासवपूजितेन निपुणः शुक्रेण दृष्टेऽशुभैः ॥ स्त्रीणामाश्र यिणो भवन्ति मनुजा जूके बुधाद्यैः शुभैर्भूमीनाथसुवर्ण कारवणिजो विज्ञाः क्रये विक्रये ॥ ६८ ॥

कन्याराशिस्थ चन्द्रमा बुधदृष्ट हो तो राजा, गुरु पृथ्वीकी समस्तसेनाका नायक, शुक्रसे विद्यानि पापग्रहोंसे दृष्ट हो तो मनुष्य स्त्रियोंके आश्रय होते हैं । तुलागत चंद्रमापर बुधादि शुभ ग्रहोंकी दृष्टि

तो क्रमसे ये फल हैं कि, बुधसे भूमिनाथ गुरुसे सुवर्ण क
वाला शुक्रसे क्रयविक्रयमें निपुण व्यापारी होते हैं ॥ ६८ ।

तुलराशिगते चंद्रे रव्यारार्किनिरीक्षिते ॥ ग्रहराशिस्वभा
वेन जायन्ते पापभागिनः ॥ ६९ ॥

तुलाराशिगत चंद्रमापर सूर्य, मंगल, शनिकी दृष्टि
तो ग्रह तथा जिसराशिमें वह पापग्रह हैं उसके स्वभावानुस
मनुष्य पापफल भागी होतेहैं ॥ ६९ ॥

वृश्चिके शशिनि जारजोटनो रंगकारकविभुर्विगतांगः ।
वीक्षिते विधनपो नरपालश्चंद्रजादिगगनाधिवासिभिः ७

वृश्चिकराशिगत चन्द्रमापर बुधकी दृष्टि हो तो जा
वा जारजोंके साथ फिरनेवाला गुरुसे रंग बनानेवा
शुक्रसे सर्वसामर्थ्य शनिसे अंगहीन सूर्यसे निर्द्धन अ
मंगलसे राजा होवै ॥ ७० ॥

ज्ञातीशो नृपतिर्जनाक्षितिपतिश्चन्द्रे तुरंगास्थिते दृष्टे विद्गु
रुभार्गवैर्गगनगैः प्रापैः सदंभः शठः ॥ शुभ्रांशौ मक
नरेशतिलको राजा गुणाग्रो धनी दारिद्र्योपहतो नृप
भवति ना दृष्टे बुधाद्यैर्ग्रहैः ॥ ७१ ॥

धनराशिगत चंद्रमापर बुध बृहस्पति शुक्र इन शुभग्रहों
दृष्टि हो तो क्रमसे अपनी जातिमें श्रेष्ठ, राजा, पृथ्वीपा
मनुष्य होता है पापग्रह शनि सूर्य मंगलकी दृष्टिसे दंभी अ
धूर्त्त भी होता है । मकरगत चन्द्रमापर बुधादिग्रहोंकी दृ
क्रमसे मनुष्यको फल है कि, राजाओंमें श्रेष्ठ. राजा, ग
वान्, धनवान्, दरिद्री राजा होता है ॥ ७१ ॥

कुंभे चन्द्रमसि स्थिते नरपतिक्ष्मापालतुल्यो भवेद्विक्र
तो धनदो बुधेज्यभृगुभिर्दृष्टे गुरुस्त्रीरतः ॥ शेषैश्चा

परापवादनिपुणोऽन्यस्त्रीरतः पापभाङ्मीने हास्य रुचिर्नृपो गुणपतिः पापैश्च पापास्पदः ॥ ७२ ॥

कुंभके चन्द्रमापर बुध गुरु शुक्रदृष्टिसे राजा वा राजतुल्य पराक्रमी, धनदेनेवाला और पापग्रहोंकी दृष्टिसे दूसरेके कलंकलगानेमें निपुण, परस्त्रीगामी, पापी होता है मीनके चन्द्रमापर बुधादिदृष्टि हो तो क्रमसे. (हास्यरुचि) हंसी दिल्लगीवाला, राजा, गुणोंका स्वामी होता है पापग्रहदृष्टि से पापका घर जानना ॥ ७२ ॥

राशौ राशौ यथा चन्द्रे ग्रहाणां दृष्टिजं फलम् ॥ तथा होरादिवर्गस्थे दृक्फलं चंद्रवद्ग्रहे ॥ ७३ ॥

जैसे यहां प्रत्येक राशि चंद्रमाके फल प्रत्येक ग्रहदृष्टि कहेहैं तैसेही होराद्रेष्काण सप्तांश नवांश द्वादशांशोंमें भी ग्रहफल होते हैं ॥ ७३ ॥

अथ होराफलमाह।

विषभादिदलोपगतैर्ग्रहैस्तदुपगः कुमुदाकरबान्धवः ॥ शुभफलो गदितः किल वीक्षितोऽशुभफलो विषमे स्वदले स्थितः ॥ ७४ ॥ समे स्वहोरासु गतः शशांक-स्तत्स्थग्रहैर्वीक्षितविग्रहश्च ॥ शुभप्रदोसावशुभोर्कहो-रागतः शशी को गदितः पुराणैः ॥ ७५ ॥

अब होराफल कहते हैं। विषमादि राशियोंके आदिदल अर्थात् सूर्य होरास्थित ग्रहोंसे दृष्ट सूर्य होरास्थित चन्द्रमा शुभदेनेवाला कहा है और विषमराशियोंके अन्त्यदल अर्थात् स्वहोरागत चन्द्रमा हो उसे चन्द्रहोरास्थित ग्रह देखें तो अशुभ फल देता है ॥ ७४ ॥ समराशियोंमें स्वीयहोरामें

चन्द्रमा चन्द्रहोरास्थित ग्रहोंसे दृष्ट भी शुभ फल देता है य
सूर्यहोरागत समराशिमें हो उसे सूर्य होरास्थित ग्रह देखे
अशुभ फल देनेवाला पूर्वाचार्योंने कहा है ॥ ७५ ॥

अथ होरादिषड्वर्गस्थे लग्ने चन्द्रवत्फलमाह ।

विषमभवनसंस्थः प्राग्दलं जन्मकाले तदुपगतखगेंद्रै
र्यत्र कुत्रापि दृष्टिः ॥ समभवनसमार्द्धे तद्गतैः खेचरें·
द्रैर्यदि भवति सुदृष्टं तच्छुभं जन्म विन्द्यात् ॥ ७६ ।
विषमसमगृहार्द्धे सत्फलं दृष्टिजातं भवति तदपसव्ये
व्यत्यये सर्वमेतत् ॥ भवनसमविभागे खेचरांशे सुधांशौ
खचरनयनजातं कल्पयेत्तुल्यमेव ॥ ७७ ॥

अब होरा आदिषड्वर्गगतलग्नोंमें चन्द्रमाके तुल्य फल क
हैं॥ जन्मकालमें लग्न वा ग्रह विषमराशिके पूर्वदल अर्थात् स
होरामें हो उसपर सूर्यहोरास्थित ग्रह किसी स्थानसे दे
तथा समराशिके पूर्वदल अर्थात् चन्द्रहोरास्थितको चन्द्रहो
गत ग्रह किसी स्थानसे देखे तो शुभ जन्म जानना ॥ ७६
विषम वा सम राशिके जिस दलमें है उसी दलगत उसे दे
तो शुभफल और उलटेमें एवं व्यत्ययमें वह फल नहीं हो
राशिके समविभागसे ग्रहांशमें चन्द्रमा चन्द्रमापर जैसा
फल कहा है उसीके तुल्य सभी ग्रहोंका फल जानना ॥ ७७

यस्य त्रिभागे खलु रात्रिनाथो विलोकितस्तत्पतिना च
मित्रैः ॥ शुभप्रदो जन्मनि वा दृकाणे तन्नाथदृष्टे शुभदं
विलग्नात् ॥ ७८ ॥

जिस ग्रहके द्रेष्काणमें चंद्रमा है उस ग्रहसे वा उसरा
के स्वामीसे, तथा मित्रग्रहसे दृष्ट हो तो शुफमल देता है

फल जन्ममें कहा है परंतु सभी जगह ऐसाही विचार कर चाहिये ॥ ७८ ॥

अथ रव्यादिनवांशकस्थे चंद्रे ग्रहदृष्टिफलमाह ।

भौमांशके शशिनि भास्करदृष्टदेहे ग्रामे पुरेष्वधिकृत खलु रक्षणाद्यैः ॥ भौमेक्षिते नरपतिर्बुधवीक्षिते च युद्धे भुजस्य कुशलो गुरुणा नृपश्च ॥ ७९ ॥ जातं धनाढ्यो भृगुणाऽर्कजेन विकत्थनो ज्ञो कलहान्वितश्चा मूर्खः सितांशे रविणा कुजेन परांगनाप्रीतिपरोऽर्थे लुब्धः ॥ ८० ॥ बुधेक्षिते भारविकालिदासतुल्य कवित्वे सुकविः सितांशे ॥ सत्काव्यकर्त्ता गुरुण सितेन सुखाऽनुरक्तः शनिनान्यदासः ॥ ८१ ॥

अब सूर्यादिनवांशगत चन्द्रमापर ग्रहदृष्टिफल कहते भौमांशकगत चंद्रमापर सूर्यकी दृष्टि हो तो ग्राम वा नग रक्षा आदिके काममें अधिकारी. कोतवाल प्रधान आदि हं मंगलकी दृष्टिसे राजा बुध दृष्टिसे (बाहुयुद्ध) कुस्तीमें चतुर गु दृष्टिसे राजा॥७९॥शुक्रसे धनाढ्य शनिदृष्टिसे कलहवाला ब गप्प उडानेवाला तथा अज्ञ भी होता है शुक्र नवांशक चन्द्रमापर सूर्यदृष्टि हो तो मूर्ख मंगलकी परस्त्रीके प्रेममें त तथा धनलोलुप ॥ ८० ॥ बुध देखे तो भारवि वा कालिद समान सुकवि होवै गुरुदृष्टिसे उत्तम काव्यरचनेवाला शु सुखमें तत्पर और शनिदृष्टिसे दूसरेका दास बनारहे ॥ ८१

समरभूमिचरो रविवीक्षिते धरणिगर्भभवेन च तस्करः। शिशिररश्मिजदृष्टतनौ विधौ भुवि कवीन्द्रपदं लभते नरः ॥ ८२ ॥ सुरगणार्चितदृष्टसुधाकरे नृपतिर्मंत्रिषद्

धिकृतो नरः ॥ भृगुजदृष्टतनौ कुमुदाधिपे हृदयहा-
रिसुगीतपरो नरः ॥ ८३ ॥ शशिनि शिल्पनिधिः
शनिवीक्षिते बुधनवांशगतेऽथ निजांशके ॥ परध-
नाहरणो रविवीक्षिते कृशधनः क्षितिजेन सुधाकरे ॥
॥ ८४ ॥ परद्रव्यलुब्धो बुधेनेक्षितेन्दौ तपोनिष्ठमुख्यः
सुरेज्येन दृष्टे ॥ सितप्रेक्षिते कामिनीपालितः स्वे न-
वांशे स्वकृत्येषु शक्तः शनीक्षे ॥ ८५ ॥

बुधनवांशस्थ चन्द्रमापर सूर्यदृष्टि हो तो रणभूमिमें पि नेवाला होवै मंगलकी दृष्टिसे चोर, बुधदृष्टिसे संसा कवीन्द्रपद पावै ॥ ८२ ॥ यदि उस चन्द्रमापर गुरुदृष्टि तो राजाके मंत्रिपदाधिकारी होवै, शुक्रदृष्टिसे मनको हर करनेवाले सुन्दरगीतमें तत्पर रहे ॥ ८३ ॥ शनिसे दृष्ट हो शिल्पजन्य निधिवाला होवै। अब निजांशकस्थके फल क हैं कि, स्वनवांशकी चन्द्रमापर सूर्यकी दृष्टि हो तो पर लेनेवाला होवै भौमदृष्टिसे अल्प धनी ॥ ८४ ॥ बुधदृ पराये धनका लालची, गुरुदृष्टिसे तपस्यामें निष्ठारखनेवाल मुख्य होवै शुक्रदृष्टिसे स्त्रीसे पालितरहे शनिदृष्ट हो तो अ कार्योंमें आसक्त रहे ॥ ८५ ॥

गुरुभवननवांशे पौरुषेण प्रसिद्धः समरसमयदेशव्यूहक
र्मोपदेष्टा ॥ सततहसनशीलो राजमंत्री विकामो रवि
मुखखगदृष्टे धर्मनिष्ठः सुधांशौ ॥ ८६ ॥

बृहस्पतिके नवांशकस्थ चन्द्रमापर सूर्यदृष्टि हो तो अ पुरुषार्थसे प्रसिद्ध होवै भौमसे रणके समय रण देशके तथा के के कर्मोंका उपदेशकरनेवाला होवै बुधसे वारंवार हंसनेवा गुरुसे राजमंत्री. शुक्रसे कामरहित शनिदृष्टिसे धर्मनिष्ठ होवै

स्वल्पप्रजोर्केजांशेन्दौ धनपूर्णोतिदुःखितः ॥ नृपस
न्मानगर्विष्ठः स्वकुलोचितकर्मकृत् ॥ ८७ ॥ दुष्टस्त्रि
यासु निरतः कदर्यो विभवे सति ॥ सूर्यादिदृष्टे शशिनि
भानोश्च शशिवत्फलम् ॥ ८८ ॥

शनि नवांशकस्थ चन्द्रमापर सूर्यदृष्टि हो तो संतान अ
होवैं मंगलकी दृष्टिसे धनसे पूर्ण, बुधसे अतिदुःखित, बृहस्पति
राजसन्मानसे गर्ववाला, शुक्रदृष्टिसे अपने कुलके उचितक
करनेवाला ॥ ८७ ॥ शनिदृष्टिसे दुष्टभार्याओंमें तत्पर अ
ऐश्वर्यहुयेमें भी कृपण होवै चन्द्रमापर सूर्यादिदृष्टिके इ
फल कहे हैं ऐसे ही फल सूर्यके भी तत्तन्नवांशकस्थ हों
प्रत्येक ग्रहके जानने ॥ ८८ ॥

शशिनवांशयुतौ ग्रहदृष्टिजं तदपि लग्ननवांशयुते
फलम् ॥ रविसुधाकरयोर्ग्रहदृष्टिजं समफलं प्रवदन्ति
तनावपि ॥ ८९ ॥

चन्द्रमा और नवांशकके योगमें जो फल ग्रहदृष्टिके क
वही लग्न नवांशकके योगसे होते हैं तथा सूर्यचन्द्रमाके
फल ग्रहदृष्टिके हैं उन्हीके तुल्य फल लग्नमें भी होते हैं ॥ ८

भौमांशके चन्द्रयुतेर्कदृष्टे ग्रामाऽधिकार्यादिफलं यदु
क्तम् ॥ भौमेक्षिते घातरुचिः फलं यत्तच्चन्द्रदृष्टेऽर्कयु
जांशयोगे ॥ ९० ॥ नवांशके दृष्टिफलं शुभं यद्वर्गोत्त
तत्परिपूर्णमुक्तम् ॥ स्वांशे शशी मध्यमतो फलद
परांशके स्वल्पफलं शुभं स्यात् ॥ ९१ ॥ परनवांशगृ
कुमुदाऽधिपेऽशुभफलं सकलं सफलं तदा ॥ स्वनवभ
मगते खलु मध्यमं गृहसमांशगतेऽथ फलं लघु ॥ ९

जो मंगलके नवांशमें सूर्यदृष्ट चन्द्रमाका ग्रामाधिकार आदि फल कहा है तथा मंगलकी दृष्टिसे घातरुचि फल जो कहा है तैसे ही सूर्य नवांशगत मङ्गल मङ्गलनवांशगत सूर्यप चन्द्रमाकी दृष्टि होनेमेंभी कहना ॥ ९० ॥ जो नवांशक शुभ फल दृष्टिका कहा है वह वर्गोत्तमांश होनेमें पूर्ण होत है अपने अंशकमें चन्द्रमा हो तो फल मध्यम और शत्रु अंशकमें होनेपर अल्प होताहै ॥ ९१ ॥ चन्द्रमा शत्रुनव शकमें हो तो संपूर्ण अशुभफल सफल होता है अप नवांशकमें हो तो मध्यम. अर्थात् शुभफल तो नह देता परन्तु स्वनवांशकी होनेसे अशुभ भी नहीं दे समग्रहके राशिनवांशकमें हो तो अलपफल देता है ॥ ९२ ॥

मेषांशके ग्रामपुराधिकारी शुभं फलं घातरुचिस्तद्-
ग्र्यम् ॥ वर्गोत्तमे पूर्णफलं शुभं स्यात्तुच्छं यदन्यत्क-
थितं फलास्यै ॥ ९३ ॥ नवांशनाथः परिपूर्णवीर्यो
बलेन हीनो गृहनायकश्च ॥ नवांशनाथो ग्रहदृष्टिरा-
शिफलं विनाश्यांशफलं ददाति ॥ ९४ ॥

मेषांशकस्थ चन्द्रमापर सूर्यदृष्टिसे ग्रामपुराधिकारी भौ दृष्टिसे घातरुचि आदि प्रत्येकग्रहके जो शुभाशुभ फल क हैं. वे. चन्द्रमाके वर्गोत्तमांशकी होनेमें. शुभफल पूर्ण होता अशुभ फल भी ग्रहदृष्टिका हो तो नहीं होनेपाता और ग्रक शत्रुनीचादि नवांशकी हो तो शुभ फल तुच्छ होते हैं अशु पूर्ण होतेहैं॥९३॥नवांशेश पूर्ण बली और राशीश निर्बल हो नवांशेश ग्रह दृष्टिजन्य राशिफलको नाश करके अपना फ देता है ॥ ९४ ॥

भास्कराद्विनयो वित्तं ज्ञानधीनैपुणं तथा ॥ अधमं मध्यमं पूर्णं केन्द्रादौ शशिनि स्थिते ॥ ९५ ॥ मूर्खा विशीलाश्चपला दरिद्रा केंद्रे सुधांशौ धनिनो द्वितीये ॥ आपोक्लिमस्थे गुणिनः सुशीला भवन्ति मर्त्या रवित क्रमेण ॥ ९६ ॥

सूर्यसे चन्द्रमा केन्द्रमें होवे तो नम्रता धन. (ज्ञान) ई तथा ऐश्वरीय प्रपंचका जानना. (निपुणता) शास्त्रादि ज्ञ (धी) धारणादि शक्ति अधम होती हैं आपोक्लिममें हो मध्यम और पणफरमें हो तो पूर्ण होते हैं ॥ ९५ ॥ इसी खुलासा कहते हैं कि सूर्यसे चन्द्रमा केन्द्रमें हो तो मनु मूर्ख, शीलरहित, चंचल, दरिद्री होते हैं पणफरमें हो धनवान् आपोक्लिममें हो तो गुणवान् और सुशील क्र होते हैं ॥ ९६ ॥

अथाधियोगः ॥ सौम्यैर्जायारिपुनिधनगैः संस्मृत श्चाधियोगः ॥ सेनापालो भवति नृपतेर्मंत्रपाल नरेशः ॥ चन्द्रस्थानाद्विभवसहिता रोगमुक्त सुखाढ्याः ॥ सर्वे संपत्सहितनिलया नष्टविद्वेषिणश्च॥९

अधियोग कहते हैं कि, चन्द्रमासे ६ । ७ । ८ भावोंमें ग्रह हों तो अधियोग होता है इसमें विशेषता यह है कि ८ में से एकमें शुभग्रह हों तो सेनापति दोनोंमें राजा तीनोंमें हों तो राजा होता है और अधियोगवाले रोगर सुखयुक्त संपत्तिसे पूर्ण घरवाले तथा शत्रुनाशी भी होते हैं ॥ ९७ ॥

चन्द्राद्वितीये सुनफां वदन्ति ग्रहेऽनफां द्वादशधाम-
संस्थे ॥ द्विर्द्वादशे दौरुधरां विनार्के योगास्त्रयोमी
क्षितिपालसंज्ञाः ॥ ९८ ॥ चंद्राद्वितीयभवनं रहितं
ग्रहेण रिष्फं तथा भवति केममहीरुहाख्यम् ॥ योगे
नृपालकुलजा अपि दुःखभाजो नूनं भ्रमंति परितो
वसनान्नहीनाः ॥ ९९ ॥ केन्द्रे सुधांशुर्ग्रहयुक्तकेंद्रं
केमद्रुमस्य प्रकरोति भंगम् ॥ सर्वैर्ग्रहैर्दृष्टतनौ सुधांशौ
तथापि तद्भंगमुशति सन्तः ॥ १०० ॥

चंद्रमासे दूसरे भावमें सूर्यरहित कोई ग्रह हो तो सुनफा
बारहवेंमें हो तो अनफा, दोनो तर्फ हों तो दुरुधरा यं
कहते हैं ये तीनों योग राजयोग संज्ञक हैं ॥ ९८ ॥ य
चन्द्रमासे २ । १२ स्थान ग्रह रहित हों तो केमद्रुम योग हो
है इस योगवाले राजकुलमें भी जन्मे हों तौ भी दुःख भोग
वाले अन्नवस्त्रसे हीन होकर इधर उधर फिरनेवाले होते
॥ ९९ ॥ केमद्रुमभंग कहते हैं कि, चन्द्रमा केन्द्रमें हो क
ग्रह केंद्रमें हो तो केमद्रमभंग होता है यदि लग्न वा चन
माको संपूर्ण ग्रह देखें तौ भी इसयोगका भंग सज्जन क
॥ १०० ॥

मनोदुःखहीनोऽनफायां प्रजातः प्रभुः ख्यातकीर्तिर्निरु-
ग्देहयष्टिः ॥ विशालोरुवक्षः सुबाहुः सुनेत्रः कविर्बन्धु-
पालो नृपालोऽथवा स्यात् ॥ १०१ ॥ त्यागान्वितो
धनविभूषणवाहनाढ्यो भोगान्वितो दुरुधराप्रभव
सुभृत्यः ॥ केमद्रुमे नृपतिवंशसमुद्भवोऽपि निःस्व

परान्नपरगेहनिवासदुःखी ॥ १०२ ॥ योगस्तृतीय
सुनफाऽनफाभ्यां भौमादिभिर्दौरुधराख्यभेदः ॥ चंद्रा
दियोगे गदितस्तु पूर्वैः प्रभाकरं तत्र तु वर्जयित्वा॥१०३

जिसका जन्म अनफायोगमें भया वह मानसीदुःखों रहित, सर्वसामर्थ्य, विख्यातकीर्ति, निरोगशरीर, बडे उ बडे वक्षस्थलवाला, सुन्दर नेत्र सुन्दर भुजावाला, कवि करनेवाला, बंधुवर्गका पालनकरनेवाला अथवा राजा होता है ऐसे ही सुनफावाला भी जानना ॥ १०१ ॥ दुरुध योगवाला, दाता, धनभूषण वाहनयुक्त, भोगवान् और अ सेवकोंवाला होता है केमद्रुमयोगमें राजवंशमें उत्पन्नहु भी निर्द्धन, परान्नभोगी, पराये गृहमें निवाससे दुःखी रह है ॥ १०२ ॥ जो सुनफा अनफासे तीसरा योग दुरुध संज्ञक भेद है भौमादिग्रहोंसे चन्द्रादियोगोंमें कहा है उस भी अनफाके तुल्य फल जानना इनयोगोंमें सूर्य वर्जि है ॥ १०३ ॥

पंचैकेन दश द्वाभ्यां दशयोगास्त्रिभिस्त्रिभिः ॥ योगा
श्चतुर्भिः पंचात्र एको योगश्च पंचभिः ॥ १०४ ।
सुनफा संज्ञकास्त्रिंशत्तावंतश्चानफाख्यकाः ॥ त्रिषष्टिदौ
रुधरका गदिताश्च पुरातनैः ॥ १०५ ॥ यावद्विकल
विलिखेदधोधस्तदंततोत्युक्तममूर्द्धमाद्यात् ॥ उत्पाद्य
माद्येन पुनः पुनस्तदंत्येन हीनः सुनफानफौ स्तः॥१०

अनफा सुनफा दुरुधरा योगोंके भेद कहते हैं कि योग भौमादि पांच ग्रहोंकरके पांच भेद दोनोंके पांच होनेसे दश. तीनोंके १० । १० । चार ग्रहोंसे ५ और पांच

एक ये ३१ भेद होते हैं ॥१०४॥ ऐसे ही सुनफाके ३१ अनफा
३१ हैं दुरुधराके १८० प्राचीनाचार्योंने कहे हैं ॥ १०५
जितने विकल्प हों उतने ऊपर पहिला लिखके उसके नी
नीचे क्रमसे लिखतेजाना । प्रथम विकल्पसे सभीको उत्प
करके वारंवार स्थापना करके अंतविकल्पघटाय देना ये
सुनफा अनफाके प्रस्तार होते हैं इनके पूरे विकल्प त
प्रस्तारक्रम यहां ग्रन्थबढनेके भयसे नहीं लिखे. मेरी बनाई
बृहज्जातकमाहीधरी भाषाटीकाके चन्द्रयोगाध्याय श्लोक
त्रिंशत्स्वरूपा इत्यादिमें पूरा पूरा विस्तार लिखा है पाठ
देखलेवैं ॥ १०६ ॥

धरणिजसुनफायामुद्यमी शूरयुक्तः शशिसुतविहिताय
नृत्यचित्रादिवेत्ता ॥ भवति लिखनाशिल्पी सर्वकार्येषु
दक्षः परजनहितकारी कामचारी मनुष्यः ॥ १०७ ॥
चन्द्रात्कुटुंबोपगते सुरेज्ये धनेन धर्मेण च सौख्ययुक्तः ।
महीशपूज्यो महनीयकीर्तिर्द्धर्मक्रियास्वेव धनव्ययं
च ॥ १०८ ॥

प्रत्येक ग्रहकृत सुनफाके फल कहते हैं । मंगलकृत सुन
हो तो उद्यमी शूरत्व युक्त होवै, बुधकेमें नाच, चित्रकारी ज
लिखनेका कारीगर होवै समस्तकामोंमें चतुर होवै, दू
मनुष्यका भी हितकरे तथा स्वेच्छाचारी मनुष्य होता है॥१०
चंद्रमासे दूसरा बृहस्पति हो तो धनसे, धर्मसे सुखयुक्त
राजपूज्य बडी कीर्तिवाला और धर्मकार्यमें धनव्यय क
वाला होवै ॥ १०८ ॥

भृगौ स्वभावोपगतेऽतिलोलः प्रियासु कामेन धने
पूर्णः ॥ सुखप्रियः स्पर्शसुगंधरूपरसानुरक्तो गणपूजि

तश्च ॥ १०९ ॥ परगृहपरवस्त्रवाहनानामुपभोक्ता परवैभवेन पूर्णः ॥ रवितनयगते कुटुंबराशौ परपरिवारयुतो गणेश्वरश्च ॥ ११० ॥

चंद्रमासे शुक्र दूसरे भावमें हो तो प्रियामें अतिलोलु कामसे एवं धनसे परिपूर्ण सुखाभिलाषी सूंघने, देखने, सुनने छूने, स्वादलेने, जो ये ५ वर्गोंदींद्रियोंके गुण हैं इनमें आसक्त और बहुत मनुष्योंसे पूजाजावे ॥ १०९ ॥ शनि हो तो पराये घर, वस्त्र, वाहनोंको भोगकरे पराये ऐश्वर्यसे पूर्णरहे पराये कुटुंबसे कुटंबी होवे. बहुतमनुष्योंका स्वामी भी होवे ॥ ११० ॥

यावद्विकल्पं विलिखेद्विलोमं पूर्णेन पूर्णेन परं निहन्यात्॥ कृत्वार्द्धितं प्राग्गुणहीनयुक्तमेवं विदुर्दौरिधरप्रभेदान् ॥ ॥ १११ ॥ दारिद्र्योपहतस्य जन्म दिवसे दृश्ये शशी चेत्स्थिते लुप्तेर्द्धे शशिनि स्थिते नरपतेरैश्वर्ययुक्तो भवेत् ॥ दृश्येर्द्धे हिमदीधितौ नरभवो रात्रौ यदैश्वर्ययुक् लुप्तेर्द्धे गलितः शशी निगदितो जातो दरिद्रो भवेत् ॥ ११२ ॥

इनयोगोंके जितने विकल्प हैं उलटे लिखके पूर्णसे पूर्णको हतकरना आधाकरके पूर्व गुणितमें यथासंभव हीन वा युक्त करना इसप्रकार दुरुधराके भेद होते हैं ॥ १११ ॥ जिसके जन्ममें चन्द्रमा (दृश्यार्द्ध) चतुर्थसे ऊपर दशमके भीतर हो और जन्म दिनका हो तो दारिद्रसे पीडित रहे जो (लुप्तार्द्ध) चतुर्थके भीतर दशमके ऊपर हो तो ऐश्वर्यवान् हो रात्रिके जन्ममें चन्द्रमा दृश्यार्द्धमें हो तो ऐश्वर्यवान् लुप्तार्द्ध हो तो दारिद्री होवे ॥ ११२ ॥

अथ धनवत्ताविचारः ।

दशत्रिलाभारिगतः शुभाश्च महाधनो मध्यधनः शुभाभ्याम् ॥ विलग्नतो वामृतरश्मितो वा शुभेन मध्यादधनश्च कश्चित् ॥ ११३ ॥ पापाः शुभा इव धनेन विवर्द्धयन्ति त्र्यायारिमध्यभवने शशिनोथ लग्नात् ॥ ते मध्यमन्दिरगता अपि वर्द्धयन्ति हित्वा फलं भुजगयोगभवं विशेषात् ॥ ११४ ॥

चन्द्रमासे अथवा लग्नसे समस्तग्रह १० । ३ । ११ । ६ भावोंमें तो महाधनी होवै यदि शुभ अशुभ ग्रह हों तो मध्यम धनी य एक शुभ ग्रह हों तो मध्यधनी और कोई निर्द्धन भी होजा है ॥ ११३ ॥ उपचय ३ । ११ । ६ । १० स्थानोंमें लग्नसे वा चं मासे पापग्रह शुभग्रहोंके जैसा शुभ फल देते हैं और वे दशमभावमें भी होनेसे विशेष करके भुजगयोगका फल क कर धनबढाते हैं ॥ ११४ ॥

अथ चन्द्रभावफलम् ।

तनौ चन्द्रे प्रेष्यो भवति च जडो मूकबधिरः स्वगेहो तस्मिन्बहुसुतधनो द्रव्यभवने ॥ कुटुम्बी द्रव्याढ्य भवति सहजे मारणपरः सुखे सौख्यासक्तो भवति तन येऽपत्यसहितः ॥ ११५ ॥ रिपौ नैकद्वेष्यो भवति मृ कायानलमदः स्वभावेन क्रूरो भवति न पटुः कार्यव रणे ॥ मदे कामेनाढ्यो भवति परसम्पत्स्वसह सुबुद्धी रंध्रेन्दौ भवति नियतं व्याधिसहितः ॥११६ भाग्ये सौभाग्ययुक्तो भवति गुणवनो बन्धुमित्रात

जाढ्यः कर्मप्राप्ते सुधांशौ शुचिरतिधनधीसंयुतो धर्मनिष्ठः ॥ भावे लाभाभिधेये भवति गुणधनैः सुप्रसिद्धः सुबन्धू रिष्फे क्षुद्रोंगहीनो परिभवपातितो नेत्ररोगातुरश्च ॥ ११७ ॥

चन्द्रभाव फल कहते हैं कि, लग्नमें हो तो दूसरेका क्रू होवै और गूंगा, बहरा मूर्ख होवै, यदि वही लग्नगत चन्द्रम स्वगृही वा अपने उच्चका होवे तो बहुत पुत्र बहुत धन हों द्वितीयस्थानमें हो तो कुटुम्बी और धनाढ्य भी होवे. तृती हो तो मारणमें तत्पर रहे चतुर्थ हो तो सुखमें आसक्त रं पंचम हो तो सन्तानवाला होवै ॥ ११५ ॥ छठा हो तो अने शत्रु होवैं तथा शरीर, जाठराग्नि मंद मृदु होवे स्वभावकर क्रूर होवै कार्य करनेमें चतुर न होवै सप्तम हो तो काम युक्त सुबुद्धि तथा पराई सम्पत्तिको न सहारे अष्टम हो रोगयुक्त रहे ॥ ११६ ॥ नवम हो तो सौभाग्ययुक्त गुणई धनवाला बन्धुमित्रोंसे युक्त, दशम होतो पवित्र बहुत ध बडी बुद्धिसे युक्त तथा धर्ममें निष्ठा रखनेवाला होवै ग्यारह हो तो गुण और धनोंसे सुप्रसिद्ध होवै अच्छे बन्धुवर्ग हं बारहवां होवै तो क्षुद्र, अंगहीन तिरस्कारसे पतित और रोगसे रोगी भी रहे ॥ ११७ ॥

अथ चन्द्रद्रेष्काणफलम्।

आत्मदृकाणेथ सुहृदृकाणे जातः शशी मंगलतुल्य रूपम् ॥ गुणप्रशस्तं च समदृकाणे कुलस्य शत्रौ गु रूपहीनम् ॥ ११८ ॥ व्यालदृकाणायुधभृदृकाणचतु ष्पदाख्याण्डजमे सुधांशौ ॥ हिंस्रोतिनिन्द्यो गुरुतल्प गामी परिश्रमं मार्गगतः करोति ॥ ११९ ॥ सिंहा

मध्यचतुष्पदाख्यौ कीटादिमौ द्वौ भुजगहकाणौ॥कर्का-
श्वयोरादिमपक्षिसंज्ञौ द्रेष्काणमध्ये यवनोपादिष्टौ॥ १२०

चन्द्रद्रेष्काण फल कहते हैं। चन्द्रमाके अपने द्रेष्काण मित्रके द्रेष्काणगत होनेमें जिसका जन्म हो वह मंगल तुल रूप, अर्थात् मंगलमूर्त्ति होता है समद्रेष्काणमें अपने कुलानुर गुणोंसे प्रशंसनीय और शत्रुद्रेष्काणमें गुण एवं रूपसे हीन होत ॥११८॥यदि चंद्रमा, सर्प शस्त्रधारी, चतुष्पद अण्डज द्रेष्काणो से किसीमें हो तो पराई हिंसाकरनेवाला, अतिनिंद्य गुरुपत गमनकरनेवाला होवै और मार्गमें परिश्रम करनेवाला हो है ॥ ११९ ॥ इन द्रेष्काणोंकी संज्ञा कहते हैं कि, सिंहमेष मध्य द्रेष्काण चतुष्पद, कर्क वृश्चिकके पाहिले २ भुजग. क धनके पहिले पक्षिसंज्ञक द्रेष्काण यवनाचार्यने कहे हैं । य उक्त द्रेष्काणसंज्ञा अन्य प्रमाणग्रन्थोंसे ठीक नहीं मिल प्रमाणादिक तो यह है कि, वृश्चिकके पाहिला दूसरा कर्क दूसरा तीसरा मीनका तीसरा ये सर्प द्रेष्काण हैं मेष प्रथम तीसरा. मिथुनके द्वितीय तृतीय. सिंहके दूसरा ती रा कन्याका दूसरा तुलाका तीसरा धनका पहिला तीस मकरका तीसरा ये आयुधधारी द्रेष्काण हैं मेषका दूस वृषके दूसरा तीसरा कर्क सिंहके पाहिले कन्याका दूस धनका प्रथम ये चतुष्पद हैं मिथुनका दूसरा सिंहका प्रथ तुलाका दूसरा कुंभका प्रथम ये पक्षिद्रेष्काण हैं जहां चंद्र दो द्रेष्काणोंमें हो तहां फल भी दोही होंगे जैसे अपने अ सर्प द्रेष्काणमें कर्कराशिमें हो जाता है ॥ १२० ॥

मेषादिनवांशस्थ चन्द्रफलम् ।

चौरो भोक्ता भवति गुणवान्द्रव्यपूर्णो नरेशः क्लीबः शूरो
भवति नियतं याचको दासवृत्तिः ॥ पापासक्तो मलि

वदनः प्राणिघाती मनीषी प्रागुक्तार्थै भवाति तदधीशश्च वर्गोत्तमांशे ॥ १२१ ॥

मेषादिनवांशगत चन्द्रमाके फल कहते हैं कि, चंद्रमा मे नवांशमें हो तो चोर, वृषमें भोग भोगनेवाला, मिथुनमें गुण वान्, कर्कमें धनसे पूर्ण, सिंहमें नरपति, कन्यामें नपुंसक, तुल में शूरमा, वृश्चिकमें भीख मांगनेवाला, धनमें गुलामवृत्तिवाल मकरमें पापासक्त, कुंभमें मलिनमुख तथा प्राणिघाती, मी में पंडित होवे वही चंद्रमा यदि वर्गोत्तमांशमें होवै तद फलोंका अधिपति होता है जैसे मेषके मेषांशमें हो तो चं रोंका अधिपति वृष वृषांशमें गुणवानोंका नायक इत्यादि १२१

द्रव्यस्वभावप्रतिरूपपण्यं परस्वदारासवपण्यवन्तम् ॥ जातं स वक्रः कुरुते हिमांशुर्यंत्राश्मकारं स दिनाधिनाथः ॥ १२२ ॥ सर्वार्थसूक्ष्माक्षियुतं सुधांशुः स्वपुत्रयुक्तं प्रथितं सुशीलम् ॥ करोति जातं प्रियवाक्ययुक्तं सौभाग्यवंतं सुयशोगुणाढ्यम् ॥ १२३ ॥ कुलप्रधानं स्थिरबुद्धिमन्तं वित्तेश्वरं सेंदुगुरुः करोति ॥ सभार्गवः किंशुकरंगकारं क्रियाक्रियादौ कुशलं हिमांशुः॥१२४॥

चंद्रमा भौमसहित होवै तो वस्तुके स्वभावके अनुरू व्यापारी. परधन परस्त्री और मद्यका व्यापारी मनुष्यक करता है सूर्ययुक्त होवै तो यंत्र तथा पत्थरके काम करनेवाल करता है ॥ १२२ ॥ बुधयुक्त होवै तो सम्पूर्ण अर्थ तथा सूक्ष्म विचार बारीकी देखनेवाला, सुशील, विख्यात प्रियवा युक्त सौभाग्य, यश गुणोंसे युक्त करता है ॥ १२३ ॥ चंद्र बृहस्पति युक्त होवे तो मनुष्यको अपने कुलमें प्रधान. स्थि बुद्धिवाला धनाधीश करता है शुक्रयुक्त होवै तो वस्त्र

वाला, करने न करनेके कामकी योग्यायोग्यता विचा
वाला करताहै ॥ १२४ ॥

परिणीताक्षतायां तु जायमानं सवर्णतः ॥ स सूर्यपुः शीतांशुः कुरुते च पुनर्भवम् ॥ १२५ ॥ यद्यत्फलं द्विग्रहयोगजातं तन्वादिसंयोगफलं विचार्य ॥ वाच्यं ग्रहाणां खलु जन्मकाले ज्योतिर्विदैः श्रेष्ठविचारदक्षैः ॥ १२६

शनियुक्त चंद्रमा हो तो विवाहिता अक्षतयोनिमें स सवर्णसे पैदा होवै अथवा पुनर्भूको अपनी बनावे स्त्रीका तो स्वयं पुनर्भू होवै ॥ १२५ ॥ जन्मकालमें जो जो फल ग्रहयोगोंके हैं उनमें लग्नादिभावोंके संयोग फलभी विचा युक्तिसे श्रेष्ठविचारमें चतुर ज्योतिषियोंने ग्रहफल कहने ॥ १२

अथ भौमादि त्रिंशांशकस्थचंद्रफलम् ।

गुणोर्जितः स्याद्वधको धनाढ्यो बुधप्रियः सर्वजने नूनम् ॥ भौमादिभागोपगते हिमांशाविन्द्वर्कयोरेकग योः फले स्तः ॥ १२७ ॥

त्रिंशांशफल चंद्रमाके कहते हैं कि, भाम त्रिंशांशम तो गुणोंमें श्रेष्ठ होवै बुधसे वधकरनेवाला, बृहस्पतिसे ध ढ्य, शुक्रसे पंडित शनिकेसे सब मनुष्योंका प्रिय होवे । च मा सूर्य एक ही त्रिंशांशमें हों तो यही शुभाशुभ दो फल होते हैं ॥ १२७ ॥

अथाऽन्तर्दशा ।

अऽन्तर्दशायां शशिनः करोति नृपप्रभावं तमथार्त्तवन्तम् ॥ नीचोऽबलः शत्रुगृही क्षयार्त्तमथोंगभंगं नलिनीपतिश्च ॥ १२८ ॥ शस्त्राग्निवित्तोत्थभयं महीजश्चो

प्रमोषार्थगृहं सशोकम् ॥ गजाश्वचामीकरलाभसौख्य
वधो दशायां शशिनः करोति ॥१२९॥ अयत्नतो मं
जनाद्द्विजाद्वा नानार्थवस्त्राभरणानि जीवः॥ददाति नीचा
रिविनाशभावमृतेऽन्यसंस्थः शशिनो दशायाम् १३०॥

अब चंद्रदशामें अंतर्दशा फल कहतेहैं कि, चंद्रमा अपनी अं
र्दशामें राजकांतिवाला तथा धनवान् करता है यदि नी
निर्बल, शत्रुगृहीत होवे तो क्षयरोगसे पीडित करता है स
के भी ऐसे ही फल हैं, चंद्रमामें इतना विशेष है कि, क्षीणां
होवे तो अंगभंग भी करता है॥ १२८ ॥ मंगलमें, अ
अग्नि और धन नाशका भय, तथा चोरका लूटा घर शो
सहित करता है बुध चंद्रमाकी दशामें हाथी घोडे सुवर्ण
लाभका सुख देता है ॥ १२९ बृहस्पति मंत्रीजनसे वा ब्राह्म
णसे विनाही प्रयत्नके अनेक प्रकारके धन, वस्त्र, भूष
देता है परंतु ये फल तब हैं जब नीच शत्रुराशि, और आ
मभावमें न हो, इनभावोंमें विपरीत फल है ॥ १३० ॥

नानाविचित्रांबरवाहनानां लाभं वरस्त्रीशयनाशनानाम् ॥ अन्तर्दशा यच्छति भार्गवस्य स्थिता दशायां रजनी करस्य ॥ १३१ ॥ म्लेच्छान्निषादाद्व्यसनं महान्तं रोगाऽभिभूतं स्वजनस्य शोकम् ॥ करोति शोको रजनीकरस्य दशामुपेतोरिगतो विशेषात् ॥१३२॥ नीचारिभांशास्तगतग्रहाणां दशोक्तयोगग्रहदृष्टिजानि ॥ दशांतरात्मोत्थशुभं विनाश्य फलानि पापान्यपयांति पाकम् ॥ १३३ ॥ मित्रोच्चमूलस्व

ग्रहोदितानां शुभानि सर्वाणि दशोक्तजानि ॥ फलन्ति पापानि समं व्रजन्ति विचार्य सर्वं सकलं ग्रहस्य १३४॥ इति श्रीमहादेवपाठकविरचिते जातकशिरोमणौ चन्द्रदशाऽध्यायो दशमः ॥ १० ॥

चन्द्रदशामें शुक्रकी अन्तर्दशा अनेकप्रकारके विचित्र व भूषणोंका लाभ श्रेष्ठ स्त्री, शय्या, भोजनोंका लाभ देती ॥ १३१ ॥ चन्द्रदशामें शनिका अन्तर विशेषकरके शत्रुभव गत, म्लेच्छ, निषादोंसे बडा (व्यसन) उपद्रव देती है, र होता है, अपने मनुष्यका शोक होता है ॥ १३२ ॥ जो ग नीच शत्रुराशिअंशमें तथा अस्तगत हो उनका दशोक्तये ग्रहदृष्टिसे उत्पन्न तथा अपनी दशा अन्तर्दशाके फलोंको ना करके पापफल फलित करते हैं॥१३३॥ मित्रराशि उच्चराशि स्वगृहगत उदित ग्रहोंके दशोक्त फल फलते हैं। और प फल शमित होजाते हैं इसप्रकार ग्रहका विचार करके प कहना ॥ १३४ ॥ इति श्रीमहीधरकृतायां जातकशिरोम भाषाटीकायां चन्द्रकलाऽध्यायो दशमः ॥ १० ॥

अथ सूर्यफलविचारः ।

मित्रोच्चस्वगृहस्थितो दिनपतिः स्थानाद्रिसक्तो भवेद्भू पालाहवदंतिदन्तकनकव्याघ्रादिचर्मोद्भवैः ॥ द्रव्यैर्द्धर्म समुद्भवैश्च कुरुते स्वस्यां दशायां जनं पूर्णं तीक्ष्णमज स्रमुद्यमरतं ख्यातं प्रतापाऽन्वितम् ॥ १ ॥ नीचे शत्रुगृ हादिवर्गसहिते भानौ भवंत्यापदो भूपालाहवशास्त्रतस्क रभवाः पापानुरक्तः शठः ॥ भार्यापुत्रधनापदः परिभव

भृत्यादिभिर्बंधुभिः स्थानत्यागकदन्नभोजनमहद्दुःख
भजन्ते नराः ॥ २ ॥

सूर्यफल विचार कहते हैं। सूर्य मित्र, उच्च, स्वगृहस्थि
हो तो अधिकारी आदि स्थानादिकोंमें समर्थ होवे त
सूर्य उच्चादिस्थ, स्वदशामें राजाओंका युद्ध, दन्तभूषादि वस
सुवर्ण, व्याघ्रादिचर्मोंसे युक्त द्रव्योंसे धर्मसे उत्पन्न वस्तुसे शु
मनुष्यको करता है और तीक्ष्ण. वारम्वार उद्यममें तत
विख्यात, प्रतापयुक्त करता है ॥ १ ॥ यदि नीच वा शत्रु
नवांशादिमें हो तो राजा, संग्राम, शस्त्र, चोरसे आप
होती है पापमें तत्परता शठता होती है स्त्री पुत्र धनसम्ब
आपत्ति सेवकादिकोंसे बन्धुवर्गसे तिरस्कार मिलता है स
नत्याग होता है कोदों आदि कुत्सित अन्न भोजनको मि
हैं बड़े दुःख मनुष्य भोगते हैं ॥ २ ॥

अथ रविराशिफलानि।

ख्यातो रवौ मेषगतेऽटनश्च धनी स्वजीवी चतुरः स
तुंगे ॥ सुगन्धवस्त्रक्रयविक्रयज्ञः स्त्रीद्वेषकृद्गोसाहि
सुगीतः ॥ ३ ॥ भानौ मिथुनराशिस्थे विद्याज्योति
वित्तवान् ॥ परकार्यपरस्तीक्ष्णं कर्केऽस्वः पथि दुः
भाक् ॥ ४ ॥

सूर्यके राशिफल कहते हैं कि, मेषराशिका सूर्य हो
विख्यात और फिरनेवाला, भी होवे, मेषमें उच्चांशकी हो
धनवान्, धनव्यापारसे आजीवन करनेवाला और चतुर
होवे वृषका हो तो सुगन्धिद्रव्य तथा वस्त्रोंके खरीदने बेच
अभिज्ञ, और स्त्रीद्वेषी होवै ॥ ३ ॥ मिथुनसे विद्या ज्यो
धनसे युक्त होवै कर्कका हो तो पराया कार्य करनेमें त
तीक्ष्णस्वभाव निर्द्धन और मार्गमें दुःखभोगनेवाला होवे

सिंहे गोकुलशैलकाननरतः प्राज्ञो बलेनान्वितः कन्यायां लिपिलेख्यवित्सुगणकः स्त्रीतुल्यदेहो रवौ ॥ जूके मद्यकरोऽथ मार्गनिरतः स्वर्णक्रये विक्रये विज्ञः कीटगते विषार्जितधनः क्रूरोऽस्त्रवेत्ता शठः ॥ ५ ॥

सिंहमें होवै तो गोकुल, पर्वत, बनमें प्रसन्न रहै बुद्धिमा तथा बलवान् भी होवै। कन्यामें हो तो लिखनेके काम जान वाला, उत्तम ज्योतिषी और स्त्रीके तुल्य देह होवै, तुलामें हो तो मद्यबनानेवाला, रास्ताचलनेमें तत्पर, सुवर्णका व्यापा जाननेवाला होवै, वृश्चिकमें सूर्य होतो विषकर्म कमाये ध से धनी होवै क्रूरस्वभाव अस्त्रविद्याजाननेवाला तथा श होवै ॥ ५ ॥

शिल्पी रवावश्वगते धनी स्याद्भैषज्यकर्मा कुवणिक्च नीचः ॥ मृगेऽन्यदारानिरतोऽतिलुब्धो धनापहारी प्रथितः पृथिव्याम् ॥ ६ ॥ घटे रवौ भाग्यपरिच्युतोऽस्वो नीचः सुतोनः खलु निंदितश्च ॥ मुक्ताप्रवालादिधनी झषस्थे कृतादरः स्याद्बहुसुन्दरीभिः॥७॥ (अथात्र चन्द्रवत्फलकल्पना) राशौ बलिष्ठे गृहनायकेऽपि राशिस्थितार्कस्य फलं यदुक्तम् ॥ पुष्टं द्वयोरेकतमे बलिष्ठे मध्यं फलं हीनफलं न कस्मिन् ॥ ८ ॥

सूर्य धनका होवै तो शिल्पविद्या जाने धनवान् होवै, औ थिका कामकरे, निंद्यव्यापारी और नीचभी होवै मकरमें तो परस्त्रीमें आसक्त, अतिलोभी, धनहरणकरनेवाला संस रमें विख्यात होवै॥६॥ कुम्भमें सूर्य हो तो भाग्यहीन, निर्ध नीच पुत्ररहित और निश्चय निन्दित भी होवै मीनका हो

मोती मूंगा आदिसे धनी होवै बहुतसी रूपवान् स्त्रियों आदर पावै ॥ ७ ॥ अब चन्द्रमाके तुल्यफल कल्पना है कि राशि और भावेश बलवान् हों तो सूर्यका उक्त राशिस्थ फल पुष्ट होगा दोनोंमेंसे एक बलिष्ठ हो तो मध्यम दोनोंके बलहीनतामें फल पूर्ण नहीं होता ॥ ८ ॥

मेषादिराशौ शशिनि स्थिते यद्द्व्यादिदृष्टे फलमुक्तमार्य्यैः ॥ तदेव मेषादिगृहस्थितेऽर्के चन्द्रादिदृष्टे फलमूहनीयम् ॥ ९ ॥ निःस्वोर्कदृष्टे क्षितिपः कुजेन मेषस्थितेंदौ सति पूर्वमुक्तम् ॥ अर्कादिदृष्टेन्दुफलानि यानि तान्येव सर्वाणि रवावजादौ ॥ १० ॥

जो मेषादिराशिगत चन्द्रमाके सूर्यादि दृष्टिफल श्रेष्ठ कहे हैं वे ही मेषादिगृहस्थित सूर्यमें भी चंद्रादिकोंके दृष्टिफल जानने ॥९ ॥ जैसा पहिले मेषगत चन्द्रमापर सूर्यदृष्टिसे निःस्व भौमदृष्टिसे राजा फल कहे हैं ऐसेही सूर्यादिकोंके जो जो फल कहे हैं वैसे ही समान सूर्यमें मेषादिगतके जानने ॥ १० ॥

अथ सूर्यभावफलानि ।

शूरोर्कलग्नेऽचिरकार्यकर्त्ता दयाविहीनो नयनामयी च ॥ मेषेर्कलग्ने सति नेत्ररोगी धनी निशांधो मृगराजसंस्थे ॥ ११ ॥ नीचोदयस्थे नयनोज्झितः स्यात्कर्कोदयस्थे सति पुष्पिताक्षः ॥ भूपालदंड्यो मुखरोगयुक्तो द्रव्योर्जितोर्के धनभावसंस्थे ॥ १२ ॥ तृतीयभावे सति विक्रमाढ्यः सुखोज्झितोद्विग्नमनाश्चतुर्थे ॥ अपत्यभावे धनपुत्रहीनो विद्वेषिजेता बलवानरिस्थे ॥ १३ ॥

स्त्रीदुर्भगो भवति कामगते पतंगे हीनः श्रिया नृपतिबंधनमार्गतप्तः ॥ स्वल्पात्मजो निधनगे विकलेक्षणश्च सद्बंधुशोकसहितोऽल्पधनोऽल्पजीवी ॥ १४ ॥ धनसुतसुखभागी कामिनीद्वेषकारी द्विजगुरुपदयुक्तो मानमित्रार्थयुक्तः ॥ प्रबलधनतुरंगो राज्यभावेऽथ लाभे बहुनिधिधनभोगी रिष्फगेऽगम्यगामी ॥ १५ ॥

सूर्यके भावफल कहते हैं ।

सूर्य लग्नमें हो तो शूरमा, बहुतकालपर्यंत कामकरनेवाला, निर्दयी, नेत्ररोगी होवै । लग्नगत सूर्य मेषका हो तो नेत्ररोगी, तथा धनवान् होवे । मकरका हो तो रात्र्यंध होवे ॥ ११ ॥ नीचराशि ७ में हो तो अंधा, कर्कमें हो तो आंख फूला होवै, धनभावमें हो तो राजासे दंडपावै मुखरोगयुक्त रहे धनसे संपन्न रहे ॥ १२ ॥ तीसरा हो तो पराक्रमयुक्त सुखरहित, चतुर्थ हो तो मन उद्विग्न रहै पंचम हो तो धन और पुत्रोंसे हीन, छठा हो तो शत्रुजीतनेवाला ॥ १३ ॥ सप्तम हो तो दुर्भगा स्त्रीवाला होवै शोभा यद्वा लक्ष्मीसे हीन राजद्वारके बंधन तथा मार्गसे सन्तप्त रहे अष्टम हो तो सन्तान थोड़ी नेत्रकलारहित , अच्छे बंधुके शोकसे युक्त अल्पधन, अल्पायु होवे ॥ १४ ॥ नवम हो तो धन, पुत्रके सुख भोगे, स्त्रीकाद्वेषकरनेवाला ब्राह्मण, गुरुके चरणयुक्त रहै, मान, मित्र धनयुक्तरहे, दशममें हो तो धन और घोडे बहुत हों ग्यारहवां हो तो बहुतसे (निधि) उत्तम वस्तु, बहुतधनका भोगनेवाला होवे बारहवां हो तो अगम्या स्त्री, माता, गुरुपत्नी भगिनी आदि, यद्वा अपनेसे हीन वर्णोंमें गमन करै ॥ १५ ॥

अथ चंद्रादियोगफलम्।

शत्रुदुर्गचतुरंगभंगकृद्यंत्रकृच्छशियुते दिननाथे ॥ भूसु
तेन बहुपापकारको विद्युते निपुणधीसुखयुक्तः ॥१६॥
अन्यक्रियारतं क्रूरं गुरुणा भृगुणा युतः ॥ रंगायुधधनं
सार्किर्धातुभण्डक्रियायुतम् ॥ १७ ॥

सूर्यके ग्रहयोगफल कहते हैं कि, सूर्य चन्द्रसहित तो शत्रुका किला, सेनाको भंगकरनेवाला होवै, मंगलयु हो तो बहुत पापकरनेवाला, बुधयुक्त हो तो निपुणबु सुखी ॥ १६ ॥ गुरुसे अन्यके कामकरनेवाला, क्रूरस्वभा शुक्रसे रंग आयुधसे धनी, शनियुक्त हो तो बर्तनबनानेवा होवै ॥ १७ ॥

अथ सूर्ययोगाः।

विचन्द्रैर्धनगैर्वेशिर्वोशिर्व्ययगतैर्ग्रहैः ॥ उभयोपगतै
र्भानोरुक्तोभयचरी सदा ॥ १८ ॥ समकायस्थिरसत्त्वं
धनपरिपूर्णो भवेदुभयचर्य्याम् ॥ संततिसुखं च विंदति
नरपतिपूज्यो भवेद्ग्रहैः सबलैः ॥ १९ ॥ मन्दद्युति
र्जीवति विघ्नभार्यो नम्रोर्द्धकायो बलवान्मनुष्यः
अधोनिरीक्षी परिपूर्णकर्मा ज्ञानानुरक्तः खलु वोशि
योगे ॥ २० ॥ स्तब्धोल्पदृक्सौर्ययुतः सुशील
विवर्द्धमानोद्यमसत्त्वयुक्तः ॥ जातो मनुष्यः परिपूर्ण
कायः कुलाभिमानी खलु वेशियोगे ॥ २१ ॥

सूर्ययोग कहते हैं, सूर्यसे दूसरे भावमें, चन्द्रमा को कोई ग्रह हो तो वेशि, बारहवां हो तो वोशि और

हों तो उभयचरी योग होते हैं ॥ १८ ॥ उभयचरीका फल कि समशरीर स्थिर प्राणादि, धनसे परिपूर्ण होता है, संतिका सुख भी मिलता है यदि योगकारक ग्रह बलवान् हो तो राजपूज्य होता है ॥ १९ ॥ वोशियोगवाला मन्दकर्मी तथा स्त्रीपक्षसे दुःखी रहकर उमर व्यतीत करे कमरसे ऊपरका भाग नम्र रहे बलवान्, पृथ्वीके ओर दृष्टि रखनेवाला यद्वा लज्जायुक्त सर्वकामोंसे परिपूर्ण ज्ञानमें अनुरागी होता है ॥ २० ॥ वेशियोगवाला घमंडखोर, अल्पदृष्टि, शौर्यवा सुशील, उद्यम और बल बढतेरहें परिपूर्ण शरीर और अप कुलमें अभिमानी होवै ॥ २१ ॥

बांधवजनाभिभूतं प्रेष्यं सविता स्वनीचगः कुरुते ॥
गर्द्दभरोगाः क्रिमयो नयनविनाशः पराभवः पुंसाम् ॥
॥ २२ ॥ शत्रुगेहे मृत्युभगते भानौ च नरो भवेत् ॥
मृतदारो रोगतप्तो नीचे नीचांशके तथा ॥ २३ ॥

अपनी नीचराशिका सूर्य मनुष्योंको बांधवोंसे तिरस्कृत पराया दूत, गर्दभ रोग क्रिमिरोग, नेत्रनाश और भी देता ॥ २२ ॥ शत्रुराशिका अष्टमस्थानमें हो तो स्त्री मरजावे रोग सन्तप्त रहे ऐसा ही फल नीचराशि नीचनवांशस्थ भी है ॥ २३ ॥

कुजार्किसूरिज्ञभृगूद्भवानां त्रिंशांशके जन्मनि खेटनाथे ।
शूरोऽसहः सद्गुणसंयुतश्च सुखी सुदेहो मनुजश्च जातः२४

सूर्यके त्रिंशांशफल कहते हैं । भौम त्रिंशांशमें हो शूरमा, शनिकेमें न सहारनेवाला, गुरुकेमें अच्छेगुणोंसे यु बुधकेमें सुखी शुक्रकेमें सुन्दरदेहवाला मनुष्य होता है ॥२४

अथान्तर्दशा ।

रिपुप्रतापशमनं निरुग्गात्रधनार्जितम् ॥ करोति नियतं चंद्रः पूर्णः सूर्यदशां गतः ॥ २५ ॥ मणिविद्रुमसंयुक्तं भौमः संग्रामजित्वरम् ॥ प्रचण्डं साहसपरं करोत्यर्क-दशां गतः ॥ २६ ॥ दद्रूविचर्चिकापामाकुष्ठाद्यैर्गर्हितं वपुः ॥ करोति चंद्रजो वृद्धिं शत्रो रविदशां गतः ॥२७॥

अंतर्दशाफल कहते हैं कि, सूर्यकी दशामें पूर्ण चन्द्रमा शत्रुके प्रतापका शमन, निरोगता धनप्राप्ति निश्चय करता है। मंगल, मणि, मूंगासे युक्त, संग्राममें विजयता, प्रचंडता, साहस तत्परता करता है ॥२६॥ बुध(दद्रू) दादरोग, वमन विरेचन खुजली, कुष्ठादिसे शरीर निंद्य और शत्रुकी वृद्धि भी सूर्य दशाके अंतर्दशामें करता है ॥ २७ ॥

अलक्ष्म्या शत्रुभिः पापैर्व्यसनैरपि मुच्यते ॥ भानोरंत-र्दशां प्राप्ते जीवे धर्मपरो भवेत् ॥२८॥ शिरःपीडा गंड-रोगश्चित्रकुष्ठयुतो भवेत्॥सशूलोर्कदशांतःस्थे देशाद्भ्रष्टो भृगौ भवेत् ॥२९॥ विपक्षहतसामर्थ्यं म्लेच्छराज्यपरा-भवम् ॥ भृत्यादिनाशं कुरुते शनिः सूर्यदशां गतः॥३०

सूर्यदशामें गुरुका अंतर हो तो दारिद्र, शत्रु, पाप और व्यसनोंसे छूटजावै धर्ममें तत्पर होवै ॥ २८ ॥ शुक्रांतरमें शिरमें पीडा गंडरोग चित्रकुष्ठसे संयुक्त होवै शूलरोगसहित अपने देशसे निकल जावै ॥ २९ ॥ शनिकी अंतर्दशामें शत्रुसे अपनी सामर्थ्य मारीजावै म्लेच्छराजसे अपमान होवै, नौकर चाकरका नाश होवै ॥ ३० ॥

करितुरंगमपत्तिसमाकुलं कनकदंडसितातपवारणम् ॥ ग्रहपतिः कुरुते निजतुंगगः पदगतो वसुधावलये पदम् ॥ ३१ ॥ अरिपदेऽरिगृहे ग्रहनायके क्षतजरुग्गलरोगसमाकुलः ॥ निधननीचविरोधिगृहं गते चरणहस्तगता खलु गर्दभी ॥ ३२ ॥ रिपुगृहेऽर्कदशानयनामयः शिरसि रुग्ज्वरकोष्ठगता कृमिः ॥ निधनगस्य दशा पुरुषं रवेर्भ्रमयाति स्वपदात्परितो भृशम् ॥ ३३ ॥ इति जातकशिरोमणौ रविदशाविचाराऽध्यायः ॥ ११

सूर्य उच्चका हो तो अपनी दशामें हाथी, घोडे प्याद ओंसे परिपूर्ण करता है, सुवर्णके दंडवाला श्वेतछत्र देता यदि दशमगत भी हो तो संसारमें उत्तम पद देता है ॥ ३१ सूर्य शत्रुस्थ राशि अंशादिमें हो तो चोट लगनेसे उत्पन्न रोग तथा कंठरोगसे व्याकुल रहे, यदि अष्टमस्थान, नीचरा शत्रुराशिमें हो तो हाथ पैरमें निश्चय, गदही रोग होता जो फोडेके रूपमें बहुत दिनपर्यन्त पकता रहता है किसे हड्डी भी निकलती है ॥ ३२ ॥ शत्रुराशिमें हो तो उस दशामें नेत्ररोग, शिररोग, ज्वर, पेटमें कृमिरोग होता यदि सूर्य अष्टम हो तो उसकी दशामें अपने स्थानसे च ओर अत्यर्थ भ्रमण करता है ॥ ३३ ॥ इति श्रीजातकशि मणौ माहीधरी भाषाटीकायांमेलदशाऽध्यायः ॥ ११ ॥

अथ भौमदशा।

भवति कुजदशायां भूपभूम्यादिकार्जैर्द्रविणमरिविमर्दैः क्तियुक्ते महीजे सुतसहजकुलस्त्रीद्वेषिता सद्गुरूणां भव

विमुखभावो मध्यमे भूमिपुत्रे॥ १॥संग्रामभंगो ज्वरपित्त-
रोगा रोगाः परस्त्रीजनिता महीजे ॥ बलोज्झिते शस्त्र-
निपातभीतिर्व्रणाकुलः पापरतैश्च सख्यम् ॥ २ ॥

भौमदशाफल कहते हैं । मंगल बलवान् हो तो उसकी
दशामें राजा, भूमि, भेड, बकरीसे धनमिले, शत्रुपीडित
होवै मध्यबली हो तो पुत्र, भाई, स्वकुल, स्त्रीसे वैर हो
संत् गुरुजनोंसे भी विमुखता हो जावै ॥ १ ॥ निर्बल हो तो
संग्राममें हारमिले ज्वर एवं पित्तसे रोग पैदा होवै परस्त्री
संसर्गसे रोग होवै शस्त्रगिरनेकी भय होवै फोडाओंसे क्लेश
पावै, पापमें तत्पर मनुष्योंके साथ मित्रता होवै ॥ २ ॥

अथ भौमराशिफलम् ।

सेनापतिः क्षततनुः सधनो वणिक्स्याद्भौमे निजाल-
यगते नृपसत्कृतश्च ॥ स्तेनार्जितद्रविणपूर्णगृहोऽजसं-
स्थे कीटे वधाहितमतिर्गुरुतल्पगामी ॥ ३ ॥ बौधे
गृहेऽतिकृपणस्तनयान्वितश्च विद्वानभीर्मदनयुद्धविशा
रदश्च ॥ नित्यं जलप्लवधनो विकलः खलश्च प्राज्ञोऽर्थ
वान्भवति भूतनये वरिष्ठः ॥ ४ ॥ वंचकोऽतिपुरुष
सितगेहे कामिनीजितबलः परदारः ॥ सिंहगे वनचरो
धनहीनः स्वल्पदारतनयो भयहीनः ॥ ५ ॥ जैवे
नरेन्द्रसचिवोऽल्पसुतः प्रसिद्धो भीवर्जितो बहुतुरंगरिपु
र्जितश्च ॥ दुःखान्वितोऽनृतरतो विधनोऽतितीक्ष्णः कुंभे
मृगे नरपतिर्धनपुत्रवृद्धः ॥ ६ ॥

मंगलके राशिफल हैं कि स्वराशिगत होवै तो, सेनापति
कटाशरीर, धनवान्, व्यापारी होवै, राजासे सत्कारप
मेषका हो तो चोरीके कमाये धनसे घर भरारहे, कर्कका
तो जीवघातमें बुद्धि अच्छी रहे और गुरुस्त्री गामी होवै॥३
बुधके राशि ३ । ६ का हो तो, कृपण, पुत्रवान् भी विद्वा
निर्भय, कामदेवके युद्धक्रीडामें निपुण भी होवै और सर्व
जलसंबन्धी कर्म नाव जहाज आदिसे धन कमावै, विकल
खल भी होवै, प्राज्ञ, धनवान् और श्रेष्ठ होवै ॥ ४ ॥ शुक्र
राशि २ । ७ का हो तो ठगनेवाला विशेष होवै स्त्रीसे ब
उसका जीतारहे परस्त्रीगमन करे सिंहका हो तो धनही
स्त्री पुत्र थोडे और निर्भय होवै ॥५॥ गुरुराशि ९ । १२ में
राजाका मंत्री, अल्पपुत्र, प्रसिद्ध, भयरहित, बहुतसे शत्रु त
घोडाओंसे युक्त भी रहै कुंभमें हो तो दुःखयुक्त, झूठबोलने
तत्पर, निर्धन, अतितीक्ष्णस्वभाव होवै मकरका हो तो मनु
राजा होवै, धन और पुत्र बहुत होवैं ॥ ६ ॥

अथ भौमे रव्यादियोगफलानि ।

भौमे सूर्यसमागमेऽघसहितश्चन्द्रान्विते कूटवित् स्त्रीप-
ण्यासवकुंभपण्यसहितो मातुश्च रिष्टप्रदः ॥ द्रव्यस्य
प्रतिरूपमूललवणस्नेहादिपण्यैर्वणिक् ख्यातः सौम्य-
युते सुरेज्यसहिते भूपः पुरीपालकः ॥ ७ ॥ परस्त्रीरतो
गोपतिर्मल्लरूपः कुजे सासुरेज्ये भवेद्द्यूतकारी ।
सशौरेऽतिदुःखी कुजे सत्यसंधो दशायामरिष्टं ददा-
त्येव भौमः ॥ ८ ॥

ग्रहयोगफल कहते हैं कि, मंगल सूर्ययुक्त हो तो प
युक्त चन्द्रयुक्तसे झूंठ जाने तथा स्त्रीव्यापार मद्यकुंभके व्या

रयुक्त और माताको अरिष्टदेनेवाला होवै बुधयोगसे द्रव्यका यथायोग्य मूल्य जाने, लवण तेलका व्यापारी विख्यात होवे गुरुयुत हो तो नगरका पालन करनेवाला राजा होवे ॥ ७ ॥ शुक्रयुत हो तो परस्त्रीमें तत्पर, गोधनवाला, मल्लसमान और जुआ खेलनेवाला होवै शनियुक्त हो तो अतिदुःखी सत्यबोल- नेवाला होवे तथा दशामें मंगल अरिष्ट भी देता है ॥ ८ ॥

अथ भावफलानि।

तनौ भौमे शस्त्राहततनुरथो द्रव्यभवने कदन्नाशी रात्रौ भवति सहजे विक्रमयुतः॥चतुर्थे सौख्योनो भवति सुतभे- ऽपत्यरहितो रिपौ जेतारीणां भवति समरे शंसितबलः ॥ ९ ॥ स्त्रीदुर्भगो भवति कामगते महीजे हीनश्रिया नृपतिबंधनमार्गतप्तः ॥ स्वल्पात्मजो निधनगे विकले- क्षणश्च सद्बन्धुशोकसहितेऽल्पधनोऽल्पजीवी ॥ १० ॥ धर्मस्थे भूमिजे पापो राज्यस्थे तुरगाधिपः ॥ लाभे धनी व्ययगते स्वकुलस्त्रीरतः सदा ॥ ११ ॥

मंगलके भावफल कहते हैं। मंगल लग्नमें होवे तो शस्त्रसे कटा शरीर होवै दूसरा हो तो रात्रिमें (कदन्न) कूदा कुलत्थी आदि खानेवाला होवै, तीसरा हो तो पराक्रमी चौथेमें सुख रहित, पंचममें पुत्ररहित, छठेमें शत्रुजीतनेवाला, तथा संग्रा- ममें प्रशंसनीय बलवाला होवे ॥ ९ ॥ सप्तम हो तो स्त्री दर्भ- गा होवै, शोभाहीन, राजाके बन्धनसे और मार्गसे सन्तप्त रहे अष्टम हो तो सन्तान अल्प, विकल नेत्र होवैं। तथा अच्छे बन्धुका शोक मिले धन अल्प आयु अल्प होवै ॥ १० ॥ नवम हो तो पापी, दशम हो तो घोडाओंका अधिकारी लाभ में धनवान् व्ययमें अपने कुलकी स्त्रीका गमन करे ॥ ११ ॥

अथ भौमे ग्रहदृष्टिफलानि ।

करोति भौमः स्वगृहेऽर्कदृष्टश्चौराधिपं चन्द्रसमीक्षितश्च । कृशं सुहृत्प्रेष्यकरं बुधेन दृष्टो जनाढ्यो पितृवत्सलं च ॥ १२ ॥ जीवेन दृष्टो नृपतिं करोति भृग्वीक्षित स्त्रीवधबन्धनार्हम् ॥ शौरेक्षितश्चौरविघातनं च परांगनेशं स्वजनेन हीनम् ॥ १३ ॥

मंगल अपने घरमें सूर्यसे दृष्ट हो तो चौरोंका अधिप करता है, चन्द्रदृष्टिसे भी यही फल है बुधदृष्टिसे कृशअ मित्रोंका दूत कामकरनेवाला, मनुष्योंसे पूर्ण और पिता प्यारा भी करता है ॥१२॥ बृहस्पतिकी दृष्टिसे राजा, शु स्त्रीके मार बांधनेके योग्य, शनिदृष्टिसे चौरपीडित, परस्त्री स्वामी तथा अपने मनुष्योंसे हीन करता है ॥ १३ ॥

वने गिरौ वासरतेऽर्कदृष्टे चन्द्रेक्षिते स्त्रीबहुलः सितर्क्षे बुधेन दृष्टे कलहप्रियश्च शास्त्रार्थविन्मन्दधनप्रजः ॥ १४ ॥ वादित्रसंगीतबुधः सुबन्धुसौभाग्ययुक्तो गुरु दृष्टमूर्तौ ॥ भूपालमंत्रीबलनायकश्च प्रसिद्धनामा भृ वीक्षिते च ॥१५॥ पुराधिपः स्थानपतिश्च भौमे शौ गृहे शौरिसमीक्षितश्च ॥ चांद्रे गृहे पित्तरुगर्दितश्च सू क्षिते चंद्रसमीक्षिते च ॥ १६ ॥ विरूपदेहो बुधवीक्षि च क्षुद्रोघयुक्तो मलिनो विलज्जः ॥ त्यागान्वितो रो विवर्जितश्च जीवेन दृष्टे नृपमंत्रिमुख्यः ॥ १७ ॥ सक्तो नष्टधनो विपन्नः शुक्रेक्षिते सौरिसमीक्षिते च

व्याचारमूर्त्तिः क्षितिपालनेता चन्द्रालयस्थे धरणी-
सुते च ॥ १८ ॥

शुक्रराशिगत मंगलपर सूर्यदृष्टि हो तो वन पर्वतोंके निवा
समें तत्पर रहे चन्द्रदृष्टिसे स्त्रीबहुत, बुधसे कलह प्रिय शास्त्रार्थ
जाननेवाला और अल्पधन अल्पपुत्र भी होवैं ॥ १४ ॥ गुरु
दृष्टिसे गायनमें बाजे बजानेमें पण्डित अच्छे बन्धुवाला सौभा
ग्ययुक्त होवै शुक्रदृष्टिसे राजमंत्री, सेनापति, प्रसिद्धनाम
वाला होवै॥१५॥शनिदृष्टिसे नगरका स्वामी स्थानका भी होवै
बुधके राशियोंमें मंगल सूर्य दृष्ट हो तो पित्तरोगसे पीडित
रहे चन्द्रदृष्टिसे भी यही फल है ॥ १६ ॥ बुधदृष्टिसे देह कुरूप
क्षुद्रकर्मा, पापयुक्त, मलिन तथा निर्लज्ज होवै । गुरुदृष्टिसे
उदार, रोगरहित, और राजमंत्रियोंमें श्रेष्ठ होवै ॥ १७ ॥
शुक्रदृष्टिसे स्त्रीसंगति विशेषकरनेवाला, धनहीन, परायेशर
णागत होवै ॥ शनिदृष्टिसे आचाररहित शरीर, राजाका
भी नेता होवै, चन्द्रराशि ४ में मंगल हो तो भी यही फल
बुधराशिके तुल्य जानने ॥ १८ ॥

सिंहे कुजे गोकुलशैलचारी सूर्येक्षितः कोपयुतः प्रचण्डः॥
कान्त्यायुतो बुद्धियुगिन्दुदृष्टे बुधेक्षिते काव्यकलालि-
पिज्ञः ॥ १९ ॥ सान्निध्यवर्ती नृपतेः सुबुद्धिर्जीवेक्षिते
भूपचमूपनाथः ॥ स्त्रीभाग्ययुक्स्त्रीसुभगोऽतिहृष्टः शुक्रे
क्षिते यौवनदेहयुक्तः ॥ २० ॥ वृद्धाकृतिः सौरसमीक्षि-
तारे मृगारिगेहे परवेश्मवासी ॥ जैवे गृहेलोकनमस्कृ-
तश्च भौमेऽर्कदृष्टे वनदुर्गवासी ॥२१॥ चन्द्रेक्षिते भूपः
विरुद्धकारी बुधेक्षिते नैपुणशिल्पकारी ॥ जीवेक्षिते

वित्तकलत्रयुक्तो व्यायामयुक्तः सुखसंयुतश्च ॥ २२ ॥
शुक्रेक्षितेलंकरणाऽनुरक्तो दयाविहीनो नियंत सुता-
याम्॥शनीक्षिते पापमतिः कुदेहः जैवे स्थिते भूतनये
मनुष्यः ॥ २३ ॥

मंगल सिंहराशिमें सूर्यसे दृष्ट हो तो, गोष्ठ, पर्वत स्थान
में फिरनेवाला, क्रोधी, प्रचण्ड होवै चन्द्रदृष्टिसे कांतिमा
बुधसे काव्य, कला, लिखना इन कामोंको जाने ॥ १९
गुरुसे राजाके समीप रहनेवाला, सुबुद्धि, राजाका सेनापा
होवै शुक्रस स्त्री, तथा भाग्यसे युक्त, अच्छे ऐश्वर्य्यवाला, त
प्रसन्न रहे देह सर्वदा जवानीमें रहे ॥ २० ॥ शनिदृष्टिसे जव
न भी बूढासा दीखे, पराये घरमें वास करे बृहस्पति
राशि का मंगल सूर्यदृष्ट हो तो लोकोंके नमस्कारक
योग्य और वन, किलामें रहनेवाला होवै ॥ २१ ॥ चन्द्र
ष्टिमें राजासे विरुद्ध काम करनेवाला, बुधसे निप
तथा (शिल्प) कारीगरी जाने गुरुदृष्टिसे धन, स्त्री, कसर
और सुख युक्त भी होवै ॥ २२ ॥ शुक्रदृष्टिसे भूषणोंमें प्रे
रक्खे, कन्यामें निश्चय दयाहीन रहे शनिदृष्टिसे पापबु
कुरूपदेह मनुष्यका होवै ॥ २३ ॥

यमालये भूतनयेऽर्कदृष्टे कन्याप्रजो भोगयुतोऽतिशूरः।
चंद्रेक्षितश्चंचलमित्रमाढ्यं करोति भौमः शनिमंदिरस्थ
॥ २४ ॥ बुधेक्षिते कापटिकं करोति बुद्ध्यालय
स्त्रीकृतदोषदुष्टम् ॥ जीवेक्षितो राजगुणान्वितं च
दीर्घायुषं
शनिभे सुभोगी शुक्रेक्षिते भूतनये कृतज्ञः

शनीक्षिते कुंभगते महीजे क्रूरः कुवेषी मृगसंस्थिते च ॥ २६ ॥ धराधिनाथः सधनः प्रतापो महीसुते पुत्रक-लत्रहीनः ॥ चन्द्रार्कयोरर्कमहीजयोश्च चन्द्रारयोर्योगसमुद्भवं च ॥ २७ ॥ फलत्रयं तन्नियतं नराणामेवं चतुः पंचविकल्पनाभिः ॥ २८ ॥

शनिराशिके मंगलपर सूर्यदृष्टि हो तो कन्या ही संतान होवै, भोगवान् अतिशूरमा भी होवै चन्द्रदृष्टिसे चञ्चलमित्रवाला, तथा धनवान् भी होवै ॥ २४ ॥ बुधदृष्टिसे कपटी, बुद्धिका घर, और स्त्रीके कियेदोषसे दूषित करता है गुरुदृष्टिसे राजावाले गुणोंसे युक्त तथा दीर्घायु करता है ॥ २५ ॥ शुक्रदृष्टिसे स्त्रीका पालन करनेमें तत्पर अच्छे भोग भोगनेवाला और कदरदान होवे । कुंभराशिगत मंगलपर शनिदृष्टि हो तो क्रूरस्वभाव, निकम्मेवेषवाला होवै॥२६॥मकरका होकर शनिदृष्ट हो तो राजा, धनवान् प्रतापी होवै परंतु स्त्रीपुत्रसे हीन होवै चंद्रमा सूर्य, सूर्य मंगल, चन्द्रमा मंगल इनतीनोंके योगजन्य फल मनुष्योंके नियत होते हैं इनके विकल्प सू० चं० १ सू० मं० २ चं सू० ३ चं० मं० ४ मं० चं० ५ मं० सू० ६ एककी राशिमें दूसरेकी दृष्टि इसप्रकार विकल्प होते हैं ॥ २७ ॥ २८ ॥

भूवारितेजो मरुदंबराणां विदीन्दुशुक्रौ रविभूमिपुत्रौ । शौरिर्गुरुश्च प्रभवाः क्रमेण स्वस्यां दशायां वितरंति शोभाम् ॥ २९ ॥ अथ तैजसी छाया ॥ अस्वच्छतानिर्मलताविवेकपरो मणीनां परवाससां च ॥ श्रीरश्मिजे रविभौमयोस्तु दशां वदंत्यत्र च दृक्स्थलेन ॥ ३० ॥

सुवर्णरक्तांबुरुहाग्निवर्णाऽधृष्याप्रतापैः सह विक्रमैश्च ॥ जयाय जायाक्षितिभूद्दशायां धनं जयश्रीर्ललना विलासः ॥ ३१ ॥

महाभूतछायासे दशाका ज्ञान कहते हैं कि, पृथ्वीतत्त्वक स्वामी बुध जलतत्त्वका चंद्रमा शुक्र अग्नितत्त्वका सूर्य मंग वायुतत्त्वका शनि आकाशतत्त्वका बृहस्पति है अपनी दश में अपनी उक्त शोभा देते हैं अर्थात् जिसकी दशाअंतर्दश ज्ञात नहीं है उसकी महाभूत कृतछायासे दशा जानी जात है ॥ २९ ॥ जैसे अग्निछायाके लक्षण हैं कि, पृथ्वीकी छा से अपवित्रता जलसे निर्मलता अग्निसे विवेकिता वायु मणि तथा उत्तमवस्त्रोंका विवेक आकाशसे शोभा य लक्ष्मी, होती है यहां ये लक्षण अग्नितत्त्वके सूर्य मंगल दशाज्ञापक कहे हैं यह तत्त्व नेत्र स्थलानुमेय किसीके म से कहा है ॥ ३० ॥ मंगलकी दशामें सुवर्ण, रक्तकमल, अ वर्ण विक्रम सहित प्रतापोंसे अधृष्यता और जय, तथा स सुख विलासादिके वास्ते होती है ॥ ३१ ॥

राजसन्मानसंयुक्तं संग्रामजयपूजितम् ॥ नानाधना गमानंदं रवौ कुजदशागते ॥ ३२ ॥ महानिधानसंयुक्तं बहुमित्रसमागमम् ॥ हिमांशुः कुरुते नित्यं सुखं भौम दशांगतः ॥ ३३ ॥ शत्रुतो भयमाप्नोति चोरेण गृहमो षणम् ॥ प्राप्नोति परदासत्वं बुधे भौमदशांगते ॥ ३४ ॥ दानधर्मेण तपसा प्रसक्तः शुभकर्मणा ॥ गुरौ भौमदशा प्राप्ते विरुद्धाचरणं नृपे ॥ ३५ ॥ व्याधिप्रवासव्यसन धनापहरणादिभिः ॥ दुःखार्तिः संगरभयं शुक्रे कुज

दशांगते ॥३६॥ व्यसनाद्व्यसनं याति शोकाच्छोकसमुद्भवः ॥ यत्नतोप्यशुभं चास्ति शनौ कुजदशां गते॥३७॥
इति श्रीजातकशिरोमणौ कुजदशाध्यायो द्वादशः॥१२॥

अंतर्दशा फल कहते हैं कि मंगलकी दशामें सूर्यका अंत रहो तो राजसन्मानसे संयुक्त होता है, संग्रामके विजयता पूजा मिलती है, सुख भी होता है ॥ ३२ ॥ भौममें चंद्रम बडा (हंडेडा) न्यासवस्तु मिलती है बहुत मित्रोंका समागम और नित्यं सुख करता है ॥३३॥ मंगलमेंबुधहो तो शत्रु भय होता है चोर घर लूटते हैं पराया दासत्व मिलता ॥३४॥ मंगलमें बृहस्पति हो तो दान, धर्म, तपस्या, शुभक करके शर्म होवे परंतु राजा विरुद्धाचरण होवे॥३५॥ मंगल शुक्रांतर रोग, परदेशवास, व्यसन, धनहानि आदिसे दुःख पीडा होवे संग्रामका भय होवे ॥ ३६ ॥ मंगलमें शनिदश हो तो एक व्यसनसे दूसरा व्यसन प्राप्त होवै एक शोक दूसरा शोक होवे यत्न करनेसे भी अशुभ होवे ॥ ३७ ॥
इति श्रीजातकशिरोमणौ माहीधरीभाषाटीकायां भौमदश विचाराध्यायो द्वादशः ॥ १२ ॥

अथ बुधदशाविचारः।

द्विजगुरुकविदैत्यैर्वित्तपूर्णोघनाशो लिखनपठनवेत्ता वित्प्रशंसान्वितश्च ॥ कनकधरणिसौख्यो विद्दशायां मणीशो भवति हसनवाक्यो रौहिणेये बलिष्ठे ॥ १ ॥
मध्यमे शशिसुते समाश्रितः कर्कशो हृदयशोकसंयुतः॥ चन्द्रजेऽबलिनि भीविवर्जिते रात्रिदोषसहितः खलोपमः ॥ २ ॥

बुधदशाविचार है कि, बुध बलवान् होवै तो ब्राह्म
गुरु, कवि और दूततासे धनपूर्ण होवै, पापका नाशी हो
लिखना पढना जाने, विद्वान् होवै प्रशंसासे युक्त भी ह
सुवर्ण भूमिका सुख होवै मणियोंका स्वामी तथा हँ
वाणी बोले ये फल बलिष्ठबुधकी दशामें होते हैं ॥ १
बुधहीन मध्यबली होतो पराये आश्रयमें रहे कडा स्वभा
शोकसे युक्त, निर्भय, रात्र्यंध, और खलोंके तुल्य होवै ॥

दशाज्ञानाभावे वदति मिहिरो ज्ञानविषयं दशाभौमा
दीनां करणपथगैरात्मविषयम् ॥ यदा मर्त्यो गंधा
शरणगतश्चन्द्रजदशा तदा जाता छाया भवति पृथि
वीजा सुपुरुषे ॥ ३ ॥ शिरोरुहत्वङ्नखलोमदंत
स्फिग्वायुगंधाधरणीसमुत्था ॥ छायार्थलाभाभ्युदया
न्करोति धर्मस्य वृद्धिं शुभविद्दशायाम् ॥ ४ ॥

जहां दशा ज्ञात नहीं है तहां वराहमिहिराचार्य्य (ज्ञा
विषय) पंचतत्त्वलक्षणोंसे दशाज्ञान आत्माविषय संबं
करणमार्गसे कहते हैं कि, जब मनुष्य गंधगुणके अनुस
होता है नासिकेंद्रिय प्रबल होती है तो पृथ्वीतत्वकी छा
से यह गंधगुण होता है इस तत्वका स्वामी बुधहै उस सम
बुधकी दशा सत्पुरुषको होतीहै ॥ ३ ॥ केश, त्वचा, नख
दंत, मुष्क, वायु, पृथ्वीतत्वके प्रबल होनेमें गधवान् होते
ऐसी बुधदशामें पृथ्वीकी इसप्रकारकी छाया धनलाभ, उद
उन्नति और धर्मकी वृद्धि करती है ॥ ४ ॥

अथ मेषादिराशिफलानि ।

धरणिभवनसंस्थे चंद्रजे चौरनिस्वः कुयुवतिरतपा
पज्ञानपानानुरक्तः ॥ लिखनपठनशास्त्रज्ञानहीनो विस

त्यो भवति जननकाले कूटवेत्ता मनुष्यः ॥५॥ आचा
र्यो बहुदारवान् बहुसुतो द्रव्यार्जनेष्टो धनी शौक्रे दा
गुरुद्विजार्चनपरो दाता बुधे मंदिरे ॥ वाचालश्चतुर
कलासु निपुणः सौख्यान्वितः शास्त्रविद्वंद्वस्थे शशि
जलार्जितधनः कर्के स्वकीये रिपुः ॥ ६ ॥

मेषादिराशिफल है कि, बुध मंगलके राशिमें हो तो चं
निर्द्धन, कुस्त्रीमें आसक्त, पापज्ञान, मद्यादिपानमें प्रेमरख
वाला, लिखना पढना शास्त्रज्ञानसे रहित झूठा और (
वेत्ता) जाली भी मनुष्य होवे ॥ ५ ॥ शुक्रराशिका हो
(आचार्य) गुरु वा ग्रन्थकर्ता, बहुत स्त्री, बहुत पुत्रोंवाला
कमानेमें श्रेष्ठ, धनवान् होवै । बुधकी राशिमें, दान तथा
ब्राह्मणके पूजनमें तत्पर होवै इसमेंभी मिथुनका हो तो वाच
चतुर कलाओंमें निपुण, सुखयुक्त, शास्त्रजाननेवाला हो
कर्कका होवे तो जलकर्मसे धनकमावे और अपने मनुष्य
शत्रु होवै ॥ ६ ॥

सिंहे बुधे विधनपुत्रसुखप्रवासी स्त्रीलोलुपश्च विबुध
: स्वजनाभिभूतः ॥ त्यागी सुखी विगतभीर्गुणधीः क्षमा
वान्कन्यास्थिते शशिसुते बहुयुक्तिवेत्ता ॥ ७॥ पावके
द्विजगृहे ऋणवृद्धस्सामजे निधिपतिर्नृपमान्यः ॥ राज्य
सत्कृतबुधः स्वजनार्तश्चेज्झषे परिजनैरभिभूतः ॥ ८ ।

बुध सिंहका हो तो धन, पुत्र, सुखसे हीन, परदेशवा
स्त्रीमें लोलुप और विद्वान् अपने मनुष्योंसे अनादरित हो
कन्याका होवे तो उदार, सुखी, निर्भय, गुणवान् बुद्धिमा
क्षमावाला और बहुतप्रकारकी युक्ति जाननेवाला होवे ॥

बृहस्पतिके राशिमें होवे तो पवित्रकरनेवाला, ऋणसे ब
हुआ अर्थात कर्जादेनेसे धनवान्, उत्तमवस्तुका स्वा
राजमान्य, राजासे सत्कारवाला, अपने मनुष्योंमें
होवैं ये फल धनराशिके हैं। मीनमें हो तो अन्यजन
अनादरित होवै ॥ ८ ॥

अथ भावफलानि।

लग्ने बुधो द्रव्यगते धनी स्यात्खलस्तृतीये गुणवाँश्च
तुर्थे ॥ मंत्रीसुते षष्ठगते विशत्रुर्धर्मज्ञता द्यूतगते बु
स्यात् ॥ ९ ॥ प्रसिद्धो निधने सौम्ये स्फीतकीर्तिर्हि
कोणगे ॥ दशमादौ बुधे याते विज्ञेयं फलकर्मवत् ॥ १०

बुधके भावफल हैं कि, बुध लग्नमें हो तो पंडित होवे, दूस
हो तो धनवान्, तीसरेमें खल, चौथेमें गुणवान्, पंचममें म
छठेमें शत्रुरहित, सप्तममें हो तो धर्मज्ञतावाला होवै ॥ ९
अष्टम हो तो विख्यात, नवम हो तो निर्मल कीर्तिवा
होवै और १० । ११ । १२ भावोंमें बुधका भावफल सू
तुल्य जानना ॥ १० ॥

ग्रहयोगफलानि ।

सौम्ये सूर्ययुते क्रियासु निपुणो धीकीर्तिसौख्यान्वित
सेन्दौ कीर्तियुतः क्रियासु निपुणः सौभाग्ययुक्तो गुणी
द्रव्यस्य प्रतिरूपकर्मकुशलस्तैलादिपण्यैर्वणिक् सौम्
मंगलसंयुते गुरुयुते गीतप्रियो नृत्यवित् ॥ ११ ॥
वाचालो गुणपः सितेन सहितः सौरेण मायापटुर्द्वि
न्याद्यैः सहिते बुधे च बहवो युक्ता ग्रहाणां गुणाः ॥ १२ ॥

बुधके ग्रहयोगफल हैं कि, बुध सूर्ययुत हो तो सबकाम
निपुण, बुद्धि, कीर्ति और सौख्यसे युक्त रहे चंद्रसंयुक्त

तो कीर्तियुत, कार्यनिपुण, सौभाग्यवान् और गुणवान् हो मंगलयुत हो तो द्रव्यके ठीक जांचकरनेमें चतुर तेल आदि दुकानका व्यापारी होवै गुरुयुक्त होवै तो गीतको प्यारा नाचना जाने ॥ ११ ॥ शुक्रसहित होवै तो, बडा बाप होवै शनिसंयुत होवै, तो मायामें चतुर होवै, यदि २।३ अ ग्रहोंसे युक्त होवै तो उतने ही बहुत गुण भी होते हैं ॥ १

अथांतर्दशा।

रवौ बुधदशां प्राप्ते गोधनान्नसुतादिभिः ॥ लक्ष्मीर च्छूतमाप्नोति स्वर्णाश्वमणिविद्रुमैः ॥ १३ ॥ क्षयरोग मंगभंगं कुष्ठं पामां विचर्चिकाम् ॥ राजकोपाद्धनना दत्ते चंद्रो बुधे स्थितः ॥ १४ ॥

सूर्यांतर बुधदशामें हो तो गौ, धन, अन्न, पुत्रा तथा सुवर्ण, घोडे, मणि मूंगाकरके लक्ष्मी बढै ॥ १ चंद्रमामें क्षयरोग, अंगहीनता, कुष्ठ, खुजली, अपची अ राजकोपसे धननाश होता है ॥ १४ ॥

नानाक्लेशं शिरःशूलं ददाति धरणीसुतः ॥ सोमपुत्र दशायां तु ध्रुवमंतर्दशां गतः ॥१५॥ रिपुपापगदोन्मुक्त नृपमंत्री द्विजप्रियः ॥ शशिजस्य दशायां तु गुरावंत गते सति ॥ १६ ॥ अतिथिगुरुषु भक्तो गंधपुष्पानुरक्त वरशयनमणीनां मण्डलेशानुरक्तः ॥ विचरति भृगुपु सोमसूनोर्दशायां यदि भवति न नीचो नार्कगो ना संगः ॥ १७ ॥

बुधदशामें मंगल अनेकप्रकारके क्लेश, शिरशूल दे यह निश्चय है ॥ १५ ॥ गुरुकी अंतर्दशामें, शत्रु, पाप,

इनसे छूटजाता है। राजमंत्री, तथा ब्राह्मणप्रिय होता है॥१
बुधमें बृहस्पतिकी अंतर्दशा होनेमें अतिथियों तथा गुरुज
भक्ति रक्खे सुगंधि पुष्पोंमें प्रेम, श्रेष्ठ विस्तरके मणि अ
उत्तम स्त्री और छोटे राजासे प्रेम रहे ये फल तब हैं।
जब वह शुक्र नीच, अस्तंगत और शत्रुयुत न होवै॥ १७

लुप्तधर्मविषयार्थसुखार्त्तखंडकायसुखसंयुतो नरः
भानुजो यदि करोति दशायां स्वां दशां शशिसुतस्
हि नूनम् ॥ १८ ॥ त्रिंशांशके स्वे शशिजः करोति
मेधाकलाकाव्यविवादयुक्तम् ॥ शास्त्रार्थयुक्तं कुलमान
वन्तं शिल्पालयं साहससंयुतं च ॥१९॥ इति श्रीजा
तकशिरोमणौ बुधदशाविचाराध्यायस्त्रयोदशः ॥ १३

जब शनि बुधकी दशामें अंतर्दशा करता है तो मनुष्य
धर्म लोप होवै, विषयके जो सुख है उसके अर्थ सुखमें
पीडित ही रहे कामदेवका सुख भी खंडित होवै यह निश्चय
॥१८॥और अपने त्रिंशांशकमेंस्थित हुआ बुध मनुष्यको मे
(बुद्धि) कला काव्य विवादसे युक्त, शास्त्रार्थसे युक्त, कुल
मानवाला, शिल्पस्थानवाला, और साहससे युक्त करताहै१
इति श्रीजातकशिरोमणौ माहीधरीभाषाटीकायां बुधदश
विचाराध्यायस्त्रयोदशः ॥ १३ ॥

जैव्यां स्वाध्यायमंत्रैर्भवति धनचयो मंत्रनीतिप्रतापै
र्माहात्म्यख्यातियुक्तोद्यमगुणमतिभिः संयुतः शक्ति
युक्तेः॥देवेज्ये भूपमंत्री कनकहयचयः पुत्रमित्रांबराढ्य
शक्त्या हीनेऽथ चिंतागहननिवसनं कर्णरुक् पापवैरम्

बलवान् बृहस्पतिकी दशामें अपने नित्यकृत्य वेदपाठा
मंत्रोंसे धन बहुत होता है, बुद्धि, नीति, तथा प्रतापसे मह
एवं ख्यातियुक्त होवे, उद्यम, गुण, अकिलसे युक्त होवै त
राजमंत्री होवै, सुवर्ण घोडाओंका समूह आवै पुत्र मि
वस्त्रोंसे युक्त होवै. यदि बृहस्पति निर्बल होवै तो चिता
वनमें पडारहे कर्णरोग और पापियोंके साथ वैर होवै ॥ १

अथ महाभूतच्छायागुणः ।

मृदंगभेरीरवशंखतंत्रीवंशस्वनानन्दपरो नरः स्यात् ।
श्रीरांबरीयं श्रवणे करोति व्यक्तिं दशायाः सुरपूजि
तस्य ॥ २ ॥ स्फटिकरुचिररूपा श्रेयसे भाग्ययुक्त
गगनतलभवा श्रीरीज्यजायां दशायाम् ॥ असितमल
विगंधा वायवी श्रीः करोति गदवधधननाशं शौरिजाय
दशायाम् ॥ ३ ॥

अब बृहस्पतिकी महाभूतछायालक्षण कहते हैं कि,
गगनतत्त्व प्रबल होता है तब (मृदंग) पखावज, भेरीश
शंख, वीणा, बांसरीके आवाजके आनंदमें मनुष्य तत्पर हो
है वायु शब्द गुण आकाशमें है यह आकाशकी श्री कान
अनुभव होती है ऐसी अवस्थामें बृहस्पतिकी दशा होकर
जिसकी दशा मालूम नहीं उसकेलिये ज्ञात होती है ॥२॥
आकाशतत्त्वकी छाया स्फटिकके रमणीयरूपा भला
वास्ते होती है । मनुष्यको बृहस्पतिकी दशामें सौभाग्य
करती है, ऐसे ही वायुकी श्रीसे शनिकी दशा अनुभव हो
है इसमें कृशता, मलिनता, दुर्गंधता, रोग, मरण
धननाश होता है ॥ ३ ॥

गुरुराशिफलानि ।

भूरिद्रव्यविलासिनीतनयवान् दाता सुभृत्यः क्षमी ज
भौमगृहे प्रतापबहुलः सेनापतिः पण्डितः ॥ त्या
स्वच्छवपुः सुखी सुतनयो मित्रार्थयुक् शौक्रभे बौ
भूरिधनात्मजैर्गृहसुखैः साचिव्ययुक्तः सुखी ॥ ४
कर्के रत्नविलासिनीसुतसुहृत्प्रज्ञाबलैरन्वितः सिं
कर्कटवत्फलं सुरगुरौ सेनापतिर्वा नृपः ॥ देवेज
बलनायको नरपतिर्वा मण्डलेशः स्वके नीचे निःश
शुरो घटे सुरगुरौ प्रोक्तं च यच्चन्द्रभे ॥ ५ ॥

बृहस्पतिका राशिफल कहते हैं। भौमराशिमें होवे तो
तसे धन, स्त्री, पुत्रोंवाला अच्छे नौकरोंवाला होवै, शुत्र
शिमें होवे तो बडा प्रतापी, सेनापति, पंडित, उदार नि
शरीर सुखी, सत्पुत्रवान् मित्र तथा धनयुक्त होवै, बुध
राशिमें बहुतसे धन पुत्र, सुख मंत्रित्वसे युक्त तथा सुखी
॥ ४ ॥ कर्कका होवै तो रत्न, स्त्री, पुत्र, मित्र, बुद्धि ब
युक्त होवै सिंहकेमें भी कर्कके समान फल हैं सेनापति अथ
राजा होना ये भी फल सिंहके हैं, अपनी राशिका होवै
सेनापति वा राजा अथवा कुछ गाँवका राजा होवे (नीच
मकरका होवै तो श्वशुररहित रहे और कुंभके बृहस्पति
कर्कके तुल्य फल होते हैं ॥ ५ ॥

गुरुभावफलानि ।

विद्वाँल्लग्नगते गुरौ सुवचनः स्वस्थे कदर्योऽग्रगे तुं
सौख्ययुतः सुते ससुतधीः शत्रौ सशत्रुः पुमान् ।
जायास्थे पितृतोधिको निधनगे नीचस्तपस्वी शुभे

द्रव्याढ्यो नभसि स्थिते भवगते लाभान्वितोऽन्त्ये खलः॥

गुरुके भावफल हैं कि, लग्नमें हो तो विद्वान्, द्विती सुवचन, तीसरेमें क्षुद्र, चौथेमें सुखी, पंचममें पुत्रवान् तथा ध वान्, छठेमें शत्रुसहित मनुष्य रहे सप्तममें, पितासे अधि अष्टममें नीच, नवममें तपस्वी, दशममें धनाढ्य, ग्यारहवें लाभवान द्वादशमें खल, इसप्रकार फल बृहस्पतिके भा स्थके हैं ॥ ६ ॥

अथ योगजफलानि।

देवेज्योऽर्कयुतो नरं जनयति क्रूरान्यकार्ये रतं सेन्दुर्वि त्तकुलाधिपः स्थिरमतिः स्फीतं सवक्रो गुरुः ॥ पुर्या ध्यक्षपरं बुधेन सहितः संग्रामभूचारिणं विद्यादारगुणा न्वितं सभृगुजः सार्किश्च सन्नापितम् ॥ ७ ॥

बृहस्पति सूर्यसहित होवे तो मनुष्यको क्रूर एवं और काममें तत्पर करता है, चन्द्रयुक्त धन तथा निजकुलका अ पति, भौमसे स्थिर बुद्धि और संपन्न, बुधसे पुरके अध्य तामें तत्पर, शुक्रसे संग्रामभूमिचारी, विद्या, स्त्री, गुण इ युक्त, शनियुक्त होनेसे हजाम होता है ॥ ७ ॥

अथ दृष्टिः।

जनयति रविदृष्टः कौजभे धर्मनिष्ठं बहुयुवतिधनाढ्यं भूमिपं चन्द्रदृष्टः ॥ नृपतिपुरुषमग्र्यं वक्रदृष्टः सुद शशितनयसुदृष्टः सत्यवाचं विलोभम् ॥ ८ ॥ शुक्रे क्षितो भवति वस्त्रसुगंधमाल्यमिष्टाशिनं युवतिभूषण वित्तवन्तम् ॥ तीक्ष्णं सुसाहसपरं मलिनांबराढ्यं सौरेक्षितः स्थिरसुहृत्सुतवित्तवन्तम् ॥ ९ ॥

दृष्टि फल है कि, मंगलकी राशिमें बृहस्पति सूर्य दृष्ट तो धर्ममें तत्पर रहे, चन्द्रदृष्ट होवै तो बहुत स्त्री तथा ध युक्त, भौमसे राजपुरुषोंमें श्रेष्ठ, बुधसे, सुन्दरस्त्रीवाला स वक्ता निर्लोभ होता है ॥ ८ ॥ शुक्रदृष्टिसे वस्त्र, सुगन्ध, मीठा इनका भोगनेवाला, स्त्री, भूषण, धनवाला, शनि बृहस्पति मनुष्यको तीक्ष्णस्वभाव, उत्तम साहसमें त मलिनवस्त्रोंसे युक्त तथा अस्थिर मित्र, पुत्र धनव करता है ॥ ९ ॥

सूर्येण दृष्टो भृगुमंदिरस्थो नरेंद्रसख्यं द्विचतुष्पदाढ्यम्
करोति जीवो विनयान्वितं च चन्द्रेण दृष्टो युवतिप्रि
च ॥ १० ॥ जीवो बालविलासिनीशतपतिं प्रा
कुजेनेक्षितस्तारानाथसुतेक्षितोऽतिविभवं प्राज्ञं गुणाढ
सदा ॥ शौत्र्यां भूषणधारिणं बहुगुणं यानासनाढ
मृदुं दृष्टः सूर्यसुतेन विस्तृतगुणग्रामाधिकारान्वितम् १

शुक्रराशिगत गुरु सूर्यदृष्ट होनेमें मनुष्यको राज प्रीतिपात्र, मनुष्य, पक्षी और चौपायोंसे युक्त करता चन्द्रसे नम्र तथा स्त्रीप्रिय भी ॥ १० ॥ भौमसे नवयौ विहारज्ञ सौस्त्रियोंका पति, तथा बुद्धिमान्, बुधसे अ श्वर्यवान्, प्राज्ञ और सर्वदा गुणयुक्त शुक्रदृष्टिमें भूषणधा बहुतगुणयुक्त, सवारी, शय्यासे युक्त, कोमल स्वभाव, श दृष्टिसे बड़ा और गुणवाला ग्रामका अधिकारी करता है॥ १

ग्रामप्रबंधं धनधान्यवंतं सूर्येक्षितो देवगुरुश्च बौधे॥ चन्द्रे
क्षितो मातृहितं धनाढ्यं दारासुखाढ्यं बहुपुत्रवंत
॥ १२ ॥ कुजेक्षितो लब्धजयं क्षताढ्यं बुधेक्षितो ज्यो

तिषवादवन्तम्॥ प्रसाददेवालयकृत्यविज्ञं सितेन सौरेण पुराधिपत्यम् ॥ १३ ॥

बुधराशिके गुरुपर सूर्यदृष्टिसे, मनुष्य ग्रामके प्रबंध ध धान्यवाला करता है चन्द्रदृष्टिसे माताका हिती, धनाढ्य स्त्रीसुखसे युक्त धनपुत्रवाला ॥ १२ ॥ भौमदृष्टिसे विजयप्रा धाववाला बुधसे ज्योतिषशास्त्रके वादवाला, शुक्रसे, मह देवमंदिरके कृत्य जाननेवाला और शनिदृष्टिसे नगर स्वामी करता है ॥ १३ ॥

जीवे सूर्यविलोकिते शशिगृहे यूथाग्रगामी भवेद्द्रव्यस्त्री-सुतामित्रसौख्यरहितः शास्त्रादिवादे रतः॥ भूमीशो बहु-कोशवाहनयुतश्चन्द्रेक्षितः स्त्रीयुतो भूपुत्रेण कुमानदान-सहितो सत्कारभागी नरः ॥ १४ ॥ जनयति बुधदृष्ट पापहीनं सुबंधुं जननिहितधनाढ्यं ग्रामपूज्यं जनाप्तम्। भृगुतनयसुदृष्टो भूरिदाराधनाढ्यं बलपतिनगरेशं सौर-दृष्टः करोति ॥ १५ ॥

कर्कके चन्द्रमापर सूर्यदृष्टि होवै तो समूहके अग्रगामी, ध स्त्री, पुत्र, मित्र, सुखसे रहित और शास्त्र जाननेवाला हो चन्द्रदृष्टिसे, भूमिका मालक, बहुतसे खजाना, सवारी, स्त्रि से संयुक्त रहे, मंगलकी दृष्टिसे निन्द्यमान् दानवाला, त सत्कार भाग्य होवै ॥ १४ ॥ बुधदृष्ट होवै तो मनुष्य पापर अच्छे बांधवोंवाला, माताका हिती, धनवान्, ग्राममें पूज योग्य, मनुष्योंवाला, शुक्रदृष्टिसे बहुतसे धन, स्त्रियोंसे यु शनिदृष्टिसे, सेनापति, नगरका पति करता है ॥ १५ ॥

सिंहस्थे राजराजो भवति सुरगुरौ सत्प्रियः सूर्यदृष्टे जीवे शुभांशुदृष्टे वसुमतिरतो धीधनाढ्यो नृमान्यः।

दृष्टे भौमेन शूरः प्रभवति समरे सद्गुरूणां विशि
विद्दृष्टेवास्तुविद्यागुणनिधिसहितो भूपमंत्री प्रधानः १६
स्त्रीभूपसत्कारयुतश्च सिंहे सितेन दृष्टे सुरपूजकश्च
बहुप्रतापी सुतवित्तहीनः शौरेण दृष्टे सुरनाथपूज्ये॥ १

सिंहके गुरुपर सूर्यदृष्टि होवै तो राजराज, सज्जनोंका ि चन्द्रदृष्टिसे श्रेष्ठस्त्रीमें आसक्त, बुद्धि धनसे युक्त, मनुष्यो माननीय, मंगलसे रणमें शूरमा, सतगुरुजनोंमें श्रेष्ठ, बु ष्टिसे वास्तुविद्या, गुण, निधि वस्तुसे सहित, राजमंत्री, प्र होवे ॥ १६ ॥ शुक्रदृष्टिसे स्त्री, राजासे सत्कारयुक्त, द देवपूजक भी होवै शनिसे दृष्ट होवै तो बडा प्रतापी और तथा धनहीन रहे ॥ १७ ॥

स्वगृहे नृपतिविरुद्धं जनयति जीवो निरीक्षितो रविणा
अतिसभगं युवतीनां दृष्टश्चंद्रेण मध्यधनं पुरुषम् १८
संग्रामशस्त्रक्षतविक्षतांगं भौमेन दृष्टः कुरुते सुरेज्यः
बुधेन भूपं नृपमंत्रिणं वा करोति जीवः सुतभाग्ययुक्तः
॥ १९ ॥ भोज्यान्नपानांबरगेहशय्यासनोत्तमस्त्रीसहि
सुरेज्यः ॥ करोति दृष्टो भृगुनंदनेन भूषांबरस्त्रीसुखि
गुणाढ्यम् ॥ २० ॥

अपनी राशिके गुरुपर सूर्यदृष्टि होवै तो राजाका विरो होवै, चन्द्रदृष्टि होवै तो स्त्रियोंका अतिरसिक और मध्यम वान् होवै ॥ १८ ॥ मंगलसे संग्राममें शस्त्रसे कटे अंग, बु राजा अथवा राजमंत्री पुत्र तथा ऐश्वर्ययुक्त ॥ १९ ॥ शुक्र से भोजनके पदार्थ अन्न, पीनेके वस्तु, वस्त्र, घर, शय

आसन, उत्तम स्त्रीयुक्त शनिदृष्टिसे भूषण, वस्त्र और स्त्रिय के सुखयुक्त तथा गुणोंसे युक्त करता है ॥ २० ॥

देवेज्ये सूर्यदृष्टे भवति नरपतिः शौरगेहे समृद्धः प्राज्ञो भक्तो गुरूणां स्वकुलभरसहश्चंद्रदृष्टे सुरेज्ये॥शूरः संग्रामभूमौ जयति रणगतान्गर्वितो भौमदृष्टो विदृष्टे षंढसेवी गणपबलपतिः श्रेष्ठपुत्रोर्जनः स्यात् ॥ २१ ॥ लक्ष्मीपतिः शनिगृहे धनबुद्धियुक्तः शुक्रेक्षिते सुरगुरौ सुभगश्चिरायुः ॥ सौरेक्षिते नृपतिदेशमहत्तरः स्याज्जीवे चतुष्पदधनो नगराधिकारी ॥ २२ ॥

शनिराशिस्थ गुरुपर सूर्यकी दृष्टि होवे तो राजा,धनवा पंडित होवे चन्द्रदृष्टिसे गुरुजनोंका भक्त, अपने कुलका भा सहारनेवाला होवे, भौमदृष्टिसे शूरमा, संग्रामभूमिका पति रणवालोंको जीतनेवाला और गर्विष्ठ होवै, बुधकी दृष्टि हीजडोंका सेवन करे, बहुत मनुष्योंका पति, सेनापति श्रेष्ठपुत्रवाला, संग्रही होवै ॥ २१ ॥ शुक्रदृष्टिसे धन तथा बुद्धि से युक्त, सुभग और दीर्घायु होवे, शनिदृष्टिसे राजाके देशव बडा आदमी, चौपाया, धनवाला और नगरका अधिपति होवै ॥ २२ ॥

अथांशफलम् ।

धीमंतमार्यं स्वनवांशकेज्यः कुजांशके ज्ञं सुदृढाभिमानम् ॥ शुक्रांशके मंत्रिषु मानवंतं बुधांशके काव्यकला सुविज्ञम् ॥ २३ ॥ सूर्यांशके ख्यातमनल्पवित्तं शन्यंशके स्फीतधनं महान्तम् ॥ २४ ॥

बृहस्पतिके अंशफल हैं कि, स्वांशका होवे तो बुद्धिमान् तथा श्रेष्ठ होवे, मंगलकेमें पंडित, दृढ अभिमान युक्त शुक्रांश-में मंत्रियोंमें मानवाला, बुधांशकमें काव्यकलाका अच्छा जान-नेवाला ॥ २३ ॥ सूर्यांशकमें विख्यात तथा बहुत धनवाला, शनिके अंशमें बहुत धन और बडा आदमी होवे ॥ २४ ॥

अथान्तर्दशा ।

गुरोर्दशायां सविता स्वमान्यं मान्यं नृपाणां कलहाद्वि-मुक्तम् ॥ करोति नित्यं परिवारयुक्तं पराक्रमस्थानसुखो-पपन्नम् ॥ २५ ॥ अनेकनारीपरिवारवंतं करोति चंद्रो जितरोगशत्रुम् ॥ गुरोर्दशायां नृपतिप्रधानमन्तर्दशास्थः सुखभोगयुक्तः ॥ २६ ॥ परप्रतापी भुवि लब्धकीर्तिः शूरोतितीक्ष्णो जयलब्धवित्तः ॥ महीसुते जीवदशामु-पेते प्रभूतसौख्यं लभते मनुष्यः ॥ २७ ॥ सौख्यमित्र सहितो गुरुभक्तो रोगपापरहितो बुधमान्यः ॥ चन्द्रजे गुरुदशामुपयाते बंधुमित्रसुतदारसंयुतः ॥ २८ ॥ धन नाशाद्विषद्दुःखैरभिभूतो द्विजाश्रयी॥शुक्रे गुरुदशां प्राप्ते पुमान्भवति नित्यशः ॥ २९ ॥ वेश्यारतो द्यूतपरोऽथवा स्यात्सुरापरो वा धनभूवियुक्तः ॥ सौरे दशायां सुरपूजितस्य प्राप्ते जनः स्यात्स्वकुलानुसारात् ३० ॥

इति श्रीजातकशिरोमणौ गुरुदशाध्यायश्चतुर्दशः॥ १४॥

अन्तर्दशाफल कहते हैं। गुरुदशामें सूर्यांतर अपने मनुष्योंका तथा राजाओंका माननीय, कलहसे निर्मुक्त, नित्य परिवारयुक्त, पराक्रमसिद्धि स्थान सुखसे युक्त करता है॥२५॥ चन्द्रांतर अनेकस्त्रीपरिवार युक्त, शत्रु एवं रोग जीतनेवाला राजमंत्री और सुभग करता है॥२६॥ मंगलका अन्तर शत्रुको सन्तापकरनेवाला, पृथ्वीमें कीर्तिवाला, शूरमा, तीक्ष्णस्वभाव, विजयसे धनलाभ भी करता है तथा मनुष्य बहुत सौख्य भी प्राप्त करता है॥२७॥ बुधान्तरमें सुख तथा मित्रसहित, गुरुभक्त, रोगसे पापसे रहित, विद्वानोंका माननीय बन्धु मित्र पुत्र स्त्री से युक्त होता है ॥ २८ ॥ शुक्रांतरमें धननाश शत्रुकृत दुःखों से पीडित ब्राह्मणके आश्रयी भी मनुष्य नित्य होता है॥२९॥ शनिकी अंतर्दशामें वेश्यामें तत्पर, जूआमें तत्पर अथवा शराबपीनेवाला, धन भूमिसे रहित अपने कुलानुसार होवै ॥ ३० ॥ इति श्रीजातकशिरोमणौ माहीधरीभाषाटीकायां गुरुदशाध्यायश्चतुर्दशः ॥ १४ ॥

शौक्र्यां वादित्रगीतप्रियसुरतपरो वस्त्रमाल्यानुलेपैरासक्तो भक्ष्यपानैरपि वरसुवधूहास्यलीलाविलासैः॥नानालंकाररत्नैर्हयगजनिलयैः ख्यातियुक्तो नमद्भिर्मित्रैः सद्बन्धुपुत्रैर्बलिनि भृगुसुते संगतः स्यान्मनुष्यः ॥१॥ कृषिप्रयोगैर्बलिवर्दभूमिजलाश्रयैर्गोमहिषादिभिश्च ॥ संयुज्यते मध्यबलेऽसुरेज्ये लाभो निधेरन्यपरिग्रहैश्च ॥ २ ॥ नृपैर्निषादैः कुलवृन्दमुख्यैर्वैरं विरुद्धाचरणं नृपैश्च ॥ कुयोषिति प्रीतिपरः प्रियस्य शोकातुरो हीनबले भृगौ स्यात् ॥ ३ ॥

अब शुक्रदशा फल कहते हैं कि, बलवान् शुक्रकी दशा में बाजे, गीतको प्रियमाननेवाला, रतिक्रीडामें तत्पर वस्त्रपुष्प चंदनादि अनुलेप वस्तुओंमें आसक्त तथा भोजनके वस्तु पानके पदार्थोंमें भी आसक्त रहे, श्रेष्ठ सुंदर स्त्रीके साथ हंसी खेल विलासों करके अनेक अलंकार रत्न, घोड़े, हाथी, मकानोंसे युक्त रहे, विख्यात होवे, नम्र होते हुये मित्र, अच्छे बंधु, पुत्रोंसे युक्त होता है ॥ १ ॥ बृहस्पति मध्यबली होवे तो दशामें खेतीवारीके काम करनेमें, बैल, जमीन जलके आश्रयसे गौ भैंस आदिसे भी संयुक्त होता है तथा उत्तम वस्तुका लाभ दूसरेसे गृहण करनेसे भी लाभ होता है ॥ २ ॥ हीन बलीमें राजा, भील अपने कुलसमूहके मुखियाओंसे श्रेष्ठता मिले राजाओंसे विरुद्ध आचरण भी होवै दुष्ट स्त्रीमें प्रीति अत्यंत रहे प्रिय जनके शोकसे आतुर भी रहे ॥ ३ ॥

अथ छायाफलम् ।

यदा रसास्वादपरो मनुष्यो दशेंदुभृग्वोः शुभदा तदानीम् ॥ स्वच्छां श्रियं हारिभवां मनुष्यः श्रेष्ठे च जिह्वा प्रकटी करोति ॥ ४ ॥ श्रीर्वारिजा तनुभृतां जननीव सौख्यं हृष्टा करोति तनुसौख्यमहार्थलाभम् ॥ सौभाग्यमार्दवकरी नयनाभिरामा नित्यं दशासु भृगुचंद्रमसोश्च पुंसः ॥ ५ ॥

महाभूत छायासे शुक्र चंद्रदशाका अनुभव है कि, जब मनुष्य रसके पहिचानमें तत्पर होता है तब चंद्रमा शुक्रकी शुभफलदा दशा जाननी मनुष्य श्रेष्ठमें निर्मल शोभा जल तत्त्वकी जिह्वा प्रकट करती है ॥ ४ ॥ जलतत्त्वसे उत्पन्न श्री शरीरधारियोंको प्रसन्नतासे माताके समान सौख्य, बड़ा धन

लाभ, सौभाग्य, मृदुता, नेत्रोंको प्रसन्न करनेवाली शोभा नित्य देती है जिसकी दशा ज्ञात न हो उसे ऐसे लक्षण प्रकट होनेमें शुक्र चंद्रदशा जानी जाती है ॥ ५ ॥

अथ राशिफलम् ।

कुजर्क्षे परस्त्रीरतः स्यात्तदर्थे विवादैर्हृतस्वः कुलांगाररूपः ॥ स्वभे राज्यपूज्योऽभयो बंधुनाथः सुबुद्धिर्धनी भार्गवे वीर्ययुक्तः ॥ ६ ॥ राजकार्यकरणप्रयतात्मा द्वंद्वगे भृगुसुतेऽर्थकलाढ्यः॥षष्ठराश्युपगतेऽधमकर्मा नीचदारतनयोऽनययुक्तः ॥ ७ ॥

शुक्रकी राशिफल कहते हैं। मंगलकी राशिमें शुक्र होवे तो पराई स्त्रीमें आसक्त रहे परस्त्रीके लिये झगडेमें धन चला जावे अपने कुलको दग्ध करनेके लिये अथवा मलिन करनेके लिये (अंगार) कोयला जैसा होवै,शुक्र अपनी राशिमें होवै तो राज्यपूज्य, निर्भय बंधुवर्गमें श्रेष्ठ सद्बुद्धि धनवान् तथा (वीर्य) पराक्रमवाला भी होवै ॥ ६ ॥ मिथुनका होवै तो राजकार्य करनेको तनुसे तत्पर रहै धन तथा कलासे भरा रहै कन्यामें होवै तो नीच कर्म करनेवाला होवै स्त्री पुत्र भी नीच होवैं अन्यायी होवै ॥ ७ ॥

द्विभार्योऽर्थी भीरुः शशिगृहगते दानवगुरौ हये पूज्यः शश्वद्गुणिगणैर्मानसहितः ॥ प्रजापालैः पूज्यो रविगृहगते मंदनयनः स्त्रिया प्राप्तद्रव्यः प्रबलवनितापूर्णतनयः ॥ ८ ॥ भृगुसुते शनिगेहगते नरः कुयुवती पुरतो विजितास्त्रिया ॥ भवति कंबलपण्यधनोऽथवा महिषवेसरविक्रयतो धनी ॥ ९ ॥

शुक्र चंद्रमाके राशिमें होवै तो दो स्त्री, धनवान्, डरनें वाला होवै धनका होवै तो वारंवार पूजाके योग्य गुण एवं गुण वानोंके समूहसे पूज्य होवै मीनराशिका होवै तो राजाओंसे पूज्य होवै सूर्यराशिमें होवै तो नेत्र दृष्टि मंद स्त्रीसे कमाया धन स्त्री प्रधान बहुत पुत्र होवैं ॥ ८ ॥ शुक्र शनि राशिका होवै तो कुस्त्री होवे स्त्रीके सन्मुख उसका जीतारहे कंबलोंके व्यापारसे धनवान् होवै भैंसे और गोरखर वा खच्चरी विक्रयसे धनी होवै ॥ ९ ॥

अथ भावफलानि ।

लग्ने भृगौ सुखयुतः स्मरकार्यविज्ञो द्रव्ये सुखी सहजगे कृपणश्चतुर्थे ॥ सौख्यान्वितोथ तनये सुखविद्ययाढ्यषष्ठेरिसंघरहितः पितृतोधिकोस्ति ॥ १० ॥ नीचोष्टमे निजकुलोचितकामकर्त्ता धर्मे तपोगणयुतो दशमे गुणाढ्यः ॥ एकादशेभृगुसुते सततं सलाभो द्रव्यान्वितो भवति रिष्फगृहस्थिते च ॥ ११ ॥

शुक्रभावफल कहते हैं कि, लग्नमें होवै तो सुखयुक्त तथा कामदेवके कार्यमें निपुण दूसरेमें सुखी तीसरेमें कृपण चौथेमें सुखयुक्त पंचममें सुख विद्यासे युक्त छठेमें शत्रुगणरहित सप्तममें पितासे अधिक॥१०॥अष्टममें नीचकर्मा अपने कुलके उचित स्त्री करनेवाला नवममें बहुतसी तपस्याओंसे युक्त दशममें गुणोंसे युक्त लाभमें वारंवार लाभयुक्त और बारहवेंमें द्रव्ययुक्त होता है ॥ ११ ॥

अथ योगफलम् ।

सार्के भृगौ रणवरो मनुजः सचन्द्रे वस्त्रक्रियादिकुशलो वरभोगभागी ॥ दक्षोऽन्यदारानिरतो व्यसनी सभौमे

वाग्मी धनी बहुगुणः स बुधे भृगौ स्यात् ॥ १२ ॥ गुरुयुते भृगुजे धनदारवान्बहुगुणो बहुकाव्यकलायुतः॥ असितसंगभृगौ लिपिपुस्तयुग्युवतिजीवनलब्धधनो नरः ॥ १३ ॥

योगफल कहते हैं। शुक्र सूर्ययुत होवै तो मनुष्य रणमें श्रेष्ठ होवै चंद्रयुतसे वस्त्र आदि क्रियामें चतुर, श्रेष्ठभोग-भोगनेवाला भौमयोगसे चतुर परस्त्रीमें आसक्त व्यसनी बुधयोगसे चतुरवाणीवाला. धनवान् गुणवान् होवै ॥ १२ ॥ गुरुसे धन तथा स्त्रीयुत रहै बहुतगुण बहुतस्त्री काव्यकलासे युक्त शनियोगसे लिखना पुस्तकपढना जाने तथा मनुष्य स्त्रीके जीवनसे धन पावै ॥ १३ ॥

अथ दृष्टिफलानि।

विनष्टसारो वनितानिमित्तं कौजे भृगौ भास्करदृष्टदेहे॥ अनार्यकांतापतिरिन्दुदृष्टे मनोभवार्त्तो मतिचंचलश्च ॥ ॥ १४ ॥ परापवादप्रयतोतिदीनः स्वसौख्यसंमान-विवेकहीनः॥ कुजेन दृष्टेऽसुरराजपूज्ये सुवेषदेहो भवति प्रसूते ॥ १५ ॥ बंधूनां परिवादवाक्यसहितो मूर्खोतिदुष्टः शठो विदृष्टे भृगुजे विहीनविनयो विद्याविहीनोऽलसः ॥ पुत्राणां बहुभाजनः सुनयवान्देवेज्यदृष्टे सुखी स्वाधीनाः स्वजनादयः कुजगृहे सौरेक्षितेऽस्वो भवेत् ॥ १६ ॥

दृष्टिफलविचार है कि, मंगलके राशिस्थ शुक्रपर सूर्यकी दृष्टि होवै तो स्त्रीके निमित्त अपना (सार) सब करामात खोवै चंद्रदृष्टिसे अश्रेष्ठस्त्रीका पति कामातुर और चंचलबुद्धि

होवे ॥ १४ ॥ जन्ममें शुक्रपर भौमदृष्टिसे पराये ऊपर झूठे-कलंकमें तत्पर रहे अतिगरीब अपने सौख्य सन्मान और विवेकसे हीन रहे देहका सुंदर वेष बनायेरहे ॥ १५ ॥ बुध दृष्टिसे बंधुको तिरस्कार वचन बोले मूर्ख, अतिदुष्ट, वंचक, न्यायरहित, विद्याहीन, आलसी होवे गुरुदृष्टिसे बहुत पुत्र-वाला, नीतिवाला, सुखी होवे शनिदृष्टिसे अपने मनुष्य आदि अपने आधीन रहें निर्द्धन होवे ॥ १६ ॥

स्वर्क्षे स्त्रीधनभाजनो भृगुसुते सूर्येण दृष्टे धनी दारा-सौख्ययुतो गुणीक्षिततनौ चंद्रेण भौमेक्षिते ॥ दुष्टस्त्रीर-मणो बुधेक्षिततनौ सद्वित्तसौख्यान्वितो भव्यस्त्रीसुतवा-हनोथ गुरुणा सौरेण दुष्टा मतिः ॥ १७ ॥ बौधे स्त्रीनृ-पदारकार्यकरणव्यासक्तचित्तो धनी दुष्टस्त्रीरमणो विन-ष्टविभवः सद्वाहनः स्वान्वितः ॥ ग्रामाश्वात्मजदारवस्त्र-शयनालंकारसौख्यान्वितो दुष्टस्त्रीव्यसनादिनष्टविभवो रव्यादिदृष्टे भृगौ ॥ १८ ॥

शुक्र अपनी राशिमें सूर्यदृष्ट होवै तो, स्त्री धनका पात्र होवै चंद्रदृष्टिसे धनवान् स्त्रीसुखयुक्त गुणवान्, भौमदृष्टिसे दुष्टस्त्रीको रमणकरनेवाला बुधसे अच्छी वित्त एवं सुखसे युक्त, गुरुसे उत्तम स्त्री पुत्र वाहनयुक्त शनिसे दुष्टबुद्धिवाला होवे ॥ १७ ॥ बुधके राशिगत शुक्रपर सूर्यदृष्टि होवै तो स्त्री-राजस्त्रीके कार्यकरनेमें चित्त आसक्त रहै; चंद्रदृष्टिसे धनवान् तथा दुष्टस्त्रीको रमणकरनेवाला भौमसे नष्टऐश्वर्य बुधसे उत्तम-वाहन उत्तमधनसे युक्त गुरुसे ग्राम घोडे पुत्र स्त्री वस्त्र शय्या भूषणोंके सुखसे युक्त, शनिसे दुष्टके संसर्गादिव्यसनोंसे ऐश्वर्य नष्ट होजावे ॥ १८ ॥

चांद्रे प्रवासपथराजसुताप्तदारं सूर्येक्षितो भृगुसुतः शशिवीक्षितश्च॥कन्याप्रजं बहुसुतं कुजवीक्षितश्च स्त्रीबंधुपोषणपरं वनिताप्तदुःखम् ॥ १९ ॥ बुधेक्षितः पंडितदाननाथं गुर्वीक्षितः पुत्रधनादियुक्तम् ॥ करोति शुक्रः शनिवीक्षितश्च स्त्रीनिर्जितं वित्तसुखादिहीनम् ॥ २० ॥

चंद्रराशिगत शुक्रपर सूर्यदृष्टि होवे तो परदेशवासी, मार्गचलनेमें तत्पर, राजद्वार, पुत्रसे धन पावे स्त्री उत्तम होवै चंद्रसे कन्याही होवैं, मंगलसे बहुत पुत्र तथा स्त्री बंधुजनके पालनमें तत्पर और स्त्रीसे दुःख पावै ॥ १९ ॥ बुधसे पंडित, दानाध्यक्ष, गुरुसे पुत्र धनआदिसे युक्त शनिदृष्टिसे स्त्रीका जीताहुआ, और धनसुखादिसे हीन होवै ॥ २० ॥

सिंहे सूर्यविलोकिते भृगुसुते कन्याप्रदो द्रव्यदश्चंद्रेणापि नृपप्रधानपुरुषः स्त्रीवित्तसौख्यान्वितः ॥ स्त्रीदुःखी धनवान्कुजेक्षिततनौ दृष्टे बुधेनार्थवान्पण्यस्त्रीसुखवित्तलालसमतिस्तत्प्राप्तिनित्योद्यमी ॥ २१ ॥ भार्गवे रविगृहे गुरुदृष्टे दारवाहनधनो बहुभृत्यः ॥ सौरिणा नृपसमो नरपो वा जायतेथ विधवादयितोऽपि ॥२२॥

सिंहके शुक्रपर सूर्यदृष्टि होवै तो कन्यासंतति होवै, धन देनेवाला होवै चंद्रदृष्टिसे राजाका प्रधान पुरुष होवै स्त्री तथा धनके सौख्ययुक्त होवै भौमसे स्त्रीसे दुःखी रहे धनवान् होवै बुधदृष्टिसे धनवान् तथा वारांगनाके सुख और धनकी इच्छामें बुद्धिरहे इनके प्राप्तिके लिये नित्य उद्यम करतारहे ॥ २१ ॥ शुक्रपर गुरुदृष्टि होवे तो स्त्री, सवारी, धनही धन होवै सेवक बहुत होवैं राजाके समान अथवा राजा होवै और विधवास्त्रीका प्रिय होवै ॥ २२ ॥

विदेशगामी रविवीक्षिते च चंद्रेक्षिते राजपुमान् धनाढ्यः॥ कुजेन नानाविषयान्वितश्च नानासुखाढ्यो बुधवीक्षिते च ॥ २३ ॥ सुगंधवस्त्राभरणाशनानां भोगान्वितो देवपुरोहितेन॥तुरंगगोधान्यधनान्वितश्च शनीक्षिते पूज्यगृहे भृगौ स्यात् ॥ २४ ॥

गुरुके राशिमें सूर्यदृष्ट शुक्र होवै तो विदेश गमनकरनेवाला होवै चंद्रदृष्टिसे राजपुरुष तथा धनाढ्य होवै भौमसे अनेक विषयोंसे युक्त बुधसे सुखयुक्त होवै ॥ २३ ॥ गुरुदृष्टिसे सुगंधि, वस्त्र, भूषण, भोजनोंका भोगभोगनेवाला शनिदृष्टिसे घोडे, गौ, अन्न, धनसे युक्त रहै ॥ २४ ॥

सौरिगेहगभृगौ रविदृष्टे क्रोधनो नरपतिप्रतिमो वा ॥ द्रव्यरूपवपुषा सुभगो वा चन्द्रवीक्षितभृगौ सुखभागी ॥ २५ ॥ विरूपदेहो बहुरोगयुक्तः कुजेक्षिते प्राज्ञविधानयुक्तः ॥ बुधेक्षिते सत्यव्रतीयुतश्च गीतादिवाद्ये गुरुणा प्रसिद्धः ॥ २६ ॥ धनान्वितो वाहनभृत्ययुक्तो भोगान्वितः श्यामशरीरयष्टिः ॥ सौरेक्षिते सौरिगृहे मलाक्तो भवेन्महादेव इव प्रसिद्धः ॥ २७ ॥

शनिकी राशिगत शुक्रकी दृष्टि होवै तो क्रोधी, और राजा अथवा राजतुल्य होवै, चन्द्रदृष्टिसे धन, रूप, शरीर सुन्दरतासे पूर्ण तथा सुखभागी होवै ॥ २५ ॥ भौमदृष्टिसे शरीर विरूप बहुतरोगोंसे युक्त होवै, बुधदृष्टिसे पण्डित, विधिज्ञ, गुरुदृष्टिसे उत्तमस्त्रीसे युक्त तथा गीतवादित्रमें प्रख्यात होवै ॥ २६ ॥ शनिदृष्टिसे धनवान् वाहन, एवं चाकरोंसे युक्त,

भोगवान्, श्यामशरीर, मलसे लिप्त और महादेव जैसा प्रसिद्ध होवै ॥ २७ ॥

अथांतर्दशा।

अतीसाराक्षिरुग्गण्डरोगसंघार्दितः पुमान् ॥ रवौ शुक्रदशां प्राप्ते तप्तो वा बंधनादिभिः ॥ २८ ॥ चन्द्रे शुक्रदशां प्राप्ते नखदन्तार्तिकामलाः ॥ जायंते नियतं तस्य शिरःशूलसमन्विताः ॥२९॥ पितासृक्क्षतरोगी स्याद्भौमे शुक्रदशांगते ॥ बुधे मनोरथावाप्तिर्गुरौ धीधर्मशीलता ॥ ३० ॥ राज्यलाभं च शुक्रे स्वे धन-दारात्मजान् लभेत् ॥ राज्यादिलाभश्च भवेच्छनौ वृद्धांगनाप्तयः ॥ ३१ ॥ इति जातकशिरोमणौ शुक्रदशाध्यायः पंचदशः ॥ १५ ॥

शुक्रके अंतर्दशा फल हैं कि, शुक्रदशामें सूर्यका अंतर होनेपर पुरुष अतिसार, नेत्ररोग, गंडरोगोंके समूहसे पीडित, रहे अथवा बंधनआदिसे संतप्तरहे ॥ २८ ॥ चन्द्रांतरमें, नखून, तथा दांतोंमें पीडा होवै और अवश्य शिरशूलसहित कामला रोग होते हैं ॥ २९ ॥ मंगलकेमें पित्तरोग, रुधिररोग घाव लगनेसे रोग होते हैं ॥३०॥ बुधमें मनोरथप्राप्ति, गुरुमें उत्तम बुद्धि तथा धर्ममें स्वभाव, राज्यादिलाभ भी होता है शुक्रमें शुक्रका अंतर होवै तो धन स्त्री पुत्र पावै, और राज्यादिलाभ भी होवै शनिके अंतरमें बूढी स्त्रीका लाभ होवै ॥ ३१ ॥ इति श्रीजातकशिरोमणौ माहीधरीभाषाटीकायां शुक्रदशाध्यायः पंचदशः ॥ १५ ॥

अथ शनिदशा ।

देशग्रामपुराधिकारकरणश्रेणीप्रधानो भवेद्वृद्धस्त्रीखरवेसरोष्ट्रमहिषीदासीसमूहस्सदा ॥ सौरे पूर्णबलेथ मध्यमबले श्लेष्मानिलेर्ष्यान्वितो हीने भृत्यकलत्रभर्त्सनविपत्तंद्राऽटनव्यंगता ॥ १ ॥

अब शनिदशाके फल कहते हैं कि, शनि बलवान् हो तो उसकी दशासे देश, ग्राम नगरके अधिकारी कामकरनेवाला, समूहमें प्रधान होवै बूढी स्त्री, गदहा, गोरखर वा खच्चरी ऊंट, भैंस और दासियोंके समूह सर्वदा रहैं मध्यबली होवै श्लेष्मरोग वायुरोग तथा ईर्ष्यासे युक्त रहै हीनबली होवै तो नौकर तथा स्त्रीसे झिडकना पावै, विपत्ति होवै, आलस्य, व्यर्थ फिरना और शरीरमें व्यंगता होवै ॥ १ ॥

महाभूतछायादशाज्ञानम् ।

कर्पूरकाश्मीरपरागबालवरांगनास्पर्शसुखावबोधम् ॥ श्रीर्वायवीयं प्रकरोति पुंसां स्वस्यां दशायां रविजस्य नूनम् ॥ २ ॥ आसितविमलगंधा वायवी श्रीः करोति गदवधधननाशं सौरिजायां दशायाम् ॥ ३ ॥

जब मनुष्यको, कपूर, केसर, सुगंधि तथा नवयौवना स्त्रीके स्पर्शका सुख अत्यन्त प्रिय अनुभव होता है तब वायुतत्त्वकी श्री जाननी इसके प्रकटहोनेमें पुरुषोंको शनिकी दशा जाननी, जिसकी दशा ज्ञात नहीं है उसको ये लक्षण दशा ज्ञापक हैं ॥ २ ॥ शनिदशामें इसप्रकार जब वायु श्री प्रकट होती है तब कृष्णरंग निर्मलगंधपर प्रेम होता है तथा रोग, मरण, और धननाश होता है ॥ ३ ॥

शनिराशिफलानि।

सौरे मेषेतिमूर्खो भवति गतसुहृद्दांभिको वृश्चिकस्थे हीनो दीनो विलज्जो भवति च कृपणो बंधभाक् क्लेशयुक्तः॥ नित्यं सौख्यार्थहीनो भवति वितनयो रक्षकेशोऽथ लेख्यो मूर्खो मुख्याधिनाथो भवति रविसुते चन्द्रपुत्रस्य गेहे ॥ ४ ॥ गोस्थेऽगम्यांगनेष्टो भवति च कुलटानायको वित्तहीनस्तुंगे द्रव्याधिनाथो भवति च नगरग्रामसेनाधिनाथः ॥ कर्के मूर्खो दरिद्रो भवति वितनयो मातृपुत्रैर्विहीनो भानोर्गेहे विभार्यो विसुखसुतसुहृत्संस्थिते सूर्यपुत्रे ॥ ५ ॥ आजीवं सुखभाक् प्रतीतिनिलयः सत्पुत्रदाराधनो जैवे सूर्यसुते धनी नयबलग्रामाग्रनेता भवेत् ॥ अन्यस्त्रीधनसंग्रहोर्थनिपुणो ग्रामाग्रणीर्मंदहक् स्वक्षेत्रे स्थिरसंपदो मलिनता भोक्ता च जातः पुमान् ॥ ६ ॥

मेषादिराशिगत शनिके फल कहते हैं, शनि मेषका होवै तो अत्यन्त मूर्ख होवै मित्ररहित दंभवाला होवै वृश्चिकका होवै तो हीन, दरिद्री, निर्लज्ज, मूजी, बन्धनभागी, क्लेशयुक्त, सर्वदा सौख्य तथा कार्यसिद्धिसे हीन, पुत्ररहित, रक्षाधिकारियोंका स्वामी होता है, बुधराशिमें होवै तो लिखनेका काम जाने परन्तु मूर्खतासे युक्त रहे श्रेष्ठ अफसर होवै ॥ ४ ॥ वृषका होवै तो अगम्या स्त्रीका प्रिय तथा कुलटा स्त्रीका स्वामी और वित्तहीन होवै अपने उच्चका होवै तो धनका स्वामी, नगर, ग्राम, सेनाका स्वामी होवै कर्कका

होवै तो मूर्ख, दरिद्री, पुत्ररहित, अपने सहोदर भाइयोंसे हीन होवै, सिंहका होवे तो स्त्रीरहित, सुख, पुत्र तथा मित्रोंसे रहित रहे ॥ ५ ॥ गुरुके राशिमें होवै तो आजन्म सुख भोगे, प्रतीतिका घर होवे, अच्छे पुत्र स्त्रीधनोंसे युक्त रहे अपनी राशिमें होवै तो धनवान् नीति, सेना, ग्रामका मुख्य नायक होवे पराये स्त्री, धनका संग्रह करे, कार्य साधनमें निपुण, ग्राममें मुख्य, मन्ददृष्टि, स्थिरसंपत्तिवाला और मलिनताभोगी भी होवे ॥ ६ ॥

शनिभावफलानि ।

लग्ने सूर्यसुतेऽलसो मलिनता बाल्ये गदव्याकुलोऽनं-
गायत्तमतिर्दरिद्रसहितः स्वर्क्षे नृपो वा समः ॥ देशग्रा-
मपुराधिकारसहितो विद्वान्सुदेहो धने सौरे द्रव्यबली
तृतीयभवने जातः सदा विक्रमी ॥ ७ ॥ तुर्ये मानसपी-
डितः सुतगते पुत्रार्थहीनोऽरिगे जेता शत्रुगणस्य सप्तम-
गते स्त्रीदुर्भगो बन्धभाक्॥ स्वल्पापत्यधनः शनौ नय-
नरुग्रंध्रे सशोको धनो धर्मे पुत्रधनान्वितो गुरुहितः स्त्री
द्वेषकारी जनः ॥ ८ ॥ बहुतुरंगधनो दशमे स्वभे पितृ-
वियोगयुतो दशमाब्दतः॥भवगते निधिलाभमुदान्वितो
व्ययगतेंत्यनितंविनितत्परः ॥ ९ ॥

शनि लग्नमें होवै तो मनुष्य आलसी, मलिनतायुक्त बाल्यावस्थामें रोगसे व्याकुल, कामदेवमें आसक्त बुद्धि, दरिद्री होवै, यदि लग्नका शनि स्वराशिमें होवै तो राजा वा राजतुल्य होवै, देश, ग्राम, नगरके अधिकारसहित, पंडित, सुन्दर देह होवे, दूसरा होवै तो धनसे बलवान होवै, तीसरा

हो तो सर्वदा पराक्रमी होवै ॥ ७ ॥ चौथेमें, मानसी पीडासे युक्त पंचममें, पुत्रधनसे हीन छठेमें शत्रुसमूहका जीतनेवाला सप्तममें स्त्री दुर्भगा होवै, बन्धन भोगे, धन पुत्र थोडे होवैं, अष्टममें नेत्ररोगी, शोकसहित, निर्द्धन होवै, नवममें पुत्र, धन, गुरुजनसहित और स्त्रीसे द्वेषकारी होवै ॥ ८ ॥ दशम में अपनी राशिका होवै तो बहुतसे घोडे धन रहैं अन्यराशियोंमें दशमवर्षसे पिताका वियोग पावै ग्यारहवां होवै तो उत्तम वस्तुलाभी, प्रशान्ततायुक्त, बारहवां होवै तो अत्यन्तस्त्रीमें आसक्त रहे ॥ ९ ॥

अथ ग्रहयोगफलानि।

संग्रामशस्त्रधनभाण्डयुतोर्कयुक्तेऽसत्यादिदुःखसहितः कुजसंयुते च ॥ ख्यातः पुनर्भवपदे शशिसौरियोगे माया पटुर्बुधयुते तपनात्मजे च ॥ १० ॥ नापितो भवति भास्करपुत्रे देवपूज्यसहिते भृगुयुक्ते॥ चित्रलेखलिपिकाव्यवित्तमो जायते नियतमेव मानवः ॥ ११

शनिके साथ ग्रहयोगफल कहते हैं। शनि सूर्य सहित होवै तो मनुष्य संग्राम, शस्त्र, धन, वर्त्तनोंसे युक्त रहे भौमयोगसे झूठ आदि दुःखयुक्त रहे चन्द्रयोगसे, पौनर्भव पदमें ख्यात होवै, बुधयोगसे, मायामें चतुर होवै ॥ १० ॥ गुरुयोगसे हज्जाम, शुक्रयोगसे अनेक रंगढंगके लेख, लिपि, काव्यजाननेमें श्रेष्ठ निश्चयसे होवै ॥ ११ ॥

अथ दृष्टिः।

दृष्टः सूर्येण सौरो जनयति महिषीगोधनाढ्यं कुजर्क्षे दृष्टश्चंद्रेण नीचप्रकृतिचलमतिर्नीचदारानुरक्तम् ॥ क्षुद्रं क्षुद्रांगनानामधरमधुपरं पानवंतं सयोषं दृष्टो भूम्यात्म

जैन द्रविणहरणकं दुष्टमांसाशिनं च ॥ १२ ॥ बुधेन दृष्टः प्रकरोति सौरो नरं प्रधानं बहुतस्कराणाम्॥सुखेन हीनं विभवेन वापि पापास्पदं यन्न करोति तन्न ॥१३॥ सुखनिधिधनभागी राजमंत्री कुजर्क्षे सुरपतिगुरुदृष्टे सूर्यपुत्रे नृपो वा ॥ परयुवतिपरस्त्रीसंगसौख्ये विभोगो भवति भृगुजदृष्टे सूर्यपुत्रे कुजर्क्षे ॥ १४ ॥

शनिपर ग्रहदृष्टिफल कहते हैं कि,मंगलकी राशिगत शनि पर सूर्यकी दृष्टि होवै तो, भैंस, गौधनसे सम्पन्न करता है, चन्द्रदृष्टिसे नीचप्रकृति, चञ्चलबुद्धि, और नीच स्त्रीमें आसक्ति, भौमसे क्षुद्र तथा क्षुद्रास्त्रियोंके अधरमधु पानमें तत्पर, स्त्रीसहित मद्यपानमें आसक्त, चोरीमें निरत, दुष्टमांसखानेवाला, होवै ॥ १२ ॥ बुधदृष्टिसे, चौरोंका श्रेष्ठ, सुख एवं ऐश्वर्यसे रहित, और कुकर्म जो कुछ न करे वही कमी है ॥ १३ ॥ गुरुदृष्टिसे सुख निधिवस्तु और धनका भोगने वाला होवै, अथवा राजा होवै, शुक्रदृष्टिसे परस्त्री परधन सङ्गसे सुखी, भोगरहित होवै ॥ १४ ॥

सौरे सितर्क्षे परवासचारी विद्वान् स्थिरो वाचि विनष्टसारः ॥ सूर्येण दृष्टे शिशिरांशुदृष्टे जायापरीवादपरप्रधानः ॥ १५ ॥ स्त्रीसेवकं हासरतं बुधेन दृष्टः शनिः शुक्रगृहे करोति॥परापवादं परकार्यनिष्ठं प्रियं च लोके गुरुणा च दृष्टः ॥ १६ ॥ स्त्रीमद्यसौख्यं निधिभाजनं तुल्यं शुक्रेण दृष्टोर्कसुतः करोति॥ शौर्य्योर्जितं भूपहितं सुन्दर देहमुदान्वितं भूमिसुतेन दृष्टः॥ १७ ॥

शनि शुक्रराशिमें सूर्य दृष्ट होवे तो परदेशमें फिरे, विद्वान् स्थिरबुद्धि होवै वचनसार कुछ होवै चन्द्रदृष्टिसे, औकि अपवादपरोंमें मुख्य होवै ॥ १५ ॥ बुधदृष्टिसे स्त्रीसेवक, तथा हंसीमें तत्पर गुरुदृष्टिसे दूसरेको कलंक लगानेवाला, परार्थकार्यमें तत्पर, और लोकोंमें प्रिय भी होवै ॥ १६ ॥ शुक्रदृष्टिसे स्त्रीमद्यके सुखवाला, उत्तमवस्तुका पात्र करता है. भौमदृष्टिसे पराक्रमसे बढाहुआ, राजाका प्रिय और प्रसन्नयुक्त होता है ॥ १७ ॥

धनेन हीनं बुधमंदिरस्थः करोति सौरः सुकुमारमूर्तिम्॥ चन्द्रेक्षिते राजसमं सुदेहं स्त्रीलब्धसत्कारसुखं धनाढ्यम् ॥ १८ ॥ भौमेन दृष्टः कुरुते पुमांसं विख्यातमल्लं विधनं कुबुद्धिम् ॥धनान्वितं नृत्यपरं सुगीतं बुधेन दृष्टो भुजयुद्धशीलम् ॥ १९ ॥ नृपालये प्रत्ययपात्रवंतं गुणप्रधानं बहुगुप्तरतम् ॥ दृष्टः सुरेज्येन शनिः करोति सतामभीष्टं बुधमंदिरस्थः ॥ २० ॥ स्त्रीमन्त्रशास्त्रकुशलं बुधमन्दिरस्थः स्त्रीणां हितं रविसुतो भृगुजेन दृष्टः योगागमज्ञमथ योगविदां वरिष्ठं कुर्यात्प्रधाननगरे दृढरक्षकं च ॥ २१ ॥

बुधराशिगत शनैश्चर सूर्यदृष्ट होवै तो मनुष्यको धनरहित और (सुकुमार) नाजुक शरीर करता है चन्द्रदृष्टिसे राजाके तुल्य, सुन्दर देह स्त्रीसे प्राप्त सत्कार और धनाढ्य करता है ॥ १८ ॥ भौमसे, प्रधान मल्ल निर्द्धन, कुबुद्धि, बुधसे धनवान नाचनेमें तत्पर, अच्छे गीत गानेवाला, और बाहुयुद्ध जाननेवाला करता है ॥ १९ ॥ गुरुदृष्टिसे, राजद्वारमें, प्रतीतिका

पांच गुणोंमें प्रधान, बहुत गुप्तरत्नोंसे युक्त और सज्जनोंको प्रिय करता है ॥ २० ॥ शुक्रदृष्टिसे स्त्रीरति शास्त्र, मंत्रशास्त्र में निपुण, स्त्रियोंका प्रिय योगशास्त्रज्ञ, योगमार्गजाननेवालों-में श्रेष्ठ और प्रधाननगरमें दृढरक्षक करता है ॥ २१ ॥

बाल्ये शनिश्चंद्रगृहेऽर्कदृष्टः पित्रा विहीनं सुखदारहीनम् ॥ चंद्रेक्षितो भ्रातृवियोगयुक्तं मात्राविहीनं धन धान्ययुक्तम् ॥ २२ ॥ भौमेक्षितो राजसमार्पितः स्वं स्त्रीबंधुनाशं विकलांगयष्टिम् ॥ आचारहीनं बहुदांभिकं च बुधेन दृष्टो रविजः करोति ॥ २३ ॥ जनयति गुरुपुत्रक्षेत्रभाजं मनुष्यं कनकधनमुदारं देवमंत्रीक्षितश्च ॥ असुरगुरुसुदृष्टोनंगलावण्ययुक्तं कुलपतिमतिमानैश्वर्ययुक्तं मनुष्यम् ॥ २४ ॥

चंद्रराशिगत शनि सूर्यदृष्ट होवै तो बाल्यावस्थामें पितासे रहित, पीछे सुख और स्त्रीसे हीन मनुष्यको करता है चंद्र दृष्टिसे भाईके वियोगयुक्त, मातासे रहित धन धान्यसे युक्त करता है ॥ २२ ॥ मंगलदृष्टिसे, धन राजाके अर्पण करे स्त्री तथा बंधुवर्गका नाश होवै शरीर विकलांग होवै बुधसे आचार रहित बडे दंभवाला करता है ॥ २३ ॥ गुरुदृष्टिसे पुत्र, गुरु, खेतीवाला, सुवर्ण धन उदार होता है शुक्रदृष्टिसे कामदेवकी कोमलता युक्त कुलमें श्रेष्ठ, मान ऐश्वर्य युक्त करता है ॥ २४ ॥

सिंहेऽर्कदृष्टो रविजः करोति प्रियान्वितं पापरतं कुभार्यम् ॥ धनेन सौख्येन विहीनगेहं पुत्रादिसौख्यं भृतकं मनुष्यम् ॥ २५ ॥ शिशिरकिरणदृष्टः सूर्यगेहेऽर्कजातो

जनयति युवतीनां भाजनं कीर्तियुक्तम् ॥ विपुलवसन धान्यं वल्लभत्वं नृपाणां बहुधनगृहपालं शस्त्रपालं नृपालम्॥२६॥भार्यापुत्रधनेन वर्जितगृहं भौमेन दृष्टः शनिः कुर्यात्पर्वतदुर्गवासानिरतं देशाद्विदेशाटनम् ॥ स्त्रीकृत्ये निरतं मलीमसतनुं दीनालसक्लेशिनं दृष्टश्चन्द्रसुतेन सूर्यतनयो नित्यं प्रवासान्वितम् ॥ २७ ॥ सिंहे पुरग्रामगणप्रधानं स्त्रीपुत्रलक्ष्मीपरिपूर्णगेहम् ॥ दृष्टः सुरेज्येन च भार्गवेण स्त्रीद्वेषिणं द्रव्यसुखं कविश्च ॥ २८ ॥

सिंहराशिगत शनि सूर्य दृष्ट होवै तो मनुष्यको प्रिया सहित करे पापमें तत्पर दुष्ट भार्या होवे घर धन तथा सौख्य से हीन रहे पुत्रादिका सुख मिले और पराया चाकर होवें ॥ २५ ॥ चंद्रदृष्टिसे स्त्रियोंका पात्र, कीर्तिमान् वस्त्र, अन्न बहुत, राजाका प्रिय, बहुतधन, घरका पालन करनेवाला शस्त्रोंका अधिकारी अथवा राजाही होजावे ॥ २६ ॥ भौम दृष्टिसे स्त्री पुत्र धनसे घर खाली रहे पर्वत किलाओंमें वास करे कभी देशसे विदेश फिरे स्त्रीके कृत्योंमें तत्पर, मलिन शरीर, गरीब, आलसी, क्लेशी होवै बुधदृष्टिसे नित्यप्रवासी रहे ॥ २७ ॥ गुरुदृष्टिसे नगर, ग्राम, जनसमूहमें प्रधान रहें स्त्री, पुत्र, धनसे घर भरा रहे, शुक्रदृष्टिसे स्त्रीका द्वेषी द्रव्य सुखवाला और कवि भी होता है ॥ २८ ॥

परसुतपितरं करोति सौरो गुरुभवनगतो रवीक्षितश्च ॥ शिशिरकरसमीक्षितःसुभार्याधनसुतशयनासनाऽन्वितश्च॥२९॥जनयति नृपमेकं सौम्यदृष्टोऽर्कपुत्रो नृपतिसममथाढ्यं स्वेन सौभाग्यवंतम् ॥ नृपसमनरनाथं मंत्रि-

णं वा बलेशं सुरपतिगुरुदृष्टो वर्जितः स्याद्विपद्भिः ॥ ३० ॥ वनाद्रिचारी भृगुजेन दृष्टे द्विमातृकः स्याद्गुरुगेहसंस्थे ॥ द्विपैतृको वा पितरो विशीलः संपन्नकर्मा मनुजः सदा स्यात् ॥ ३१ ॥

गुरुराशिगत शनिपर सूर्य दृष्टि होवै तो पराये पुत्रका पिता होवै अर्थात् किसीके पुत्रको गोद लेवै चंद्रदृष्टिसे, सुशीला स्त्री, धन, पुत्र, शय्या, भोज्यपदार्थोंसे भी युक्त रहे ॥ २९ ॥ बुधदृष्टिसे शनि मनुष्यको राजा करता है अथवा राजतुल्य, धनवान् अपने कृत्यसे (सौभाग्य) ऐश्वर्ययुक्त करता है गुरुदृष्टिसे राजाके समान बहुत मनुष्योंका स्वामी अथवा मंत्री, यद्वा सेनापति होवै और विपत्तियोंसे वर्जित रहे ॥ ३० ॥ शुक्रदृष्टिसे वन पर्वतोंमें फिरनेवाला होवै दो माता होवैं अथवा दो पिता अर्थात् एकसे जन्म, दूसरेका दायभाग पावै, शीलरहित होवै सर्वदा सब कामोंमें संपन्न रहें ॥ ३१ ॥

परान्नभोजी परवासशायी प्रवासशीलो बहुरोगयुक्तः ॥ सूर्येक्षिते सूर्यसुते स्वगेहे विरूपभार्यो भवति प्रजातः ॥ ३२ ॥ असत्यसंधश्चपलश्च पापः प्रियान्वितः कापटिकः स्वबंधौ ॥ चंद्रेक्षिते सूर्यसुतेऽतिदुःखी चोत्पन्नकामश्च निजालयस्थे ॥ ३३ ॥ शूरो विख्यातरणो विख्यातपराक्रमो महापुरुषः ॥ भवति शनौ कुजदृष्टे भारसहो नरेशकृत्यगुणः ॥ ३४ ॥ जनरहितं परदेशरतं सुभगं वित्तपुत्रवंतं वा ॥ गुरुदृष्टो रविपुत्रो जनयति निज मंदिरे जातम् ॥ ३५ ॥ भारसहस्राधिपतिर्विविधाचा

यौं विशालबुद्धिश्च ॥ शोभनवित्तो मल्लः शनिभे बुध वीक्षिते सौरे ॥ ३६ ॥ उत्पन्नभक्षतुष्टो विजनः परदेशगः सुभगः ॥ भार्गवदृष्टे सौरे निजनिलये वित्तसुख भागी ॥ ३७ ॥

शनि अपनी राशिमें सूर्यदृष्ट होवै तो पराया अन्न खाने वाला, परघरमें रहनेवाला परदेशमें बहुधा रहनेवाला, बहुतरोगोंसे युक्त और विरूप स्त्रीवाला होवे ॥ ३२ ॥ चंद्रदृष्टि से झूठ बोलनेवाला, चंचल, पापी, स्त्रीवाला अपने बंधुवर्गमें कपट करनेवाला अतिदुःखी और कामासक्त रहे ॥ ३३ ॥ भौम दृष्टिसे शूरमा, रणमें विख्यात, विख्यात पराक्रम वह आदमी भारसहारनेवाला, राजाके कृत्यकरनेवाला, गुणवान् होवै ॥ ३४ ॥ गुरुदृष्टिसे मनुष्योंसे रहित, परदेशवासी ऐश्वर्यवान् धन पुत्रवाला होवै ॥ ३५ ॥ बुधदृष्टिसे सहस्र धनका स्वामी अनेक कामोंमें आचार्य बडी बुद्धिवाला अच्छे धनवाला मल्ल होवै ॥ ३६ ॥ शुक्रदृष्टिसे जो प्राप्त होवै उसीको भोजन करके संतोषी, मनुष्योंसे रहित परदेश जाने वाला, ऐश्वर्यवान् और धन सुख भागी होवै ॥ ३७ ॥

अथांशफलानि ।

स्वांशे शनौ स्त्रीधनवित्तवान्स्यात्कुजांशके पापरतो जिघांसुः ॥ बुधांशके स्त्रीधनवान् स्वतंत्रः कुकर्मसंवृद्धधनोंऽगिरोंशे ॥ ३८ ॥ शुक्रांशके स्त्रीस्थितकर्मशीलः प्रेष्योगदातोऽर्कनवांशसंस्थे ॥ चंद्रांशके स्त्रीजनसेवकः स्यात्ताभ्यां सदा वृत्तिमुपैति जातः ॥ ३९ ॥

शनिके अंशफल कहते हैं, । शनि अपने नवांशमें होवै तो स्त्री, धन, वित्तवाला होवै भौमांशकमें पापमें तत्पर जीव घाती बुधांशमें, स्त्री धनवाला स्वतंत्र, गुरुके अंशकमें कुकर्मोंसे धनवान् होवै ॥ ३८ ॥ शुक्रांशकमें स्त्रियोंके करनेके कामोंको करै सूर्यांशकमें पराया (प्रेष्यं) पर कर्म करनेवाला, और रोगसे पीडित होवै, चंद्रांशकमें स्त्रीजनोंका सेवक होवै स्त्रियोंहिसे गुजारापावै ॥ ३९ ॥

त्रिंशांशफलम् ।

स्वे त्रिंशांशे धरणितनये स्त्रीविभूषो बलाढ्यस्तेजोयुक्तो भवति सहसा साहसे कर्मणीष्टः ॥ रोगग्रस्तो मृतयुवतिको दुःखपूर्णोऽन्यदारः स्वे त्रिंशांशे गतवति शनौ पुत्रभार्याविनाशः ॥ ४० ॥ गुरौ स्वभागे सुखबुद्धियुक्तस्तेजस्विता भोगयशो धनी स्यात् ॥ मेधाविताकाव्यकलाविवादशास्त्रार्थवेत्ता शशिजे स्वभागे ॥ ४१ ॥ बहुसुललितभार्यापुत्रसौभाग्ययुक्तः सुभगसकलदेहो भार्गवे स्वीयभागे ॥ निहितकरणभोगस्तत्तदर्थेषु नूनं भवति लघुसुतीक्ष्णो भाग्ययुक्तो ह्युदारः॥४२॥

त्रिंशांशफल सभीग्रहोंके कहते हैं । मङ्गल अपने त्रिंशांशकमें होवै तो अच्छी स्त्री अच्छे भूषणवाला, बलवान्, तेजस्वी, साहसके कामोंमें श्रेष्ठ होवै, शनि अपने त्रिंशांशमें होवै तो रोगसे ग्रस्त रहे स्त्रीमरजावै दुःखसे भरारहे परस्त्री घरमें रक्खे, स्त्री पुत्र हानि होवै ॥ ४० ॥ गुरु अपने त्रिंशांशमें होवै तो, सुखी बुद्धिमान्, तेजवान् भोगभोगनेवाला, यशस्वी और धनवान् होवै । बुध अपने त्रिंशांशमें होवै तो बुद्धिमान्

काव्यकी कला, विवादशास्त्र, न्यायशास्त्रादि जाननेवाला होवै ॥ ४१ ॥ शुक्र अपने त्रिंशांशमें होवै तो बहुत एवं सुन्दर स्त्री पुत्रोंके ऐश्वर्ययुक्त रहे, समस्त देह अच्छे होवें निश्चय योग्य ही काम करे न्यायआदिके योग्य अर्थमें दृढ होवै, हलका और तेजस्वभाव होवै भाग्यवान् तथा उदार भी होवै ॥ ४२ ॥

अर्थांतर्दशा।

रवितनयदशायां पुत्रदारार्थनाशो भवति भयमनर्थौ भास्करेंतर्दशास्थे ॥ जनयति मरणं वा स्त्रीहृतिं बन्धुनाशं रवितनयदशायां संस्थितः शीतरश्मिः॥४३॥ देशभ्रंशं व्याधिदुःखोपघातं कुर्याद्भौमः सूर्यसूनोर्दशायाम् ॥ मानं सौख्यं भाग्यसंग्रामलक्ष्मीयुक्तं चांद्रिर्भाग्यवंतं मनुष्यम् ॥ ४४ ॥ ग्रामाधिकारनृपमंत्रिकलत्रपुत्रसंपत्तिसौख्यसहितः सुरराजपूज्ये ॥ अंतर्दशामुपगते रविजस्य शुक्रे पत्नीनिधानसुतसौख्ययुतो नरः स्यात् ॥ ४५ ॥ इति महादेवपाठकविरचिते जातकशिरोमणौ शनिदशाध्यायः षोडशः ॥ १६ ॥

शनिअंतर्दशाफल कहते हैं ॥ शनिदशामें सूर्यका अन्तर होनेमें पुत्र स्त्री धननाश होता है भय, तथा अनर्थ भी होता है चन्द्रांतरमें स्त्रीमरण, अथवा स्त्रीहरण, बन्धुनाश, करता है ॥ ४३ ॥ मङ्गल शनिदशांतरमें देश छुटाता है, रोगदुःख, चोटलगनेसे क्लेश करता है, बुधमनुष्यको मान सुख, ऐश्वर्य संग्राममें विजय, धनदेता है भाग्यवान् करता है ॥ ४४ ॥ गुरु

अन्तर, ग्रामके अधिकार, राजमंत्रिता, स्त्री पुत्र धन संपत्ति-सुख सहित देता है ॥ ४९ ॥ इति जातकशिरोमणौ माहीधरी-भाषाटीकायां षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

अथ दशारिष्टम् ।

पापग्रहः पापदशामुपेत्य करोति पुंसां विपदोऽरियोगे ॥ स एव नीचेऽस्तमितोऽरिगेहे रंध्रेऽथवा मृत्युकरश्च पुंसः ॥ १ ॥ क्रूरालये षष्ठगतोऽथ रंध्रे तयोरधीशेन च दृष्ट-मूर्तिः ॥ पापग्रहः स्वस्य दशामुपेत्य ददाति मृत्युं पुरु-षस्य नूनम् ॥ २ ॥ परस्परं सौरिकुजौ दशायामंतर्द-शायां कुरुते विनाशम् ॥ दीर्घायुषं चापि न संशयोऽत्र रंध्रापि ये चैकतमे विशेषात् ॥ ३ ॥ लग्नाधिनाथस्य रिपुर्ग्रहो यो मृत्युप्रदो लग्नदशामुपेत्य ॥ नीचो विर-श्मिर्निधनारिसंस्थो विशेषतो मृत्युद एव पुंसः ॥ ४ ॥ अरिष्टकर्त्ता यदि जन्मकालेरिष्टस्य भंगोपि यथाकथं-चित् ॥ अंतर्दशारिष्टकरी च तस्य प्रवेशकाले मरणं ध्रुवं स्यात् ॥ ५ ॥ शुभोपि पापग्रहवत्प्रकल्प्यो मृत्यु-प्रदो नीचविहीनरश्मिः ॥ पापारिगेहे तु गतोऽथ रंध्रे रंध्राधिपो वा सति लक्षणेऽस्मिन् ॥ ६ ॥

दशारिष्टविचार है कि, पापग्रह पापग्रहदशामें होवै और शत्रुग्रह युक्त होवै तो मनुष्योंको विपत्ति करता है वही ग्रह नीचराशिमें हो, अथवा अस्तंगत, शत्रुगृही, यद्वा अष्टमभा-वमें होवै तो मृत्यु भी करता है ॥ १ ॥ पापग्रहकी राशिमें ६ । ८ भावमेंसे किसीमें हो और ६ । ८ भावाधीशोंसे दृष्ट हो तो

वह पापग्रह अपनी दशामें निश्चय मृत्यु देता है ॥ २ ॥ शनि मङ्गल परस्पर दशा अंतर्दशामें होनेसे विनाश करते हैं इन-योगोंमें विशेषता यहभी है कि, मृत्युकर्त्ता ग्रह अष्टमेश तथा लग्नेश आप ही होवै तो दीर्घायु करता है इसमें संशय नहीं ॥ ३ ॥ जो लग्नेशका शत्रुग्रह है वह लग्नदशामें प्राप्तहो-नेमें मृत्यु देता है, यदि वही नीचगत, रश्मिहीन अस्तंगत होकर ८ । ६ भावमेंसे किसीमें होवै तो पुरुषको विशेषकरके मृत्यु ही देता है ॥ ४ ॥ जन्मकालमें अरिष्टकर्त्ता ग्रह किसी-प्रकार अरिष्टभंग भी करता होवै तो उसकी सारी दशा अरिष्टी नहीं होती किन्तु अंतर्दशा अरिष्टी होती है अरिष्ट-भंगकर्त्ता न हो तो प्रवेशकालमें ही निश्चय मरण देता है॥५॥ जो ग्रह नीचका तथा हीनरश्मि, पापराशि शत्रुराशि अथवा अष्टममें हो यद्वा अष्टमेश होवै तो इनलक्षणोंसे शुभग्रह भी पापग्रहके तुल्य मृत्युकर्त्ता जानना ॥ ६ ॥

आरंभकाले बलवान्दशाया अंतर्दशायाश्च पतिर्ग्रहो यः ॥ शुभग्रहैर्वीक्षितविग्रहश्च रिष्टस्य भंगं कुरुते सदैव ॥ ७ ॥ क्रूरोपि सौम्यग्रहसंगमस्थस्तद्वर्गदृग्योगगतो बलीयान् ॥ करोति नैवं मरणं न बंधं नो वापमृत्युं पुरुषस्य नूनम् ॥८॥ अंतर्दशापतिश्चेत्केंद्रगतः सौम्यसं दृष्टः॥क्षपयाति समस्तरिष्टं प्रवेशगे जन्मसये वा ॥ ९ ॥

अब दशारिष्ट भंग कहते हैं कि, दशारंभकालमें दशा एवं अंतर्दशाधीश जो ग्रह है वह बलवान् होवै शुभग्रहोंसे युक्त दृष्ट होवै तो सर्वदा अरिष्ट भंग करता है ॥ ७ ॥ क्रूरग्रह भी शुभग्रहके साथ हो यद्वा शुभग्रहके राश्यादिमें हो बलवान् हो, तो मनुष्यको निश्चय, मरण, बन्धन, अपमृत्यु कुछ नहीं

करता ॥ ८ ॥ अंतर्दशेश यदि केंद्रगत, शुभदृष्ट होवै तो समस्त अरिष्ट जन्ममें वा दशाप्रवेशमें भंग करदेता है ॥ ९ ॥

दशाधिनाथो बलवर्जितः स्यादंतर्दशापो बलसंयुतश्च ॥ अंतर्दशारिष्टगणः प्रयाति प्राहुर्मुनीशा विलयं च नूनम् ॥१०॥ अरिष्टभंगो यदि जन्मकाले दशाप्रवेशेऽपि च रिष्टभंगः ॥ अवाप्य कष्टं च शरीरयोगे रोगाद्विमुक्तो भवतीह मर्त्यः ॥ ११ ॥ दशांतरात्माधिपती ग्रहौ द्वौ कालेंतराया यदि संगतस्थौ ॥ शुभोदयी चेत्प्रकरोति नूनं दशोत्थरिष्टस्य सदैव पुंसः ॥ १२ ॥ इति श्रीजातकशिरोमणौ दशारिष्टभंगाध्यायः सप्तदशः ॥१७॥

यदि दशेश बलहीन और अंतर्दशेश बलवान् होवै तो अंतर्दशोक्त रिष्टसमूह निश्चय नष्ट होता है यह मुनीश्वर कहते हैं ॥ १० ॥ अरिष्टोदशा अंतर्दशामें यदि जन्म काल वा दशा प्रवेशकालमें अरिष्टभंगयोग होवै तो अरिष्ट पायकर शरीर रोगसे निर्मुक्त होजाता है ॥ ११ ॥ दशांतर्दशाधीश दोनों ग्रह यदि जन्म वा प्रवेशकालमें एकत्र होवैं और वे शुभ, तथा उदयी होवैं तो सर्वदा पुरुषके दशाजन्य रिष्टका नाश करते हैं ॥१२॥ इति जातकशिरोमणौ माहीधरीभाषाटीकायामरिष्टभंगाध्यायः सप्तदशः ॥ १७ ॥

अजादिभवनोपगे शशिनि राशिजातं फलं क्रियादिभवनोदये तनुभृतां समस्तं हितम् ॥ रविप्रभृतिदृष्टिजं तदपि वल्गितुं सूरिभिर्दशासु शशिनो मया निगदितं च यद्योगजम् ॥ १ ॥

ग्रंथकर्त्ता कहता है कि, मेषादिराशिगत चंद्रमाके राशिफल तथा मेषादि लग्नफल और प्रत्येक राशिगत सूर्यादिग्रहोंपर सूर्यादिकोंके दृष्टिफल जो विद्वानोंने कहेहैं तथा ग्रहयोगजन्यफल सब मैंने चंद्रदशाध्यायमें कहदिये हैं. इसलिये यहां दुबारै नहीं कहे. उनकी आवश्यकता इसजगहपर है सो पाठक उसी चंद्रदशाध्यायसे यहां भी जानलेव ॥ १ ॥

उच्चत्रिकोणनिजमंदिरमित्रगेहे तन्वादिभावसहितास्तपनादयश्च ॥ पुष्णंति भावजफलानि निजानि सर्वे निघ्नंति नीचरिपुलुप्तकराः खगेंद्राः ॥ २ ॥ अस्मिन्नर्थे गर्गः--स्वनीचरिपुगेहस्थो ग्रहो भावविनाशकृत् ॥ उदासीनः सुहृत्स्वर्क्षे स्वोच्चमूलत्रिकोणगः ॥ ३ ॥ पुष्णाति स्वस्वभावोक्तफलं नात्र विचारणा ॥ तथा च मिहिरः ॥ सुहृदरिपरकीयस्वर्क्षतुंगस्थितानां फलमनुपरिचिंत्यं लग्नदेहादिभावे ॥ ४ ॥

सूर्यादिग्रह लग्नादिभावोंमें उच्च, मूलत्रिकोण स्वगृह मित्रराशिमें होनेसे भावके उक्त निजफलको सभी पुष्ट करते हैं और नीचगत अस्तंगत ग्रह उनफलोंको नष्ट करदेते ह ॥ २ ॥ इस अर्थको पुष्टकरनेवाला गर्गाचार्यका वाक्य भी ह, अपने नीचराशि शत्रुराशिगत ग्रहभावका नाश करता है जो स्वराशि मूलत्रिकोण उच्चमें है वह अपना भावोक्त फलको पुष्ट करता है. बीचवाला (उदासीन) मध्यम फल करता है इसमें विचार नहीं । ऐसा ही वराहमिहिराचार्यका भी कहा है कि मित्र, शत्रु, अन्यराशिमें, तथा स्वराशि उच्चस्थित ग्रहोंका फल लग्नदेहादि भावों करके शुभाशुभ विचार करना ॥ ३ ॥ ४ ॥

तथा च फलितार्थः। अपत्यभावे धनपुत्रहीनः स्त्रीदुर्भगः कामगते पतंगे ॥ पुष्णाति भावोक्तफलं हि सर्वं सूर्यः स्वतुंगादिशुभालयस्थः ॥ ५ ॥ सौख्यान्वितोथ तनये सुतविद्ययाढ्यः शुक्रस्य पंचमगतस्य फलं यदुक्तम् ॥ नीचास्तशत्रुभवनोपगतो निहंति पुष्णाति तुंगनिजामित्रगृहस्थितश्च ॥ ६ ॥

इसीका फलितार्थ है कि, जैसे सूर्य पंचम होनेमें मनुष्य धन पुत्रहीन तथा सप्तम होनेमें दुर्भगा स्त्रीवाला होता है यही सूर्य उच्चादिमें हो तो धन पुत्र स्त्रीका सौख्य करता है यदि नीचादिमें होवै तो अपने उक्तक्लेश फलको पुष्ट करता है ॥५॥ तथा शुक्रसे पंचम होनेमें जो पुत्र विद्यासुख आदि फल कहे हैं यदि शुक्र पंचम, नीच, अस्त, शत्रुराशिगत होवै तो उक्तफलोंको नष्टकरता है. यदि उच्च मित्रादिराशिगत होवै तो उक्तफलोंको पुष्ट करता है ॥ ६ ॥

अथाश्रयफलम् ।

कुलस्य तुल्यः स्वगृहस्थितेन कुलस्य मान्यः स्वगृहस्थिताभ्याम् ॥ मान्यस्त्रिभिर्बंधुजनस्य जातो द्वित्रिस्वगेहोपगतैः श्रियाढ्यः ॥७॥ धनी चतुर्भिः स सुखी सरूपैः षड्भिः क्षितीशः खलु राजराजः ॥ स्वगेहगैः सप्तभिरेव तावद्गुणान्विताः स्युर्ग्रहसंख्यया च ॥ ८ ॥

आश्रययोगफल कहते हैं कि, जिसका एक ग्रह स्वराशिगत हो वह अपने कुलके (तुल्य) यथा योग्य होता है, दोस्वगृहीसे कुलमें मान्य. तीनसे बंधुजनका मान्य होता है तथा (श्री) शोभा वा धनसे संपन्न भी २ । ३ स्वगृहगतोंसे

होता है ॥ ७ ॥ चार ग्रह स्वगृही होनेमें धनवान्, पांचमें सुखी, छः में राजा, सातमें राजराज भी होता है। और ऐसेही ग्रहसंख्या अधिक अधिक होनेमें मनुष्य उक्त गुणोंसे युक्त भी उत्तरोत्तर अधिक होते हैं ॥ ८ ॥

मित्रगृहाश्रयफलम्।

पराश्रयी मित्रगृहस्थितेन परस्वपोष्यो मनुजः सुहृद्भ्याम् ॥ मित्रेण पुष्टस्त्रिभिरेव नित्यं पुष्णाति बंधून्सुहृदालयस्थैः ॥ ९ ॥ गणाधिपः पंचभिरेव मित्रैः षड्भिर्बलेशो नृपतिः सरूपैः ॥ निःस्वो विसौख्यो जडभोगबंधवधैः समेतो ह्यरिनीचसंस्थैः॥१०॥ इति जातकशिरोमणावाश्रयाध्यायोष्टादशः ॥ १८ ॥

एक ग्रह मित्रगृही होवै तो पराये आश्रयमें रहे दो होतो पराये धनसे पालन हो तीन हों तो मित्रसे युक्त, चारमें बन्धुजनका पालन करे ॥ ९ ॥ पांच ग्रह मित्रराशिगत होवै तो बहुत मनुष्योंका अधिपति, छः ग्रह हों तो सेनापति सात हों तो राजा होवै, और ऐसे ही शत्रुराशि, नीचराशिमें एक ग्रह हो तो निर्द्धन, दोसे सुखरहित तीनसे मूर्ख, चारसे भोग रहित, पांचसे बन्धनयुक्त और छः ग्रहोंसे बधपनसे युक्त होते हैं ॥ १० ॥ इति जातकशिरोमणौ माहीधरीभाषाटीकायामाश्रयाध्यायोष्टादशः ॥ १८ ॥

अथकारकयोगः ॥ केंद्रेषु मूलस्वगृहोच्चसंस्थाः परस्परं कारकसंज्ञकाः स्युः ॥ कर्मस्थितो यः स्वगृहादिसंस्थः स कारकाख्यः कथितश्च तेषाम् ॥ १ ॥ स्वोच्चस्थिताः सूर्ययमेज्यभौमा जन्मोदये कर्कटगे सुधांशौ ॥ परस्परं

कारकनामसंस्था आज्ञांबुगश्चंद्रमसो न चन्द्रः ॥ २ ॥ लग्नकेंद्राद्बहिस्थस्य स्वत्रिकोणोच्चमंदिरे ॥ समस्य दशमे स्थाने स स्यात्तस्यापि कारकः ॥ ३ ॥ निसर्गतोपि मित्रं स्यात्तत्काले मित्रमागतः ॥ स यस्य दशमे खेटे स तस्यापि च कारकः ॥ ४ ॥

कारकयोग कहते हैं कि, केन्द्रोंमें कोई ग्रह अपने अपने मूलत्रिकोण, स्वगृह, उच्चमें होवै परस्पर कारक होते हैं उनमें भी जो स्वगृहादिस्थित दशमभावमें हों वह कारक संज्ञक उनमें होता है ॥ १ ॥ सूर्य शनि बृहस्पति मंगल अपने उच्च-राशियोंमें हों लग्नमें कर्कका चन्द्रमा हो तो परस्पर कारक होते हैं चन्द्रमासे १० । ४ में भी ये ग्रह कारक होते हैं लग्नसे ४ । १० में चन्द्रमा ऐसा होनेपर भी कारक नहीं होता ॥ २ ॥ जो ग्रह लग्नही केंद्रके बाहर स्थित समदशमस्थानमें स्वत्रि-कोणोच्चमें हो, वह उसका भी कारक होता है ॥ ३ ॥ जो नैसर्गिक मैत्रीसे मित्र है और तत्कालमें भी मित्र हो और उसके दशममें हो वह उसका भी कारक होता है ॥ ४ ॥

कारकसंज्ञाप्रयोजनम् ।

वर्गोत्तमे जन्म शुभं वदंति शुभं शुभो वेशिगृहे यदि स्यात् ॥ केन्द्रेषु पूर्णेषु च कारकाख्यैः शुभैश्च केंद्रोप-गतैः शुभं च ॥ ५ ॥ लग्नांबुयामित्रनभो गृहस्थैर्यत्का-रकाख्या गदिताः पुराणैः ॥ सद्दृष्टिवेधो बलवान् हि मूलं तेषां पुराणा यवनादयश्च ॥ ६ ॥ अवंशजातोपि च कारकाख्यैः प्राधान्यतां याति वदान्यताभिः ॥ भूपाल-

वंशप्रभवा महीपा भवंति लक्ष्म्या सह कारकाख्यैः॥७॥
इति श्रीजा०कारकयोगो नामोनविंशोध्यायः ॥ १९ ॥

कारक प्रयोजन कहते हैं वर्गोत्तममें जन्म शुभ कहते हैं, सूर्यसे शुभग्रह वोशिग्रहमें हो, केंद्रोंमें कारक ग्रह हो तो भी शुभ फल होता है शुभग्रह केंद्रोंमें भी शुभ फल करते हैं ॥५॥ लग्न चतुर्थ सप्तम दशम स्थानोंमें जो पहिले आचार्योंने कारक कहे हैं उनके बलवान् होनेका कारण दृष्टिवेध है यह प्राचीन यवनाचार्य कहते हैं ॥ ६ ॥ कारकसंज्ञकोंमें जन्म मनुष्य जो राजवंशमें न हो वह भी अपने चातुर्यसे श्रेष्ठ होता है जो राजवंशी हैं वे धनवान् राजा होते हैं ॥ ७ ॥ इति जातकशिरोमणौ माहीधरीभाषाटीकायां कारको नामोनविंशोध्यायः१९

अथाष्टवर्गाः, तत्रादौ रवेः।

अर्कः स्वात्रिसुतारिष्फरहितश्चन्द्रात्रिषट्खाप्तिगोसौम्या
त्स्वादिव धीशुभोपचयगः सोन्त्यः शुभश्चन्द्रजात् ॥
जीवाद्धर्मसुताय शत्रुषु शुभः शुक्रात्स्मरांत्यारिगः शौरा-
त्स्वादिव मन्दिरोपचयगः स्वांत्यः शुभो लग्नतः ॥१॥

अब अष्टवर्ग गणना कहते हैं, प्रथम सूर्य अपने स्थानसे १ । २ । ४ । ७ । ८ । ९ । १० । ११ में रेखा पाता है चन्द्रमासे ३ । ६ । १० । ११ मंगलसे १ । २ । ३ । ४ । ७ । ८ । ९ । १० ११ बुधसे ५ । ९ । ३ । ६ । ११ । १० । १२ बृहस्पतिसे ९ । ५ । ११ ६ शुक्रसे ७ । १२ । ६ शनिसे १ । २ । ४ । ७ । ८ । ९ । १० । ११ लग्नसे ३ । ६ । ११ । १० । १२ । ४ में रेखा पाता है अन्यस्थानोंमें शून्य रखना यह सर्वत्र क्रम है ॥ १ ॥

अर्कात्साष्टमहीधरोपचयगः स्वात्सास्तचंद्रोपगः सव्यर्का-
र्कमहीसुतात्स्वसुततो धीत्र्याप्तिकेंद्रांकगः ॥ जीवात्

द्रसुतव्ययाप्तिषु भृगोर्द्व्यादिकिनन्दाश्वगः सायः सूर्य-
सुतात्रिधीभवरिपौ षट् त्र्यायषट्सूदयात् ॥ २ ॥

चन्द्राष्टकवर्गेः सूर्यसे ८ । ७।३ । ६ । १० । ११ अपनेसे ७ । १ ३ । ६ १० । ११ मंगलसे ९ । ५ । २ । ३ । ११ । १० बुधसें ५ । ३ ११ । १ । ४ । ७ । १० । ९ । गुरुसे १ । ४ । ७।१० । ९ १२ । ११ शुक्रसे ५ । १० । ३ । ९ । ७ । ११ शनिसे ३।५।११। ६ लग्नसे १० । ३ । ११ । ६ में रेखा अन्यभावोंमें बिंदु पूर्ववत् जानने ॥ २ ॥

भौमस्तूपचयेष्विनात्रिरिपुगः सायः शुभश्चंद्रतः स्वा-
त्केन्द्राष्टसुताप्तिगो बुधगृहात्षट्त्र्यायधीस्थः शुभः ॥
जीवाच्छत्रुदशादिगो भृगुसुतात्षल्लाभरिष्फाष्टगः शौरा-
त्केंद्रशुभायमृत्युषु तनोस्त्र्याद्याप्तिधीषट्खगः ॥ ३ ॥

मंगलाष्टकवर्गमें सूर्यसे ३ । ६ । ११ । १० में चन्द्रसे ३ । ६ ११ अपनेसे १ । ४ । ७ । १० । ८ । ५ । ११ बुधसे ६ । ३ । ११ ५ गुरुसे ६ । १० । ११ । १२ शुक्रसे ६ । ११ । १२ । ८ शनिसे १ । ४ । ७ । १० । ९ । ११ । ८ लग्नसे ३ । १ । ११ । ५ । ६ । १० में रेखा अन्यशून्य ॥ ३ ॥

बुधस्य ।

अर्काद्धीत्यसुखाय वैरिषु शुभः षट्त्र्यायरंध्राब्धिदिक्प्रा-
प्तश्चन्द्रपदात्कुजाद्विनवदिक्शैलाष्टरूपाब्धिषु ॥ स्वा-
द्भूगोग्निदिगन्त्यधीभवरसो प्राप्त्यष्टषट्प्रांत्यगो देवेज्या-
त्कुजवत्सितार्कतनयाल्लग्नाच्छुभश्चंद्रवत् ॥ ४ ॥

बुधाष्टवर्गमें सूर्यसे ९ । १२ । ४ । १ । ६ चन्द्रसे ६ । २ । ११ ८ । ४ । १० भौमसे २ । ९ । १० । ७ । ४ । १ । ८ अपनेसे १ । ९

३।१०।१२।५।११।६ गुरुसे ११।८।६। १२ शुक्रसे ६।२।११।८।४।१० शनिसे भी ६।२। ११।८।४।१० लग्नसेभी, ६।२।११।८।४।१० में ॥ ४ ॥

त्यक्त्वा रिष्फसुतारिभं दिनपतेः शन्धीद्विलाभाद्रिग-
श्चन्द्रादागृहदिङ्नगाष्टसुकुजात् त्र्यूनार्कवत्स्वाद्गुरुः ॥
रूपद्व्यब्धिषडायधीदशगतो ज्ञात्साद्रिलग्नाच्छुभः शुक्रा-
त्स्वदिशोत्तिगो रिपुगतो मन्दत्रिधीषड्व्ययैः ॥ ५ ॥

गुरुके अष्टकवर्गमें सूर्यसे १।२।३।४।७।८।९।१० ११ चन्द्रमासे ९।५।२।११ ७ मंगलसे १।२।३।४।१०। ७।८ गुरुसे १।२।४।७।८।९।१०।११ बुधसे १।२। ४।६।११।५।१० लग्नसे १।२।४।६।११।५।१०।७ शुक्रसे ५।२।१०।११।९।६ शनिसे ३।५।६।१२ में रेखा अन्यस्थानोंमें बिंदु ॥ ५ ॥

शुक्रोर्काव्ययलाभमृत्युषु विधोराध्यष्टगोत्यात्तिगो भौमा-
त्र्यन्त्यषडंकधीभवगतो ज्ञात्र्यङ्कषड्धीभवे ॥ इज्या-
दष्टचतुष्कपञ्चमगतस्वा च्चन्द्रवद्दिग्युतो मन्दात्त्रित्रयना-
गगोत्रयगतो लग्नाच्छुभश्चन्द्रवत् ॥ ६ ॥

शुक्राष्टकवर्गमें सूर्यसे १२।११।८।चं० १।२।३।४। ५।८।९।११।१२ मंगलसे ३।१२।६।९।५।११ बु० ३।५।६।९।११ बृ० ८।९। १०।११।५ शनिसे १।२ ३।४।८।५।१० शनिसे ३।४।५।८।९।१०।११। लग्न से १।२।३।४।५।८ में रेखा ॥ ६ ॥

केंद्रायाष्टधनेष्विनादुपचये दिग्वर्जिते चंद्रतो भौमाद्धि-
कत्रितये सधीत्रयरिपौ नागादिपंचारिषु ॥ ज्ञाज्जीवाद्धि

पुलाभधीव्ययगतः शुक्राद्ययायारिषु स्वादायत्रिसुतारि·
· षूपचयगः सन्ध्यादिगो लग्नतः ॥ ७ ॥

शनिके अष्टकवर्गमें सूर्यसे १ । ४ । ७ । १० । ११ । ८ । २ चंद्रसे ३ । ६ । ११ । भौमसे १० । ११ । १२ । ५ । ३ । ६ बुधसे ८ । ९ । १० । ११ । १२ । ६ गुरुसे ६ । ११ । ५ । १२ शुक्रसे १२ । ११ । ६ अपनेसे ११ । ३ । ५ । ६ लग्नसे ३ । ६ । १० । ११ । ४ । १ । ७ में रेखा अन्योंमें बिंदु जानने ७ सभी ग्रहोंके समस्त रेखा संख्या है कि, सूर्यके ३९ चं० ४७ मं ३९ बु० ५४ बृ० ५६ शु० ५१ श० ३९ समस्त होते हैं ॥ ७ ॥

दशारंभकाले: ग्रहः पृष्ठवर्ती दशांते फलं दातृकामो जनेभ्यः ॥ दशादौ ग्रहः शीर्षलग्नोदयस्थः प्रवेशे दशायाः फलं स्वं ददाति ॥ ८ ॥ शुभाशुभैर्मिश्रितमष्ट कृत्वा फलं ग्रहाणां प्रतिवेश्मजातम् ॥ चारक्रमादष्टक वर्गजं यत्तदंतरं सर्वखगेषु धार्यम् ॥ ९ ॥ यस्मिञ्छुभं वाप्यशुभं समं वा तन्वादि भावे तदशेषमेव ॥ चारक्रमा त्तत्र गतो द्युगामी ददाति पुष्टं लघु मध्यमं वा ॥ १० ॥

अष्टकवर्गफलविपाक, कहते हैं कि, दशारंभसमयमें दशापति, पृष्ठोदयी लग्नमें होवै तो फल दशाके अंत्यमें देता है शीर्षोदयमें दशारंभकालमें होवै तो दशाप्रवेश समय अपना फल मनुष्योंको देता है ॥ ८ ॥ अष्टकवर्गके शुभाशुभ अर्थात रेखा बिंदुको जोडके प्रत्येक स्थानका शुभाशुभफल, अष्टकवर्गमें (ग्रहचारक्रम) गोचर विचारसे होताहै ऐसेही अंतर सभी ग्रहोंमें जानना ॥ ९ ॥ जिसमें शुभाधिक, वा अशुभाधिक,

यद्वा सम जैसा रेखा, शून्यगणनासे होवै वैसा लग्नादिभावोंमें गोचरचारक्रमसे उन उन स्थानोंमें प्राप्तग्रह पुष्ट, अल्प वा मध्यम फल देता है तात्पर्य यह जहां रेखा अधिक तहां शुभाधिक शून्याधिकमें अशुभाधिक, सममें समफल देता है जिस भावमें रेखा अधिक हैं उसमें जब गोचरमें ग्रह होगा तब उस भावोत्थ शुभाधिक होगा, ऐसे ही शून्याधिकमें अशुभाधिक सममें सम जानना ॥ १० ॥

आदौ फलं सूर्यकुजौ विधत्तां मध्ये गतौ देवसुरारिपूज्यौ ॥ गृहावसानोपगतौ शनीन्दू सुधांशुसूनुः फलदः सदैव ॥ ११ ॥ उपचयगृहमित्रस्वर्क्षतुंगालयस्थस्त्वशुभफलनिहंता पुष्टकारी शुभस्य ॥ अपचयगृहनीचारातिगो हंति चेष्टं द्विगुणमशुभरूपं राशिगं पाचयंति ॥ १२ ॥ इति श्रीमहादेवविरचिते जातकशिरोमणावष्टकवर्गो नाम विंशोध्यायः ॥ २० ॥

सूर्य मंगलदशाके आदिमें बृहस्पति शुक्र मध्यमें शनि चंद्र अंतयमें फल दशाका देते हैं अथवा आदि मध्यांतराशिस्थितमें जानना और बुध सभी फल सर्वदा ही देता है ॥ ११ ॥ जो ग्रह उपचयस्थान मित्रराशि, स्वराशि, उच्चराशिमें हो वह अशुभ फलको नाश करके शुभफलको पुष्ट करता है और उपचयरहित स्थानमें, नीचराशि, शत्रुराशि में हो वह शुभफलका नाश करके राशिजन्य अशुभको परिपाक करते हैं ॥ १२ ॥ इति जातकशिरोमणौ माहीधरीभाषाटीकायामष्टकवर्गो नाम विंशोध्यायः ॥ २० ॥

होरेंदोर्दशमस्थितेन रविणा तातस्य वस्वन्वितो मातुश्चैव सुधांशुना क्षितिभुवा द्रव्येण वै वैरिणः ॥ मित्र

प्रार्थनया धनं शशिसुतेनेज्येन वस्वान्वितो भ्रातुः स्त्रीधनवत्सितेन शशिना भृत्यार्जनं वांछति ॥ १ ॥ लग्नाद्भास्करतोपि वा शशधरान्मध्यस्थितो यो ग्रहस्तस्यांशकनायकस्य गदितं यत्कर्मणा जीवनम् ॥ आजीवं मनुजोऽर्जनं जनयति द्रव्यं च तत्कर्मणा सर्वं व्योमचिरोदितेन विधिना द्रव्यागमं वांछति ॥ २ ॥

कर्माजीवी कहते हैं कि, लग्न अथवा चंद्रमासे दशम सूर्य हो तो पिताके धनसे आजीवन करे, लग्नसे चंद्रमा दशम होवै तो माताके धनसे, लग्न वा चंद्रमासे मंगल दशम होवै तो शत्रुके धनसे, बुध होवै तो मित्रोंसे मांगे धनसे, गुरु हो तो भाइयोंके धनसे, शुक्र होवै तो स्त्रीके धनसे, शनि होवै तो नौकरसे आजीवन करे ॥ १ ॥ लग्न चंद्र वा सूर्यसे दशमगत जो ग्रह हो वह जिसके नवांशकमें है उसके अनुरूप कर्मसे मनुष्य आजीवन करता है, धन भी उसी कर्मसे कमाता है समस्त धनार्जन कथ्यमान ग्रह कृत्यसे करता है॥२॥

अर्कांशे कनकोणभेषजभिषक्काष्ठैः सुगंधैस्तृणैश्चंद्रांशे वनिताश्रयेण जलजैर्मुक्ताप्रवालादिभिः ॥भौमांशे कनकादिधातुनिवहैः शैलेयशस्त्राग्निभिः सौम्यांशे लिपिलेख्यकाव्यपठनव्यापारगन्धादिभिः ॥ ३ ॥जीवांशे पदगग्रहांशकपतौ विप्राद्बुधाद्वा करैः काव्यांशे रजतादिपण्यमणिगोवाहादिसंवाहनैः ॥ सौरांशे गमनागमैरथवधैराखेटकाद्यैर्द्धनं मित्रारिस्वगृहस्थितैरपि खगैस्तत्तत्सकाशाद्धनम् ॥ ४ ॥ लग्नस्वायगृहस्थितैः शुभ

खगैर्द्रव्यार्जनं कर्मणा येनैवार्जयति स्वतुंगभवने सूर्ये स्वशक्त्यार्जितम्॥ कर्माजीवनवांशराश्यधिपती नीचास्तशत्रुस्थितौ न प्राप्नोति नरस्ततो बहुधनं कृच्छ्रात्ततो जीवति ॥ ५॥ इति जातकशिरोमणौ कर्माजीवाध्यायस्त्वेकविंशः ॥ २१ ॥

लग्न चंद्रमा वा सूर्यसे दशमगत ग्रह सूर्यके अंशमें होवै तो सुवर्ण, ऊन, औषधि, वैद्यक काष्ठ, सुगंधिद्रव्य, तृणोंके कर्मसे आजीवन होवै। चंद्रांशकमें होवै तो स्त्रीके आश्रय, जलजवस्तु, मोती मूंगाआदिसे। भौमांशकमें सुवर्णआदि धातुसमूहसे तथा पर्वतजन्यधातु, शस्त्र, अग्निसे। बुधांशकमें, चित्रकारी, लेख, काव्यपठन, व्यापार, गंध आदिसे आजीवन होवै ॥ ३ ॥ दशमगत ग्रहांशकपति यदि जीवांशकमें होवै तो ब्राह्मण, पंडित, खानके कामसे। शुक्रांशकमें होवै तो चांदीआदिके दूकान, मणि, गौ, वाहनआदिसे। शन्यंशकमें होवै तो चलने फिरनेसे, मारणके कामसे, शिकारखेलने आदिसे धन मिले। जो ग्रह मित्र, शत्रु, स्वगृहमें होवै भी उन उन ग्रहोक्त कर्मसे धन देते हैं ॥४॥ लग्न, धन, लाभमें जो शुभ ग्रह हों उनके उक्तकर्मसे धन मिलता है सूर्य अपने उच्चमें हो तो अपनी सामर्थ्यसे कमाया धन होवै यदि कर्माजीव नवांशराशीश अंशेश नीच, अस्तंगत शत्रुराशिस्थ हो तो मनुष्य उन कर्मोंसे भी बहुत धन नहीं पाता बडी कठिनतासे आजीवन करता है ॥ ५ ॥ इति जातकशिरोमणौ माहीधरीभाषाटीकायां कर्माजीवाध्यायस्त्वेकविंशः ॥ २१ ॥

अथ नाभसयोगाः ।

रव्याद्यैश्चरराशिस्थै रज्जुयोग उदाहृतः ॥ स्थिरस्थैर्मुसलो नाम द्विस्वभागवतैर्नलः ॥ १ ॥ रविभौमार्किकेंद्रस्थैः सर्पो विद्गुरुभार्गवैः ॥ माला तस्यां सुखं जन्म दुःखितानां विलेशये ॥ २ ॥ रज्ज्वादयस्त्रयो योगा आश्रयाख्याः प्रकीर्तिताः ॥ यववज्रांडगोलाद्यैः समत्वं यांति कल्पिताः ॥ ३ ॥ केंद्रद्वयांतरगतैः कथितो गदाख्यो लग्नास्तगेषु शकटः सकलग्रहेषु ॥पातालदेवपथगैर्विहगः प्रदिष्टः शृंगाटकं नवमलग्नसुतर्क्षसंस्थैः॥४॥

अब नाभसयोग कहते हैं। सूर्यादि सभी ग्रह चरराशियोंमें होवैं तो रज्जुयोग कहा है। ऐसे ही स्थिरराशियोंमें होनेसे मुसल और द्विस्वभावोंमें नलयोग होता है ॥ १ ॥ सूर्य, मङ्गल, शनि केंद्रोंमें हों तो सर्प, बुध, गुरु, शुक्रसे मालायोग होता है, मालामें जन्म सुखीका, सर्पमें दुःखीका जानना ॥२॥ रज्जु, मुसल, नल ये तीन योग आश्रय नामके हैं यव, वज्र, अण्ड, गोलआदि योग भी इन्हीं तुल्यताको कल्पना करनेसे प्राप्त होजाते हैं ॥ ३ ॥ दोकेंद्रोंके बीच सभी ग्रह हों तो गदा नाम योग, लग्न सप्तममें होनेसे शकट चतुर्थ दशममें विहग और लग्न नवम पंचममें होनेसे शृंगाटक योग होता है ॥ ४ ॥

धनारिदशमस्थैश्च विक्रमद्यूनलाभगैः ॥ चतुर्थाष्टमरिष्फस्थैर्हलसंज्ञ उदाहृतः ॥ ५ ॥ लग्नास्तसंस्थैर्बुधभार्गवेज्यै रव्यार्किभौमैर्दशमालयस्थैः॥ वज्रं तदा तद्विपरीतसंस्थैर्यवं विमिश्रैः कमलं वदन्ति ॥ ६ ॥

दूसरे छठे दशमभावोंमें, यद्वा ३।७।११ में, यद्वा ४।८। १२ में सभी ग्रह हों तो हलसंज्ञक योग होता है ॥ ५ ॥ लग्न सप्तममें बुध शुक्र गुरु, दशममें सूर्य शनि मंगल हों तो वज्र-योग होता है। यदि १।७ वाले १० में १० वाले १।७। में हों तो यवयोग, मिश्रित होवे तो कमलयोग होता है ॥ ६ ॥

आस्तां कदाचिद्बुधभार्गवौ तु सूर्याच्चतुर्थोपगतौ तु चारात् ॥ पूर्वं यदुक्ताः कुलिशादयोमी नार्काच्चतुर्थे बुधभार्गवौ स्तः ॥ ७ ॥

कदाचित् चारसे बुध शुक्र सूर्यसे चौथे हों तब पूर्व कहे ये वज्रादियोग होंगे परन्तु सूर्यसे चौथे स्थानमें बुध शुक्र भी नहीं होते हैं ॥ ७ ॥

लग्नादिगृहगैर्यूपो हिबुकास्तंगतैरिषुः ॥ जायादिव्योमगैः शक्तिर्दण्डो व्योमादिलग्नगैः ॥ ८ ॥ लग्नात्सप्तर्क्षगैर्नौः स्यात्कूटः सप्तर्क्षगैः सुखात् ॥ छत्रं सप्तर्क्षगैरस्ताद्धनुर्दशमतः स्मृतम् ॥ ९ ॥

लग्नसे चतुर्थपर्यंत सभी ग्रह हों तो यूपयोग, ४ से ७ पर्यंत हों तो बाण, ७ से १० पर्यंत हों तो शक्ति दशासे १ तक हों तो शक्तियोग होता है ॥ ८ ॥ लग्नसे सप्तमपर्यंत हों तो नौयोग, ४ से सातभावोंमें कूट। सप्तमसे ७ भावोंमें छत्र और दशमसे ७ में हो तो चापयोग होता है ॥ ९ ॥

धनाच्चत्वारि केंद्राणि सहजाच्च चतुष्टयम् ॥ अत्र नावादिभिर्योगैरर्द्धचन्द्र उदाहृतः ॥ १० ॥ धनाद्ययस्थैर्जलधिरेकांतरगतैर्ग्रहैः ॥ विलग्नाद्विषमर्क्षस्थैरित्याकृतिजसंग्रहः ॥ ११ ॥

धनभावसे ४ केंद्र अर्थात् २ । ५ । ८ । ११ में तथा तृतीयसे ३ । ६ । ९ १२ में नौआदि योगोक्त ग्रह, जैसे २ से ५ तक ५ से ८ तक ८ से ११ तक इत्यादि क्रमसे हों तो अर्द्धचन्द्रयोग कहाता है ॥ १० ॥ धनभावसे ११ भाव छोडकर १२ पर्यंत हों तो समुद्रयोग और लग्नसे विषमभावों १ । ३ । ५ । ७ । ९ । ११ में हों तो आकृति योग होता है यह आकृतिजसंग्रह है ॥ ११ ॥

भावेषु सप्तसु विना विधिनापि संस्थै रव्यादिसप्तखचरैश्च वदंति वीणाम् ॥ रव्यादिषड्गृहगतेषु च दामिनी स्यात्पाशश्च पंचसु गृहेषु दिवाकराद्यैः॥१२॥केदारयोगश्चतुरालयस्थैस्त्रिमंदिरस्थैर्भवतीह शूलम् ॥ युगं द्विगेहोपगतैश्च गोल एकालयस्थैश्च यथा तथेति ॥ १३ ॥ पंचविंशतिसंख्याता योगा आश्रयसंज्ञिताः॥संख्यायोगाश्च सप्तैते विहाय प्रथमोदितम् ॥ १४ ॥

सूर्यादि सभी ग्रह विनाक्रमसे भी ७ स्थानोंमें हों तो वीणा, छः भावोंमें हों तो दामिनी, पांचमें पाश ॥१२॥ चारमें केदार,तीनमें शूल, दोमें युग,एकहीमें हों तो गोल योग होता है ॥ १३ ॥ आश्रययोग २५ हैं और संख्यायोग पहिले कहे छोडके ७ हैं सब आययोग ३२ हैं इनके भेद बहुत होते हैं ॥१४॥

अथैषां फलानि ।

विदेशनिरतो जनः परविभूतिमात्सर्ययुक् प्रियोऽश्वगमने सदा भवति रज्जुयोगोद्भवः ॥ धनी च मुसलोद्भवोतिशयमानभृत्योर्जितो नलोद्भवनृणां स्थिराः सकलसंपदो व्यंगताः ॥ १५ ॥ स्रगुद्भवा भोगसमन्विताः स्युर्भ-

जंगजाता बहुदुःखभाजः ॥ रज्जुत्रया यद्यपरैर्विमिश्राः फलैर्विहीनाः सकला भवंति ॥ १६ ॥

आश्रययोगोंके फल कहते हैं कि, रज्जुयोगवाला परदेशमें तत्पर, पराये ऐश्वर्यसे युक्त, दूसरेकी भलाईमें द्वेषमाननेवाला, घोडेकी सवारीको प्रिय माननेवाला सर्वदा होता है मुसल-योगवाला धनवान् अतिमान, बहुभृत्योंसे बढारहे। नलयोग-वाले मनुष्योंकी संपत्ति सर्वांगपूर्ण और स्थिर रहती है ॥१५॥ मालायोगवाले भागयुक्त सर्पयोगवाले दुःखके पात्र होते हैं ये रज्जु मुशल नल योग यदि अन्य उक्तयोगोंमेंसे किसीसें मिश्र होजावैं तो इनका फल नष्ट होजाता है अन्यका ही प्रबल रहता है ॥ १६ ॥

यज्वागदोत्थोर्जनतत्परः स्यात्सरुक्कुदारः शकटे तदर्थी ॥ संदेशहारी विहगेटनश्च शृंगाटके स्याच्चिरसौख्यभागी ॥ १७ ॥ हलाख्ययोगे कृषिकृज्जनः स्यात्सुखी वयोंत्ये प्रथमे च शूरः ॥ यवे वयोन्त्ये सुखितः सुवीर्यः पद्मे यशः सौख्यगुणान्वितश्च ॥ १८ ॥ अचलतनुसुखी स्यादन्नदाता सरस्यो भवति यजन-वंशे जन्म यूपाख्ययोगे ॥ क्रतुवरयजनेन ख्यातकीर्तिः प्रमादी धनभवननियुक्तो गुप्तिरक्षोथ बाणे ॥ १९ ॥

गदयोगमें उत्पन्न मनुष्य यज्ञकरनेवाला, धनार्जनमें तत्पर, रोगसहित कुस्त्रीवाला होता है। शकटयोगवाला भी इसी प्रकार होता है, विहगवाला दूत तथा फिरनेवाला भी और शृंगाटकवाला बहुत काल सुख भोगनेवाला होता है ॥ १७ ॥ हलयोगमें मनुष्य कृषिकरनेवाला, प्रथमअवस्थामें [illegible],

पिछलीमें सुखी, यवयोगमें पिछली अवस्थामें सुखी, अच्छे वीर्यवाला पद्मयोगमें यश, सौख्य और गुणोंसे युक्त होता है ॥ १८ ॥ यूपयोगमें (अचल) दृढ शरीर, अन्नदाता, रसीली जबानवाला, यज्ञकरनेवालोंके वंशमें उत्पन्न होता है बाणयोगमें श्रेष्ठ यज्ञकरनेसे विख्यातकीर्ति, प्रमादी, धन और मकानके काममें अधिकारी कैदखानेकी रक्षा करनेवाला होता है ॥ १९ ॥

शक्त्याख्यजातः सुखवित्तहीनो नीचोलसो दण्डभवोंत्यवृत्तिः ॥ नौजः कदर्यश्चलकीर्तिसौख्यः कूटे नृती बंधनपश्च जातः ॥ २० ॥ वयोंत्यसौख्यः स्वजनोपकारी छत्रोद्भवः कार्मुकजश्च शूरः ॥ प्रागंत्यसौख्यो वयसार्द्धचंद्रे कीर्तिः प्रधानः सुभगश्च जातः ॥ २१ ॥

शक्तियोगमें जन्मा मनुष्य सुख एवं वित्तसे हीन, दंडयोगवाला, नीचकर्मा, आलसी, चांडालवृत्तिवाला होता है । नौ योगवाला क्षुद्र और चलायमानकीर्ति सुखवाला, कूटयोगमें झूठा और कैदखानेका अप्सर होता है ॥ २० ॥ छत्रयोगवाला बुढापेमें सुखी, अपने मनुष्योंका उपकारकरनेवाला । चापयोगमें शूरमा, पहिली पिछली अवस्थामें सुखी, अर्द्धचंद्रयोगमें कीर्तिवालोंमें प्रधान और सुऐश्वर्यवाला भी होता है ॥ २१ ॥

तोयालये नरपतिप्रतिमश्च भोगी वीणोद्भवे निपुणधीः प्रियगीतनृत्यः ॥ दाता च दाम्नि पशुपश्च परार्थकार्यः पाशे विशीलधनसंचयशीलबन्धुः ॥२२॥ केदारजन्मा कृषिकृत्प्रसिद्धः शूरश्च शूले विधनोर्जनार्त्तः ॥ पार्श्व-

डकर्त्ता विधनो युगे च गोले मलाक्तो विधनोटनश्च ॥
॥ २३ ॥ सार्द्धं फलैर्निगदिता इति नामसाख्याश्चित्या-
दशासु नियतं सकलासु विज्ञैः ॥ नूनं ग्रहाः स्वगृहमित्र
निजोच्चशत्रुनींचास्थिता गृहवशात्फलदानयोगाः॥२४॥
इति श्रीमहादेवपाठकविरचिते जातकशिरोमणौ नाभ-
सयोगाध्यायो द्वाविंशः ॥ २२ ॥

समुद्रयोगवाला मनुष्य राजाके तुल्य तथा भोगवान्, वीणायोगमें निपुणबुद्धि, गायन,नाचमें प्रिय और दाता भी, दामयोगमें पशुका स्वामी पराये धन पराये काममें तत्पर, पाशयोगमें शीलरहित धनसंचयका स्वभाव न रहे,बंधुरहित होव ॥ २२ ॥ केदारयोगवाला मनुष्य(कृषि)खेतीकरनेवालोंमें प्रसिद्ध तथा शूरमा होवै। शूलयोगमें धनरहित और धन कमानेमें दुःखी रहे युगयोगमें पाखण्डकरनेवाला, निर्द्धन होवै। गोलयोगमें मलसे भरा, निर्द्धन और फिरनेवाला होवै ॥ २३ ॥ इतने नाभसयोग फलसहित जो कहे हैं ये सब विज्ञोंने अपनी अपनी दशाओंमें विचारने ग्रह जिसप्रकार स्वगृह, मित्रराशि, उच्च शत्रुराशि, नीचमेंसे जैसा हो उसीप्रकार निश्चय फल देते हैं ॥ २४ ॥ इति जातकशिरोमणौ माहीधरीभाषाटीकायां नाभसयोगाध्यायो द्वाविंशः ॥ २२ ॥

अथ राजयोगाः।

क्रूरग्रहैरुच्चगतैर्नृपालाः क्रोधाविला गां परिपालयंति ॥
कस्यापि पक्षे न भवंति भूपाः क्रूरग्रहैः क्रूरधनार्जनेष्टाः
॥१॥ सुरगुरुभृगुचंद्रैरुच्चसंस्थैरनस्तैर्भवति मनुजनाथः

सर्वधर्मोपसेवी ॥ सकलजनधनाढ्यां शास्ति धर्मेण भूमिं जगति जयपदाढ्यां राजलक्ष्मीं भुनक्ति ॥ २ ॥

राजयोग कहते हैं, क्रूरग्रह उच्चमें हो तो क्रोधयुक्त होकर राजा बनके पृथ्वीका पालन करते हैं क्रूरग्रहोंके राजयोगोंसे जो राजा होते हैं वे किसीके पक्षमें नहीं होते और क्रूरतासे धनसंग्रहमें तत्पर रहते हैं ॥ १ ॥ बृहस्पति शुक्र चंद्रमा उच्चमें हों अस्तंगत न हों तो समस्तधर्मोंका सेवनकरनेवाला राजा होता है समस्तमनुष्य एवं धन, धनसे संपन्न पृथ्वीका शासन धर्मसे करता है तथा संसारमें जयजय शब्दयुक्त राजलक्ष्मीको भोगता है ॥ २ ॥

गुरुरविकुजसौरैः स्वोच्चगैर्जन्मकाले जलनिधिरसनायाः स्वामितां याति भूमेः ॥भजति समरलक्ष्मी तं नृपं संगरस्थं करितुरगरथेशं राजलक्ष्मीसमेतम् ॥३॥ वर्गोत्तमे जन्मनि यस्य लग्नं दृष्टश्चतुःपंचविचंद्रखेटैः ॥ वर्गोत्तमे वा शशिनि स्थिते च जातो महीपाल इति प्रसिद्धः ॥४॥

जन्ममें गुरु,सूर्य,मंगल जन्मकालमें अपने २ उच्चराशियोंमें होवैं तो समुद्रपर्यंत पृथ्वीका स्वामी होता है। तथा हाथी घोडे रथोंके स्वामी राजलक्ष्मी युक्त हो उसराजाको युद्धलक्ष्मी सेवनकरती है ॥ ३ ॥ जिसका जन्ममें लग्नवर्गोत्तम हो उस लग्नको चंद्ररहित चार आदिग्रह देखें अथवा इसीप्रकार वर्गोत्तमांशगत चंद्रमाको देखें तो प्रसिद्ध राजा होवे ॥ ४ ॥

कुंभे लग्नगतेर्कजे शशिसुते पुत्रस्थिते सप्तमे देवेज्ये दशमस्थिते कुतनये जातो धरित्रीपतिः ॥ लग्ने मेषगते

रवौ सुरगुरौ सिंहस्थिते चंद्रजे द्वंद्वस्थे निधनाश्रिते कुतनये भूपालपालो भवेत् ॥ ५ ॥

कुंभलग्नमें शनि, पंचममें बुध, सप्तममें गुरु, दशममें मंगल होवै तो राजा होवै, और मेषलग्नमें सूर्य, सिंहका गुरु, कन्या बुध छठा और मंगल अष्टम होवै तो राजाओंका भी पालनकरनेवाला होवै ॥ ५ ॥

गवि विलग्नगते मृगलांछने धनगृहे शशिजेस्तगते कुजे॥ सुरगुरौ सुहृदालयसंस्थिते भवति भूवलये वसुधाधिपः ॥ ६ ॥ कन्यायां रविसोमजौ सितयमौ जूकस्थितौ मेषगे भूपुत्रे दशमालये सुरगुरौ कर्कस्थिते भूमिपः ॥ लग्ने तुंगगृहस्थिते शशधरे शेषा ग्रहाः प्राक्तनस्थानस्था वरुणालयात्तधरणीं पात्येकपाटीमिव ॥ ७ ॥

वृषलग्नमें चन्द्रमा दूसरा बुध सप्तम मंगल और बृहस्पति चतुर्थमें होवै तो सारी पृथ्वीका राजा होवै ॥ ६ ॥ कन्याके सूर्य बुध तुलाके शुक्र शनि मेषका शनि और कर्कका बृहस्पति दशमस्थानमें होवै तो राजा होवै दूसरा योग है कि, लग्नमें उच्चका चन्द्रमा हो अन्यग्रह पूर्वोक्तस्थानोंमें हों तो समुद्रपर्यंत पृथ्वीका पालन एकपाटी जैसा करता है ॥ ७ ॥

धरासुते स्वोच्चगते ससौरे सेंदौ रवौ चापगृहस्थिते च ॥ धराधिनाथोन्यधराधिनाथः स्वोच्चे कुजे लग्नगते सचन्द्रे ॥ ८ ॥ स्वोच्चेर्कलग्ने सुरराज्यपूज्ये धर्मस्थिते सेन्दुयमेस्तसंस्थे॥ धर्मध्वजो भूमिपतिः सतापा यस्यारियोषा वनगाश्चरंति ॥ ९ ॥

मंगल शनि सहित मकरका चन्द्रमासहित सूर्य धनका होवै तो राजा होवै मंगल अपने उच्चका लग्नमें चन्द्रमासहित होवै तो दूसरेके राज्यका राजा होवै ॥ ८ ॥ सूर्य अपने उच्चका लग्नमें, बृहस्पति नवम, चन्द्रमासहित शनि सप्तममें होवै तो धर्मध्वज राजा होवै जिसके शत्रुकी स्त्रियां सन्तापसहित वन वन फिरती रहें ॥ ९ ॥

वृषे सुधांशावुदयेहिंसंस्थे रवौ गुरौ वास्तगृहं प्रपन्ने ॥ कुंभस्थिते सूर्यसुते महीशः संपत्स्थिरा तस्य चिरायुषः स्यात् ॥ १० ॥ मीनोदये भृगुसुते दशमे सचन्द्रे जीवे मृगे कुतनये धरणीपतिः स्यात् ॥ कन्योदये शशिसुते प्रथमोक्तखेटे प्रोक्तालये भवति भूवलयाधिनाथः ॥११॥

वृषका चन्द्रमा लग्नमें सूर्य अथवा बृहस्पति सप्तम और शनि कुंभका होवै तो राजा होवै सम्पत्ति उसकी स्थिर रहै दीर्घायु भी होवै ॥ १० ॥ मीनराशिका शुक्र लग्नमें दशम चन्द्रमा सहित गुरु, मकरका मंगल होवै तो राजा होवै, कन्याका बुध लग्नमें और ग्रह पूर्वोक्त स्थानोंमें हों तो पृथ्वी का राजा होवै ॥ ११ ॥

बुधे कन्यालग्ने रविजकुसुतौ पंचमगतौ गुरौ सेंदौ चापे गतवति गृहं भार्गवसुते ॥ धरानाथो जायात्मलयहिमशैलांतरभुवः प्रतापाग्निज्वालाकवलितपरानीकगहनः ॥ १२ ॥ मीनोदये हिमकरे मकरे महीजे सिंहे रवौ रविसुते घटभे नृपः स्यात् ॥ लग्ने कुजे जनिलये हिबुके सुरेज्ये लग्नेथ वा क्षितिपतिर्गुणवान् परोपि ॥ १३ ॥

कन्याका बुध लग्नमें, शनि मंगल पंचम, चन्द्रमासहित गुरु होवै धनका शुक्र होवै तो मलयागिरि हिमालयके अंतर्गतभूमिका ऐसा राजा होवै जिसके प्रतापरूपी अग्निमें शत्रु का सेनारूपी वन ग्रास होजावै ॥ १२ ॥ मीनलग्नमें चन्द्रमा, मकरका मंगल, सिंहका सूर्य, कुंभका शनि होवै तो राजा होवै लग्नमें मेषका मंगल चौथा अथवा लग्नका बृहस्पति होवे तो गुणवान् राजा होवै। अथवा शत्रु भी जिसका गुणवान् अर्थात् गुणकारी होवै ॥ १३ ॥

मेषेर्के दशमस्थिते सुरगुरौ लग्नस्थिते लाभगैस्तारानाथसुधांशुनंदनसितैरासिंधुभूमीपतिः ॥ सिंहे भास्करसंयुते मृगमुखे लग्नास्थिते भास्करौ कर्केन्दौ मिथुने बुधे भृगुसुते जूकस्थिते भूपतिः ॥ १४ ॥ बुधे लग्नगते स्वोच्चे सजीवेस्ते निशापतौ ॥ भृगौ राज्ये भवेद्राजा मन्दारौ पंचमस्थितौ ॥ १५ ॥

मेषका सूर्य दशम, लग्नमें बृहस्पति और लाभभावमें चन्द्रमा बुध शुक्र हों तो समुद्रपर्यंत पृथ्वीका राजा होवै सूर्य सिंहका, शनि मकरका लग्नमें कर्कमें चन्द्रमा मिथुनमें बुध तुलाका शुक्र हो तो राजा होता है ॥ १४ ॥ अपने उच्चका बुध लग्नमें हो तो गुरुसहित चन्द्रमा सप्तम, शुक्र दशम और शनि मंगल पंचममें हो तो राजा होवै ॥ १५ ॥

ये पंचविंशति नृपाः प्रथमं प्रयुक्तास्तेष्वेव नीचकुलजा अपि राज्यभाजः ॥ भूपालवंशजनराः किमु वक्ष्यमाणैर्भूपालजा नृपतयः क्षितिपालयोगैः ॥ १६ ॥ स्वोच्च-मूलगृहगैर्बलयुक्तैस्त्र्यादिभिर्गगनगैर्नृपजातः ॥ स्युर्नृपाः परकुले चतुराद्यैर्निर्बलैर्द्धनयुता न भूमिपाः ॥ १७ ॥

जो पहिले पंचविंशति राजयोग कहे हैं इनमें नीचकुलोत्पन्न मनुष्य भी राजा होते हैं जो राजवंशी हैं उनको तो क्याही कहना है अब जो राजयोग आगे कहे जाते हैं इनमें राजपुत्र ही राजा होसकते हैं अन्य मनुष्य अपने कुलमें श्रेष्ठ होते हैं ॥ १६ ॥ तीन आदि ग्रह उच्च, मूलत्रिकोण स्वगृहादिबलोंसे युक्त हों तो राजवंशीय राजा होते हैं अन्यकुलवाले चार आदि ऐसे ग्रह होनेमें राजा होसकते हैं यदि वे ग्रह पूरेबली न हों तो राजा नहीं किन्तु धनवान् होते हैं॥१७॥

सेन्दोर्द्धोदयगे रवावजगते भूपालजातो नृपो राज्यस्थे क्षितिजे घटे रविसुते धर्मस्थिते मंत्रिणि ॥ स्वर्क्षे भार्गवनन्दने सुखगते धर्मस्थिते शीतगौ शेषैर्लाभविलग्नविक्रमगतैर्भूपालजातो नृपः ॥ १८ ॥ शुभे शुभस्थे सबले बुधोदये बलान्विते शेषनभश्चरेन्द्राः ॥ धर्मार्थलाभारि नभस्त्रिसंस्था धर्मध्वजा भूपसुता नृपालाः १९॥

उदयकालिक सूर्य चन्द्रमा सहित मेषमें होवै तो राजवंशीय राजा अन्य धनवान् होंगे, दशम मंगल, कुंभका शनि नवम गुरु शुक्र स्वगृही चतुर्थमें, नवम चन्द्रमा अन्यग्रह ११ । १ । ३ स्थानोंमें हों तो राजपुत्र राजा होगा ॥ १८ ॥ दशमभावमें शुभग्रह बलवान् बुधलग्नमें, बलसहित अन्यग्रह ९ । २ ११ । ६ । ३ भावोंसे किसीमें हो तो राजपुत्र धर्मके ध्वज जैसे राजा होते हैं ॥ १९ ॥

लग्ने शशी धनगते दनुजेंद्रपूज्ये लग्ने वृषे क्षितिपजो भवति क्षितीशः ॥ बंधौ गुरौ शशिदिवाकरसंस्थिताः खे लग्ने शनौ कुजसितेंदुसुता भवस्थाः ॥ २० ॥

मेषूरणे शशिनि लाभगतेर्कपुत्रे लग्ने गुरौ भृगुरवी हिबुकालयस्थौ ॥ ज्ञारौ कुटुंबभवने क्षितिपालवंशे जातः समुद्रवलयावनिराजमान्यः ॥ २१ ॥

लग्नमें चंद्रमा दूसरा शुक्र और लग्नमें वृषराशि हो तो राजपुत्र राजा होता है चौथा बृहस्पति, दशममें सूर्य चंद्रमा लग्नमें शनि, मंगल शुक्र बुध ग्यारहवेंमें हों तो वही फल है ॥ २० ॥ दशम चंद्रमा, लाभमें शनि, लग्नमें बृहस्पति चौथे सूर्य शुक्र, दूसरे बुध मंगल हों तो राजवंशीय मनुष्य समुद्र पर्यंत पृथ्वीके राजाओंका माननीय होता है ॥ २१ ॥

पाताले शशिनि स्थिते सुरगुरौ जायास्थिते धर्मगे दैत्येज्ये दशमालये दिनपतौ लाभस्थिते चंद्रजे॥लग्नस्थौ धरणीदिवाकरसुतौ भूपालवंशोद्भवो भूपालो रिपुवर्जितो वसुमतीं पात्यश्वसेनाधिपः ॥ २२ ॥ स्वर्क्षे लग्नगते विधौ दशमगे जीवे बुधे सप्तमे पाताले भृगुजे रवौ रिपुगते वक्रार्कजौ विक्रमे ॥ योगेस्मिन्नृपजा भवेत्क्षितिपतिर्यस्यारियोषाजनैराकीर्णं वनितागृहं पुरबहिर्द्वारास्थिताः शत्रवः ॥ २३ ॥

चौथा चंद्रमा सप्तम गुरु नवम शुक्र दशम सूर्य लाभमें बुध और लग्नमें मंगल शनि हो तो राजवंशीय शत्रुरहित सेना घोडा सहित राजा होकर पृथ्वीका पालन करता है ॥ २२ ॥ कर्कका चंद्रमा लग्नमें, बृहस्पति दशममें बुध, सप्तम चौथा शुक्र छठा सूर्य मंगल शनि तीसरे हों ऐसे योगमें राजवंशीय ऐसा राजा होताहै कि, जिसके मंदिर वैरियोंके स्त्रियां

से भरे रहैं और नगरके द्वारपर शत्रु खडे रहैं अर्थात् शत्रु जीतके उनके स्त्रियोंको मंदिरमें और उनको नगर द्वारपर रक्खे ॥ २३ ॥

वृषे शशी लग्नगतो यदि स्यात्सिंहे रविः सप्तमगः सुरेज्यः॥ कुंभे शनिर्यस्य च जन्मकाले महेंद्रतुल्यो नृपजो महीशः ॥ २४ ॥ मृगे मंदे लग्ने तिमियुगलगः शीतकिरणो रिपौ भौमे रंध्रे कमलवनबंधौ युवतिगे ॥ बुधे जूके शुक्रे तुरगसहिते देवतगुरौ धरानाथः पाथः पतिवलयभूमेर्नृपतिजः ॥ २५ ॥

यदि वृषका चंद्रमा लग्नमें, सिंहका सूर्य सप्तम गुरु कुंभका शनि जिस किसीके जन्ममें हो तो राजपुत्र इन्द्रके समान पृथ्वीका राजा होता है ॥ २४ ॥ मकरका शनि लग्नमें मीनका चंद्रमा छठा मंगल अष्टम चंद्रमा सप्तम बुध तुलाका शुक्र धनका बृहस्पति होवें तो, समुद्रपर्यंत पृथ्वीका राजा राजवंशीय होता है ॥ २५ ॥

अजे भौमे लग्ने सुरपतिगुरौ चंद्रभवने बुधे कर्मस्थाने तिमियुगलगे भार्गवसुते ॥ सुधांशौ धर्मस्थे रविरविसुतौ लाभभवने धराधीशो जायात्सुरपतिसमादाप्तमहिमः ॥२६॥ स्वोच्चास्थिते देवगुरौ विलग्ने लाभोपयाता शशिभार्गवज्ञाः ॥ रवौ मृगारौ दशमालयस्थे राजा भवेन्नृपकुलाधिनाथः ॥ २७ ॥

मेषका मंगल लग्नमें बृहस्पति कर्कका बुध, दशममें मीन शुक्र नवमस्थानमें चंद्रमा सूर्य शनि लाभमें हों तो इन्द्रके समान प्राप्त महिमावाला राजा होवे ॥ २६ ॥ उच्चका गुरु

लग्नमें चंद्रमा, शुक्र, बुध, लाभस्थानमें सूर्य सिंहका दशम में हो तो राजकुलका भी श्रेष्ठ राजा होवै ॥ २७ ॥

मीने भृगौ लग्नगते स्वसंस्थे ज्ञेकर्मगौ देवपुरोहितेंदू ॥ लाभोपयातो वसुधासुतश्च भूपालवंश्यो वसुधाधिपः स्यात् ॥ २८ ॥ बुधगुरुभृगुपुत्राः शत्रुभावोपविष्टा अथ निधनगृहस्थाः सप्तमस्थाः शुधांशौ ॥ यदि नरविहतोस्रा जायतेत्राधियोगे भजति भुवनलक्ष्मीस्तं नृपं निर्जितारिम् ॥ २९ ॥ बुधे कन्यालग्ने क्षितिरविसुतौ पंचमगतौ झषे सेंदौ जीवे शशिजगृहयाते भृगुसुते ॥ रवौ लाभे भूपो भवति सहसास्तोदयगिरी भुवौ यस्यास्तंभौ समरविजितद्वेषिशरणैः ॥ ३० ॥

मीनका शुक्र लग्नमें दूसरा बुध दशम गुरु चंद्रमा ग्यारवां मंगल होवै तो राजवंशीय राजा होवै ॥ २८ ॥ बुध गुरु शुक्र शत्रुभावमें अथवा चंद्रमासे सप्तम वा अष्टम हों परंतु सूर्य हतकांति न हो तो इस अधियोगमें जिसका जन्म हो उस जितारि राजाको संसारकी लक्ष्मी सेवन करती है ॥ २९ ॥ बुध कन्याका लग्नमें मंगल शनि पंचम मीनका गुरु चंद्र सहित बुधके राशिमें शुक्र और लाभमें सूर्य हो तो ऐसा राजा होता है जिसके कारणमें जीतेहुये शत्रु शरणमें रहें और उदयाचल अस्ताचल जिसके जयस्तंभ होवें अर्थात् उदयास्तका राजा होवै ॥ ३० ॥

अजे लग्नगते सूर्ये तुलास्थौ सोमसूर्यजौ॥भाग्ये भाग्यगृहाधीशे धर्मात्मा पृथिवीपतिः ॥ ३१ ॥ रवौ मेषे सुतौ

धनगृहगतौ चंद्रभृगुजौ शनौ लाभे भौमे निधनभवने ज्ञे सहजगे ॥ गुरौ धर्मे राजा भवति मनुजो यस्य विजिता द्विषाः पारे वार्धिं घटभवमुनेर्याति शरणम् ॥ ३२ ॥ झषे वर्गोत्तमे लग्ने सुतस्थे सुरपूजिते ॥ सबुधे स्वगृहे सूर्ये राजा वेशिगते भृगौ ॥ ३३ ॥ स्त्राद्यें-दौ सगुरौ लग्ने त्रिकोणे भार्गवस्थिते ॥ स राजा राज धर्मेण सप्रजां पाति मेदिनीम् ॥ ३४ ॥

मेषका सूर्य लग्नमें तुलामें चंद्रमा शनि सप्तम, और नवमेश नवममें हो तो धर्मात्मा राजा होवे ॥ ३१ ॥ मेषका सूर्य लग्नमें धनस्थानमें चंद्रमा शुक्र शनि लाभस्थानमें अष्टम मंगल तीसरा बुध नवम गुरु होवे तो मनुष्य ऐसा राजा होता है जिसके जीते शत्रु समुद्रके पार अगस्त्य मुनिके शरण जाते हैं अर्थात् समुद्रपर्यंत उनको शरण नहीं मिलती ॥ ३२ ॥ मीन मीनांशकलग्न, पंचम गुरु सिंहका सूर्य बुध सहित और शुक्र वेशिस्थानमें होवे तो राजा होवे ॥ ३३ ॥ चंद्रमा गुरु सहित वृषलग्नमें शुक्र त्रिकोण ५ । ९ में हो तो वह राजा (राजधर्म) नीतिसे, प्रजासहित पृथ्वीका पालन करता है ॥ ३४ ॥

एक एव ग्रहः स्वोच्चे परमांशगतो यदि ॥ असूर्यगः सुहृद्दृष्टः स शास्ति निखिलां भुवम् ॥ ३५ ॥ आपूर्ण-मण्डलकलासहितं शशांकं पश्यन्ति सोमसुतशुक्रसुरे-न्द्रपूज्याः ॥ वर्गोत्तमे द्वितनुभे तनुगे तदीशः शक्त्या-न्वितः क्षितिपतिर्यदि नोस्तनीचः ॥ ३६ ॥ वर्गोत्तमे

त्रिप्रभृतिग्रहेन्द्रा केंद्रस्थिताः सौम्यनिरीक्षिताश्च ॥ क्रूर-ग्रहालोकनयोगहीना राजात्र योगे महनीयकीर्त्तिः॥३७॥

उच्चमें परमांशकगत एक भी ग्रह हो और अस्तंगत न हो मित्रग्रह उसे देखे तो सारी पृथ्वीका शासन करता है ॥ ३५ ॥ पूर्णचन्द्रमाको बुध शुक्र गुरु देखें द्विस्वभाव लग्नवर्गोत्तम हो, लग्नेश बलवान् हो अस्त वा, नीचका न हो तो राजा होता है ॥ ३६ ॥ वर्गोत्तममें तीन आदि ग्रह केन्द्रगत शुभदृष्ट भी हों पापग्रहों युक्त वा दृष्ट न हों तो इस योगमें बडी कीर्ति-वाला राजा होता है ॥ ३७ ॥

शीर्षोदयस्थाः सकला ग्रहेंद्रा नीचास्तवर्ज्या जनयंति भूपम् ॥ बुधेस्तगेहे गुरुशुक्रदृष्टे राजा भवेद्भूपतिचक्र-वर्त्ती॥३८॥ संपूर्णः परमोच्चस्थाश्चन्द्रः शुक्रेण दृश्यते ॥ कुर्यान्महीपतिं जातं पापैरापोक्लिमोपगैः ॥ ३९ ॥ सर्वे ग्रहा रुचिररश्मिकलापयुक्ताः स्वस्वालयोत्तमनवांशब-लोपपन्नाः ॥ उत्पद्यते जलधिसीमवतीं धरित्रीं भुंक्ते स्वबाहुबलनिर्जितशत्रुवर्गः ॥ ४० ॥

समस्त ग्रह शीर्षोदय राशियोंमें हों नीच तथा अस्त न हों तो राजा करते हैं। बुध सप्तममें गुरु शुक्रसे दृष्ट हो तो चक्रवर्ती राजा होवै ॥ ३८ ॥ पूर्ण चन्द्रमा परमोच्चगतपर शुक्रकी दृष्टि हो और पापग्रह आपोक्लिममें हों तो राजा करते हैं॥३९॥सम्पूर्ण ग्रह अस्तंगत न हों अपने अपने गृह,उत्तम नवांशादि बलसहित हों ऐसे योगमें उत्पन्न मनुष्य अपने बाहुबलसे शत्रु जीतके समुद्रपर्यंत पृथ्वीका राज्य भोगता है ॥४०॥

वर्गोत्तमे पूर्णकलः सुधांशुः कश्चिद्ग्रहः स्वोच्चगतो बलाढ्यः ॥ नास्तंगतो नारिगृहस्थितश्च करोति जातं वसुधाधिपं च ॥ ४१॥ जन्मोदयलग्नपती बलसहितौ केंद्रगो हिमानीशः ॥ झषमृगकर्कटसंस्थस्त्रिकोणगो वा महीपालः ॥ ४२ ॥ स्वगृहे मित्रभागेषु स्वांशे वा मित्रराशिषु ॥ अनस्तगा ग्रहाः कुर्युः सार्वभौमगुणान्वितम् ॥ ४३ ॥ यस्योदये मुनिवरो भगवान् वशिष्ठः पूर्वे सुरेंद्रशचिवः क्षितिजोर्द्धसंस्थः ॥ भूयाद्घटोद्भवमुनावुदयं प्रयाते पश्चाद्गते भृगुसुते वसुधाधिनाथः ॥ ४४ ॥

पूर्णकलावान् चन्द्रमा वर्गोत्तममें हो कोई ग्रह उच्चगत, बलवान् हो अस्तंगत शत्रुराशिगत न हो तो मनुष्यको राजा करताहै॥४१॥जन्मलग्न लग्नेश बलवान् हों चन्द्रमा केंद्र वा त्रिकोणमें १२।१०।४ राशिमें हो तो राजा होवै ॥४२॥ स्वगृही, मित्रांशकी वा मित्रराशियोंमें विना अस्तंगती ग्रह हों तो गुणवान् चक्रवर्ती राजा करते हैं ॥ ४३ ॥ जिसके जन्ममें मुनिश्रेष्ठ वशिष्ठ उदयी हो बृहस्पति पूर्वोदयी हो मङ्गल दशम हो अगस्तिमुनि उदय हो शुक्र पश्चिमोदयी हो तो राजा होवै ॥ ४४ ॥

शशी पूर्णः स्वांशे स्वभवनगतः स्वोच्चगृहगो गुरुः केन्द्रे जातो दितिजगुरुणा वीक्षिततनुः ॥ रविः स्वांशे लग्ने सुरपतिगुरुं पश्यति यदा महीनाथो यस्य क्षितिपरिपवः शैलशरणाः ॥ ४५॥ सकलगगनवासैरात्रिनाथः सुदृष्टो यदि भवति न नीचे नारिवर्गे न रंध्रे ॥

भवति मनुजनाथोतीत्य केमद्रुमोत्थं त्वशुभफलसमग्रं दीर्घजीवी हतारिः ॥ ४६ ॥ उच्चाभिलाषी भगवान्विवस्वाँस्त्रिकोणगः स्वर्क्षगतो हिमांशुः ॥ कर्के यदि स्याद्भगवान्सुरेज्यः कुर्वंति राजाधिपतिं प्रसन्नाः॥४७॥

पूर्ण चन्द्रमा अपने अंशकमें हो केंद्रमें बृहस्पति अपनी राशिमें वा उच्चमें हो शुक्र उसे देखे, और जब अपने अंशकमें बैठा लग्नगत सूर्य उस बृहस्पतिको देखे तो, उसके शत्रु जितने राजा हो वें सब उसके डरसे पर्वतोंकी शरण लेवैं ॥ ४५ ॥ चन्द्रमा समस्तग्रहोंसे दृष्ट हो परन्तु नीच, शत्रुराशि तथा अष्टमस्थानमें न हो तो केमद्रुम योग भी हो तौ भी उसके फलको हटायके दीर्घायु, शत्रुविजयी राजा होता है ॥ ४६ ॥ सूर्य उच्चाभिलाषी त्रिकोणमें हो चन्द्रमा बृहस्पति कर्कके हों, तो ये ग्रह प्रसन्नतासे मनुष्यको राजाधिराज करते हैं ॥ ४७ ॥

षट्स्वोच्चगाः प्रकुर्वंति मयूखपरिपूरिताः ॥ भगीरथसमं भूपं कुर्वंति कुलिशांकितम् ॥ ४८ ॥ मित्रालयें मित्रसमीक्षितश्च लग्नान्यकेंद्रेषु विलग्ननाथः ॥ स शास्ति भूमिं बहुरत्नपूर्णां न नीचगो नास्तमितो यदि स्यात् ॥ ४९ ॥ मेषांशकस्थः परिपूर्णमूर्तिः सुधाकरो वाक्पतिना च दृष्टः ॥ नीचे न चेन्नान्यनिरीक्षितश्च प्राह क्षितीशं यवनाधिराजः ॥ ५० ॥

छः ग्रह उच्चराशियोंमें हों परंतु अस्त न हों तो वज्रके चिह्नवाला भगीरथके समान राजा करते हैं ॥ ४८ ॥ लग्नेश मित्रराशिमें मित्रग्रह दृष्ट, लग्नसे अन्यकेंद्रमें हो, यदि नीच वा

अस्तंगत न हो तो ऐसे योगवाला मनुष्य बहुत रत्नोंसे पूर्ण पृथ्वीका शासन करता है ॥ ४९ ॥ मेषांशकस्थ परिपूर्णमूर्ति चन्द्रमाको बृहस्पति देखे नीचमें न हो नीचगत ग्रहसे वा पापसे दृष्ट न हो तो राजा होता है यह यवनाचार्यने कहा है ॥ ५० ॥

तुंगांशगेहोपगतः समस्तैर्दृष्टः सुधांशुः परिपूर्णमूर्तिः ॥ ध्वजाकलापैर्नहि वाहिनीनां दृष्टिं विवस्वान्नृपतेः प्रयाति ॥ ५१ ॥ मृणालगौरोपमबिंबधारी शशी नवांशे नलिनीप्रियस्य ॥ शुभाश्च केंद्रेन्यगताश्च पापा व्ययांत्यवर्जे वसुधाधिनाथः॥५२॥ एकोपि वर्गोत्तमकें-द्रसंस्थः करोति भूपं बहुरत्नपूर्णम् ॥ समस्तसंपन्नबलो यदि स्यात्समस्तसंपन्नबलश्च भूपः ॥ ५३ ॥ मूलत्रि-कोणे तुंगे वा स्वराशिनिलये ग्रहः ॥ तुषारकिरणं पश्यन्निषादं कुरुते नृपम् ॥ ५४ ॥ स्वभगौ रविशीतांशू जनयेतां नराधिपम् ॥ उच्चस्थौ धनिनं ख्यातं स्वत्रि-कोणगतावपि ॥ ५५ ॥

पूर्णचन्द्रमाको उच्चराशिगत सभी ग्रह देखें तो उस राजाकी सेनाके ध्वजासमूहोंसे सूर्य भी नहीं देखाजावै ॥ ५१ ॥ पूर्ण-चन्द्रमा अपने नवांशक में हों शुभग्रह केंद्रमें हों तथा पापग्रह केंद्र तथा १२ । ८ में न हों तो पृथ्वीपति होवै ॥ ५२ ॥ एक ग्रह भी वर्गोत्तमांशगत केंद्रमें हो तो समस्त रत्नोंसे पूर्ण खजानेवाला राजा होता है यदि वह ग्रह समस्तबलोंसे संपन्न होवै तो समस्तप्रकार सेना आदि राज्यांगोंसे संपन्न होता है ॥ ५३ ॥ कोई ग्रह अपने मूलत्रिकोण वा तुंगमें हो अथवा

स्वराशिमें बैठकर चन्द्रमाको देखे तो निषाद भी राजा होवे ॥ ५४ ॥ सूर्य चन्द्रमा स्वराशियोंमें हों तो राजा करते हैं, यदि उच्चमें हों तो धनवान् विख्यात राजा करते हैं ऐसे स्वमूलत्रिकोणमें भी फल करते हैं ॥ ५५ ॥

नीचस्थितो जन्मनि यो ग्रहः स्यात्तदुच्चतद्राशिपतिर्यदा वा॥तौ केन्द्रगौ जन्मनि यस्य पुंसः सराजवर्यो भवति क्षितीशः॥५६॥लग्नस्थितं पश्यति देवमंत्री स्वकं नवांशं यदि तुंगसंस्थः ॥ शीतांशुपुत्रो भवति क्षितीशो यदा न पापा निधने न केंद्रे ॥ ५७ ॥ एकोपि जीवेंदुजभार्गवानां भाग्ये गृहे शीतमयूखयुक्तः ॥ करोति भूपं बहुभाग्ययुक्तं मित्रेक्षितश्चेत्सुरराजतुल्यः ॥ ५८ ॥

जो ग्रह जन्ममें नीचका हो उसका उच्चराशीश, भावराशीश यदि केंद्रमें हो तो वह मनुष्य राजाओंमें श्रेष्ठ होता है ॥५६॥ लग्नमें गुरुका नवांशक हो उसे गुरु देखे बुध उच्चका होवे और पापग्रह केंद्र तथा अष्टमस्थानमें न हों तो राजा होता है ॥ ५७ ॥ गुरु बुध शुक्रमेंसे एक भी ग्रह चंद्रयुक्त नवममें हो तो बडे भाग्ययुक्त राजा करता है यदि मित्रग्रह दृष्ट भी होवै तो इन्द्र तुल्य होवै ॥ ५८ ॥

लग्नाद्यस्य खगस्य भाग्यभवनं तुंगं तदीशेन युग्दृष्टं चेद्भवति क्षितेरधिपतिः स्वोच्चे स्थितौ चेद्ग्रहौ॥ मीनस्थे भृगुनंदने सुतगते जीवे सताराधिपे राजा नीचकुलोद्भवो पि नियतं जायात्स्ववंशातिगः ॥ ५९ ॥ कुमुदवन-विकाशी स्वर्क्षगः स्वांशसंस्था बुधगुरुभृगुपुत्रा नाम-

लोकप्रविष्टाः ॥ धनभवनगतेन व्योमगेशेन दृष्टा भवति मनुजनाथः सार्वभौमो जितारिः ॥ ६० ॥ मार्तण्ड जे लग्नगते तुलायां गुरोर्गृहे वा प्रसवे स्थितो वा ॥ क्षितीश्वरो माण्डलिकोथ वा स्यादन्यत्र लग्नोपगते गतायुः ॥ ६१ ॥

लग्नसे नवमस्थानमें जिसकी उच्चराशि हो उससे तथा राशि स्वामीसे नवमभावयुक्त वा दृष्ट होवै तो राजा होवै यदि वे ग्रह अपने २ उच्चोंमें हों मीनका शुक्र पंचम बृहस्पति चंद्रयुक्त होवै तो नीचकुल जन्मा भी मनुष्य अपने वंशसे अधिक राजा होता है ॥ ५९ ॥ चंद्रमा अपनी राशिमें बुध गुरु शुक्र अपने २ अंशकोंके होकर चतुर्थमें हों धन दश-मग भावेशसे दृष्ट हों शत्रु जीतनेवाला चक्रवर्ती राजा होता है ॥६० ॥ शनि तुलाका लग्नमें अथवा गुरुकी राशिमें पंचम भावमें हो तो राजा अथवा कुछ मुल्कका मालिक होवै, और राशिका लग्नमें होवै तो अल्पायु करता है ॥ ६१ ॥

गण्डान्तविष्टिगरवैधृतिपातजातः क्रूराधिपः स उदये-पि च कृत्तिकायाः ॥ उद्यत्कृपाणफलकाहतवैरिनार्यैः संग्रामगाः स्वपतिशीर्षमृगायमाण्यः ॥ ६२ ॥ यदि पश्यति भार्गवं बुधं वा सुरमंत्री कुरुते धराधिपम् ॥ सर्वं वा सुरमंत्रिणं गुरुर्वा तान् पश्यन् प्रकरोति राज-राजम् ॥ ६३ ॥ एक एव गुरुर्लग्ने करोति नृपतिं पर-म् ॥ यदि नीचं गतो न स्यान्मत्तेभपरिवारितम्॥६४॥

त्रिविधगंडांत भद्रा, वैधृति व्यतिपात और कृत्तिकाके उदयमें जिसका जन्म हो उसके तलवारके फलसे कटे शत्रु

शिरोंको उनकी स्त्रियां रणभूमिमें ढूंढती हैं॥ ६२ ॥ यदि बृहस्पति शुक्र अथवा बुधको देखे तो राजा करता है अथवा सभी ग्रह गुरुको यद्वा गुरु समस्त ग्रहोंको देखें तो राजराज होता है॥ ६३ ॥ एक बृहस्पति लग्नमें परम राजा करता है जो उन्मत्त हाथियोंसे परिवारित होवै परंतु यदि गुरु नीचका न हो ॥ ६४ ॥

लग्नमुक्तान्यकेंद्रस्थः संपूर्णः शशिलांछनः ॥ विदधाति महीपालं चतुःसेनासमन्वितम् ॥ ६५ ॥ स्वोच्चस्थितो लग्नपतिः सुधांशुं पश्यन् करोतीह नृपप्रधानम् ॥ गुरुर्भृगुर्वा प्रकरोति पश्यन्स्वोच्चे सुधांशुं खलु भूमिपालम् ॥ ६६ ॥ स्वांशे वा मित्रभागे वा संपूर्णः शशिलांछनः ॥ गुरुणा दिवसे दृष्टः कुरुते स महीपतिम् ॥ ६७ ॥

लग्नछोडके अन्यकेंद्रमें पूर्ण चंद्रमा चतुरंगसेनायुक्त राजा बनाता है ॥ ६५ ॥ लग्नेश अपने उच्चमें बैठकर चंद्रमाको देखे तो प्रधान राजा करता है शुक्र अथवा गुरु उच्चगत चंद्रमाको देखे तो निश्चय राजा करता है ॥ ६६ ॥ पूर्ण चंद्रमा अपने अंशमें अथवा मित्रांशकमें हो उसे गुरु देखे और दिनका जन्म हो तो राजा करता है ॥ ६७ ॥

ये कारकग्रहभवा मनुजाधिनाथो ये चाधियोगजनिताश्च भवंति योगाः ॥ ये वा गणोत्तमविलग्नसुधांशुजातास्ते भूमिपा विगतरोगभया भवन्ति ॥६८॥ ये पापखेचरधरापतियोगजाता ये पापवंशनृपजा अपि राज्यभाजः ॥ आचारनीतिरहिताः सहिता वधादिदोषैः प्रजा

क्षयकरा बहुदुःखभाजः ॥ ६९ ॥ पुष्ये स्थितः कुमुदिनीदयितः करोति भूपं तथा दहनगोत्तमवर्गसंस्थः ॥ राजानमाशु विदधाति तुरंगयोनौ वर्गोत्तमे सकलभूवलयाधिपत्यम् ॥ ७० ॥

जो मनुष्य कारक ग्रहोंमें, जो अधियोगमें अथवा जो ।र्गोत्तमादि गुणयुत लग्नमें वा जो वर्गोत्तम चंद्रमामें जन्मते हैं । रोग भयसे निर्मुक्त राजा होते हैं ॥ ६८ ॥ जो मनुष्य ।पग्रहकृत राजयोगोंसे राजा होते हैं और जो पापवंशीय ।नुष्य ग्रह योगबलसे राजा होते हैं वे आचार नीतिरहित ।वं मारकूट आदि दोषों करके प्रजाक्षय करने वा बहुत ;ःखभोगनेवाले होते हैं ॥६९॥ चंद्रमा पुष्यनक्षत्रमें तथा कृत्तिकामें, यदि उत्तमअंशादिकोंमें हो तो राजा करता है यदि ।नराशिमें वर्गोत्तमांशकी हो तो शीघ्र ही सारी पृथ्वीका ।धिपति करता है ॥ ७० ॥

उपचयगृहसंस्था व्योमगाः सर्व एव विदधति नरपालं राजलक्ष्मीसमेतम् ॥ दिनकरशशिजीवा विक्रमस्था महीजो नवमसुतगृहस्थाः सार्वभौमं च कुर्य्युः ॥ ७१ ॥ रविस्तृतीये भृगुजः सुखस्थो बुधस्य चान्ये यदि पञ्चमस्थाः ॥ करोति नाथं वसुधाधिपस्य न नीचराशौ न च शत्रुगेहे ॥ ७२ ॥ सुधांशुगेहे शशिजो धनुर्द्धरगतो गुरुः ॥ रविभूसुतदृष्टौ तौ कुरुतः स महीपतिम् ॥७३॥ स्वोच्चे गुरुः शशी मीने कुंभे शुक्रो बली यदा ॥ तदा राजा भवत्येव यद्यशोधवला मही ॥ ७४ ॥

समस्तग्रह उपचयस्थानोंमें हों तो राजलक्ष्मीसहित राजा करते हैं सूर्य चन्द्रमा बृहस्पति विक्रमस्थानमें, मंगल ९। ५ में हो तो चक्रवर्ती करते हैं ॥ ७१ ॥ सूर्य तीसरा, शुक्र चौथा और बुधके पंचममें अन्य ग्रह हों तो राजा करता है परन्तु यदि वे ग्रह नीच वा शत्रुराशिमें न हों ॥ ७२ ॥ चन्द्रमाके घरमें बुध, धनमें गुरु हो इन्हें सूर्य मंगल देखें तो राजा करते हैं ॥ ७३ ॥ गुरु कर्कका चन्द्रमा मीनका और बलवान् शुक्र कुंभका होवे तो जिसके यशसे पृथ्वी श्वेत होजावे ऐसा राजा होवै ॥ ७४ ॥

तृतीयलाभारिगताश्च पापा दृष्टा शुभैःकेंद्रगतैर्विशेषात् ॥ कुर्वंति राजानमपूर्वकीर्तिं यस्य प्रयाणोत्थरजोंधकारः ॥ ७५ ॥ कुजः स्वगेहोपगतो रविजीवनिरीक्षितः ॥ वृषे ज्ञो भृगुसंदृष्टस्तथापि नृपतिर्भवेत् ॥ ७६ ॥ अमलवपुरपापः पद्मसंकोचकारी स्वभवनमथवांशे स्वोच्चमंशं प्रपन्नः ॥ यदि गगननिवासैः पंचभिर्दृश्यमानो जनयति जगतीशं निर्जिताशेषशत्रुम् ॥ ७७ ॥ इति श्री जातकशिरोमणौ राजयोगाध्यायस्त्रयोविंशातितमः॥२३॥

पापग्रह ३। ११। ६ भावोंमें शुभग्रहोंसे दृष्ट हों विशेषतः केन्द्रस्थ शुभग्रहोंसे दृष्ट हों अपूर्वकीर्तिवाला राजा करते हैं जिसके गमनमें धूली उडनेमें अन्धकार होजावे ॥ ७५ ॥ मंगल अपने राशिका सूर्य गुरुसे दृष्ट हो और वृषके बुधको शुक्र देखे तो भी राजा होवै ॥ ७६ ॥ पूर्णमंडल, निष्पाप चन्द्रमा अपनी राशिमें, अथवा स्वांशकमें, यद्वा उच्चांशकमें

ो उसे पांच ग्रह देखें तो सम्पूर्ण शत्रुओंको जीतनेवाला राजा ्होता है ॥ ७७ ॥ इति श्रीजातकशिरोमणौ माहीधरीभाषा ोकायां राजयोगाध्यायस्त्रयोविंशतितमः ॥ २३ ॥

अथ राजयोगसमर्थनाय रश्मिविचारमाह ।

ये प्रोक्ता यवनादिभिर्नृपतयो रश्मिप्रधानाश्च ते यावंतो ग्रहरश्मयो नरपतेः स्युर्जन्मकाले स्फुटाः ॥ तत्प्रोक्तं पृथिवीतलस्थितपुरग्रामाधिपत्यं भवेद्राज्ञामन्यकुलोद्भवस्य च ततो वक्ष्यामि तान्प्रस्फुटान् ॥१॥ सप्तैव ग्रहरश्मयः प्रतिखगं प्रोक्ता वशिष्ठादिभिर्भ्रष्टस्तुंगनिवासतः स्वकिरणात्प्रत्यङ्मुखास्ते ग्रहाः ॥ ये नीचात्पतिताः स्वतुगानिलयं गंतुं प्रवृत्ता ग्रहाः रश्मीनामभिसंमुखं प्रचलिता ज्ञेया महद्भिः सदा ॥ २ ॥

अब राजयोगोंके समर्थन करनेको रश्मिविचार कहते हैं, ो यवनादि आचार्योंने राजयोग कहे हैं वे रश्मिप्रधान हैं जेतने राजाके राजरश्मि जन्मकालमें ग्रहोंकी स्फुट होती हैं नके उक्तानुसार पुर, ग्राम, राजा अन्यकुलोद्भव भी होता इसलिये उनरश्मियोंका विचार स्पष्ट कहता हूं ॥ १ ॥ वे श्मि वशिष्ठादि आचार्योंने प्रत्येक ग्रहकी सात सात कही हैं ो ग्रह अपने उच्चसे उतर जाते हैं वे अपनी उच्चरश्मियोंसे मुख होजाते हैं जो ग्रह नीच से उतरके अपने उच्चमें जानेको वृत्त होते हैं वे विद्वानोंने रश्मिमुख जानने ॥ २ ॥

स्फुटग्रहान्नीचमपास्य केंद्रं षड्भाधिकं चेद्भगणाद्विशोध्य ॥ षड्भोनकं यच्च यथास्थितं स्यात्कलीकृतं

राशिकलासमेतम् ॥ ३ ॥ खखाष्टरूपैर्विहृतं फलं यद्रू-
पादिलब्धं गगने चरस्य ॥ एवं स्फुटा खेचररश्मयः
स्युः संस्कारमेषां कथयामि सर्वम् ॥ ४ ॥

रश्मि गणित हैं कि, ग्रहस्पष्टसे नीचस्पष्ट घटाना वह केंद्र होता है छः राशिसे अधिक हो तो १२ में घटाय देना छः राशिसे कम हो तो यथास्थित रखना उसकी कला करनी एकराशिकी कला १८०० उसमें जोड देनी ॥ ३ ॥ उसमें राशि कला १८०० का भाग देना जो एक आदिफल मिले वह ग्रह की रश्मि स्फुट होती है अब इसके उपरांत संस्कार सब कहता हूं ॥ ४ ॥

वैरिद्वादशभागो षोडशभागोनितास्तस्था नीचे ॥ अस्त
मितस्य विनष्टा ग्रहकिरणा न भार्गवाब्जजयोः ॥ ५ ॥
वक्रीग्रहस्य द्विगुणा वक्रत्यागेष्टभागोनाः॥एवं रश्मिवि-
धानं पूर्वाचार्य्यैः समुद्दिष्टम् ॥ ६ ॥

पूर्वानीत स्पष्टरश्मिमें और संस्कारहैं कि, शत्रुराशिगत ग्रहका बारहवां भाग, नीचवालेका सोलहवां अस्तंग्रहके भी उतना ही भाग घटता है परन्तु शुक्र बुधका अस्तमें भी उक्त भाग नहीं घटता ॥ ५ ॥ वक्रीग्रहके द्विगुण हो जाता है मार्गमें अष्टमांश घटता है इस प्रकार पूर्वाचार्योंने रश्मियोंका विधान कहा है ॥ ६ ॥

एकादिपञ्चकिरणा यदि जन्मकाले दुःखान्विता अपि
कुलप्रभवा नराः स्युः ॥ अन्यस्य तर्कनिपुणाः प्रथिता
दरिद्रे नीचा भवंति दशभिः किरणैर्महीपाः ॥ ७ ॥
यस्य पञ्चदश रश्मयः स्फुटाः सम्भवंति सुजनाः कुल

युक्ताः ॥ तस्य पुत्रवनिताधनसौख्यं जायते निजकुलानुसारतः ॥ ८ ॥ आविंशतेर्द्धनयुताः प्रथिताः पृथिव्यामापंचविंशतिकराः कृतिनोऽपि भूपाः ॥ सम्मानदान विधिना स्वजनाः प्रजाश्च तैर्मानिताः खलु भवंति नय प्रवीणाः ॥ ९ ॥

यदि जन्मकालमें एकसे पांचपर्यंत रश्मि हों तो, सत्कुलज मनुष्य भी दुःखयुक्त होते हैं अन्यकुलवाले कलहमें निपुण दरिद्रतामें विख्यात दश रश्मि होवें तो नीच राजा होते हैं ॥ ७ ॥ जिसकी स्पष्ट रश्मि १५ होवें सज्जन, भलाईसे युक्त होते हैं और उस मनुष्यको पुत्र स्त्री धन स्वकुलानुसार ऐश्वर्य भी होता है ॥ ८ ॥ वीसरश्मिवाले धनवान् पृथ्वीमें विख्यात होते हैं पचीसवाले चतुर राजा होकर सन्मान, दानविधिसे अपने मनुष्य एवं प्रजा भी उनके मान देनेसे निश्चय प्रवीण हो जाते हैं ॥ ९ ॥

भूपालवंशमनुजा अत उत्तरेण चण्डा नृपाश्रितपदा नृपलब्धसौख्याः ॥आत्रिंशकं परकुलप्रभवा मनुष्यास्ते राजपूजितपदाः सचिवं प्रयांति ॥१०॥ एकात्रिंशद्रश्मिभिर्भूमिपालः ख्यातो भुंक्ते भूमिखण्डं सुराज्यम् ॥ द्वात्रिंशद्भिः संख्यया ग्रामपंच राजा भुंक्ते तच्छतघ्नं सुखेन ॥ ११॥ ग्रामसहस्राधिपतिं त्रिंशत्प्रधिकं करोति रश्मीनाम् ॥ त्रिंशच्छतं दशघ्नं ग्रामाणां भाजनं चतुस्त्रिंशत् ॥ १२ ॥ परतो मण्डलभाजो बहुकोशवाजिपरिग्रहाः सुकीर्तियुताः ॥ षड्भिः सहितास्त्रिंशद्भुंक्ते लक्षं तु नगराणाम् ॥ १३ ॥

पच्चीस ऊपर रश्मि होनेमें राजवंशी मनुष्य प्रचंड राजाश्रय-पदमें नियुक्त राजासे सन्मान प्राप्त होते हैं ३० पर्यंत विना राजवंशोद्भव भी राजपूजित पाद होकर मंत्रिताको प्राप्त होते हैं ॥ १० ॥ एकत्रिंशत् रश्मिसे राजा होकर ख्यात होता है और अच्छे राज्यके टुकड़ेका राज भोगता है ३२ में पांचसौ ग्रामका राज्य सुखसे भोगता है ॥ ११ ॥ तेतीसरश्मिवाला सहस्र ग्रामका राज्य और चौतीसमें तीसहजार ग्रामोंके राज्य भोगनेवाला होता है ॥ १२ ॥ पैंतीसरश्मिमें (मंडल) जिलाका राजा बहुत खजाना बहुत घोडे तथा सुकीर्तियुक्त होते हैं ३६ रश्मिहोनेमें एक लक्ष नगरोंका राज्य भोगता है ॥ १३ ॥

चत्वारिंशद्रश्मयो यस्य राज्ञः श्रीखंडाद्रेराहिमाद्रिं धरायाम्॥सेनानादैराकुला वैरिभूपा गंतुं भीता नोत्सहंते कदाचित् ॥१४॥ एकत्रिंशत्प्रभृतिकिरणैः कीर्तिता भूमिपालाश्चत्वारिंशत्खचरकिरणं यावदस्मात्समासात् ॥ एकद्वित्रिप्रभृतिकिरणा वर्द्धमाना यदि स्युस्तेषां राज्यं प्रभवति परं द्वीपखण्डे धरायाम् ॥ १५ ॥ इति श्रीजातकशिरोमणौ रश्मिविचाराध्यायश्चतुर्विंशतितमः ॥ २४ ॥

जिस राजाके ४० रश्मि हों उसके सेनोंके चलनेके शब्दोंसे, मलयागिरिसे लेकर हिमालयपर्यन्तके वैरिराजे भयसे गमनकरनेको कभी नहीं चाहते ॥ १४ ॥ यहां ३१ से ४० पर्यंत किरणोंवाले सूक्षासे भूमिपाल कहे हैं इनमें भी जहां ३१। ३२। ३

किरण बढते हों उनका परम राज्य द्वीपखण्डपर्यंत पृथ्वीमें होता है ॥ १९ ॥ इति श्रीजातकशिरोमणौ माहीधरीभाषाटीकायां रश्मिविचाराध्यायश्चतुर्विंशतितमः ॥ २४ ॥

अथ राजयोगभंगाध्यायः ।

ये वशिष्ठयवनादिसूरिभिर्भाषिता नृपतियोगसंभवाः ॥ यैरवंशजनरा अथो नृपाः सप्रभा यदि न भंगकारकाः॥ ॥ १ ॥ नीचगाः कुजयमार्कसूरयो लग्नगा नृपतियोगभंगदाः ॥ वृश्चिके यदि निशाकरो भवेच्छीर्यते नृपतियोगसंभवः ॥ २ ॥

राजयोगभंग कहते हैं । जोराजयोगसंभव वशिष्ठयवनादि आचार्य पंडितोंने कहे हैं, जिनसे अराजवंशीय भी राजा होते हैं वे योगकर्त्ता ग्रह यदि कांतियुक्त अर्थात् अस्तपीडितादि न हों तो राजयोग भंग नहीं करते ॥ १ ॥ मंगल शनि सूर्य बृहस्पति लग्नमें हों तो राजयोग भंग करते हैं चंद्रमा वृश्चिकका हो तौ भी राजयोग भंग होता है ॥ २ ॥

चरस्य नवमे भागे द्विदेहाद्ये स्थिरेष्टमे॥ क्षीणे न केनचिद्दृष्टो राजभंगकरः शशी ॥ ३ ॥ क्रूराः केन्द्रगता नीचे वारिगा न शुभेक्षिताः ॥ शुभदा व्ययरंध्रस्था वा भंगो नृपतेर्भवेत्॥४॥ लग्ने गुणाः केपि न संभवंति न वा विलग्ने विहगे न दृश्यते॥नृपालयोगप्रभवोपि राजा दरिद्रदोषोपहतोऽबलः स्यात् ॥ ५ ॥ कुंभोदये सूर्यगते बृहस्पतौ त्रिभिर्ग्रहैर्नीचसमाश्रितैर्वा ॥ न कोपि तुंगे शुभकर्मभावे पापे नृपो वै विलयं प्रयाति ॥ ६ ॥

क्षीण चंद्रमा चरके पिछले नवांशमें, स्थिरके अष्टम यद्वा द्विस्वभाव आद्यंशमें हो उसे कोई ग्रह न देखे तो राजयोग भंग करताहै ॥ ३ ॥ क्रूरग्रह केंद्रमें अथवा नीच यद्वा शत्रुराशिमें हों शुभग्रह उनको न देखे यद्वा शुभ ग्रह १२।८ में हों तो राजयोग भंग करते हैं ॥ ४ ॥ यदि लग्नमें कोई भी उत्तम गुण वर्गोत्तमादि नहीं होते, न लग्नपर किसी ग्रहकी दृष्टि हो तो राजयोगसे भया राजा भी दरिद्रदोषसे हत और निर्बल भी होवे ॥ ५ ॥ लग्नमें कुंभराशि, बृहस्पति सूर्यके साथ हो अथवा तीन ग्रह नीचमें हों, कोई ग्रह उच्चका न हो ९। १० भावोंमें पापग्रह हों तो राजयोग भंग होजाता है ॥ ६ ॥

शुभग्रहेन्द्रै रविमण्डलस्थैर्न वा शुभो वेशिगृहं प्रपन्नः ॥ नीचस्थितैर्वारिगृहं प्रयातैर्ग्रहैश्चतुर्भिर्विलयं प्रयाति ॥ ७ ॥ शीतद्युतावस्तमिते रवौ तु स्वांशास्थिते पापविलोकिते च ॥ कृत्वापि राज्यं शुभदृष्टिहीने दुःखी हतांशो विलयं प्रयाति ॥८॥ अमृतकिरणधारी शत्रुदृष्टो विलग्ने सहजरिपुभवस्था भानुभूपुत्रमंदाः ॥ शुभगगननिवासा रश्मिहीना न केंद्रे नृपतिकुलसमुत्थो याति नाशं क्षणेन ॥ ९ ॥ पंचादिभिरस्तगतैर्निम्नं यातैश्च पंचभिः॥प्रयांति विलयं योगा भूभुजां ये प्रकीर्तिताः ॥ १० ॥ परं नीचगते चंद्रे क्षीणे वा पापपीडिते ॥ नाशमायाति राजेव दैवविद्रागनादरी ॥ ११ ॥

शुभग्रह अस्तंगत हो अथवा शुभग्रह वेशिस्थानमें न हो अथवा नीच वा शत्रुराशियोंमें चार ग्रह हों तो राजयोग

नष्ट होजाता है ॥ ७ ॥ चंद्रमा अस्त हो, सूर्य अपने अंशमें पापदृष्ट हो शुभग्रह न देखै तो राज्यकरके भी दुःखी एवं हताशहोके क्षय होवै ॥ ८ ॥ चंद्रमा लग्नमें शत्रु दृष्ट हो ३ । ६। ११ भावोंमें सूर्य मंगल शनि हों शुभग्रह रश्मिहीन केंद्रोंसे अन्यभावोंमें हों तो राजवंशीयका राज्य भी क्षणमें नष्ट हो जाता है ॥ ९ ॥ पांच आदिग्रह नीच वा अस्त हों तो राजा-ओंके उक्त राजयोग नष्ट होजाते हैं ॥१०॥ चंद्रमा परमनीचमें अथवा क्षीण यद्वा पापपीडित हो तो जैसे दैवज्ञको अनादर वाणी बोलनेवाला राजाके तरह राजयोग नष्ट होजाताहै॥११॥

जूकस्य दशमे भागे स्थितः कमलबांधवः ॥ अपि राजसहस्राणां भंगमेव करोत्यसौ ॥ १२ ॥ येषां जन्मनि जायंते चोल्का निर्घातनिस्वनाः ॥ केतवो दर्शनं यांति ते नश्यंति नृपोद्भवाः ॥ १३ ॥ शुभग्रहा वाप्यशुभग्रहा वा पराजिता जन्मनि रश्मिहीनाः ॥ रूक्षा विवर्णा जनयंति विघ्नं राज्ञां हि योगस्य किलो-दितस्य ॥ १४ ॥

सूर्य तुलाके१०अंश अर्थात् परमनीचपर हो तो हजार भी राजयोग हों उनका भंग करता है ॥ १२ ॥ जिनके जन्ममें उल्का पात, निर्घात शब्द, केतुदर्शन हो तो राजयोग नष्ट हो जाते हैं ॥ १३ ॥ जिसके जन्ममें शुभग्रह वा पापग्रह युद्धमें पराजित, तथा रश्मिहीन हों तो राजयोगवालोंको भी रूखे, कुवर्ण होते हैं उदितयोगमें विघ्न करते हैं ॥ १४ ॥

केचित्स्वमन्दिरगताः केचिन्मूलगृहस्थिताः ॥ स्वोच्चगा अपि नीचस्थः सूर्यश्चैकोपि भंगदः ॥ १५ ॥ गुरुर्नीच-

गतो लग्ने दुःखं नयति राजजान् ॥ केमद्रुमेन चैकेन भ्रष्टश्चंद्रो विनाशकृत् ॥ १६ ॥ कन्यायां पद्मिनीबंधुस्तुलायां गुरुभूमिजौ॥ मेषे शशी न दृष्टोऽन्यैः स राजा राजवंदितः ॥ १७ ॥ इति जातकशिरोमणौ राजयोगभंगाध्यायः पंचविंशतितमः ॥ २५ ॥

यदि कोई ग्रह स्वगृही, कोई मूलत्रिकोणी और कोई उच्च भी होवै परन्तु एक सूर्य परमनीचका होजावै तो सभी शुभोंका भंग करदेता है ॥ १५ ॥ बृहस्पति लग्नमें नीचराशिका होवै तो राजपुत्रोंको भी दुःखमें प्राप्तकराय देता है तथा एक केमद्रुमसे भ्रष्ट चन्द्रमा राजयोग भङ्ग करता है ॥ १६ ॥ सूर्य कन्याका, गुरु मंगल तुलामें, मेषमें चन्द्रमा जो पापदृष्ट न हो तो राजाओंसे वन्दना करनेकेयोग्य राजा होता है॥४७॥ इति जातकशिरोमणौ माहीधरीभाषाटीकायां राजयोगभंगाध्यायः पंचविंशतितमः ॥ २५ ॥

अथ भाग्यविचारः ।

विचिंतयेद्भाग्यगृहं विहाय सर्वं दशाद्यं यदिह प्रयुक्तम् ॥ भाग्यं विना दुःखसुखादिकस्य भवेद्विचारो न हि जातु किंचित् ॥ १ ॥ निशाकराद्यन्नवमं विलग्नाद्भाग्यं विचार्यं हितयोर्बलेन ॥ भाग्यर्क्षनाथो निलयेस्ति कस्मिन्को वा ग्रहो भाग्यगृहस्थितश्च ॥ २ ॥

भाग्यभावविचार है कि, जो दशादि पहिले कहे हैं उनको छोडके प्रथम भाग्यका विचार करना क्योंकि भाग्यविचार विना दुःख सुखका विचार कदाचित् भी कुछ नहीं होता

॥ १ ॥ उसका विचार ऐसा है कि, चन्द्रमासे तथा लग्नसें जो नवमस्थान है उसके बलाबलके अनुसार भाग्य जानना, भाग्यराशिनाथ कौन है किसके घरमें है कैसा उसका बलाबल है इत्यादि विचार प्रथम है ॥ २ ॥

स्वनाथयुक्तेक्षितभाग्यवेश्म स्वदेश एव स्वदशामवाप्य॥ स्तोकं महद्वा स्वफलं ददाति परोऽन्यदेशेशु दृग्युते च ॥ ३ ॥ विलग्नदुश्चिक्यसुतस्थितेन विलोकितं भाग्यगृहं यदि स्यात् ॥ स भाग्यवान् भाग्यफलस्य भोक्तान्यत्र स्थितेनेक्षितमल्पभाग्यम् ॥ ४ ॥ भाग्ये देवगुरौ रवीक्षिततनौ मन्त्री नृपो वा समो भोगी चन्द्रविलोकिते बहुधनो भौमेन सौम्येन च ॥ गोभिर्वाहनवस्त्ररत्ननिचयैर्युक्तः सितेनेक्षिते सौरेण त्रपुदासवेसरखरस्वामी कुलान्याधिपः ॥ ५ ॥

भाग्यगृह स्वस्वामि शुभग्रहसे युक्त वा दृष्ट होवै तो उसकी दशामें अपने ही देशमें, उसके बलानुरूप थोडा वा बहुत फल मिलता है, शत्रुयुक्त दृष्ट हो शुभस्वनाथयुग्दृष्ट हो तों परदेशमें फल देता है ॥ ३ ॥ लग्न, दुश्चिक्य, पञ्चमस्थित उक्तग्रहसे भाग्यभाव यदि देखाजावै तो वह मनुष्य ऐश्वर्यवान्, भाग्यफलभोगनेवाला होताहै, अन्यभावोंमें बैठकर देखे तो ऐश्वर्य थोडा होता है ॥ ४ ॥ नवम स्थानमें बृहस्पति सूर्य दृष्ट हो तो मन्त्री, वा राजा अथवा राजतुल्य होता है चन्द्रदृष्ट होवै तो भोगवान् भौमदृष्टिसे बहुधनवाला बुधसे भी यही फल है शुक्रदृष्टिसे गौ वाहन, वस्त्र, रत्नसमूहोंसें युक्त होवे शनिदृष्ट होवै तो राँगा, दास, खच्चर, गदहोंका स्वामी नीचकुलजोंका नायक होवे ॥ ५ ॥

चंद्राऽर्कदृष्टे धनदारपूर्णो रव्यारदृष्टे बहुवाहनाढ्यः ॥ बुधाऽर्कदृष्टेवरभूषणाढ्यो ज्ञः काव्यवित्कांतवपुः कलाज्ञः ॥ ६ ॥ उत्सवगोमहिषाढ्यो रविसितदृष्टे विनीतवेषश्च ॥ वेशपुरश्रेणिपतिर्गुणवानर्कार्किदृष्टेज्ये ॥ ७ ॥ एकेन यद्योगफलं निरुक्तं द्वाभ्यां त्रिभिर्वा यदि योगदृष्टिः ॥ तावत्फलं ग्रे..कफलेन युक्तं विचार्य्य सम्यग्विलिखेच्च विद्वान् ॥ ८ ॥

वही नवम गुरु चंद्र सूर्यसे दृष्ट हो तो धन और स्त्रीसे पूर्ण रहे सूर्य मंगलसे दृष्ट हो तो बहुत वाहनोंसे युक्त रहे बुध सूर्यसे, श्रेष्ठ भूषणोंसे युक्त तथा पंडित, काव्यज्ञ रमणीयशरीर कला जाननेवाला होवै ॥ ६ ॥ सूर्य शुक्रसे दृष्ट हो तो उत्सवकृत्य, गौ भैंसयुक्त और नम्रवेष भी होवै, सूर्य शनि दृष्टिसे, सरोवर, ग्रामपंक्ति, पुरोंका स्वामी और गुणवान् होवै ॥ ७॥ एक ग्रह दृष्टिसे जो फल कहा है वही फल २ । ३ ग्रहोंकी दृष्टि होनेपर सम्यग् विचारना और विद्वान्ने लिखना ॥ ८ ॥

रूपान्वितोऽथ धनवान्सुभगो बली स्यात्तेजोयुतो नरपतिर्बहुधर्मकर्त्ता ॥ भाग्ये गुरौ सकलखेटविलोकिते वा जायात्कुलोचितकरो गुरुमंदिरेऽपि ॥ ९ ॥ बुधगुरुभृगुपुत्रा भाग्यगेहोपविष्टा न रिपुगृहनिविष्टा निम्नगा जन्मकाले॥भवति बहुधनाढ्यो धान्यधर्मैश्च जंतुर्भवति नृपतिमान्यो दीर्घजीवी सुबन्धुः ॥ ॥ १० ॥ भाग्ये गृहे पूर्णशशी यदि स्यात्प्रधानवीर्यो बुधसौख्यकाः॥

व्यस्ताः समस्ता मनुजाः प्रधानाः प्रधानवंशप्रभवाश्च तेषु ॥ ११ ॥ इति भाग्यविचारः ॥

नवम गुरु सभी ग्रहोंसे दृष्ट होवे तो मनुष्य रूपवान् धनवान् सौभाग्ययुक्त बलवान्, तेजवान्, राजा, बहुत धर्म करनेवाला और अपनेके उचित कर्म करनेवाला होवै ॥ ९ ॥ बुध, गुरु, शुक्र यदि जन्ममें नवममें हों परंतु शत्रु नीचमें न हों तो जीव बहुत धनसे युक्त अन्नसे, धर्मसे संपन्न होता है और राजमान्य, दीर्घायु, अच्छे बंधुवाला होता है ॥ १० ॥ नवमस्थानमें पूर्ण चंद्रमा और बलवान्, बुध शनि शुक्र हों तो समस्त मनुष्य इस योगवाले श्रेष्ठ प्रधान होते हैं प्रधानवंशमें उत्पन्नोंके ऐसे ग्रह होते हैं ॥ ११ ॥

अथ धनभावविचारः ।

धनभावे शनिभौमौ त्वग्दोषदरिद्रदौ ज्ञेयौ ॥ केवलो यदि सौरः स्यान्महार्थविभवो भवेत् ॥ १२ ॥ बुधदृष्टस्त्रिदशगुरुर्द्धनभावस्थोऽति निःस्वतां कुरुते ॥ शशितनयोऽपि च शशिना दृष्टो बहुधा धनं हन्ति ॥ १३ ॥ क्षीणो बुधेक्षितश्चंद्रो धनस्थो धननाशकृत् ॥ पूर्वेणोपार्जितस्यापि किं पुनः स्वभुजोर्जितम् ॥ १४ ॥ शुक्रो बुधेक्षितो द्रव्ये द्रव्यदाता सदा भवेत् ॥ शुभालयगतो वापि स एव धनदः स्मृतः ॥ १५ ॥

धनभाव विचार है कि, द्वितीयस्थानमें शनि मंगल हों तो त्वचाके दोष, दरिद्रता करनेवाले जानने यदि अकेला शनि होवे बडा धन विभव होवै ॥१२॥ धनभावमें बृहस्पति

बुधदृष्ट हो तो निर्द्धनता करता है बुध भी धनभावमें चंद्रदृष्ट हो तो बहुत धनका नाश करताहै॥१३॥ क्षीणचंद्रमा धनस्थानमें बुधदृष्ट धननाश पिछलोंके कमायेका भी करता है और अपनी मेहनतसे कमायेका तो क्या ही कहना है ॥ १४ ॥ बुधदृष्ट शुक्र धन भावमें सर्वदा धन देता है अथवा शुभराशिमें हो तो वही एक धन देने वाला कहा है ॥ १५ ॥

अथ सहजपुत्रपत्नीविचारः ।

सहजतनुजजायाभावसंस्था नवांशाः पतिशुभयुतदृष्टा अस्ति भावार्थसंपत् ॥ शुभगगननिवासो लोकयोगेन हीना न खलु भवति संपत् पापदृष्टैरनाथैः ॥ १६ ॥ अंशराशिपतयो विरश्मयो नीचगा ग्रहजितारिग्रहस्थाः ॥ तस्य तस्य न हि वृद्धि रिष्यते योंशराशिरपि पापदृग्युतः ॥ १७ ॥ नवांशवेश्माऽधिपतिर्निजोच्चे प्रतीपगामी त्रिगुणो नवांशैः ॥ वर्गोत्तमात्मायनवांश राशिद्रेष्काणसंस्थे द्विगुणोंशवर्गः ॥ १८ ॥

भ्रातृ, पुत्र, स्त्री, भावोंके नवांश स्वस्वामि शुभयुत दृष्ट होवैं तो इनभावोंकी संपत्ति करते हैं यदि पापग्रहोंसे युक्त दृष्ट हों स्वामी शुभग्रहसे युक्त दृष्ट न हों तो वह संपत्ति नहीं होती ॥ १६ ॥ अंशेशं राशीश, रश्मि हीन, नीच, नीचगत, युद्धमें पराजित, वा शत्रुराशिस्थ हो तो तथा अंश और राशि भी पापयुत दृष्ट हो तो उन उन भावोंकी वृद्धि नहीं होती ॥ १७ ॥ यदि भावेश नवांशेश अपने उच्चोंमें हों तो उस भावोक्त फलकी त्रिगुणसंपत्ति करते हैं वर्गोत्तम नवांश, स्वनवांश स्वराशि स्वद्रेष्काणमें हों तो द्विगुण संख्या करते हैं ॥ १८ ॥

लग्नाच्चन्द्रमसस्तृतीयभवने पापैः समस्तैर्युतं न स्यु-
स्तत्सहजाः कथंचिदपि वा प्रोक्तांशशक्त्या क्वचित् ॥
यावंतः सहजेंशका उदयिनो भौमेन शीतांशुना दृष्टा-
स्तत्समदारिकाश्च सहजा प्रायः शुभैः शोभनाः ॥१९॥
तत्र स्थितो रविसुतः क्षितिजेन दृष्टो जातं विनाशयति
शुक्रसुरेज्यदृष्टः ॥ पुष्णाति तस्य सहजाञ्छशिजः
कुजेन दृष्टश्च तद्भवनगो विनिहंति जातम् ॥ २० ॥

लग्न वा चंद्रमासे तीसरे स्थानमें पापग्रह हों तो पूर्वोक्त अंश बलतुल्यसंख्याक भी भाई उसके मुष्किलसे भी नहीं होते तृतीयमें जिदितांश, शुभ स्वस्वामिसे दृष्ट होते हैं उतने भाई होते हैं जितने मंगल चंद्रमासे दृष्ट हों उतनी बहिन होती हैं ॥ १९ ॥ तीसरा शनि मंगलसे दृष्ट हो तो भाई नष्ट करता है गुरु शुक्रसे दृष्ट हो तो भाइयोंको बढाता है तीसरा बुध भौमदृष्ट हो तो भाईकी हानि करता है ॥ २० ॥

अथ पुत्रभावविचारः ।

शुभालयः पंचमभावसंस्थः शुभग्रहैर्युक्तनिरीक्षितश्च ॥
अनस्तगैस्तस्य भवत्यपत्यं पापेक्षितं पापगृहेन
तत्स्यात् ॥२१॥ शुभराशौ गुरुवर्गे शुभदृष्टेज्ये सुतौ-
रसो ज्ञेयः ॥ लग्नाच्चन्द्रादथवा बलयोगात्पंचमः सदा
चिन्त्यः ॥ २२ ॥ बुधशनिवर्गोधीस्थश्चैकेन युतो न
दृष्टश्च ॥ क्षेत्रजपुत्रं जनयति दृष्टः पापेन वा तथा
वाच्यम् ॥ २३ ॥

पुत्रभावका विचार है कि पंचमभावमें शुभग्रहराशि, शुभ ग्रहोंसे युक्त दृष्ट भी होवै शुभ अस्तंगत न हो तो उसको संतान होती है पापराशि, पापयुग दृष्ट हो तो संतति नहीं होती ॥ २१ ॥ पंचममें शुभराशि गुरुका अंशादिवर्ग बृहस्पति युक्त शुभग्रह दृष्ट हो तो औरसपुत्र होता है अथवा ऐसेही लग्नसे वा चंद्रमासे, बलाऽनुसार पंचम भाव सर्वदा विचारना ॥२२॥ पंचममें बुध, शनिका वर्ग हो किसीसे युक्त दृष्ट न हो तो क्षेत्रज पुत्र होता है पापग्रहदृष्टिसे भी यही फल कहना ॥ २३ ॥

सुतभवनं मन्दगृहं मंदयुतो निरीक्षिते शशी पूर्णः ॥दत्तकपुत्रोत्पत्तिः क्रीतः पुत्रो बुधश्चैवम् ॥ २४ ॥ पंचमे यदि कुजस्य नवांशः सप्तमो रविसुतेन च दृष्टः ॥ तस्य कृत्रिमसुतेन पुत्रता नापरैर्गगनगैर्भवतीह ॥२५॥ बलवति सुतभावे सूर्यपुत्रार्कयुक्ते धरणितनयदृष्टे जायते तस्य पुत्रः ॥ अधमकुलसमुत्थो वाच्यतां कामिनीनां भवति जननकाले पाणिपीडेऽपि चैवम् ॥ २६ ॥

पञ्चममें शनिकी राशि हो उसे शनियुक्त पूर्ण चन्द्रमा देखे तो दत्तकपुत्र और इसीप्रकार शनिराशि सबुधचन्द्र दृष्ट हो तो (क्रीत) मोल लिया पुत्र करता है ॥ २४ ॥ पञ्चममें यदि मंगलका नवांश सप्तम शनि युत दृष्ट हो तो (कृत्रिम) बनावटी पुत्र होता है परन्तु और ग्रह उसे न देखे तब यह फल है ॥ २५ ॥ पञ्चम भाव बलवान् हो उसमें शनि सूर्य हों मंगलकी दृष्टि हो तो उसका पुत्र अधमकुलोत्पन्न हो जिसकी स्त्री लोग भी निन्दा करें यह योग जन्ममें और विवाहमें भी यही फल करता है ॥ २६ ॥

शशिनि कुजनवांशे धीस्थिते सौरिदृष्टे यदि भवति न दृष्टः शेषखेटे हिमांशुः॥भवति कुलविवृद्धिस्तस्य गूढोद्भवेन प्रथितकुलविशेषो जायते तेन नाशः ॥ २७ ॥ सौरिनवांशगते क्षितिपुत्रे सुतभावेऽर्कविलोकितदेहे ॥ अपविद्धस्तनयो मुनिवचनं भवति न तच्च कदाचिद्विफलम् ॥ २८ ॥ पंचमे स्वनवभागगे शनौ सहिमांशौ रविभार्गवेक्षिते॥ पुत्रता भवति तस्य पुनर्भूसंभवेन तनुजेन नान्यथा ॥ २९ ॥ सूतौ यदार्किंयुक्ते दृष्टे वा पंचमे चंद्रे॥रविदृष्टेप्यथ सहिते कानीनः संभवेत्तदा पुत्रः॥३०॥

चन्द्रमा मंगलके नवांशकमें पञ्चम हो उसे शनि देखे अन्य ग्रह उसे न देखे तो उसके कुलकी वृद्धि गूढोत्पन्न पुत्रसे होतीहै श्रेष्ठ कुल विशेषका नाश इससे होता है ॥२७॥ पञ्चममें मंगल शनिके नवांशकमें हो उसे सूर्य देखे तो अपविद्ध पुत्र होता है यह मुनि वचन है कभी निष्फल नहीं जाता ॥ २८ ॥ पञ्चम शनि अपने नवांशका हो चन्द्रमा उसके साथ हो सूर्य शुक्र उसे देखे तो उसके पुनर्भू स्त्रीके सन्तानसे पुत्रता होवै और प्रकार नहीं ॥ २९ ॥ जन्ममें पंचम चन्द्रमा शनियुक्त हो सूर्यसे युक्त वा दृष्ट हो तो कानीन पुत्र होता है ॥ ३० ॥

सुतभावे यदि पापमंदिरं बलिभिः पापखगैर्युतं भवेत् ॥ शुभसंयोगविलोकनोज्झितं पुरुषोऽपुत्र इतीरितो बुधैः ॥ ३१ ॥ गृहादिके वर्गगणे सुतस्थे शुक्रस्य शुक्रेण निरीक्ष्यमाणे ॥ भवंत्यपत्यानि बहूनि तस्य दासीसमुत्थानि सुधांशुतोऽपि ॥ ३२ ॥

पञ्चममें पापराशि बलवान् पापग्रहोंसे युक्त हो शुभ युक्त दृष्ट न हो तो पुरुष अपुत्र होवे ऐसा पंडितोंने कहा है ॥३१॥ पञ्चममें शुक्रके राश्यंशादिवर्गहो, शुक्र देखे तो दासीसे उत्पन्न बहुत पुत्र हों ऐसाही फल ऐसे चन्द्रमाका भी है ॥३२॥

शशधरभृगुवर्गे पंचमस्थे विलग्नाच्छिशिराकिरणतो वा युक्तदृष्टश्च ताभ्याम् ॥ युगलविषमवर्गैस्तत्समाः पुत्रकन्या यदि न तनुज भावः पापयुक्तेक्षितः स्यात् ॥ ३३ ॥ हिबुकभवनसंस्था भौमचन्द्रारिसौराः सुतभवननगतोऽर्को भार्गवेऽस्ते शशी खे ॥ विबुधगुरुबुधाभ्यां पंचमं युक्तदृष्टं न भवति यदि मर्त्यो वंशहीनः प्रजातः॥३४॥ सुतधनसुखहीनः पंचमस्थैश्च पापैर्भवति विकल एवं क्ष्मासुते तत्र जंतुः ॥ दिवसकरसुतेन व्याधिबंधाभितप्तः सुरगुरुबुधशुक्रैः सौख्यसंपज्जनाढ्यः ॥ ३५ ॥

लग्नसे वा चन्द्रमासे चंद्रमा वा शुक्रका वर्ग पञ्चम हो इन्हींसे युक्त वा दृष्ट हो, यदि पापयुक्त दृष्ट न हो तो जितने समवर्ग हों उतनी कन्या, जितने विषम वर्ग हों उतने पुत्र होते हैं ॥ ३३ ॥ चतुर्थस्थानमें मंगल राहु शनि हों सूर्य पंचम शुक्र सप्तम चन्द्रमा दशम हों बुध बृहस्पतिसे युक्त दृष्ट न हों तो मनुष्य वंशहीन होता है ॥ ३४ ॥ पञ्चममें पापग्रह हों तो पुत्र धन सुख हीन होता है मंगल पञ्चम हो तो जीव विकल रहता है शनि पञ्चम हो तो रोग तथा बंधनसे सन्तप्त रहे यदि बुध, गुरु, शुक्र, पंचम हों तो सुख, संपत्ति और मनुष्योंसे युक्त रहे ॥ ३५ ॥

अथ स्त्रीविचारः ।

लग्नाच्चंद्रमसो बलाच्छुभगृहं जायागृहे स्वामिना सौम्यैर्युक्तविलोकितं च बलिभिः पापैर्न युक्तेक्षितम् ॥ दाराः स्युर्बहवो नवांशकवशात्पुंस्त्रीस्वभावान्वितः क्रूरः क्रूर-नवांशकैः शुभखगैः सौम्यस्वभावाः स्त्रियः ॥ ३६ ॥ येंशा लग्नस्योदिता जन्मकाले जायाभावे तत्समाना नवांशाः ॥ वाच्या विद्भिस्तस्य जायानवांशैर्जायाभावे राशिसंख्यादिकैर्वा ॥ ३७ ॥

स्त्रीभाव विचार है कि, लग्न वा चन्द्रमामें जो बलवान् हो उससे सप्तममें शुभ राशि हो, स्वस्वामी शुभग्रहोंसे युक्त दृष्ट होवै स्वस्वामी शुभ भी बलवान् हो पापग्रहोंसे युक्त दृष्ट न हो तो स्त्री बहुत होवैं नवांशकवशसे, विषममें पुरुषाकार स्वभाववाली सममें सुशील होती है । क्रूरनवांशकोंसे क्रूरस्वभाव सौम्यनवांशकोंसे सौम्यस्वभावकी होती है ॥३६॥ लग्नमें जितने नवांश उदित हैं (उदितभुक्तनवांशकोंको कहते हैं) उतनेही सप्तममें भी उदित होते हैं, उनके अनुसार बलाबल देखके उतनी संख्या स्त्रियोंकी कहनी अथवा जाया भाव राशिसंख्या आदिसे ॥ ३७ ॥

यावत्संख्याः स्त्रीगृहे चोदितांशास्तत्तद्राशिः क्रूरयुक्तेक्षितश्च ॥ जायाभावे नो शुभो नैव दृष्टिः सा स्त्री क्लिष्टा या नवांशेन दत्ता ॥ ३८ ॥

जितने (उदित) भुक्तनवांश सप्तम भावमें होवैं वे राशि क्रूरयुक्त दृष्ट हों, सप्तमपर शुभ दृष्टि वा शुभ योग न हो तो जो स्त्री नवांशबलसे पाई गई है वह कठोर होवै ॥ ३८ ॥

द्यूनेऽर्किज्ञौ तस्य जाया पुनर्भूश्चान्द्रे वर्गे भार्गवे यानि संस्थे॥ताभ्यां दृष्टं तस्य पत्न्यो भवंति बह्वयः सौम्याः शुक्रदृष्टे विशेषात् ॥ ३९ ॥ जायासंस्थे भौमे नित्य-वियुक्तः स्त्रिया पुरुषः॥म्रियते वा शनिदृष्टे योषिदवश्यं शुभैर्नैवम् ॥ ४० ॥ भृगुधरातनयौ युवतीगृहे विकल-दारमुशांति नरं तदा ॥ व्ययरिपूपगतौ शशिभास्करा-वथ दृशा रहितौ खलु दंपती ॥ ४१ ॥ शनौ लग्नगते द्यूने गण्डान्तस्थश्च भार्गवः ॥ वंध्यापतिः शुभैर्युक्तं नेक्षितं यदि पञ्चमम् ॥ ४२ ॥

सप्तममें शनि बुध जिसके हों उसकी (पुनर्भू) दो घरकी होती है यदि चंद्रमाके राश्यादिवर्गमें शुक्र सप्तम होवै उसे शनि बुध देखे तो उसकी बहुत स्त्री सौम्यस्वभावकी होती हैं,सप्तममें शुक्रकी दृष्टि होनेसे यह फल विशेष होता है॥३९॥ सप्तममें मंगल हो तो पुरुष सर्वदा स्त्रीसे जुदा रहे यदि सप्तम मंगलपर शनिदृष्टि होवै तो स्त्री अवश्य मरेगी शुभ दृष्टि भी होवै तो नहीं मरेगी ॥ ४० ॥ शुक्र मंगल सप्तममें हो तो मनुष्यको विकलदार कहते हैं स्त्री जिसकी कलारहित हो उसे विकलदार कहते हैं चंद्रमा सूर्य साथ वा अलग ६।१२ में हों तो स्त्रीपुरुष दोनोंके एक एक आंख काणी होती हैं ॥ ॥ ४१ ॥ शनि लग्नमें हो और सप्तममें (चक्रसंधि) गंडांतस्थां-नांशगत शुक्र हो तथा पंचममें शुभग्रह योग[illegible] दृष्टि न हो तो उसकी स्त्री बांझ होती है॥ ४२ ॥

पापा लग्ने व्यये द्यूने क्षीणे धीस्थे निशा[illegible]॥ स्त्रीनरौ भवतो नूनमपत्येन विवर्जितौ ॥ ४३ ॥ पापैः [illegible]

र्क्षसप्तस्थैर्न दृष्टः शुभैर्दैग्रहैः ॥ जाया भवंत्यतिमृतिं वारंवारं च नान्यथा ॥ ४४ ॥ एकादशगतैः पापैः प्रथमोढानपत्यका ॥ मृतप्रजाता युग्दृष्टैः शुभैः पश्चाच्च पुत्रिणी ॥ ४५ ॥ इति जातकशिरोमणौ सहजपुत्रपत्नीविचाराध्याय षड्विंशः ॥ २६ ॥

पापग्रह ११।१२।७ भावोंमें हों क्षीण चंद्रमा पंचममें हो तो स्त्री पुरुष पुत्ररहित होवैं ॥ ४३ ॥ पापग्रह ५।७ में शुभग्रह योगदृष्टिसे रहित हों तो वारंवार स्त्री मरती रहै इसमें अन्य नहीं ॥ ४४ ॥ पापग्रह एकादशमें हो तो पहिली स्त्री अपुत्रा होवै शुभग्रहोंसे भी युक्त दृष्ट हों तो पुत्र पहिलेके मरें पीछेके जीते रहें ॥ ४५ ॥ इति श्रीजातकशिरोमणौ माहीधरीभाषाटीकायां सहजपुत्रपत्नीभावविचाराध्यायः षड्विंशः ॥ २६ ॥

अथ स्त्रीजातकाध्यायः ।

पुंसां जन्मविधौ फलं निगदितं यद्यद्ग्रहर्क्षादिभिः स्त्रीणां जन्मनि यद्यदेव घटते तासां हि पुंसां फलम् ॥ पुंयोग्यं सकलं फलं पतिषु तत्तासां वपुश्चिंतयेल्लग्नेन्दोर्निधने धवस्य मरणं सौभाग्यमस्ते पतिम् ॥ १ ॥ बालस्त्रीरमणस्त्रिसो न घटते पाणिग्रहो वा पुनर्नाशो वा वृषणस्य नैव घटते पुंगुह्यकोनाथवा ॥ स्त्रीणां वा गुरुतल्पगो [illegible]तनं मेहस्य न स्त्रीरतिस्तासां राज्यमपि स्वयं व्रजति वा स्त्रीपुंप्रयोगं स्त्रिया ॥ २ ॥

अब स्त्रीजातक कहतेहैं पुरुषोंके जन्ममें जो फल ग्रह राश्यादि करके कहे हैं वही स्त्रियोंके भी हैं परंतु जो फल स्त्रियोंपर घटते हैं वही मात्र उनको कहने जो फल पुरुषोंहीपर घटसकते हैं वैसे फलदायक योग स्त्रियोंके हों तो वे फल उनके पतियोंको जानने और लग्न वा चन्द्रमासे अष्टमभावमें पति मरण सप्तममें सौभाग्यका विचार करना ये दो बात पुरुषोंसे अधिक हैं ॥ १ ॥ जैसे युवा स्त्रीरमण दूसरा आदिविवाह वृषणनाश अंडवृद्धि अथवा गुह्यस्थानहीन ध्वजभंगादिरोगसे शिश्नका गिरजाना अथवा गुरुपत्नी गमन प्रमेहरोगसे नपुंसकता स्त्रीरति और स्वयं राजा होना वा मंत्री आदि होना ऐसे फल स्त्रियोंको नहीं घटते ऐसे फल देनेवाले योग स्त्रियोंके होवें तो इनके फल उनके पतियोंको कहने ॥ २ ॥

युग्मराशिसहितावुदयेन्दू स्त्रीस्वभावसहिता वनिता [स्यात् ॥ तौ शुभग्रहनिरीक्षितौ तु सच्छीलभूषणगुणान्विता सती ॥ ३ ॥ विषमराशिगतावुदयेन्दू नरशीलाकृतिनीचकन्यका ॥ समभोक्तैः सुगुणैश्च वर्जिता यदि पापैर्युतवीक्षितौ सपापा ॥ ४ ॥ वक्रार्किजीवबुधभार्गवभागजाता कन्यैव भौमनिलये पुरुषप्रयोगम् ॥ आयाति दास्यमपि याति च नीचकन्या तुल्यव्ययाय सहिता क्रमशो विभागे ॥ ५ ॥ भौमांशके कपटिनी बुधभे यमांशे क्लीबाकृतिर्गुरुविभागभवा सती च ॥ बौधेंशके बहुगुणा भृगुभागजाता नायाति तोषमधिकं सुरते कदाचित ॥ ६ ॥

पुंमनस्का ॥ ११ ॥ अस्ते मंदबुधौ नपुंसकपतिः शून्ये बले कुत्सितः सौम्यस्वामिविलोकनेन रहिते नित्यं प्रवासी चरे ॥ अस्तेऽर्के पतिरुज्झिता क्षितिसुते रण्डाल्पकाले भवेदस्ते क्रूरविलोकितेऽर्कतनये कन्येव वृद्धा भवेत्॥ १२॥

बुध शुक्र अन्योन्य अंशकोंमें परस्पर दृष्ट होवैं अथवा शुक्रांशकमें दोनोंही हों तो दूसरी स्त्रीसे पुरुषका भाव मनमें धारण करके पुरुषके तरह कामक्रीडा करायके कामदेवकी शांति करावै ॥ ११ ॥ सप्तममें शनि बुध हों तो पति नपुंसक होवै, सप्तमभावग्रह शून्य वा बलरहित हो तो पति निन्द्य, होवै स्वस्वामी शुभसे दृष्ट न हो तथा सप्तममें चरराशि हो तो भर्त्ता सर्वदा विदेशमें रहै सप्तम सूर्य हो तो पतिसे त्यक्त रहे मङ्गल हो तो थोडे ही समयमें रांड होजावै और पापदृष्ट शनि सप्तम हो तो अनव्याहीमें ही बूढी होजावै ॥ १२ ॥

पापैः सप्तमराशिगैर्विधवता सौम्यग्रहावीक्षितैःसौम्यक्रूरसमाश्रितेऽस्तभवने कांता पुनर्भूर्भवेत् ॥ कौजेंशे भृगुजे कुजेन्यनिरता शुक्रांशके द्यूनगैस्तारानाथमहीजभार्गवसुतैर्नाथाज्ञयान्यं गता ॥ १३ ॥ रविजकुजभलग्ने भार्गवे चन्द्रयुक्ते परपुरुषरता स्यात्साम्बया पापदृष्टे ॥ क्षितितनयविभागे सप्तमे सौरिदृष्टे भवति सगदयोनिः सौम्यभागे सुयोनिः ॥ १४ ॥ युवति भवनसंस्थे सूर्यजर्क्षेंशके वा भवति युवतिभर्त्तातीव मूर्खो जराढ्यः ॥ धरणिभवगृहांशे क्रोधनः स्त्रीषुलोलः सुखधनसुभगाढ्यो भार्गवांशे गृहस्ते ॥ १५ ॥

सप्तममें पापग्रह शुभग्रह दृष्टिरहित हों तो वैधव्य देते हैं यदि शुभाशुभ मिश्रित हों तो स्त्री पुनर्भू होती है मंगलके अंशकमें शुक्र वा मंगल सप्तममें हो तो अन्यपुरुषमें आसक्त रहे सप्तममें शुक्रांशकी चन्द्रमा मंगल शुक्र हों तो भर्त्ताकी आज्ञासे दूसरा खसम करे ॥ १३ ॥ शनि वा मंगलके राशि-लग्नमें चन्द्रमासहित शुक्र हो तो परपुरुषमें रत रहे उस-पर पापदृष्टि हो तो भर्त्ताकी आज्ञासे परपुरुषरता होवै मंगलके अंशकमें सचंद्रशुक्रशनि दृष्ट हो तो योनिरोगसहित और शुभांशकमें हो तो सुयोनि होती है ॥ १४ ॥ यदि वही उक्त प्रकार शुक्र शनिके राशि वा अंशकमें होवै तो उस स्त्रीका भर्त्ता अतिमूर्ख और बुढापेसे युक्त होवै मंगलके अंशमें हों तो क्रोधी तथा स्त्रियोंमें लोलुप, यदि शुक्रांशकमें सप्तम हो तो सुख धनयुक्त होता है ॥ १५ ॥

विद्वान्भोक्ता नैपुणश्चैव बौधे जैवे विद्वानिंद्रियाणां विजेता ॥ कामासक्तश्चापटुश्चन्द्रभांशे कार्यासक्तः सौरिभांशे मृदुश्च ॥ १६ ॥ बुधेन्दू लग्नस्थौ सुखगुण-कलाढ्यातिनिपुणा सपत्नी सेर्ष्याढ्या भवति सुखसंप-त्परिवृता ॥ ज्ञशुक्रौ लग्नस्थौ भवति सुभगा ख्यातसुगुणा त्रिभिः सौम्यैर्लग्ने बहुसुखधना चन्द्रसहिते ॥ १७ ॥

बुधांशकमें होवै तो भर्त्ता विद्वान् और निपुण होवै गुरु-केमें विद्वान् इन्द्रियोंको जीतनेवाला, चन्द्रराश्यंशमें काममें आसक्त और अविद्वान्, शनिराश्यंकमें कार्यासक्त तथा कोमल स्वभाव होवै ॥ १६ ॥ बुध चन्द्रमा लग्नमें हों तो सुख, सुगुण, तथा कलायुक्त, अतिनिपुण, सपत्नीसे ईर्ष्यायुक्त, सुखसंप-त्तिसे युक्त होवै, बुध शुक्र लग्नमें हों तो सुभगा, विख्यातसु-

गुण होवे तीन शुभग्रह चन्द्रसहित लग्नमें हों तो स्त्री बहुत सुख बहुत धनयुक्त होती है ॥ १७ ॥

यस्यांशे निधनेश्वरो विधवता तस्यांतर्दशायां मृतौ क्रूरे सत्सु धनास्थितेषु मरणं स्वस्यैव रंध्रे धने ॥ यातौ पापशुभौ प्रयाति मरणं कांतेन सार्द्धम्त्रधूर्यस्यांशे धनरंध्रपौ प्रभवतः स्यात्तद्दशायां मृतिः ॥१८॥ सौम्ये ष्टमस्थे कन्या सा भर्तुः प्रागेव निश्चयात् ॥ पापेष्ट-मस्थे भर्ता प्राङ् म्रियते नात्र संशयः ॥ १९ ॥ पाप सौम्ययुते तस्मिन्समकाले मृतिर्भवेत्॥एवं नृणां विचा-रश्च जन्मलग्नाष्टमे ध्रुवम् ॥ २० ॥

अष्टमेश जिसके नवांशकमें हो उसकी अंतर्दशामें वैधव्य होता है जब वैधव्य योग पायाजाय तब उसका समय इस प्रकार कहना, अष्टममें पाप द्वितीयमें शुभ ग्रह हों तो अप-ना ही मरण उस अंतर्दशामें होवे, यदि २ । ८ भावोंमें पापशुभमिश्रित हों तो स्त्री भर्ताके साथ ही मरे अथवा धनेश अष्टमेश जिसके अंशकमें हों उसकी दशामें मृत्यु होती है ॥ १८ ॥ शुभ ग्रह अष्टम हो तो भर्ताके पहिले वह कन्या मरेगी यदि अष्टममें पाप हो तो पहिले भर्त्ता मरे अर्थात् विधवा होवे इसमें संदेह नहीं ॥ १९ ॥ यदि अष्टममें पाप शुभ मिश्रित हों तो दोनों तुल्यकालमें मरें इसीप्रकार पुरुषोंके भी जन्म लग्नसे निश्चय विचार है ॥ २० ॥

जाता विलग्ने विषमे बलस्थैर्नरग्रहैः पुंकृप्रतिर्न चेष्टा ॥ सौम्यैर्बलस्थैः समराशिलग्ने स्त्रीब्रह्मशास्त्रार्थविचार

दक्षा ॥ २१ ॥ पापेस्ते नवमे तथात्र युवतिः प्राप्नोति दीक्षां ध्रुवं भाग्यस्थस्य खगस्य सौम्यनिलये सौम्येऽपि वा सुस्थिराम् ॥ उद्वाहे वरणे प्रदानसमये प्रश्ने च यज्जन्मनि प्रोक्तं तत्सकलं विचार्य सुधिया वाच्यं शुभं वाशुभम् ॥ २२ ॥ इति श्रीमहादेवविरचिते जातकशिरोमणौ स्त्रीजातकाध्यायः सप्तविंशतितमः ॥ २७ ॥

जिसके जन्ममें लग्न विषम राशि हों पुरुष ग्रह बलवान् हों तो वह स्त्री पुरुषप्रकृति, पुरुषोंकेसी चेष्टा विशेष करनेवाली होवै जो शुभग्रह बलवान् और समराशि लग्नमें हो तो (ब्रह्मशास्त्र) वेदांतादि विज्ञानशास्त्र विचारमें चतुर होवै ॥ २१॥ पापग्रह सप्तम वा नवममें हो तो उसके तुल्य दीक्षा पावै यदि भाग्यस्थ ग्रह शुभराशिमें, वा शुभग्रह हो तो निश्चय स्थिर दीक्षा पाती है जो फल जन्ममें कहे हैं वे विवाहमें, वरणमें, कन्यादान समयमें और प्रश्नमें बुद्धिमानने समस्त विचार करके शुभ, वा अशुभ फल कहना ॥२२॥ इति श्रीजातकशिरोमणौ माहीधरीभाषाटीकायां स्त्रीजातकाध्यायः सप्तविंशतितमः ॥ २७ ॥

अथ प्रव्रज्याध्यायः ।

सुरगुरुशशिराशौ लग्नगे सौरिदृष्टे गुरुरपि शुभगेहे राजयोगोत्र जातः ॥ नवमभवनसंस्थः सूर्यपुत्रो न दृष्टः सकलगगनवासैर्दीक्षितः पार्थिवेन्द्रः ॥ १ ॥ स्वोच्चेर्केऽग्निपरिग्रही स्वगृहगे शैलाश्रमी तापसास्तीरे वा सर्

सां वनाश्रयपरा मित्रालयेर्के वराः ॥ गायत्र्या जपिनो भवंति निलये शत्रौ रवौ भिक्षुका मूले वा सुरनिम्नगा तटगृहास्तीर्थाश्रयास्तापसाः ॥ २ ॥ वर्णाः प्रव्राजिता भवंति नियमाद्वर्णानुमानात्खगैरेकस्थैश्चतुरादिभिर्ग्रह-बलात्केचित्स्थिराश्चास्थिराः ॥ सूर्यास्ताहतरश्मिभिर्ग-गनगैर्दीक्षापदात्प्रच्युता दीक्षाप्रार्थनमात्रतामुपगाता नो दीक्षितास्तत्पराः ॥ ३ ॥

अब प्रवज्याविचार कहते हैं कि, गुरु वा चंद्रमाकी राशि लग्नमें हो शनि उसे देखे गुरु शुभराशिमें हो तो राजयोग है और नवगत शनिको कोई ग्रह देखे तो दीक्षित राजा होवै अर्थात् किसी संप्रदायके अनुसार उपासना करे ॥ १ ॥ प्रव्रज्यायोगप्राप्तिमें सूर्य उच्चका होवै तो साग्निक होके अपनेही घरमें तपस्या करे अथवा पर्वताश्रममें सरोवरों-के तीरोंमें करे (अथ वनके आश्रय) वानप्रस्थाश्रममें रहे यदि मित्रराशिमें होवै तो गायत्रीके जपमें श्रेष्ठ होके घरहीमें तपस्या करते हैं शत्रुराशिमें हो तो संन्यासाश्रमी अथवा गंगातीरवासी, यद्वा तीर्थाश्रयी, तपस्वी होते हैं ॥ २ ॥ चार आदि ग्रह एक स्थानमें होनेसे (प्रव्रज्या) फकीरी होती है यह ग्रहवर्णानुसार ब्राह्मणादिवर्णोंको होती है ग्रह बलाबलानुसार कोई उस फकीरीमें स्थिर कोई अस्थिर होते हैं प्रवज्या कर्त्ता ग्रह सूर्यके साथ अस्त होनेसे हतरश्मि हों तो दीक्षापदसे स्खलित होते हैं जैसे दीक्षाकी प्रार्थनामात्र करते दीक्षित नहीं होते न उस काममें तत्पर होते हैं ॥ ३ ॥

लिंगं शांभवमाश्रयंति सबले चंद्रे च तूर्णं नराः केचि-त्पावकभस्मधूलिधवलाः कापालिका निष्ठुराः ॥

केचित्पातकसंगिनो भगवतीसक्ताश्च शैवव्रते केचित्संगविवर्जिताः शशधरे पूर्णे तदीशा नराः ॥ ४ ॥ बौद्धाश्रयं भौमबलेन केचिद्भवंति केचिद्विशिखाश्च भिक्षवः ॥ सुवाससो रक्तपटा जितेंद्रिया भवंति ते क्रोधनमारणात्मकाः ॥ ५ ॥

प्रव्रज्याकारक ग्रहोंमें चंद्रमा बलवान् हो तो कोई तो शिवलिंग धारण करतेहैं कोई शीघ्र ही ज्ञानादि सुननेवाले होजातेहैं कोई भस्म धूलीसे श्वेत, कनफटे, निठुर, खप्परधारी, कोई पातकियोंके संगी, कोई भगवतीमें आसक्त कोई शैवव्रती कोई संगरहित होते हैं। यदि चंद्रमा पूर्ण हो तो, उक्तकर्मों वालोंके स्वामी होते हैं ॥ ४ ॥ मंगल बलवान् हो तो कोई बौद्धमतवाले कोई मुंडी सन्यासी कोई सुंदर भगुआवाले कोई जितेंद्रिय कोई क्रोधी मारणवाले होते हैं ॥ ५ ॥

केचिद्वैष्णवधर्मिणः कुहकिनः केचिन्नरा दीक्षिताः केचिद्गारुडतंत्रिणो बुधबले तद्भक्तिगा वाऽबले ॥ दण्डांस्त्रीनथ चैकमेव सबले जीवे कषायान्वितं धत्ते बाणमुपासते नियमितं सत्तीर्थसन्यासिनः ॥ ६ ॥ व्रतेषु दीक्षासु च वैष्णवेषु नित्यं च ये पाशुपतव्रतेषु ॥ शुक्रे बलस्थे चरकेषु ये च ते तापसा चेंद्रियधर्मपालाः ॥ ७ ॥

बुध बलवान् हो तो कोई वैष्णवधर्मी अज्ञानी कोई दीक्षित कोई (गारुडतंत्र) गारुडी विद्या सावरवाले होते हैं। बुध बलरहित हो तो उक्तधर्मियोंके भक्त होते हैं। बृहस्पति बलवान् हो तो कोई त्रिदण्डी कोई एक दण्डी भगुवावाले कोई

वाणोपासनावाले कोई नियमपूर्वक तीर्थसन्यासी होते हैं ॥ ६ ॥ शुक्र बलवान् होनेमें जो व्रतोंमें दीक्षामें वैष्णवधर्ममें तथा नित्य पाशुपत व्रतोंमें, चक्रांकितोंमें जो होवें इन्द्रियोंके धर्म पालनकरनेवाले होते हैं ॥ ७ ॥

पाखण्डव्रतधारिणः क्षपणका आशाम्बराभिक्षवो मिथ्या श्मश्रुशिरोरुहस्य दलिनो मिथ्या च तद्धारिणः ॥ केचित्सर्पविलासिनश्च नखिनामाश्चर्यविद्याविदस्तेस्युः सूर्य सुते बलेन सहिते हीने तदीशा नराः॥८॥ चन्द्रज्ञभार्गवयमैः सहितैस्तपस्वी भौमज्ञभार्गवयमैरपि तापसेंद्रः ॥ चंद्रेज्यशुक्रशनिभिः फलमूलशाकैर्दूर्वारसैश्च पदवीमुपयाति वन्द्यः ॥ ९ ॥ रविशशिकुजशुक्रैः सूर्यचंद्रारविज्ञै रविगुरुसितसौरैश्चन्द्रभौमेज्यशुक्रैः ॥ शशिकुज बुधशुक्रैरेकवेश्मोपयातैर्भवति गिरिवनौकास्तापसः सर्व वन्द्यः ॥ १० ॥

शनि बलवान होवै तो पाखण्डव्रतधारी, भानमतीके खेलवाले, नग्न, भिखारी झूटमूठ जटा दाढी मूँछ बढाने, कभी मुंडवाने वाले कोई संपेरा, कोई घोडे अथवा भालू, बिल्ली बन्दर आदिके आश्चर्य खेल दिखानेवाले होते हैं । यदि शनि बलहीन हो तो उनका नायक होता है ॥ ८ ॥ अब प्रवज्याकारक चार ग्रहोंमें प्रत्येक योगके फल कहते हैं कि, चन्द्रमा बुध शुक्र शनि एकत्र होवें तो तपस्वी मं० बु० शु० श० से भी तपस्वियोंमें श्रेष्ठ चं० बृ० शु० श० से फल, जडी, शाकका आहारी होकर दूर्वारस पीनेवाले दुर्वासा ऋषिके पदवीको पहुंचता है वंदनीय होता है ॥९॥ सू० चं० मं० शु० १ सू० चं०

मं० बु० २ सू० बृ० शु० श० ३ चं० भौ० बृ० शु० ४ चं० मं० बु० शु० ५ ये एकत्र होवैं तो पर्वत, वा वनमें रहनेवाला तपस्वी और सभीका वंदनीय होवे ॥ १० ॥

चन्द्रारजीवसितभार्गवनंदनैश्च चंद्रारचंद्रजसुरासुरपूजितैश्च॥सूर्यारसोमजसुरेज्यदिनेशपुत्रैरेकर्क्षगैर्यदि यतिर्बहुदुःखदीनः ॥ ११ ॥ कुजज्ञवागीशसितार्कपुत्राः सूर्येन्दुभौमज्ञदिनेशपुत्राः ॥ रव्यादिषड्भिर्निलयैकजातैर्जटाधरो वल्कलचीरधारी ॥ १२ ॥ एकस्मिन्भवने भवंति सकला रव्यादयः सम्भवे कुर्युस्ते मुनिनायकं वसति स व्योमालये नित्यशः ॥ ये ये शक्तिधरा यथोत्तरबलात्प्राप्नोति दीक्षां ध्रुवं तां तां हीनबलस्य तेन समये दीक्षाच्युतिर्जायते ॥ १३ ॥

पञ्चग्रहयोग कहते हैं कि, चं० मं० बृ० शु० श० १ चं० मं० बु० बृ० शु० २ सू० मं० बु० बृ० श० ३ ये एकस्थानमें हों तो बडा दुःखी अति दीन यति होवै ॥ ११ ॥ मं० बु० बृ० शु० शनि १ सू० चंद्रमा मंगल बु० श० २ इनपंचग्रहसे तथा सूर्यादि छः ग्रह एकस्थानमें होनेसे, जटाधारी, (वल्कल) भूर्जपत्र सण मूँजआदि धारणकरनेवाला होवै ॥ १२ ॥ एकस्थानमें सूर्यादि सातौं ग्रह जन्ममें हों तो मुनिश्रेष्ठ करते हैं वह (आकाशस्थान) ऊंचे पर्वत शिखारादिकोंमें रहता है उनग्रहोंमें जो जो बलवान् एकसे एक हों उनके अनुसार दीक्षित होते हैं जो जो हीनबली हों उनकी दशादिकोंमें दीक्षा [illegible] होती है ॥ १३ ॥

प्रव्रज्येशोरश्मिहीनो न दृष्टः खेटैर्दीक्षां दुःखितां [illegible] वंश्यम् ॥ दीक्षाकर्तुर्भक्तिमात्रं प्रकुर्यान्मध्ये वीर्ये [illegible]

भावं प्रयाति ॥ १४ ॥ द्रेष्काणसंस्थे रविजस्य चन्द्रे प्रयाति दीक्षां कुजसौरिदृष्टे ॥ भौमांशके वा रविजेन दृष्टे चन्द्रे तपस्वी भवतीह नूनम् ॥ १५ ॥ जन्माधिको भार्गवसूर्यदृष्टः शेषैरदृष्टो यदि जन्मकाले ॥ आत्मीयदीक्षां कुरुते ह्यवश्यं पूर्वोदितं सर्वमथापि चिन्त्यम् ॥ १६ ॥ चतुष्टये सूर्यसुतं बलस्थं जन्माधिपः पश्यति विह्वलांगः ॥ अभाग्यवान्प्रव्रजितो मनुष्यो विशेषतो हीनकुलेषु जातः ॥ १७ ॥

प्रव्रज्या करनेवालोंमें श्रेष्ठ ग्रह जिसके अनुसार प्रव्रज्या पाई गयी हो यदि रश्मिहीन, अन्य ग्रह दृष्टिरहित हो तो अवश्य दुःखित दीक्षा पावे, दीक्षककी भक्तिमात्र करे यदि मध्यवीर्य होवै तो मध्यमभाव पावै ॥ १४ ॥ चन्द्रमा शनिके द्रेष्काणमें मंगल शनिसे दृष्ट हो अथवा मंगलके अंशकमें शनिसे दृष्ट हो तो दीक्षित होकर निश्चय तपस्वी होजाताहै॥१५॥ यदि जन्ममें जन्मलग्नेश सूर्य शुक्र दृष्ट हो और कोई उसे न देखे अपने आपही दीक्षित होवै गुरु न करे इसमें पूर्वोक्त विचार भी करलेना ॥ १६ ॥ केंद्रगत बलवान् शनिको जन्मलग्नेश देखे तो (प्रव्रजित) फकीर हुआ मनुष्य विह्वल अंग तथा अभागीभी होता है विशेषतः हीनकुल जन्मा मनुष्य ऐसा होता है ॥ १७ ॥

गगनस्थो दिननायको गुरुर्वा हिमगुश्चोदयसंस्थितो यदा वा ॥ बलयुक्तो बलवर्जितो यदेको बलहीनेन निरीक्षितोर्कजेन ॥ १८ ॥ बलयुतरजनीशः प्रेक्षते

लग्ननाथं सकलबलविहीनं शुक्लपक्षेऽतिदीनम्॥ भवति यदि तपस्वी दुःखशोकाभिभूतो धनजनपरिहीनो कृच्छ्रलब्धान्नपानः ॥१९॥ बलान्वितः खेचरदृष्टिहीनो जन्माधिपः पश्यति सूर्यपुत्रम् ॥ जन्माधिपं चार्कसुतस्तपस्वी भवेद्बलोनं नियतं मनुष्यः ॥ २० ॥ वियति कुमुदबन्धुं विन्नवांशे बलिष्टं सकलबलयुतार्किः पश्याति व्योमगो वा ॥ यदि निजनिजतुंगे पञ्च याताः खगेन्द्रा भवति भुवननाथो दीक्षितः पार्थिवेद्रः ॥ २१ ॥ इति श्रीजातकशिरोमणौ प्रव्रज्याध्यायोष्टाविंशतिः ॥२८ ॥

दशमस्थानमें सूर्य वा बृहस्पति हो वा लग्नमें चन्द्रमा हो, इनमें कोई एक बलसहित हो वा बलरहित हो, उसे बलहीन शनि देखे तो वही फल जानना ॥ १८ ॥ समस्त बलहीन लग्नेशको शुक्लपक्षका बलवान् चन्द्रमा देखे तो तपस्वी होता है परन्तु दुःखशोकसे दबारहे धनसे मनुष्योंसे हीनरहे अन्नपानी भी कठिनसे मिले ॥ १९ ॥ जन्मलग्नेश ग्रह बलवान् होकर सूर्यपुत्रको देखे और उसपर किसी ग्रहकी दृष्टि न हो, अथवा निर्बललग्नेशको शनि देखे तो निश्चय मनुष्य तपस्वी होता है ॥ २० ॥ दशमस्थानमें बुधके अंशकका चन्द्रमा बलवान् हो उसे बलवान् शनि देखे, अथवा शनिभी दशम ही होवै और पांचग्रह अपने अपने उच्चराशियोंमें हों तो दीक्षित महाराजा होवै ॥२१॥ इति श्रीजातकशिरोमणौ माहीधरीभाषाटीकायां प्रव्रज्यायोगाध्यायोष्टाविंशतिः ॥ २८ ॥

अथानिष्टाध्यायः ।

जायास्थाने भृगुजशशिजौ सौरिवक्रावभार्य्यस्तौ वा पुंस्त्रीगगनगृहयोः सप्तमे सौम्यदृष्टे ॥ वृद्धा जाया वयसि पलिते पाणिपीडेन पुंसो जायेतां वा गलितवयसी दंपती पुत्रहीनौ ॥ १ ॥ रविविरहितपापैर्बंधुसंस्थैः खगेन्द्रैर्मदनभवनयातो भार्गवो वंशहन्ता ॥ बुधसहितदृकाणस्तस्य राशौ सुदृष्टे भवति न खलु शिल्पी शौरिणा केंद्रगेन ॥ २ ॥

अब अनिष्टाध्याय कहतेहैं, सप्तमस्थानमें बुध शुक्र हों अथवा शनि मंगल हों तो पुरुष स्त्रीरहित होवै, अथवा स्त्रीके हों तो पतिरहित होती है अथवा वे योग लग्न वा दशममें हों तौ भी वही फल है ऐसे योग हुयेमें सप्तममें शुभग्रहदृष्टि भी हो तो वृद्धा स्त्री मिलै अथवा बडी ऊमरमें उनको विवाह होते हैं अथवा दोनों स्त्री पुरुष बुढापेमें पुत्रहीन होजावैं ॥१॥ सूर्यसे अन्य पापग्रह चतुर्थ हों सप्तम शुक्र हो तो वंशहरण होता है बुधके द्रेष्काणमें, वा बुधकी राशिमें और बुधदृष्ट शनि केन्द्रमें हो तो शिल्पविद्या लिखने आदि नहीं आवै ॥ २ ॥

दासीपुत्रो रिष्फगे सौरिभागे शुक्रेकैन्दू सप्तमे सूर्यजेन॥ दृष्टौ जातो नीचकर्मात्मजो वा हित्वा कौल्यं कर्मकारित्वमेति ॥ ३ ॥ सिंहस्थे कर्कटस्थे वा रवौ भौमेन सौरिणा॥ दृष्टे दुर्नामरोगार्त्तो दृष्टोपि बलवर्जितैः ॥४॥ कर्कवृश्चिकयोरंशे शशांके पापदृग्युते ॥ गुह्यरोगी पुमाञ्जातो भवत्येव न संशयः ॥ ५ ॥ दुश्चिक्ये रिपु-

भावे वा जीवे मंदाशनो भवेत् ॥ अल्पपुंस्त्वालसो वापि जायते परिभूयते ॥ ६ ॥

बारहवें भावमें शनिके अंशका शुक्र सूर्य चन्द्रमा सप्तम हों उन्हें शनि देखता हो तो दासीपुत्र होगा, अथवा नीचकर्म व्यभिचार आदिसे उसकी पैदायश होगी और वह मनुष्य अपने कुलधर्म छोडकर नीचकर्मकरनेवाला होता है ॥ ३ ॥ सिंह वा कर्कटमें सूर्य हो उसे मङ्गल शनि देखें, बलरहितोंसे भी दृष्ट हो तो (दुर्नामरोग) कुष्ठआदि रोगसे पीडित रहता है ॥ ४ ॥ यदि चन्द्रमा कर्क वा वृश्चिक नवांशकमें हो पाप-ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो पुरुषके गुह्यस्थानमें निश्चय रोग रहता है ॥ ५ ॥ तीसरा वा छठा बृहस्पति हो तो अल्प भोजनकरनेवाला होवे पुरुषार्थ भी अल्प होवे कभी पुरुषता होजावे कभी उसकाममें हारजावै ॥ ६ ॥

सिंहे सिंहांशके चन्द्रे पाण्डुरोगी भवेन्नरः ॥ अष्टमे रविजे वापि पाण्डुरोगाकुलो भवेत् ॥ ७ ॥ कर्कस्थे धरणीपुत्रे दशायामंतरे विधोः ॥ रक्तं पित्तं ज्वरं दाहं लभते नात्र संशयः ॥ ८ ॥

चन्द्रमा सिंहराशि सिंहांशकमें हो तो मनुष्य पांडुरोगी होता है अथवा अष्टम शनि हो तौभी पांडुरोगसे आकुल होता है ॥ ७ ॥ मंगल कर्कमें हो तो चन्द्रमाके दशांतरमें जब आवे तब रक्तरोग, पित्तरोग, ज्वर, दाहरोग पाता है इसमें सन्देह नहीं ॥ ८ ॥

अथवातव्याधिः।

लग्नात्सप्तमराशिगौ भृगुकुजौ पापेक्षितौ वातरुक्पीडा कर्कटगे रवौ च शशिना दृष्टेतिवातार्दितः ॥ व्योमस्थ

नगते रवौ च शशिना दृष्टे यदा सौरिणा जन्तुः सक्षतजेन मारुतरुजा युक्तो भिषङ्निष्क्रियः ॥ ९ ॥ चन्द्रेम्बरेऽवनिसुते युवतीगृहस्थे यद्यर्कजो भवति वेशिगृहस्थितश्च ॥ जातः पुमानिह भवेद्विकलोंगराशौ कालस्य वातसहितेन गदेन नूनम् ॥ १० ॥

वातरोगके योग कहते हैं लग्नसे सप्तममें शुक्र मङ्गल पापदृष्ट हों तो वातरोगसे पीडा होवै कर्कके सूर्यपर चन्द्रमाकी दृष्टि हो तो बडे वायुरोगसे पीडित रहे दशम सूर्य हो उसे चंद्रमा देखे शनि भी देखे तो मनुष्य घावसे उत्पन्न वायुरोगसे पीडित रहे जिसकी क्रिया वैद्यसे भी न होसके ॥ ९ ॥ चंद्रमा दशम मंगल सप्तम और शनि सूर्यसे वेशिस्थानमें हो तो जिसके जन्ममें यह योग हो वह वातरोगसे कालांगोक्तानुसार अंगमें विकल रहे ॥ १० ॥

वातार्दितो भवति लग्नगते सुरेज्ये द्यूनेर्कजे कुजगुरू ह्युदयास्तसंस्थौ ॥ उन्मादवातसहितस्तनुगेर्कपुत्रे धर्मात्मजे क्षितिसुतेऽस्तगते च तद्वत् ॥ ११ ॥ क्षीणे शशिनि रिष्फस्थे रविपुत्रसमाश्रिते॥ उन्मादवातसहितो जायते नियतं नरः ॥ १२ ॥ लग्ने कुलीरवृषभाजगृहान्यसंस्थे चन्द्रे शुभेतरयुते च विलोकिते वा ॥ उन्मत्तनीचविकलो बधिरश्च मूको जातो नरो भवति कृष्णदले विशेषात् ॥ १३ ॥

लग्नमें गुरु सप्तममें शनि हो तो वातरोगसे पीडित रहताहै मंगल बृहस्पति लग्न सप्तममें हों तो (उन्मादवात) विक्षिप्त होता है लग्नमें शनि पंचम वा नवममें शनि हो अथवा सप्तममें हो

तो उसीप्रकार फल है ॥ ११ ॥ क्षीण चंद्रमा बारहवेंमें शनि-युक्त हो तो (उन्मादवायु,) बावलापनयुक्त मनुष्य निश्चय रहे ॥ १२ ॥ लग्नमें ४ । २ । १ राशियोंसे अन्यराशिका चन्द्रमा पापयुक्त वा दृष्ट होवै तो बावला, नीच, विकलांग, बधिर, गूंगा होता है वह चंद्रमा कृष्णका हो तो मनुष्य उक्त फलोंवाला विशेषतासे होता है ॥ १३ ॥

कन्यायामुदये रवौ रविसुते जायास्थिते दारहा पुत्राणां मरणं प्रयच्छति धरापुत्रः सुतस्थानगः ॥ जायेतां नयनैककेन रहितौ तौ दम्पती लग्नतो रिष्फे राहुरिपौ रिपौ खगपतिर्ज्ञेयो विवाहेथवा ॥१४॥ सप्तमे नवमे पुत्रे शुक्रार्कौ यदि संस्थितौ॥कालांगराशितुल्यांगे विकलांगा वधूर्भवेत् ॥ १५ ॥ यमे विलग्ने भृगुजे कलत्रे कुली-रकीटाऽ निमिषांत्यसंस्थे ॥ वंध्यापतिः स्याद्यदि पुत्र-भावो युक्तो न दृष्टः शुभखेचरेण ॥ १६ ॥

कन्याका सूर्य लग्नमें और शनि सप्तममें हो तो (दारहा) स्त्रीमरयण योग होताहै ऐसाही मंगल मीनका पंचम कन्याका सूर्य हो तो पुत्रमरण होता है छठा सूर्य बारहवां चंद्रमा हो तो स्त्री पुरुषके एक एक नेत्र होवैं अर्थात् दोनों काणे होवैं यह योग विवाहमें भी लगता है ६ । १२ में सूर्य चंद्रमा यथा तथामें भी योग हो जाता है ॥१४॥ सप्तम नवम पंचममेंसे किसीमें सूर्य शुक्र हों तो जिस राशिद्रेष्काणमें हों उसके कालांगविभागानुसार अंग स्त्रीका विकल होता है ॥ १५ ॥ शनि लग्नमें शुक्र सप्तममें कर्क वृश्चिक मीनके अंत्यनवांशकमें हो और पंचभाव शुभग्रहसे युक्त वा दृष्ट न हो तो उसकी स्त्री बांझ होती है ॥ १६ ॥

लग्नव्ययास्तभवनं यदि पापखेटाः क्षीणे कलंकानिलये सुतभावसंस्थे ॥ पुत्रा भवंति न हि तस्य न वा कलत्रं भावद्वयं शुभखगैर्न हि युक्तदृष्टम् ॥ १७ ॥ चतुर्थे निधने वापि शुक्रात्पापग्रहो यदि ॥ जायावधो दहनजाज्जीवतो न युतेक्षितः ॥ १८ ॥ पापयोर्मध्यगः शुक्रः स्त्रीवधो भृगुपाततः ॥ सौम्यदृष्टौ न तौ पापौ वधो नार्यास्तु पाशजः ॥ १९ ॥ वक्रार्कसुतवर्गस्थे शुक्रे ताभ्यां निरीक्षिते ॥ परजायारतः सेंदौ कामिन्या सह पुंश्चलः ॥ २० ॥

लग्न द्वादश सप्तम भावोंमें यदि पापग्रह हों क्षीण चन्द्रमा पंचम हो लग्न पंचम शुभग्रहोंसे युक्त दृष्ट न हो तो उसके स्त्री पुत्र नहीं होते ॥ १७ ॥ शुक्रसे ४ । ८ स्थानोंमें पापग्रह हों तो अग्निसे स्त्री मरे परंतु यदि बृहस्पतिसे युक्त दृष्ट न हों ॥ १८ ॥ शुक्र पापग्रहोंके बीचमें हो तो स्त्री ऊंचेसे गिरकर मरे वे पापग्रह शुभ दृष्ट न हों तो तब यह योग पूरा फल करता है शुक्र पापयुक्त हो तो फांसीसे स्त्री मरती है ॥ १९ ॥ मंगल सूर्यके वर्गमें शुक्र हो उसे यही देखे भी तो परस्त्रीगामी होवे यदि वही प्रकारका शुक्र चंद्रयुक्त भी हो तो स्त्री पुरुष दोनहूं व्यभिचारी होते हैं अर्थात स्त्री परपुरुषगामिनी पुरुष परस्त्रीगामी होवे ॥ २० ॥

अथ क्षयरोगादयः ।

शशिजे कर्कराशिस्थे क्षयरोगी भवेन्नरः ॥ परिवेषगते चन्द्रे ससौरे वा कुजेक्षिते ॥ २१ ॥ चंद्रोदये रवावस्ते

पापयोर्धनरिष्फयोः ॥जायते मनुजःश्वित्री विवर्णो दर्शने भवेत्॥२२॥ परस्परांशकगतौ रवीन्दू युगपत्स्थितौ ॥ ली कृशो वा क्षेत्रे वा युगपद्वा पृथक् स्थितौ ॥ २३ ॥ जठररदृगदार्त्तः सिंहसंस्थे सुधांशौ शुभयुतिनयनोने दाहमूर्छाकुलः स्यात् ॥ अभिभवमभिपन्नः पित्तजैर्दोषसंघैः कुजरविशनियोगे जायते गात्रभेदः ॥ २४ ॥

बुध कर्कराशिका हो यद्वा शनियुक्त चंद्रमा परिवेषकालका हो उसे मंगल देखे तो क्षयरोगी होवे ॥ २१ ॥ चंद्रमा लग्नमें सूर्य सप्तममें हो २ । १२ स्थानोंमें पापग्रह हों तो मनुष्य श्वेतकुष्ठी और देखनेमें विरूप होता है ॥ २२ ॥ सूर्य चंद्रमा परस्पर अंशोंमें हों तो शूलरोगी अथवा कृश होता है अथवा सूर्यके राशिमें चंद्रमा चन्द्रमाकीमें सूर्य हो तो भी यही फल है दोनों ४ वा ९ में एकत्र होनेमें भी यही है ॥ २३ ॥ सिंहका चंद्रमा शुभग्रहोंसे युक्त दृष्ट न हो दाह मूर्छासे आकुल रहता है केवल सिंहका चंद्रमा उदररोगसे पीडित करता है यदि मङ्गल सूर्य शनिसे युक्त हो तो हाराहुआ रहे तथा पित्तके अनेकरोगोंसे गात्रोंका स्फोटन होता है ॥ २४ ॥

अश्वस्य पञ्चमनवांशगते सुधांशौ सौरारदृष्टियुतिगे ध्रुवमेव कुष्ठी ॥ कर्काजमीनमृगभागगते हिमांशौ ताभ्यां युतेक्षिततनौ भवतीह कुष्ठी ॥ २५ ॥ अलिवृषमृगकर्कैः पुत्रधर्मोपयातैरशुभसहितदृष्टैः कुष्ठरोगाभिभूतः ॥ व्ययधनमृतिशत्रौ यत्र

पुत्राः प्रोक्तरुग्दृष्टिहीनाः॥२६॥मेषांशके चाप्यं मृगांशके वा चन्द्रः स्थितोऽत्रैव हि पापदृष्टः॥ कलंककुष्ठादिविनष्ट-देहः शुभेक्षितः कंडुविकारणं वा ॥ २७ ॥

धनके पांचवें नवांशकमें चन्द्रमा शनि मङ्गलसे दृष्ट हो तौ निश्चय कुष्ठी होगा, कर्क मेष मीन मकर नवांशकमें चन्द्रमा मङ्गल शनिसे युक्त दृष्ट हो तो कुष्ठी होवे ॥ २५ ॥ वृश्चिक वृष मकर कर्कराशि पञ्चम नवममें पापयुक्त दृष्ट हों तो कुष्ठरोग होवे १२ । २ । ८ । ६ । में जहां कहीं मङ्गल चन्द्रमा सूर्य शनि होवैं तो कुष्ठी और दृष्टिहीन भी होवे ॥ २६ ॥ मेषांशकमें वा मकरांशकमें चन्द्रमा होवे पापग्रहसे युक्त वा दृष्ट होवै तो कलंक, कुष्ठसे देह नष्ट होवे यदि शुभ ग्रहसे युक्त वा दृष्ट होवे तो दाद खुलजी रोग होवे पूरा कुष्ठ न होवै ॥ २७ ॥

नेत्रातुरो भवति जीवबुधार्कयोगे शिल्पी च नीचलि-पिशास्त्रकलाविदग्धः ॥ वक्रार्कदेवगुरुभिः सहितैकगेहे नेत्रातुरो भवति पूर्णधनः कुलीनः ॥ २८ ॥ आदित्य-शनिदैत्येज्यैः सहावस्थानमागतैः ॥ शीतपित्तार्दितो वा स्यात्कुष्ठी वा क्षतजाकुलः॥ २९ ॥ भौमदृष्टः सुरा-चार्यो हेमालंकारभूषितः॥ व्रणितांगः सुरेज्यारशशांकै-श्चंडरोषणः ॥३०॥ निधनभवनसंस्थे सूर्यपुत्रेऽल्पजीवी भवति कितववन्द्यः कुष्ठरोगाऽभिभूतः॥शशिरिपुशनि-भौमा जन्मकाले मृतिस्था नखचरणविहीनाः कुष्ठरो-गैर्मनुष्याः ॥ ३१ ॥

बृहस्पति बुध साथ होवैं तो नेत्ररोगी होवे तथा लिलक, नीचाक्षर नीचशास्त्र और कलाओंमें चतुर होवे मङ्गल सूर्य गुरु एकस्थानमें हों तो नेत्ररोगी तथा, धनसे पूर्ण और कुलीनतावाला होवे ॥२८॥सूर्य शनि शुक्र एक भावमें हों तो शीतपित्तरोगसे क्लेशी रहे अथवा कुष्ठी यद्वा चोटलगनेसे व्याकुल रहे॥२९॥बृहस्पाति मङ्गलसे दृष्ट हो तो सुवर्णके अलंकारोंसे भूषित रहे गुरु मङ्गल चन्द्रमा साथ हों तो किसी अङ्गमें व्रण होवे और प्रचण्डरोगवाला भी होवे ॥ ३० ॥ अष्टम शनि होवे तो अल्पकाल बचे धूर्तोंका सर्दार होवे, कुष्ठरोगसे दबारहे राहु शनि मङ्गल जन्ममें अष्टम हों तो कुष्ठरोगसे नखून तथा पैर मनुष्योंके हीन होजाते हैं ॥ ३१ ॥

कुजभवनगते दिवाधिनाथे सितदृष्टे बहुदीनबांधवः स्यात् ॥अतिशयरिपुदुःखभाक्कुदारो मनुजः स्याद्गतरूपकश्च कुष्ठी॥३२॥कुष्ठव्याधिभगंदरेण सहितो रन्ध्रस्थिते भानुजे दृष्टे भूमिसुतेन चन्द्ररिपुणा दुर्नामरोगाकुलः ॥ सिंहस्थे नलिनीपतौ मृतिगृहे रोगान्वितो जायते नीचे वा तरणौ भवंति मनुजा कंड्वादिरोगाऽन्विताः ॥ ३३॥

सूर्य मंगलके राशिमें शुक्र दृष्ट होवै तो उसके बांधव अतिदीन होवैं अतिशयकरके शत्रुसे उत्पन्न दुःख भोगनेवाला, दुष्टस्त्रीक, रूपरहित और कुष्ठी होवै ॥ ३२ ॥ शनि अष्टम स्थानमें भौमदृष्ट तथा राहुसे युक्त वा दृष्ट हो तो, कुष्ठरोग वा भगंदर रोगयुक्त रहे दुष्ट नाम रोगसे आकुल रहे, सिंहका चन्द्रमा अष्टम हो तो रोगयुक्त रहे अथवा नीचका सूर्य होवै तो मनुष्य खुजली आदिरोगोंसे युक्त रहते हैं ॥ ३३ ॥

निधनस्थे दिवानाथे भूसुतेन विलोकिते ॥ विस्फोटकवि-
सर्पाद्यैः क्लिन्नाः स्युर्गात्रयष्टयः ॥ ३४ ॥ कीटस्थिते
कर्कटके महीजे विलोकिते केतुखगेन नूनम् ॥ व्यये
मृतौ वा विषबंधशस्त्रपीडाकरो भूमिसुतो ह्यवश्यम् ।
॥३५॥ धने वा व्ययभावे वा त्रिकोणे वा समाश्रिताः।
पापा बन्धनमाप्नोति राशिप्राणिनिबन्धनम् ॥ ३६ ॥
हयवृषभमृगाजाश्चांत्यकोणेषु संस्था अशुभखचरयुक्ता
बन्धनं तस्य रज्जुः ॥ झषमकरकुलीरे बन्धनं वारि-
जाले भवति हरिणशत्रौ दुर्गकारादिगेहे ॥ ३७ ॥

सूर्य अष्टम मंगलसे दृष्ट हो तो फोडे तथा दाद व्यूंछी आदिसे गात्र पीडितरहैं ॥ ३४ ॥ मंगल वृश्चिक वा कर्कका केतुसे दृष्ट १२ वा ८ भावमें हो तो यह मंगल अवश्यमेव विष, बन्धन, शस्त्रसे पीडा करता है ॥ ३५ ॥ पापग्रह २ । १२ में अथवा ५ । ९ में हों जिसराशिमें है उसके प्राणीके अनुसार बन्धन होवे ॥ ३६ ॥ धन वृष मकर मेष १२ । ५ । ९ भावोंमें पापयुक्त हों तो रस्सीसे बन्धन मिलता है १२ । १० । ४ राशिमें हों तो जालसे बन्धन मिलता है सिंहमें हों तो किला वा कैदखानेमें बन्धता है ॥ ३७ ॥

मिथुनयुवतियूके कुम्भराशौ नराणां भवति निगडबंधो
रज्जवो काष्ठबंधः ॥ भुजगनिगडपाशत्र्यंशकं जन्मकाले
बलवदशुभदृष्टं त्र्यंशरूपेण बन्धः ॥ ३८ ॥ द्रेष्काण-
राशिर्यदि पापदृष्टो दृष्टो दृकाणो भवतीह नूनम् ॥
कीटत्रिकोणांत्यधनेषु पापैर्गतादिके बन्धनमाहुरार्याः ३९

मिथुन कन्या तुला कुंभराशि ५।९।१२। भावोंमें पाप-युक्त हों तो कैदखानेमें, रस्सी वा काष्ठका बन्धन मिले, सर्प, निगड, पाशद्रेष्काण जैसे बली वा निर्बली जैसे हों यद्वा जिस पापकी दृष्टि हो वह बलवान् हो उसके व्यंशके अनुसार बन्धन होता है ॥ ३८ ॥ द्रेष्काण राशि यदि पाप-दृष्ट और द्रेष्काण भी पापदृष्ट हो ४।८ राशियोंके ५।९। १२ भावोंमें पापग्रह हों तो बन्धन होता है यह केन्द्रोंका कहा है ॥ ३९ ॥

चन्द्राक्रांतनवांशपः शशिरवी देवार्चितः संभवे नीचे सारिनवांशगा यदि नरा दासा भवंति ध्रुवम् ॥ तेषामे-कतमेन जीवनवशाद्दासः क्रये नापरो द्वाभ्यां ते रिपु-नीचभागसहिता दासीभवा दासकाः ॥ ४० ॥ त्रिधीन-वमलाभगाः कुजयमार्कचन्द्रादयः शुभैरयुतवीक्षिताः श्रवणघातका जन्मनि ॥ तदा च रदवैकृतिं विदधति-ध्रुवं जाप्यतां व्रजंति शुभसंगमादशुभसंगमो योगतः॥४१॥

चन्द्र नवांशेश चन्द्र सूर्य, और गुरु जन्ममें नीच, शत्रुन-वांशकमें होवे तो निश्चय (दास) गुलाम होतेहैं इनमें एकही ग्रह ऐसा होवे तो अपने आजीविकाके लिये दास होवे, दो ग्रह होवें तो मोललिये जानेसे और सभी शत्रु वा नीचांश की हों तो दासीसे उत्पन्न दास अर्थात् उसकी माता वा पिता भी दास होंगे ॥ ४० ॥ तीसरे पंचम नवम और लाभभावोंमें मङ्गल शनि सूर्य चन्द्रादि शुभ ग्रहोंकी दृष्टि वा योगरहित हों तो कान फूटते हैं और दांतोंमें भी विकार होता है यह निश्चय है शुभयुत दृष्ट हों तो उपाय साध्य होता है क्योंकि शुभसङ्गतिसे अशुभ भी शुभ होता है ॥ ४१ ॥

रविवशा
... पिशाचैः ॥ अस्तं वदन्ति मुनयः सकलाश्च
पापा जाप्यं व्रजंति कथिताः शुभयोगदृक्स्थाः ॥४२॥
इति श्रीजातकशिरोमणावनिष्टाध्याय ऊनविंशतिः २९॥

सूर्य चंद्रमा ग्रहणमें वा सूर्य चन्द ग्रस्तोदय हों उनसे त्रिकोणमें पापग्रह हों तो सूर्य ग्रस्तसे नेत्र रोगी, चन्द्रसे पिशाचग्रस्त होता है ऐसा मुनि लोग कहते हैं, शुभग्रहोंसे दृष्ट युक्त होनेमें समस्त पाप उपायसाध्य हो जाते हैं ॥ ४२ ॥ इति श्री जातकशिरोमणावनिष्टाध्यायः ऊनविंशति ॥ २९ ॥

अथ निर्याणाऽध्यायः ।

ग्रहविलोकनयोगविवर्जिते निधनधामनि तत्सहितेऽथवा ॥ भवति देहविपत्तिरथो यथा भवनखेटबलाबलसंभवा ॥ १ ॥ निधनभवनसंस्थो यो बली वीक्षते वा मरणमुपगतः स्यात्तस्य धातुप्रकोपैः ॥ निधनगृहशरीरे कालपुंसोरुजार्तिर्बहुबलिखगयुक्तालोकिते तत्प्रकाशः ॥ २ ॥ सूर्येणाग्नावंबुमग्नेन चंद्रे शस्त्राघाताद्भूमिसुतेन मृत्युः ॥ शीतक्रांतादर्कपातान्निपातो [illegible] मृत्युतार्थे यथोक्ता ॥ ३ ॥ जीवेन रोगैर्जठरामयोत्थैः [illegible] मृत्युः ॥ क्षुद्रामयैर्वा म्रियते [illegible] [illegible] ॥ ४ ॥

निर्याण विचार है कि, अष्टमभाव, ग्रहदृष्टि योगसे रहित हो अथवा ग्रह युक्त दृष्ट हो, उस ग्रह उस भावके बलाबलाऽनुसार देहका मरण होता है ॥ १ ॥ जो बलवान ग्रह अष्टममें हो अथवा देखता हो उसके धातुके कोपसे मृत्यु होती है अष्टममें ग्रह वा राशिकालांगविभागसे जिस अंगमें हो उसी में रोगपीडा होती है बहुत बलवान ग्रहसे युक्त दृष्ट हो तो उस धातुजन्य रोगका प्रकाशमात्र होता है विशेषकष्ट नहीं होता ॥ २ ॥ उक्तप्रकारका सूर्य हो तो अग्निमें चन्द्रमा हो तो जलमें डूबनेसे, मंगलसे शस्त्रके घातसे बुध हो तो शीत रोग सन्निपातसे मृत्यु जाननी ॥ ३ ॥ गुरुसे उदररोगोंसे शुक्रसे भूख प्यासके विकारसे, शनिसे क्षुद्ररोगों करके इन प्रकारोंसे ग्रहयोग दृष्टि अष्टममें होनेसे मृत्यु होती है ॥ ४ ॥

स्थिरे स्वदेशे निधनं परदेशे चरोदये ॥ मार्गे द्विदेहे निधनं राशिसंचारभूमिषु ॥ ५ ॥ जांगले कर्किमकरेऽनूपे मकरकीटयोः ॥ गोमेषनरलग्नेषु जांगलानूपभूमिषु ॥ ६ ॥ सूर्यक्षोणिसुतौ स्वबंधुसहितौ शैलाग्रतद्घातजः कूपे पातभवो यमेम्बुनि विधौ द्यूने कुजे कर्मगे ॥ कन्याराशिगतौ दिवाकरविधू क्रूरेक्षितौ बन्धुगे लग्ने पुष्पवतोर्जलेषु मरणं क्रूराक्षिसंसक्तयोः ॥ ७ ॥

उक्त ग्रह वा भावराशि स्थिर होवै तो स्वदेशमें [illegible] तो परदेशमें और द्विस्वभाव हो तो मार्गमें मरण [illegible] इसमें विचार चाहिये कि उस राशिके संचारकी [illegible] हो उसमें मृत्यु होगी ॥ ५ ॥ कर्क मकर हों तो जंगल [illegible] [illegible]

भूमियोंमें मरण होवे ॥ ६ ॥ सूर्य मंगल १० । ४ भावोंमें हों तो पर्वतके शृंगसे गिरने वा उसके चोटसे शनि चतुर्थ चन्द्रमा सप्तम दशम मंगल हों तो कुवांमें गिरनेसें, कन्याराशिमें सूर्य चन्द्रमा क्रूर दृष्ट चतुर्थ भावमें हों अथवा सूर्य चन्द्रमा लग्नमें पापदृष्ट हों तो जलमें मरण होवे ॥ ७ ॥

कर्के मृगे कर्मणि भानुपुत्रे जलोदरव्याधिकृता विपत्तिः॥ शस्त्रप्रजाताग्निभवाथ चेंदौ कौजे गृहे पापयुगांतरस्थे ८॥युवतौ नलिनीरात्रौ पापमध्यगते सति॥क्षतशोषभवो मृत्युर्ध्रुवं भवति नान्यथा ॥९॥ पापद्वयांतरगते हिमगौ यमर्क्षे पापोद्भवा दहनरज्जुभवा मृतिः स्यात् ॥ पापौ शुभे शुभयुतावशुभेक्षितौ च मृत्युस्तथा भवति तस्य यथातथा वा ॥ १० ॥

कर्क वा मकरका कर्मस्थानमें शनि हो जलोदररोगसे विपत्ति होवे चन्द्रमा मंगलके गृहमें दो पापोंके बीच हो तो अग्निसे उत्पन्न रोगसे मृत्यु होवे ॥ ८ ॥ सप्तमस्थानमें सूर्य पाप ग्रहोंके मध्यमें हो क्षतरोग शोषरोगसे मृत्यु निश्चय होवे इस में अन्यथा नहीं है ॥ ९ ॥ चन्द्रमा शनिके राशिमें दो पाप- ग्रहोंके बीच हो तो पापसे उत्पन्न अग्नि वा रस्सीसे मृत्यु होवे पापग्रह शुभराशियोंमें शुभयुक्त पापदृष्ट हों तो उन्हीं सभोंके भावानुसार जैसे जिसका कहा है उतनेही कारणोंसे मृत्यु होती है ॥ १० ॥

चंद्रे सपापे युवतौ युवत्या बंधेन जीवो मृतिमेति नूनम्॥ अजे स्थिते सप्तमगे सपापे स्त्रीहेतुको मंदिर एव मृत्युः

॥ ११ ॥ सुखे भौमे रवौ वापि व्योम्नि क्षीणेंदुसूर्यजौ ॥ पापास्त्रिकोणलग्नस्थाः शूलप्रोतान्मृतिं वदेत् ॥ १२ ॥ हिबुकेऽर्के कुजे व्योम्नि क्षीणेंदावर्कजेक्षिते ॥ काष्ठेनाभिहतो मर्त्यो मृत्युमेति न संशयः ॥ १३ ॥ लग्नात्त्रिकोणगैः पापैः क्षीणेंदुसहितैस्तथा ॥ नरो मृत्युमवाप्नोति शूलप्रोतो ध्रुवं तदा ॥ १४ ॥

सपापचंद्रमा सप्तम हो तो स्त्रीके बंधनसे निश्चय मृत्यु होवे ...षका शुक्र पापयुक्त सप्तममें हो तो स्त्रीके कारण घरहीमें ...त्यु होवे ॥ ११ ॥ चतुर्थ मंगल अथवा सूर्य हो दशममें ...ीण चंद्रमा और शनि हों ९।५।१ भावोंमें पापग्रह हों तो ...ूलसे छिद्रकर मृत्यु होवे ॥ १२ ॥ चतुर्थ सूर्य दशम मंगल ...ौर क्षीण चंद्रमा शनिदृष्ट हो तो मनुष्य काष्ठकी चोटसे ...त्यु पाता है इसमें संदेह नहीं ॥ १३ ॥ लग्नसे ९।५ में ...ापग्रह क्षीण चन्द्रमा सहित हों तो मनुष्य निश्चय शूलसे ...रता है ॥ १४ ॥

लग्नाच्चतुर्थगे भानौ दशमस्थे महीसुते ॥ विरश्मिशशिना दृष्टे शूलेन म्रियते नरः ॥ १५ ॥ काष्ठेनाभिहतः प्रयाति मरणं छिद्रास्पदांगांबुगैः क्षीणेन्दूष्णकरारभास्करसुते धीधर्मतन्वंबरे ॥ सूर्यारार्कविरश्मिचंद्रसहिते धूमेन बंधेन वा मृत्युं गच्छति वन्हिना निपतनाच्चक्षुस्य घातेन वा ॥ १६ ॥ बंधौ कुजे युवतिगे तरणौ वियत्स्थे सौरे त्रिशाक्षनृपकोपभवो हि मृत्युः ॥ ...

स्थिते क्षितिसुते हिबुके सुधांशौ वित्ते शनौ कृमिभवो भवतीह मृत्युः ॥ १७ ॥

लग्नसे चौथा सूर्य दशम मंगल, रश्मिरहित चंद्रमासे दृष्ट हों तो शूलसे मृत्यु होवै ॥ १५ ॥ क्षीणचंद्रमा सूर्य मंगल शनि ८।१०।१।४ भावोंमें हो तो काष्ठकी चोटसे मरे ९। ९।१।१० भावोंमें सूर्य मंगल शनि और रश्मिरहित चंद्रमा हों तो धुआंसे वा, बंधनसे, वा आगसे, गिरनेसे अथवा शस्त्रसे मृत्यु होवे ॥ १६ ॥ चौथा मंगल सप्तम सूर्य दशम शनि हो तो शस्त्रसे वा राजकोपसे मृत्यु होवै दशम मंगल चौथा चंद्रमा दूसरा शनि हो तो कृमि रोगसे वा कीडे पडनेसे मृत्यु होवे ॥ १७ ॥

क्षितिपुत्रे तुलाराशौ रविजे मेषसंस्थिते ॥ चन्द्रे मंदगृहं प्राप्ते विण्मध्ये मरणं भवेत्॥१८॥भौमेन बलिना दृष्टे क्षीणेन्दौ रंध्रगेऽर्कजे ॥ गुह्यरोगेन कीटेन शास्त्रेण म्रियते नरः ॥ १९ ॥

मंगल तुलाका शनि मेषका, चंद्रमा शनिके राशिमें हो तो विष्ठामें मरण होवै ॥ १८ ॥ क्षीण चंद्रमाको बलवान् मङ्गल देखे शनि अष्टम होवै तो गुह्यस्थानके रोगसे वा कीडोंसे वा शस्त्रसे मनुष्य मरे ॥ १९ ॥

निधनभवनसंस्थे सूर्यपुत्रे युवत्यां सरविधरणिपुत्रे पक्षिकृत्स्याद्विनाशः ॥ वियति खगपतौ वा भूमिजे नागलोके भवति मरणकालो यानपाताभिघातात्॥२०॥लग्ने रवौ कुजे छिद्रे सुते सौरे ससाग्निवे ॥ शैलपातेन वज्रेण

मृत्युर्भित्तिभवेन वा ॥ २१ ॥ युवतिभवनसंस्थे भूमिजे क्षीणचन्द्रे द्युमणिरविजलग्ने यंत्रपीडोद्भवः स्यात् ॥ वियति किरणहीने शीतगौ भूमिपुत्रे भुवि युवतिगतेऽर्के सर्वदा विस्मृतिः स्यात् ॥ २२ ॥

अष्टममें शनि सप्तम सूर्य मंगल हों तो पक्षिसे मरण होवे अथवा दशम सूर्य चतुर्थ मंगल हों तो सवारीसे गिरकर चोटसे मरे ॥ २० ॥ लग्नमें सूर्य अष्टम मंगल पंचममें चन्द्रमा सहित शनि हो तो, पर्वतसे गिरकर अथवा वज्रसे यद्वा दीवालके कारण मरे ॥ २१ ॥ सप्तम मंगल क्षीण चन्द्रमा लग्नमें सूर्य शनि हों तो किसी यंत्रमें पिसकर मृत्यु होवे दशम चंद्रमा रश्मिहीन, चतुर्थ मंगल सप्तम सूर्य हों तो नित्य भूलवाला होवे ॥ २२ ॥

जन्मद्रेष्काणतुल्यो निधनगृहगतः कारणं स्याद्दृकाणं तन्नाथो राशिनाथो जनयति मरणं स्वैर्गुणैर्यो बली-यान् ॥ वह्न्याद्यैर्मृत्युगेहे भवनपनवमांशेशसंचारदेशे प्राच्यादौ दिग्विभागे भवनपबलतो दूरनैकट्यमार्गे ॥ २३ ॥ पापत्रिभागे खलु पापयुक्ते शवोऽग्निना भस्म गतो प्रयाति ॥ सौम्यदृकाणे शुभयोगदृष्टे शवो जले क्लेदमुपैति नूनम् ॥ २४ ॥ सौम्यत्रिभागे परिशोषमेति ध्रुवं शवः पापयुतोक्षिते वा ॥ पापत्रिभागेपि शुभत्रिभागे शुभेक्षिते शोषमुपैत्यवश्यम् ॥ २५ ॥

जन्मद्रेष्काणके तुल्यगणनामें अष्टम स्थानमें जो द्रेष्काण हो वह मृत्युकारण होता है जन्म द्रेष्काणसे बाईसवां द्रेष्काण ऐसा होता है उस राशिका स्वामी वा उस द्रेष्काणका स्वामी जो बलवान् हो वह जैसी अग्निजलादि राशि हो उसके तुल्य गुणोंसे मरण देता है और अष्टमेश वा अष्टमगत नवांशेशके संचार भूमिके उसीके अनुसार पूर्वादिशा विभागमें, तथा भावेशके बलाबलसे दूर समीप वा मार्गमें कहना॥२३॥ उक्त ग्रह पाप द्रेष्काणमें पापयुक्तभी होवे तो उस मनुष्यका शरीर भस्ममें मिले यदि शुभद्रेष्काणमें शुभयुक्त होवे तो जलमें गलता है यह निश्चय है ॥ २४ ॥ सौम्यद्रेष्काणमें पापयुक्त दृष्ट हो तो निश्चय उसका देह ऐसेही सूखता है पापत्रिभागमें वा शुभत्रिभागमें शुभेक्षित हो तो निश्चय सूखता ही है ॥ २५ ॥

व्यालदृकाणे यदि नैधनस्थे काकैः शृगालादिभिरद्यते च ॥ शवो नराणां परिणाममित्थं प्रयाति चिंत्यं विदुषा पृथूक्तम् ॥ २६ ॥ पूर्वोक्तयोगा न हि संभवंति नवा ग्रहा नैधनगा भवंति॥संवीक्ष्यते व्योमचरैर्न रंध्रं निर्याणमुक्तं निधनेदृकाणे ॥ २७ ॥

यदि सर्प द्रेष्काण अष्टममें हो तो स्यार कौवे आदि उसके शवको खावें इसप्रकार स्थूल उक्ति शवपरिणाम विचारनी ॥ २६ ॥ अष्टममें कोई ग्रह न हो न पूर्वोक्त योगहों अष्टमको कोई ग्रह भी न देखे तो अष्टमस्थ २२ वें द्रेष्काणमें मरण कहा है ॥ २७ ॥

प्राक्मेषजाते विषपित्तजातं द्वितीयभागे जलजं वनांतिः॥
कूपप्रपाताच्च तडागपातान्निर्याणमंते गदितं हकाणे॥
॥ २८ ॥ खरोष्ट्रजातं प्रथमे वृषस्य पित्तादिचौरादिकृतं
द्वितीये ॥ तृतीयभागे गजवाजिपातान्निर्याणमाहुर्नर-
यानतो वा ॥ २९ ॥ कासश्वासजलोद्भवा प्रथमके
द्वंद्वत्रिभागे मृतिर्द्रेष्काणे महिषाद्वृषादपि मृतिः स्यात्स-
न्निपातादपि ॥ द्वंद्वांते निधनं शिलाग्रपतनाद्व्याघ्रशृगा-
लादितोऽरण्ये वृश्चिकमूषकादिविहितं निर्याणमाहु-
र्विदः ॥ ३० ॥

पहिले जो स्थूल फल कहे हैं उनको अब सूक्ष्मतासे प्रत्येक
भागके कहते हैं कि, मेषका प्रथम द्रेष्काण हो तो विष वा
तरोगसे दूसरेमें जलसे वनमें, तीसरेमें कूप, तालावमें
रनेसे मृत्यु कही है॥२८॥वृषके प्रथममें गदहा ऊंटसे दूसरेमें
तादिरोग वा चोर डाकू आदिसे तीसरेमें हाथी घोडे वा
ळकी आदिके गिरनेसे मरण कहते हैं ॥ २९ ॥ मिथुनके
ममें काश, श्वास, पाण्डुसे दूसरेमें भैंस बैल और सन्निपा-
। तीसरेमें शिलाग्रसे गिरके अथवा वनमें बाघ, स्यार,
दि विच्छू चूहा आदियोंसे विद्वान् लोग मरण
ते हैं ॥ ३० ॥

दात्ययाद्दाहकृतात्प्रपातात्स्वभ्रे विनाशः प्रथमे
काणे ॥ कर्कस्य मध्ये विषयाभिषंगा

प्रवदंति संतः ॥ ३१ ॥ गुल्मप्रमेहादिकृतं विनाशं कर्कांतिमे नैधनगे त्रिभागे ॥ जलोद्भवात्प्राणिगणाद्विपत्तिं वदंति नित्यं यवनादयश्च ॥ ३२ ॥ जलान्नविषरोगतो निधनमेति सिंहाद्यके नरो जलकृतामयैर्विपिनदेशजैर्मध्यमे ॥ विषाद्विषमपानतो विषयभोजनाच्छस्त्रतो वदंति निधनं बुधा मृगपतेस्त्रिभागेंतिमे ॥ ३३ ॥

कर्कके प्रथम द्रेष्काणमें (मदात्ययरोग) अतिमद्यपानाभ्याससे नाकूसे खाईमें गिरनेसे विनाश होवै मध्यममें विषयासक्तिसे शरीर पतन होना सज्जन कहते हैं ॥ ३१ ॥ तीसरे द्रेष्काणमें गुल्मरोग प्रमेहरोगादिसे तथा जलजंतुसे प्राणवियोग होना नित्य यवनाचार्यादि भी कहते हैं ॥ ३२ ॥ अष्टम सिंहका प्रथम द्रेष्काण हो तो जलसे उत्पन्न रोगोंसे मध्यद्रेष्काण हो तो जंगली जीवोंसे, तीसरेमें विषसे, अनियत मद्यपानसे, अनियत भोजनसे अथवा शस्त्रसे विद्वान् लोग मरण कहते हैं ॥ ३३ ॥

कन्यायाः प्रथमे त्र्यंशे शिरोरोगात्तथानिलात् ॥ मृत्युर्दुर्गगिरिव्यालवाजिभ्यो मध्यमे मृतिः ॥ ३४ ॥ कन्यावसाने निधनं दृकाणे शस्त्रस्य पातादभिशापतो वा ॥ स्त्रीवैकृतादन्नविकारतो वा खरान्निपातात्करभादितो वा ॥ ३५ ॥

कन्याके प्रथम द्रेष्काणमें शिरके रोग तथा अग्निसे मध्यममें किला पर्वत, सर्प घोडेसे मृत्यु होवै ॥ ३४ ॥ तीसरेमें शस्त्रसे वा शापसे स्त्रीविकारसे, वा अन्नविकारसे अथवा गदहे हाथीके बच्चेसे गिरनेसे मृत्यु होवै ॥ ३५ ॥

द्विपक्षदोषाच्च चतुष्पदाच्च स्त्रीदोषतो नैधनमेति मर्त्यः॥
मूकाद्यभागे जठरामयैश्च युग्मेंतिमे व्यालपयोजजीवैः॥
॥ ३६ ॥ अलित्रिभागे प्रथमे विषास्त्रविषान्नपानादिवि-
कारहेतोः ॥ मध्ये त्रिभागे कटिबस्तिशूलैर्निःसारतो
वा गुदजश्च मृत्युः ॥३७॥ मृच्छैललोष्ठाभिहतेन मृत्यु-
रलित्रिभागेंतिमके नरस्य ॥ जंघास्थिभंगादिकृतोथवा
स्यान्मृत्युर्नराणां गहने हतानाम् ॥ ३८ ॥

तुलाके प्रथम द्रेष्काणमें (द्विपद) मनुष्य पक्षिदोषसे तथा
चौपायाके अथवा स्त्री दोषसे मृत्यु होवै मध्यमें पेटके रोगसे
तीसरेमें सर्प तथा जलजीवोंसे मरण पावै ॥ ३६ ॥ वृश्चिकके
प्रथम त्रिभागमें विष (अस्त्र) मंत्रविद्याके शस्त्रोंसे जहरीले
अन्नपानादिविकारसे मध्यमें कमर, बस्तिशूलसे अथवा
मलद्वार निकलजानेसे मृत्यु होती है ॥ ३७ ॥ वृश्चिकके पिछले
त्रिभागमें मिट्टी, पहाड ढेलेकी चोटसे अथवा वनमें चोटलगनेसे
जंघाकी हड्डी टूटनेसे मनुष्योंकी मृत्यु होती है ॥ ३८ ॥

वाजिनः प्रथमे त्र्यंशे गुदजै रोगसंकरैः॥मध्ये विषधरैर्जी-
वैर्मृत्युर्वानिलसंभवैः ॥ ३९ ॥ अंत्ये त्रिभागे जलजैर्न-
राणां मृत्युः प्रदिष्टो जठरामयैर्वा ॥ मृगाननस्य प्रथमे
दृकाणे व्याघ्रान्नृपात्सूकरतो मृतिः स्यात् ॥ ४० ॥
ऊर्ध्वोस्थिभंगैकशफोद्भवो वा पयश्चरात्सर्पभवोऽथ मध्ये ॥
अंत्येग्निचौरैरथ शस्त्रपातैर्ज्वरामयैः संभवतीह मृत्युः॥४१॥

धनके प्रथम द्रेष्काणमें गुह्यस्थानके अनेक रोगोंसे, मध्य
भागमें विषधर जीव सर्प वृश्चिकादिसे अथवा अग्नि वायुसे

रोगसे मृत्यु होवे ॥ ३९ ॥ पिछले त्रिभागमें जलजंतुसे अथवा पेटके रोगोंसे मृत्यु होवे मकरके पहिले द्रेष्काणमें व्याघ्रसे, राजासे वा सूकरसे मरण होवे ॥ ४० ॥ मध्यद्रेष्काणमें ऊपर भागकी हड्डी टूटनेसे अथवा एकखुरवाले घोडे गदहा आदिसे जलचर जीवसे वा सर्पसे पिछलेमें अग्नि चोर शस्त्र अथवा ज्वरसे मृत्यु होती है ॥ ४१ ॥

द्रेष्काणे प्रथमे घटस्य मरणं स्त्रीभ्यो भवेज्जाठरैर्दोषैः
शैलनिपातनादपि विषान्नृणां विनाशः स्मृतः ॥ मध्ये
स्त्रीकृतदोषतो हि मरणं गुह्योद्भवैरामयैरंते यानचतुष्प-
देन मुखजै रोगैर्विनाशो भवेत् ॥ ४२ ॥ मीनदृकाणे
गृहिणीप्रमेहगुल्मप्रकोपैर्युवतीजनेभ्यः ॥ जंघाभिघा-
तानलजातकोपैर्मृत्युर्जलग्राहकृतैश्च पुंसाम् ॥ ४३ ॥
जलेषु मृत्युर्जलयानभेदाद्द्वितीयके मीनभवे दृकाणे ॥
अंते मृतिः कुत्सितदोषसंघैर्निर्याणमाद्यैः कथितं
दृकाणैः ॥ ४४ ॥

कुंभके प्रथम द्रेष्काणमें स्त्रीजनोंसे, उदररोगोंसे, पर्वतसे गिरके भी विषसे मनुष्योंकी मृत्यु होती है मध्यदृकाणमें स्त्रीके दोषसे गुह्येंद्रिय रोगसे. तीसरेमें सवारी चौपय्या, और मुखरोगसे मरण होता है ॥ ४२ ॥ मीनके प्रथममें संग्रहिणी, प्रमेह, गुल्मरोग, स्त्रीजनोंसे तथा जांघ टूटनेसे वायु कोपसे जलग्राहसे मरण होवे ॥ ४३ ॥ दूसरेमें, नाव जहाज आदिके टूटनेसे जलमें, तीसरेमें कुदोषसमूहोंसे मृत्यु पूर्वाचार्योंने इसप्रकार द्रेष्काणोंसे कही है ॥ ४४ ॥

पुनर्विशेषः।

आद्यत्रिभागे धनुषो विलग्ने पाशेन बद्धो म्रियते वाऽव-
श्यम् ॥ मेषत्रिभागे प्रथमे विलग्ने सर्पेण मृत्युं प्रवदंति
संन्तः ॥ ४५ ॥ मृगाधिपस्योदयगे दृकाणे प्रांते मृतिः
स्यान्निगडेन बन्धात् ॥ द्वंद्वादिमे पाशकृते हि मृत्यु-
र्गुर्व्यां दृकाणैर्निधनोदयस्थैः ॥४६॥ इति श्रीजातकशि-
रोमणौ निर्याणाध्यायस्त्रिंशः ॥ ३० ॥

द्रेष्काणोक्त निर्याणमें फिर भी विशेष कहते हैं कि लग्नमें
नका पहिला त्रिभाग होवै तो अवश्य फांसीसे बंधा हुआ
रे, यदि मेषका प्रथम त्रिभागलग्नमें हो तो सर्पसे मृत्यु होना
ज्जन कहते हैं ॥ ४५ ॥ सिंहका पिछला द्रेष्काणलग्नमें हो
। कैदमें बन्धनसे मृत्यु होवै मिथुनका प्रथम द्रेष्काण हो तो
तस्थानमें मरण होवै, ये विचार लग्नगत तात्काल द्रेष्काण
ौर अष्टमगत वही बाईस २२ वें द्रेष्काणके विशेष हैं
४६ ॥ इति श्रीजातकशिरोमणौ माहीधरीभाषाटीकायां-
शोऽध्यायः ॥ ३० ॥

अथानूपज्ञानमाह।

पूर्वजन्मकृतकर्मविपाकोनूप इत्यभिहितः पृथुशास्त्रैः ॥
देवलोकपितृतिर्यगादिके कर्मणैव भवतीह निवासः ॥१॥
स्वकर्मपाकादिह लोकमेत्य मनुष्यातिर्यङ्नरकादि-
योनौ॥निवासमासाद्य कियंत्यहानि स्मरन्निजं पत्य...

तद्विनाशः॥२॥यस्य दृकाणेऽर्कविधू बलाढ्यौ द्रेष्काण-
नाथस्य च यो हि लोकः ॥ तुङ्गे स्वभे लोकपतिश्च
नीचे तथैव वासः परलोकमेत्य ॥ ३ ॥

पूर्वजन्मके किये कर्मोंका जो फल है उसे बडे शास्त्र अनूप कहते हैं देव, पितृ, तिर्यगादिलोकोंमें निवास कर्मसे ही होता है जैसे कर्म करते हैं वैसे शुभाशुभ लोक मिलते हैं॥१॥ अपने कर्मफलसे इस मृत्युलोकमें आयके मनुष्य, पशु नरकादियोनियोंमें कितने ही दिनों निवास पायके अपने कर्मोंको स्मरण करते हैं तब उस शरीरका विनाश होता है ॥२॥जिस द्रेष्काणमें सूर्यचंद्रमा बलवान् हों उस द्रेष्काणेशका जो लोक है वह लोक परलोकमें मिलता है इसमें भी विचार है कि, वह लोकपति उच्चराशि अथवा नीचमें जैसा हो उसके अनुसार उसलोकमें भी शुभाशुभ मिलता है ॥ ३ ॥

देवेंद्रमान्यः सुरलोकनाथः शुक्रोडुनाथौ पितृलोक-
नाथौ ॥ नाथौ धरापुत्ररवी तिरश्चां मर्त्यस्य लोकस्य
पती यमज्ञौ ॥ ४ ॥ तुङ्गे गुरुः श्रेष्ठसुरस्य लोके च्युतः
स्वतुंगात्समदेवलोके ॥ निवास आसीत्तत आगतो वा
नीचेऽथवा नीचसुरस्य लोकाः ॥ ५ ॥

बृहस्पति इन्द्रलोकका, शुक्र चन्द्रमा पितृलोकके, मंगल सूर्य तिर्यक्लोकके और शनि बुध मर्त्यलोकके स्वामीहैं ॥४॥ बृहस्पति उच्चका होवे तो इन्द्रका उत्तमलोक देता है उच्चसे उतरके अवरोही हो तो देवलोक और नीचका हो तो नीच देवलोकसे आया अथवा शरीर परिणाम होनेपर वह लोक मिलेगा ॥ ५ ॥

स्वकर्मपाकादिह लोकमेत्य परेकुले मध्यमनीचयोर्वा ॥ आसाद्य जन्मास्य गतिर्यथास्यात्तथा प्रवक्ष्यामि मुनिप्रणीतम् ॥ ६ ॥ रिपुयुवतिविनाशाद्यदृकाणाधिनाथा बलिन इह हि तत्स्था मोक्षमार्गं नयंति ॥ गुरुरपि रिपुकेन्द्रच्छिद्रगः स्वोच्चसंस्थो नयति झषभगोऽसौ सौम्यभागेथ मोक्षम् ॥ ७ ॥ नैर्याणिका निगदिताः किल येत्र योगा न स्युर्न वा निधनराशिदृकाणनाथाः॥ तत्तयुज्झिता भवति तस्य विमोक्षपंथास्तत्कारणं च कथयामि मुनिप्रणीतम् ॥ ८ ॥

अपने शुभाशुभकर्मके अनुसार इसलोकमें उत्तम, मध्यम, च कुलमें जन्म लेकर मरणानन्तर जैसी गति होती है ती मैं मुनियोंकी कही गति कहता हूं ॥ ६ ॥ ६।७।८ वोंके जो द्रेष्काणोंके स्वामी हैं वे बलवान् होकर उसीमें थत हों तो मोक्षमार्गसे लेजाते हैं बृहस्पति भी ६।१।४।७। ।८ भावोंमेंसे किसीमें अपने उच्चका हो अथवा मीनका सौम्यांशकमें हो तो मोक्ष देताहै ॥७॥ जो यहां नैर्याणिक ग कहे हैं उनमेंसे कोई अष्टमराशिद्रेष्काणेश न हों तथा रहित हों तो उस मनुष्यका मोक्ष होता है इसका कारण मुनिप्रणीत कहता हूं ॥ ८ ॥

मोक्षदृकाणाधिपती रविश्चेत्स्यान्नर्मदाद्धे मरणं हि तस्य॥ चंद्रस्तु शोणस्य कलिंदजायाः कूलं जले कृशिणमेति मृत्युम् ॥ ९ ॥ मोक्षद्रेष्काणनाथो भवति यदि

कुजः शोणपश्चार्द्धकूले पश्चार्द्धे नर्मदाया भवति हि मरणं वेत्रवत्याश्च पश्चात्॥कृष्णां मन्दाकिनी वा भवति हि निधनं प्राप्य गोदावरीं चा फल्गूं वा मोक्षदात्रीं सकलमुनिवरा मोक्षपंथानमाहुः ॥ १० ॥

मोक्षद्रेष्काणेश सूर्य होवे तो नर्मदाके बीचमें मरण होवे चन्द्रमा होवे तो शोणभद्र नद वा, यमुनाके जलमें दक्षिण भागमें मृत्युको प्राप्त होवे ॥ ९ ॥ यदि मोक्षद्रेष्काणेश मंगल होवे तो शोणनदके पश्चिमतीरमें अथवा नर्मदाके पश्चिम तीरमें, वा वेत्रवतीके पश्चिम, अथवा यमुना, मंदाकिनी, गोदावरी, मोक्षदा, फल्गूको पाकर मरे इसप्रकार समस्तमुनिश्रेष्ठ मोक्षपंथा कहते हैं ॥ १० ॥

मोक्षस्याधिपतिर्बुधो यदि भवेद्गंगार्द्धवारिप्रदो वाशिर्ष्ठी सुरनिम्नगां नयति वा गम्भीरकायां मृतिः ॥ कौशिक्यर्द्धफलप्रदा प्रभवति प्राच्यां च लौहित्यके पश्चात्सिंधुनदे ददाति मरणं मोक्षदृकाणाधिपः ॥ ११ ॥ द्रेष्काणाधिपतिर्भवेद्यदि गुरुः प्राक्सिंधुभागे गतो मर्त्त्यः प्राणगणं जहाति मथुरां यद्वा विपाशां गतः ॥ स्वोच्चे केंद्रगतो गुरुर्नयति वा मोक्षाय वाराणसीं गङ्गां द्वारवतीं रघूत्तमपुरीं कांचीपुरीं गोपतेः ॥ १२ ॥

मोक्षद्रेष्काणेश बुध होवे तो गंगाके बीचमें, अथवा वाशिष्ठी गंगा, गंभीरा कौशिकीके बीच, लौहित्यकाके पूर्व

थवा सिन्धुनदके पश्चिमसे मरण मोक्ष द्रेष्काणेश होनेसे
ता है ॥ ११ ॥ यदि मोक्ष द्रेष्काणेश गुरु होवै तो सिन्धुके
भागमें जायके प्राणोंको छोडे यद्वा मथुरा, विशालामें
रण होताहै गुरु उच्चमें हो तो मोक्षके लिये, काशी, मायी-
री, द्वारिका रामकी अयोध्यामें यद्वा कांचीपुरी मरणसम-
में लेजाता है ॥ १२ ॥

नयति दनुजमंत्री चन्द्रभागां वितस्तां नरमथ मरणाये-
रावतीं वा सतीं वा ॥ शनिरपि रिपुरंध्रत्र्यंशपः पश्चि-
मायां नयति कुरुसरो वा तत्समे देशतीर्थे ॥ १३॥जन-
नसमयलग्नान्नैधने यो हि राशिश्चरनगयुगदेहो यद्दिगी-
शो नयेताम् ॥ सलघुगुरुसमो वा तत्समे देशतीर्थे भवति
तनुविपत्तिर्मुक्तयेऽमुक्तये वा ॥ १४ ॥ इति श्रीजातक-
शिरोमणौ गत्यनूपादिकथनं नामैकत्रिंशोध्यायः॥३१॥

शुक्र होवै तो चन्द्रभागा, वितस्ता इरावती सतीके तीर
मनुष्यको मरणसमयमें लेजाता है शनि भी ६। ८ का
ष्काणेश हो तो कुरुक्षेत्र अथवा उसके तुल्य देशतीर्थमें ले
ाता है ॥ १३ ॥ जन्मसमय लग्नसे अष्टममें चर स्थिर द्विस्व-
ाव जैसी हो उसके समान तथा जिसदिशाकी वह राशि
उस दिशामें और जैसी, लघु, गुरु वा समान हो उसके
मान देश वा तीर्थमें मुक्ति वा अमुक्तिके वास्ते मरण होता
॥ १४ ॥ इति श्रीजातकशिरोमणौ माहीधरीभाषाटीकायां
त्यनूपज्ञाना(ऽ)ध्याय एकत्रिंशः ॥ ३१ ॥

अथ नष्टजातकम् ।

आधानकालो न हि जन्मकालो विज्ञायते जन्म वदेद्विलग्नात् ॥ प्राग्लग्नभागे मकरादिषट्के भानौ द्वितीये शशिभादिषट्के ॥ १ ॥ सौरास्फुजिद्भौमशाशिज्ञजीवोदितदृक्काणैः शिशिरादिषट्के ॥ तेषूदयस्थेषु तथार्तवः स्युर्ग्रीष्मोर्कलग्ने सति नष्टजन्म ॥ २ ॥ द्रेष्काणलिप्ता प्रथमो परार्द्धे पूर्वापरे मासि वदंति जन्म ॥ द्रेष्काणलिप्ता दशभिस्तिथिस्यान्माघस्य शुक्लाद्गतवस्तिथिश्च ॥ ३ ॥

अब नष्टजातक कहते हैं कि, जिसका आधान समय तथा जन्म समय मालूम न हो उसकी जन्मपत्री प्रश्नलग्नसे कहनी उसका क्रम यह है कि, प्रश्नलग्न पूर्वार्द्ध हो तो सूयके मकरादि ६ राशियोंमें और उत्तरार्द्ध हो तो कर्कादि ६ राशियोंमें जन्म कहना ॥ १ ॥ लग्नमें शनि हो तो शिशिर शुक्र हो तो वसंत मंगल हो तो ग्रीष्म चन्द्रमा, वर्षा, बुध शरद बृहस्पति हेमन्त में जन्म जानना यदि कोई भी लग्नमें न हो तो लग्न जो तत्काल द्रेष्काणहै उसके स्वामीके ऋतुमें जब लग्नमें बहुत ग्रह हों तो उनमेंसे अधिक बली ऋतु जाननी सूर्यकी ऋतु ग्रीष्म ही है ॥ २ ॥ इसप्रकार प्रथम अयन तब ऋतुपायेमें महीना और तिथिके लिये कहते हैं कि, तत्काल प्रथम द्रेष्काण हो तो उस ज्ञात ऋतुका पहिला दूसरा हो तो दूसरा महीना जानना तीसरा हो तो उसके दो भाग करने प्रथम भागमें पहिला दूसरेमें दूसरा जानना जिस द्रेष्काणके पक्षमें वह भाग है उस के प्रकारोक्त महीना कहना ऋतुमास सौरमानके लेने तिथिके लिये अनुपात है कि १० अंशकी ६०० कलाका एक द्रेष्काण

हैं इतनी कलामें ३० तिथि होती हैं तो तत्काल द्रेष्काण कला-
से ३० गुणकर ६०० के भागदेनेसे जन्म तिथि मिलेगी, यहां
तिथि कहनेसे सूर्यके अंश जानने क्योंकि यह काम सौरमा-
नसे है यह वराहमिहिरका मत है यहां ग्रन्थकर्त्ताने ऋतु और
तिथि माघशुक्लपक्षसे कही हैं यह ग्रन्थान्तर मत है प्रथ-
मके दो श्लोकोक्त प्रकारसे अयन और ऋतुमें फर्क पडे तो चं०
बु० बृ० में शु० मं० श० बदल देने ॥ ३ ॥

द्रेष्काणराशावुदितदृकाणैर्ज्ञात्वा गुरुं तद्भवनाग्रराशेः॥
वयोनुमानाद्गुरुराशिचाराद्गुणः प्रसाध्यः खलु वर्त्त-
मानात् ॥ ४ ॥ गुरुद्वयांतर्गतराशिवर्षैरूनः शकाब्दः
खलु वर्त्तमानः ॥ सैको निरेको भवतीह शाकः प्रष्टुर्व-
यो द्वादशभिर्विकल्पम् ॥ ५ ॥

वर्षज्ञान कहते हैं कि प्रश्नलग्नमें प्रथम द्रेष्काण हो तो उसी
राशिके गुरुमें, दूसरा हो तो पंचम राशिकेमें, तीसरा हो तो
नवम राशिकेमें जन्म जानना, बृहस्पति १२ वर्ष १२ राशि
घूमता है प्रश्नकर्ताकी अवस्था देखकर १२ । २४ । ३६ । ४८
इत्यादि उमरका अनुमान करना इसप्रकार संवत् मिलता
है ॥ ४ ॥ दूसरा प्रकार है कि, तत्काल लग्नमें प्रथम द्वादशांश
हो तो लग्नराशिके गुरुमें दूसरा हो तो द्वितीयभावगत राशि
केमें इत्यादि, इसमें भ्रम हो तो शकमें ऊपर वा नीचे किया
जाता है विकल्प १२ । १२ वर्षका ही है ॥ ५ ॥

शुक्लः कृष्णः शुक्ल इत्यर्द्धयामःपक्षो वाच्यः शुक्लपक्षेर्द्ध-
यामः ॥ कृष्णेप्येवं शुक्लकृष्णक्रमेण पक्षप्रश्ने प्राप्तपक्ष-

प्रयोगः ॥ ६ ॥ तत्कालचंद्राध्युषितो नवांशस्तत्संज्ञ-मासे प्रवदंति जन्म ॥ वृषादिमेषांतनवांशमासाः शुक्रा-दयः कार्तिकमासतश्च ॥ ७ ॥

पक्षप्रश्नमें द्रेष्काणके अनुसार ५ । ५ अंश करके शुक्लपक्षमें शुक्ल कृष्ण, शुक्ल कृष्णमें कृष्ण शुक्ल इस क्रमसे जानना ॥ ६॥ मासप्रकार दूसरे प्रकार चांद्रमानसे है कि तत्काल चन्द्रमा जिस नवांशकमें हो उसके अनुसार जो नक्षत्र मिले उस नक्ष-त्रमें पूर्णमासी जिस महीनेमें हो उस मासमें जन्म कहना जैसें मेषके ८ नवांशसे ऊपर वृषके ७ पर्यंत कार्तिक इसके ऊपर मिथुनके ६ पर्यंत मार्गशीर्ष इत्यादि मेषादिमेंषांत नवांशक मास शुक्लादि हैं यहां गिनती कार्तिकादि है ॥ ७ ॥

होरा नवांशप्रतिमे विलग्ने जातोऽथवा लग्नगतदृकाणात्॥ यत्र दृकाणे रविरस्ति तस्माद्दृकाणसंख्यास्ति च तद्वि-लग्नम् ॥ ८ ॥ रात्रिद्युसंज्ञेषु विलोमजन्मवेलाश्च लग्नो-दितभावतुल्यः ॥ विलग्नभावोदितकार्तिकाद्या मासा-स्त्रिभाः फाल्गुनभो नभस्याः ॥ ९ ॥

जिस राशिका नवांश तत्काल वर्त्तमान है उससे उतनी ही संख्याकी जो राशि है वह जन्मलग्न कहना जैसे सिंहलग्न १० । २२ अंश है तो चौथा नवांश कर्क है इससे चौथा तुला-जन्म लग्न होगा अथवा प्रश्नके तत्काल द्रेष्काणसे सूर्यका वर्त्त-मान द्रेष्काण गिनतीमें जितनी संख्याका हो उससे उतनी राशि जन्मलग्न जानना ॥ ८ ॥ प्रश्नलग्न दिवाबली हो तो रात्रिमें और रात्रि बली हो तो दिनमें जन्म कहना विवाज-

न्ममें दिनमानसे रात्रिकेमें रात्रिमान तत्काललग्नके जितनी चखा भुक्त हैं उनको गुणके स्वदेशीय लखंडाओं के भागलेनेसे, लब्धि जन्मसमयकी वेला मिलती है पूर्वोक्त चांद्रमासमें विशेष है कि, उस नवांशमें कृत्तिकादिनक्षत्रोंके अनुसार मास होते हैं कृ० रो० कार्तिक, मृ० आ० मार्ग, पु० पु० पौष, अ० म० माघ, पू० उ० ह० फाल्गुन, चि० स्वा० चैत्र, वि० अ० वैशाख, ज्ये० मू० ज्येष्ठ, पू० उ० आषाढ, श्र० ध० श्रावण, श० पू० उ० भाद्र, रे० अ० भ० आश्विन जानना ॥ ९ ॥

ऊर्जादितश्चन्द्रनवांशमासाद्विघ्नाः सितादेस्तिथयश्च योज्याः॥यावत्त्रिभस्तत्समभं विदित्वा कृशानुतो भैरथ जन्मराशिः ॥ १० ॥ चंद्राश्रितद्वादशभागतुल्यो विधोः पुरस्तात्खलु जन्मराशिः ॥ रात्रौ दिवा वा गतकालतुल्ये दिवानिशोर्व्यत्ययतो हि जन्म॥११॥यो नष्टजातकविधिर्गणितेन पूर्वैरुक्तो वराहमिहिरादिभिरत्र नोक्तम् ॥ प्रश्ने विलग्नवशतः स्फुटतो मयोक्तं चंद्रार्कयोः सुरगुरोश्च नवांशहक्कैः ॥१२॥ इति श्रीजातकशिरोमणौ नष्टजातकाध्यायो द्वात्रिंशः ॥ ३२ ॥

चंद्रनवांशमास कार्त्तिकादिसे दूना करके शुक्लादि तिथि जोडनेसे वर्त्तमान वा जन्म नक्षत्र मिलता है नक्षत्र जानके कृत्तिकादिसे जन्मराशि वृषादि जाननी ॥ १० ॥ अथवा चंद्र द्वादशांशके तुल्य आगे जन्मराशि होती है दिनमें वा रात्रिमें गतकालतुल्य बदलीसे दिनरात्रि जन्म होताहै इसका खुलासा

पहिले कहदिया ह ॥ ११ ॥ ग्रंथकर्त्ता कहता है कि, जो नष्टजातकविधिगणितसे पुराने आचार्य वराहमिहिरादियोंने कहा है वह मैंने यहां गणित नहीं कहा है केवल प्रश्नलग्नसें सूर्य चंद्रमा और बृहस्पतिके नवांशद्रेष्काणवशसे मध्र कहा है ॥ १२ ॥ इति श्रीजातकशिरोमणौ माहीधरीभाषाटीकायां नष्टजातकाध्यायो द्वात्रिंशः ॥ ३२ ॥

राशिप्रभेदो ग्रहयोनिभेदो वियोनिजाधानविधानभेदाः॥ भेदाश्च पुंजन्मविधेररिष्टभंगाश्च तेषां हि मुनिप्रणीताः ॥१॥आयुर्विधानं च दशाविचारश्चांतर्दशादेश्च विचारणा च ॥दशाविचारोऽर्कमुखग्रहाणामन्तर्दशारिष्टमथाश्रया-ख्यम् ॥२॥कारकाख्योष्टवर्गश्च कर्माजीवोथ नाभसाः॥ राजयोगा ग्रहाणां तु रश्मीनां च विचारणा ॥ ३ ॥ राजभंगविचारश्च जन्मभाग्यविचारणा ॥ द्रविणस्य सहोत्थस्य विचारः पुत्रयोषितोः ॥ ४ ॥ स्त्रीणां जन्म विचारश्च प्रव्रज्याशुभयोगयोः ॥ नैर्याणिकं तथा मोक्ष-विचारो नष्टजन्मनः ॥ एषां द्वात्रिंशदध्यायैर्विज्ञानं कथितं मया ॥ ५ ॥

ग्रंथकी अनुक्रमणिका कहते हैं कि, राशिभेद ग्रहयोनि-भेद वियोनिजन्म, आधान जन्म, अरिष्टयोग तद्भंग ॥ १ ॥ आयुर्दा दशाविचार, अंतर्दशादिविचार, दशाफल अंतर्द-शाफल अरिष्ट आश्रययोग ॥२॥ कारकयोग अष्टकवर्ग कर्मा-जीवी नाभसयोग राजयोग रश्मिविचार ॥३॥ राजभंगविचार

जन्मभाग्यविचार धनविचार भ्रातृविचार पुत्रस्त्रीविचार ॥४॥ स्त्रीजातक प्रव्रज्यायोग अशुभयोग निर्याण मोक्षज्ञान नष्टजातक इतनोंका विचार यहां ३२ अध्यायोंमें मैंने कहा है ॥ ५॥

सुहृज्जनाः संति समानशीलास्तेभ्योंजलिर्नौत्र सुदृष्टयः स्युः ॥ सद्वाप्यसद्वापि विचारणीया निवारणीयाः परितो विशीलाः ॥ ६ ॥ चतुर्वेदवेदेन्दुयुक्ते शकाब्दे महादेवनामा द्विजो हारिवंश्यः ॥ चकाराखिलं शास्त्रमेतत्प्रशस्तं धरां शासति श्रीनृपे रामभद्रे ॥ ७ ॥ इति श्रीमहादेवपाठकविरचिते जातकशिरोमणावनुक्रमणिकाध्यायस्त्रयस्त्रिंशतितमः ॥ ३३ ॥

जो मित्रजन सबोंको समानमाननेवाले हैं उनको मेरी प्रणति रूप अंजलि है कि, इस ग्रंथमें सुदृष्टिवाले होवें, जो अच्छा वा अयोग्य हो उसे विचारके अयोग्यता निवारण करें ॥ ६ ॥ शकाब्द १४४४ में हारिके वंशमें उत्पन्न महादेव नामा ब्राह्मणने इस बडे शास्त्रको पूर्ण किया उस समय राजा श्रीरामभद्र राज्यशासन करतेथे ॥ ८ ॥ इति श्रीजातकशिरोमणौ माहीधरीभाषाटीकायां ग्रंथानुक्रमणिका कथनं नाम त्रयस्त्रिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ३३ ॥

श्रीवैक्रमेद्रिशरनन्दधरामितेब्दे प्रालेयदेशगतटीहरिराजधान्याम् ॥ श्रीकीर्तिशाहनरदेवनियोगवर्तिधर्माधिकारिपदधारिमहीधराख्यः ॥ १ ॥ ग्रन्थस्य जातक-

शिरोमणिनामकस्य सद्भाषया विवृतिमस्य चकार धीरः ॥ सद्बालबोधनकरीं कवयः क्षमध्वं यच्चापलं किमपि तत्सुहृदः सुशीलाः ॥ २ ॥

श्रीविक्रमादित्य संवत् १९५७ में हिमालयदेशांतर्वर्ति टीहरीराजधानीमें श्रीमान् कीर्तिशाह महाराजका नियोगवर्ती धर्माधिकारीपदवाले पण्डित महीधरशर्माने इस जातकशिरोमणि नामककी, सुबुद्धिबालकोंके बोधकरनेवाली सरलभाषाटीका रची है इसमें जो कुछ चापल्यता हो उसे निर्मलहृदयवाले सुशील विद्वान् क्षमा करें ॥ १ ॥ २ ॥

॥ श्रीरस्तु ॥

पुस्तकमिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालय-बंबई.





भारतीय ज्ञानपीठ ग्रन्थागार, काशी।



